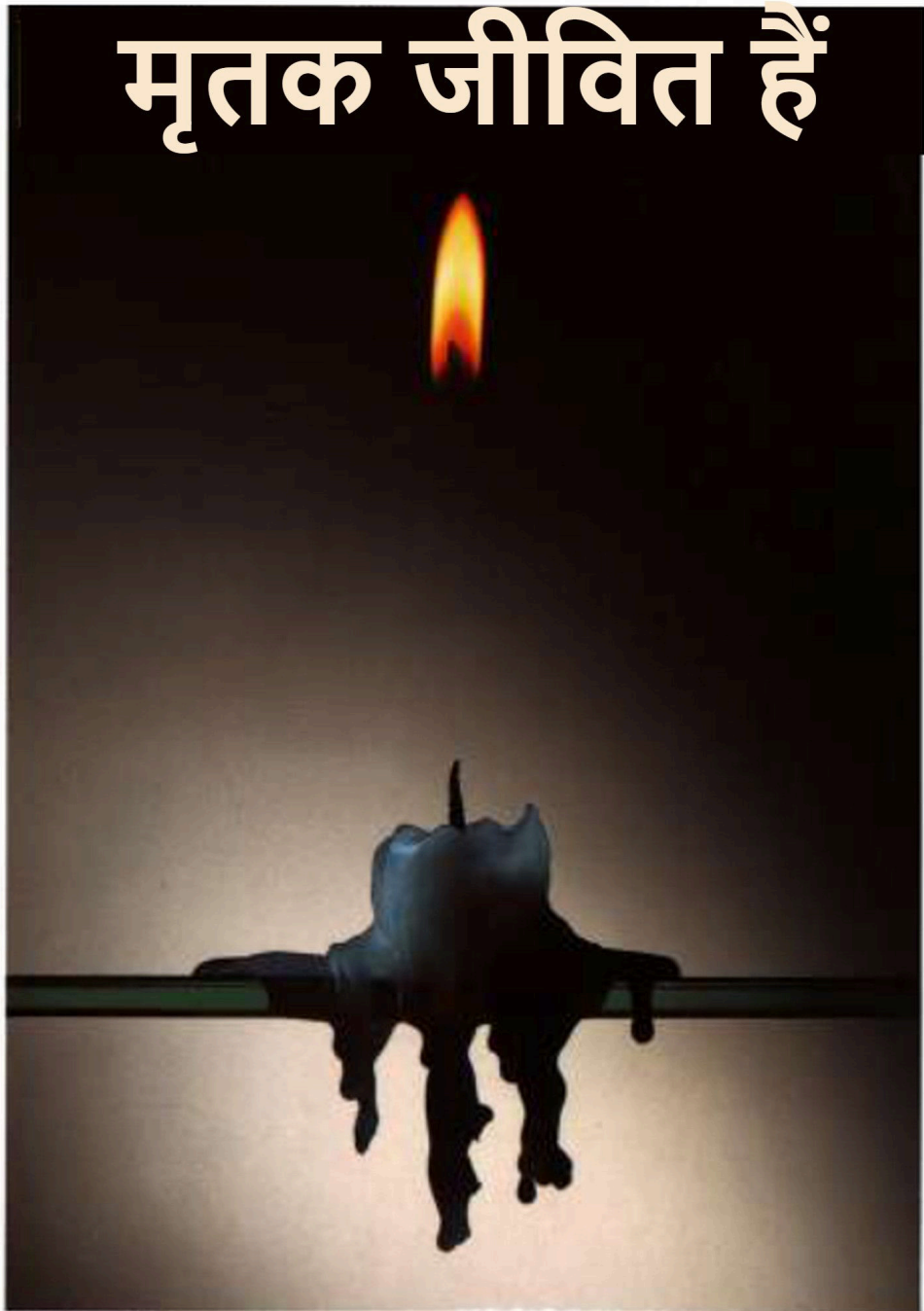


फिर भी मृतक जीवित हैं

Hans-Jörg Ronsdorf



प्राण की अमरता

Hans-Jörg Ronsdorf

फिर भी मृतक जीवित हैं

प्राण की अमरता

Christliche Literatur-Verbreitung

Postfach 11 01 35 • 33661 Bielefeld

प्रयुक्त बाइबल अनुवाद: Überarbeitete Elberfelder (जर्मन बाइबल अनुवाद), 1999, CSV,
Hückeswagen

1. संस्करण 1992

2. संस्करण 1994

3. संशोधित और परिवर्धित संस्करण 2004

© 1992 by

CLV • Christliche Literatur-Verbreitung

Postfach 110135 • 33661 Bielefeld

CLV इंटरनेट पर: www.clv.de

टाइपसेटिंग: CLV

आवरण: Dieter Otten, Gummersbach

मुद्रण और जिल्दसाज़ी: Ebner & Spiegel, Ulm

ISBN 3-89397-227-7

विषय-सूची

प्राक्कथन

1 भूमिका	12
1.1 विषय का महत्व और व्यापकता	13
1.2 कारण और चुनौती	14
1.3 संरचना और रूपरेखा	15
1.4 भावी घटनाओं का क्रम – भविष्यद्वाणी का कैलेंडर	15
1.5 पुराने और नए नियम में बाइबल का प्रकाशन	17
1.5.1 नए नियम का प्रकाशन	18
1.5.2 पुराने नियम का प्रकाशन	18
1.5.3 पुराने नियम में भी प्रकाश	19
1.6 मृत्यु की उत्पत्ति और उसका प्रभाव	21
1.7 मरते समय क्या होता है?	23
1.7.1 मनुष्य की आत्मा और मृत्यु	24
1.7.2 मरते समय प्राण	25
1.7.3 आत्मा और प्राण	26
1.8 मृत्यु के विभिन्न पहलू	26
1.9 मृत्यु पर विजय	26
1.9.1 मृत्यु और पाप	27
1.9.2 मृत्यु और शैतान	29
2 मृत्यु के बाद क्या आता है?	31
2.1 लाजर और धनवान	31
2.1.1 क्या यहाँ मृत्यु के बाद के जीवन की बात है?	32
2.1.2 इस कहानी का अर्थ	32
2.1.3 एक दृष्टान्त?	33
2.1.4 मृत्यु से पहले	34
2.1.5 यहूदियों में परलोक की धारणा	34
2.1.6 इब्राहीम की गोद	35
2.1.7 लाजर इब्राहीम की गोद में कैसे पहुँचा?	36
2.1.8 हेडीस	36
2.1.9 लूका 16 में हेडीस	39

2.1.10 शिओल	41
2.1.11 आँखें खोलना	42
2.1.12 दूर से	43
2.1.13 बड़ी खाई	43
2.2 जीवितों का परमेश्वर	45
2.2.1 सदूकी	
2.2.2 रूपान्तर के पहाड़ पर मूसा और एलिय्याह	47
2.2.3 मृत्यु के बाद के जीवन और पुनरुत्थान का संबंध	48
2.2.4 बीज का चित्र	48
2.3 क्रूस पर टँगा अपराधी	49
2.3.1 परादीस	50
2.3.2 यहूदी परंपरा में परादीस	50
2.3.3 नए नियम में परादीस	51
2.3.4 क्या लूका 23:43 की कोई और व्याख्या संभव है?	54
2.4 अनन्त महिमा – मृत्यु के सामने आशा	55
2.4.1 बाहरी मनुष्यत्व	57
2.4.2 भीतरी मनुष्यत्व	58
2.4.3 पृथ्वी पर का डेरा-रूपी घर	59
2.4.4 पहिनाया जाना	60
2.4.5 यात्रा और घर	63
2.4.6 अन्य व्याख्याएँ	65
2.5 मर जाना लाभ है	67
2.5.1 अन्य स्पष्टीकरण	69
2.5.1.1 क्या यह मसीह का पुनरागमन है?	69
2.5.1.2 कूच करना	69
2.5.1.3 प्राण-निद्रा?	70
2.5.1.4 क्या यह केवल पौलुस का अधिकार था?	70
2.5.2 उससे भेंट!	70
2.6 जो सो गए हैं	71
2.6.1 क्या सोए हुए लोग प्राण-निद्रा में हैं?	72
2.6.2 नींद का संबंध किससे है?	73
2.6.3 स्तिफनुस की मृत्यु का उदाहरण	73
2.6.4 उठा लिए जाने के समय सोए हुए लोग	74

2.6.5 उठा लिए जाने से पहले सोए हुए लोग	75
2.6.6 निष्कर्ष	75
2.7 मसीह – जीवितों और मृतकों पर प्रभुता करनेवाला	76
2.8 वेदी के नीचे के प्राण	79
2.8.1 शहीदों के प्राण	80
2.8.2 वेदी के नीचे	82
2.8.3 यह घटना किस समय की है?	83
2.8.4 बदला लेने की माँग	84
2.9 अनन्त जीवन	85
2.9.1 अनन्त जीवन क्या है?	85
2.9.2 अनन्त जीवन और अमरता	86
2.9.3 मनुष्य परमेश्वर का जीवन कैसे पा सकता है?	87
2.9.4 विश्वासियों के पास अनन्त जीवन किस रूप में है?	87
2.9.5 अनन्त जीवन और मृत्यु	88
2.9.6 दिवंगत विश्वासी	89
2.9.7 जीवित विश्वासी	89
2.9.8 अनन्त जीवन का भावी रूप	90
2.9.9 पवित्र आत्मा	91
2.9.10 निष्कर्ष	91
2.10 कैद में पड़ी आत्माएँ	92
2.10.1 पतरस का उद्देश्य	93
2.10.2 इस पाठ की मेरी व्याख्या	93
2.10.3 शरीर के भाव से मारा गया – आत्मा के भाव से जिलाया गया	94
2.10.4 कैद में पड़ी आत्माओं को प्रचार	95
2.10.5 प्रचार की विषय-वस्तु	95
2.10.6 प्राण और आत्माएँ	96
2.10.7 क्या ये आत्माएँ पतित स्वर्गदूत हैं?	97
2.10.8 आत्माएँ – दिवंगत मनुष्य	98
2.10.9 कैदखाना	99
2.10.10 पुराने नियम के विश्वासियों का शिओल से छुटकारा?	100
2.10.11 क्या यीशु नरक में उतरे?	101
2.10.12 निष्कर्ष	102
2.11 मृत्यु-अनुभव और मृत्यु-निकट अनुभव	102

2.11.1 इन वृत्तान्तों में कितनी सच्चाई है?	104
2.11.2 बाइबल में मृत्यु-अनुभव?	104
2.11.3 प्रेरित पौलुस और यूहन्ना	106
2.11.4 मृत्यु-अनुभव – स्वर्ग और नरक	107
2.11.5 अन्धकार का बहकावा	108
2.11.6 मृतकों को बुलानेवाले प्रभु की दृष्टि में घृणित हैं	109
2.11.7 शाऊल और शमूएल	110
2.11.8 अन्त के समय में मसीह-विरोधी बहकावा	111
2.11.9 निष्कर्ष	
3 बाइबल की दृष्टि में मनुष्य	113
3.1 मनुष्य किन बातों से बना है?	114
3.2 मनुष्य की आत्मा	115
3.2.1 जीवन का श्वास	116
3.2.2 परमेश्वर का आत्मा और मनुष्य की आत्मा	117
3.2.3 सारांश	119
3.3 मनुष्य का प्राण	119
3.3.1 सारांश	121
3.4 मनुष्य की देह	122
3.5 निष्कर्ष	123
4 प्राण की अमरता	124
4.1 अनन्त जीवन और प्राण की अमरता	125
4.2 नए नियम में अमरता	126
4.3 मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच	127
4.3.1 देह के बिना प्राण की चेतना	127
4.3.2 क्या प्राण को फिर भी देह की आवश्यकता है?	128
4.4 बाइबल में और यूनानी दर्शन में अमरता	129
4.4.1 द्वैतवाद	129
4.4.2 पुनरुत्थान	129
4.4.3 प्राण की अमरता अन्तिम अवस्था नहीं है	130
4.4.4 व्यक्तित्व	131
4.5 निष्कर्ष	131
4.6 इस सत्य का महत्व	132
5 मृतकों का भविष्य	133

5.1 पुनरुत्थान	133
5.1.1 पुराने नियम में पुनरुत्थान	134
5.1.2 जीवन का पुनरुत्थान	135
5.1.3 पुनरुत्थान में देह	138
5.1.4 पुनरुत्थान का समय	140
5.1.5 न्याय के लिए पुनरुत्थान	142
6 अनन्तकाल में मनुष्य	145
6.1 अनन्तकाल में विश्वासी	145
6.2 अनन्तकाल में अविश्वासी	146
6.2.1 नरक (गेहेन्ना)	148
6.2.2 आग की झील	150
6.2.3 दूसरी मृत्यु	150
6.3 दंड कितने समय तक रहता है?	151
6.3.1 नए नियम में “अनन्तकाल” और “अनन्त”	152
6.3.2 “विनाश”	154
6.3.3 सारांश	155
6.3.4 परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता	156
6.3.5 गुलगुता का क्रूस	157
7 परिशिष्ट	160
7.1 पवित्रशास्त्र शिओल और हेडीस के बारे में क्या सिखाता है?	160
7.2 विभिन्न शब्दों की तालिका	165
8 ग्रंथसूची	167
पादटिप्पणियाँ	172

पहले संस्करण का प्राक्कथन

इस कठिन और जटिल विषय पर काम करना आसान नहीं था। इसलिए पाठक के हाथ में जो पुस्तक है, वह इस विषय का सम्पूर्ण विवेचन नहीं है। यह बात ग्रंथसूची से भी आसानी से समझी जा सकती है, जो दिखाती है कि इस विषय पर कितनी अधिक पुस्तकें लिखी गई हैं।

मेरे मित्र मत्थियास पील (Matthias Piel) के सहयोग के बिना यह पुस्तक इस रूप में तैयार न हो पाती; इसके लिए मैं उनका विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ। मार्टिन हाइडे (Martin Heide) को भी उनकी सहायता के लिए धन्यवाद। अन्त में अपनी पत्नी का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्हें कई घंटे मेरे बिना रहना पड़ा, फिर भी उन्होंने इस काम को पूरा करने के लिए मुझे प्रोत्साहित करना नहीं छोड़ा।

विश्वासयोग्य परमेश्वर अपनी महिमा के लिए इस पुस्तक को आशीष दे! जो भी पाठक बाइबल के आधार पर आलोचना करेगा, मैं उसका आभारी रहूँगा।

Hans-Jörg Ronsdorf

तीसरे संस्करण का प्राक्कथन

यह पुस्तक धर्मविज्ञानियों के लिए नहीं लिखी गई है। उनके लिए ऐसी रचनाएँ हैं जो इस समस्या पर अधिक विस्तार और गहराई से विचार करती हैं। मेरी चिन्ता यह है – विशेषकर जब यह दिखाई देता है कि बाइबल के प्रति विश्वासयोग्य कलीसियाओं में भी पवित्रशास्त्र की समझ में कितना सुधार चाहिए – कि विश्वासियों के हाथ में एक ऐसी पुस्तक दूँ, जो उन्हें सरल और समझने योग्य ढंग से इन सच्चाइयों से परिचित कराए।

कुछ स्थानों पर मूल भाषा का हवाला दिया गया है। फिर भी मेरा दृढ़ विश्वास है कि एक अच्छे अनुवाद के सहारे भी इस पुस्तक में उठाए गए प्रश्नों की सही समझ संभव है।

पुस्तक का शीर्षक “प्राण की अमरता” कुछ मसीहियों को उत्तेजक लगता है, और कुछ हद तक इसका उचित कारण भी है। फिर भी मैं इसकी विषय-वस्तु को बाइबल की सच्चाई के प्रकाश में परखने का प्रयास करना चाहता हूँ, और इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि इस शीर्षक का पूरा औचित्य है, बशर्ते हम इसे बाइबल के अनुसार समझें और प्रयोग करें।

पहले और दूसरे संस्करण के प्रकाशित होने के बाद बहुत सारे पत्र आए। बहुतों ने समर्थन किया, पर उतने ही लोगों ने असहमति भी जताई। मैंने इस संस्करण में बहुत सी बातें जोड़ी हैं, और कुछ स्थानों पर सुधार भी किए हैं। इन सुझावों के लिए मैं आभारी हूँ। हमारा ज्ञान अधूरा है।

क्योंकि इस पुस्तक में मैं इस विषय से संबंधित (जैसी मुझे आशा है) सभी महत्वपूर्ण बाइबल-खंडों पर क्रमबद्ध रूप से विचार करता हूँ, इसलिए इसे एक संदर्भ-ग्रंथ के रूप में भी देखा जा सकता है। इसी कारण कई बार बातें दोहराई भी गई हैं, क्योंकि हर अध्याय को अलग से भी पढ़ा जा सकता है।

यह संस्करण भी, जो बहुत से परिवर्धनों के साथ एक पूर्ण संशोधन बन गया है, कई लोगों के सहयोग और समर्थन से तैयार हुआ है; विशेषकर गुम्मेर्सबाख (Gummersbach) के वर्नर म्यूखर (Werner Muecher) और ओबर्ग्युन्ज़बुर्ग / आल्गॉय (Obergünzburg / Allgäu) के वोल्फ़गंग क्लोकनर (Wolfgang Klöckner) का मैं बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने “गहन अध्ययन के लिए प्रश्न” तैयार किए। उन्होंने विचारों को अधिक स्पष्ट और समझने योग्य बनाने में सहायता की।

ऐसे काम के दौरान मैं यह भी अनुभव करता हूँ कि मेरी युवावस्था में जो आत्मिक नींव डाली गई थी, वह आज मेरे कितने काम आती है। इसलिए मैं उन लोगों का भी आभारी हूँ जिन्होंने यह नींव डालने का परिश्रम किया।

मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर की बहुत सी सन्तान इस पुस्तक से लाभ उठाएँ, और प्रभु यीशु मसीह की महानता को, जो मृत्यु पर उसकी विजय में प्रकट हुई है, और उस आशीष को जो इससे हमारे लिए निकली

है, और भी स्पष्ट रूप से देख सकें।

Hans-Jörg Ronsdorf, केम्पटन, आलॉय (Kempten im Allgäu), दिसम्बर 2003

1 भूमिका

क्या सचमुच कोई अस्तित्व है, क्या मृत्यु के बाद भी जीवन चलता रहता है? यदि हाँ, तो हमें उस अस्तित्व की कल्पना कैसे करनी चाहिए? बार-बार ऐसे ही या इनसे मिलते-जुलते प्रश्न पूछे जाते हैं। परमेश्वर ने मनुष्य के मन में अनन्तकाल का बोध रखा है, और इसी से वह अनुमान लगाता है कि मृत्यु अन्त नहीं है:

“उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने-अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता” (सभोपदेशक 3:11)।

यदि इस वचन का अपने आप में यह अर्थ न भी हो कि मन – जो बाइबल में मनुष्य का सबसे भीतरी और मूल भाग है – अनन्तकाल की ओर उन्मुख बनाया गया है, तो भी यह कम से कम इतना तो कहता है कि मनुष्य यह अनुभव करता है – जैसा कि प्राचीन और नए समय के सभी विश्व-धर्म और जनजातीय धर्म भी पुष्टि करते हैं – कि हमारे ज्ञान के क्षितिज से परे भी कुछ है, अर्थात् इस जीवन के बाद एक और जीवन। स्वयं सृष्टिकर्ता ने मनुष्य को अपनी कालातीतता का बोध दिया है।¹

परन्तु सभोपदेशक के इसी वचन में साथ ही साथ ज्ञान की सीमा भी बताई गई है। मृत्यु और भविष्य के बारे में सूर्य के नीचे कोई ज्ञान नहीं है। सभोपदेशक के लिए “सूर्य के नीचे” उस मनुष्य का दृष्टिकोण है जो परमेश्वर के प्रकाशन को नहीं जानता। और परमेश्वर का धन्यवाद हो कि बाइबल के द्वारा परमेश्वर का प्रकाशन हमारे हाथों में है। यह उस परमेश्वर से आता है जो – सभोपदेशक की भाषा को आगे बढ़ाएँ तो – सूर्य के ऊपर है।

विज्ञान और छद्म-विज्ञान की हर उपलब्ध विद्या के द्वारा लोग इस अन्तिम प्रश्न को सुलझाने का प्रयास करते हैं। यद्यपि ज्ञान की सीमा हटाई नहीं जा सकती, फिर भी ऐसे समाधान प्रस्तुत किए जाते हैं जो मृत्यु और उसके बाद आनेवाली बातों की व्याख्या – बाइबल की दृष्टि से – एक बहकानेवाले और विनाशकारी ढंग से करते हैं! कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु सब मनुष्यों के लिए परादीस में प्रवेश का द्वार है। दूसरे दावा करते हैं कि मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं आता। या लोग मानते हैं कि एक सीमित समय के अस्तित्व के बाद कुछ लोगों का पूर्ण अन्त हो जाएगा और दूसरों को अनन्त जीवन मिलेगा।

ये व्याख्याएँ विनाशकारी हैं, क्योंकि वे भटका देती हैं और मृत्यु को वैसा नहीं समझतीं जैसी वह वास्तव में है: पाप की मज़दूरी (रोमियों 6:23) और परमेश्वर से अलगाव।

1. इस बात में तब भी कोई अन्तर नहीं पड़ता जब यह बोध प्रायः बहुत भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देता है और बहुत से लोग मृत्यु के बाद के जीवन का इनकार करते हैं।

हम मसीहियों को इस विषय में क्या कहना है? क्या हम इस प्रश्न पर अपना दृष्टिकोण परमेश्वर के वचन पर आधारित करते हैं, और क्या हम उस आशा के विषय में, जो हमारे मन में है, उत्तर देने के लिए तैयार और योग्य हैं (1 पतरस 3:15)?²

हमें छिपने की आवश्यकता नहीं है, और छिपना हमारे लिए उचित भी नहीं, क्योंकि हमारे चारों ओर मृत्यु की व्याख्या के जितने भी प्रयास होते हैं, उनके बीच बार-बार यह स्पष्ट होगा कि मृत्यु और उसके बाद की बातों के विषय में, और इस प्रकार मनुष्य के भविष्य के विषय में, बाइबल का दृष्टिकोण अनुपम है। कहीं और ऐसी महान आशा और ऐसा अद्भुत भविष्य नहीं मिलता। फिर भी दो गन्तव्य हैं, जो एक चौड़े और एक सकरे मार्ग के अन्त में खड़े हैं (मत्ती 7:13-14)।

1.1 विषय का महत्व और व्यापकता

इस पुस्तक का विषय जीवन और मृत्यु के क्षेत्र में मानव-ज्ञान की सीमा से जुड़े प्रश्नों पर विचार करता है। इस विषय में परमेश्वर अपने वचन में हमसे जो कहता है, हम पूरी तरह उसी पर निर्भर हैं। यद्यपि बाइबल इन बातों के विषय में बहुत कुछ आवश्यक कहती है, फिर भी हमें इस विषय पर अत्यधिक बल नहीं देना चाहिए और इसे वह महत्व नहीं देना चाहिए जो पवित्रशास्त्र इसे नहीं देता। इसलिए हम इस पर न बहुत अधिक कहना चाहते हैं, न बहुत कम। जहाँ पवित्रशास्त्र चुप है, वहाँ हम भी चुप रहना चाहते हैं! भविष्य के विषय में बाइबल बहुत कुछ कहती है – मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच के समय के विषय में अपेक्षाकृत कम, क्योंकि यह केवल एक मध्यवर्ती चरण है, जो एक दिन सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

पहली दृष्टि में ऐसा लगता है कि मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच के जीवन का विश्वास की नींव (उदाहरण के लिए यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य, या बाइबल की प्रेरणा) से कोई सीधा संबंध नहीं है। यदि कोई यह मानता है कि मृत्यु के बाद पुनरुत्थान तक मनुष्य एक अचेत नींद में डूब जाता है, तो शायद यह कोई भ्रामक शिक्षा³ न हो। परन्तु यदि – और ऐसा प्रायः देखने में आता है – इससे यह निष्कर्ष निकाला जाए कि अनन्तकाल में भी यही अचेत अवस्था होगी, या अस्तित्व का अन्त हो जाएगा, जैसे भक्तिहीनों का मिटा दिया जाना, तो मसीही विश्वास की नींव पर ही आक्रमण होता है।

तब, जैसा हम देखेंगे, परमेश्वर का स्वभाव – उसका प्रेम, उसकी पवित्रता और उसकी धार्मिकता – भी प्रश्न के घेरे में आ जाता है। शायद कोई पाठक इस संबंध पर आश्चर्य करे। परन्तु वास्तव में यहाँ प्रभु यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य की वैधता और उसके प्रभावों का प्रश्न है।

2. हमारी आशा मृत्यु के बाद के जीवन तक सीमित नहीं है। मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच का समय “केवल” एक अस्थायी बात है। हमारी आशा और हमारा भविष्य पुनरुत्थान में अनन्त जीवन है।

3. मैं इस दृष्टिकोण को एक गलत शिक्षा मानता हूँ, जिसका अपने आप में शायद कोई बड़ा प्रभाव न हो; परन्तु इससे भ्रामक शिक्षा तक – अर्थात् ऐसी शिक्षा जो मनुष्यों को भटकाकर विनाश में ले जाती है (व्यवस्थाविवरण 27:18; यहेजेकल 13:10) – पहुँचने का कदम बहुत निकट है, और बहुत से लोगों ने यह कदम उठा भी लिया है।

जब हम इस विषय पर, अर्थात् मनुष्य के भविष्य पर, व्यापक रूप से विचार करेंगे, तो हम देखेंगे कि कैसे सारी बातें एक-दूसरे से जुड़कर पूरी होती हैं। बात केवल मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच के जीवन की नहीं, उससे कहीं अधिक की है।

1.2 कारण और चुनौती

कुछ समय पहले मेरा सामना एक ऐसे दृष्टिकोण से हुआ जो इस बात का इनकार करता है कि मृत्यु के बाद प्राण बना रहता है। यह धारणा कई पंथों या भ्रामक शिक्षाओं में पाई जाती है (अन्य के साथ एडवेंटिस्टों⁴ और यहोवा के साक्षियों⁵ में); इसका सार लगभग इस प्रकार है:

जन्म से मनुष्य के पास कोई अमर प्राण नहीं होता। पाप के कारण वह मरनहार हो गया है। अमरता उसे केवल और केवल मसीह के द्वारा ही मिलती है। यही अनन्त जीवन है, जो उन सब को मिलता है जो मसीह पर विश्वास करते हैं। इसलिए वे सब जिनके पास मसीह में जीवन नहीं है, अनन्तकाल तक जीवित नहीं रहेंगे, बल्कि एक दिन उनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, अर्थात् वे नरक में मिटा दिए जाएंगे और उनका अस्तित्व समाप्त कर दिया जाएगा।

क्योंकि मनुष्य का प्राण अमर नहीं, बल्कि नश्वर है, इसलिए मृत्यु के बाद कोई जीवन भी नहीं है। मृत्यु में प्राण भी मर जाता है, पूरा मनुष्य नष्ट हो जाता है, उसकी हर क्रिया – आत्मा-संबंधी और प्राण-संबंधी भी – बुझ जाती है। इस विचार के एक रूप में, जहाँ तक मृत्यु के बाद और पुनरुत्थान से पहले की अवस्था की बात है, इस “अनस्तित्व” की अवस्था को प्राण-निद्रा भी कहा जाता है। इस प्राण-निद्रा के दौरान कोई चेतना नहीं होती।⁶

इस धारणा में मनुष्य को एक अविभाज्य इकाई माना जाता है। या तो मनुष्य (देह में) जीवित है, या वह मरा हुआ है। अस्तित्व के इन दो रूपों के बीच कोई मध्यवर्ती अवस्था नहीं है। मनुष्य, जिसे एक इकाई के रूप में सृजा गया है, केवल पुनरुत्थान में ही फिर से चेतना पाएगा। इस दृष्टिकोण में देह के बिना या देह के बाहर न कोई प्राण है, न कोई आत्मा।

मेरा उद्देश्य मृत्यु और प्राण की अमरता के विषय में नास्तिक और भौतिकवादी विचारधारा से बहस करना नहीं है। बल्कि मैं एक ऐसी धारणा का सामना करना चाहता हूँ जिसका समर्थन बाइबल के आधार पर किया जाता है।

4. उदाहरण के लिए Tobler, G., *Wann beginnt das ewige Leben*, (Advent-Verlag, Zürich)। Tomasi, M., *Tod und Auferstehung, Himmel und Hölle*, (Advent Verlag, Zürich)। *77 Fragen an die Gemeinschaft der Siebenten-Tags-Adventisten*, (Union Verlag Berlin), 1988।

5. इन दोनों पंथों को निश्चय ही अलग-अलग ढंग से परखना चाहिए; परन्तु इस बात में उनके बीच कोई बड़ा अन्तर नहीं है, दोनों एक गलत शिक्षा का समर्थन करते हैं।

6. यह धारणा “कंडीशनलिज़्म” (सशर्त अमरता का सिद्धांत) के नाम से जानी जाती है, यद्यपि जर्मन-भाषी क्षेत्र में यह नाम कम प्रचलित है। यह शब्द (लातीनी: *conditio*, शर्त) बताता है कि मनुष्य की अमरता इस शर्त पर निर्भर है कि उसके पास मसीह में जीवन है या नहीं।

फिर भी यह पुस्तक केवल उन्हीं के लिए नहीं है जिनका सामना सशर्त अमरता के सिद्धांत (कंडीशनलिज़्म) या प्राण-निद्रा की विशेष समस्या से होता है, बल्कि उन सब के लिए है जो इस विषय पर मूल रूप से विचार करना चाहते हैं।

1.3 संरचना और रूपरेखा

पहले यह आवश्यक है कि हम अपने विषय से संबंधित बाइबल के कथनों का संतुलित मूल्यांकन करें: पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता और नए नियम के प्रेरित परलोक की बातों के विषय में क्या सोचते थे?

फिर मृत्यु की जाँच उसके उद्गम और उसकी कार्य-पद्धति की दृष्टि से करनी है। इसके बाद हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मृत्यु पर प्राप्त विजय पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

इस प्रारम्भिक काम के बाद मैं इस प्रश्न पर विचार करूँगा कि मृत्यु के तुरन्त बाद क्या आता है। इसके लिए मैं नए नियम के उन सभी महत्वपूर्ण पदों को लूँगा जो इस विषय में कुछ कहते हैं। वास्तविक विषय के लिए ये पद सबसे महत्वपूर्ण भाग हैं, क्योंकि इनमें विभिन्न लेखक मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच के समय की सीधे चर्चा करते हैं। एक लेखक इस विषय को केवल छूता है, दूसरा उस पर ठोस रूप से विचार करता है। यह कहना कि इस विषय पर बहुत कम पद हैं, बिल्कुल ग़लत होगा।

यह फिर इस प्रश्न से जुड़ता है कि मनुष्य आखिर है क्या। विशेष रूप से यहाँ प्राण के स्वरूप और उसकी अमरता की बात है। वहीं उन धारणाओं की जड़ भी है जिन पर सशर्त अमरता का सिद्धांत आधारित है। क्योंकि मृत्यु के बाद की मध्यवर्ती अवस्था समय की दृष्टि से सीमित है, इसलिए फिर हम उस महान घटना पर आँगे जो इस अवस्था को समाप्त करती है: पुनरुत्थान। एक और अध्याय में मैं अनन्त अवस्था पर विचार करूँगा, और विशेष रूप से भक्तिहीनों की नियति की जाँच करूँगा। बार-बार यह प्रश्न उठता है कि क्या परमेश्वर के प्रेम को देखते हुए सचमुच कोई अनन्त नरक हो सकता है।

1.4 भावी घटनाओं का क्रम – भविष्यद्वाणी का कैलेंडर

इस विषय पर आप कोई भी पुस्तक पढ़ें: हर पुस्तक के पीछे युगान्त-विद्या (एस्केटोलॉजी), अर्थात् भविष्य की घटनाओं की शिक्षा, के विषय में कोई न कोई निश्चित दृष्टिकोण होता है। इस पुस्तक में भी ऐसा ही है। मैं भविष्यद्वाणी की घटनाओं के क्रम और उनके मुख्य बिन्दुओं के विषय में अपना विश्वास पहले ही स्पष्ट कर देना चाहता हूँ, ताकि पाठक इन बातों के आपसी संबंध को बेहतर समझ सके। कुछ ही शब्दों में, और यहाँ बिना कोई और कारण बताए, मैं अपना विश्वास प्रस्तुत करता हूँ।⁷

मेरा विश्वास है कि सभी मसीही, परमेश्वर की सारी सन्तान, बहुत जल्द यीशु मसीह के पास स्वर्ग में उठा लिए जाएँगे (रैघर)। उस समय तब तक के सभी दिवंगत विश्वासी जी उठेंगे और जीवित विश्वासियों के

7. विभिन्न दृष्टिकोणों का विस्तृत विवेचन अन्य पुस्तकों के साथ प्रकाशितवाक्य की टीका की भूमिका में मिलता है: W.J. Ouweneel, *Das Buch der Offenbarung*, Bielefeld (CLV) 1995, और: J.D. Pentecost, *Bibel und Zukunft*, Dillenburg (CVD) 1993।

साथ उठा लिए जाएँगे। फिर बड़े न्यायों का एक समय आएगा, जिसमें मसीह-विरोधी प्रकट होगा और बहुत से लोगों को बहकाएगा। तब परमेश्वर के उद्धार के इतिहास का केन्द्र-बिन्दु मुख्य रूप से इस्राएल देश और इस्राएल जाति होगी। परमेश्वर याहवे उन सब प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा जो उसने अपनी पुरानी प्रजा इस्राएल को दी थीं। फिर मसीह (इब्रानी: **Messias**) जीवितों का न्याय करने के लिए प्रकट होगा और अपना राज्य स्थापित करेगा। सामर्थ्य और महिमा के इस राज्य को मसीही नहीं बनाएँगे, बल्कि मसीह स्वयं, जब वह राज्य करने आएगा। इस राज्य के बाद शैतान एक बार फिर बड़ा बहकावा करेगा। उसके बाद ही सब मनुष्यों का अन्तिम न्याय आएगा, जिसे साधारणतः “अन्तिम दिन” कहा जाता है। तब पृथ्वी और आकाश मिट जाएँगे और नए सिरे से सृजे जाएँगे।

परन्तु भविष्यद्वाणी के कालक्रम की अलग-अलग समझ का यह अर्थ आवश्यक नहीं कि हमारे विषय से जुड़ी हर बात में लोग अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँचें। उदाहरण के लिए, पुनरुत्थान के विषय में उसके स्वरूप पर बहुत अधिक सहमति है, परन्तु उसके समय पर नहीं, और इस बात पर भी नहीं कि पुनरुत्थान एक होगा या कई।

साथ दिया गया चित्र पुनरुत्थानों और न्यायों का क्रम दिखाता है। मैं पाठक से निवेदन करता हूँ कि दिए गए बाइबल-पदों को स्वयं पढ़ें।

- नरक¹¹ • नया आकाश और नई पृथ्वी¹⁰ • पिता का घर¹²
- **अनन्त अवस्था**⁹
- □ जगत के युग के अन्त में बड़े श्वेत सिंहासन के सामने **मृतकों** का न्याय⁸
- ▲ हज़ार वर्ष के राज्य के बाद बड़े श्वेत सिंहासन के सामने न्याय के लिए सब अधर्मियों का पुनरुत्थान⁷
- ▲ **पहला पुनरुत्थान** खंड B⁵ क्लेश के समय के शहीद
- □ हज़ार वर्ष के राज्य के आरम्भ में पृथ्वी पर **जीवितों** के न्याय के लिए मसीह का प्रकट होना⁶
- □ स्वर्ग में महिमा पाए हुए विश्वासियों के लिए मसीह का न्याय-आसन⁴
- ▲ **पहला पुनरुत्थान** खंड A² कलीसिया का स्वर्ग में उठा लिया जाना y³
- **यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान**¹

□ = न्याय • : = समय • ▲ = पुनरुत्थान

¹ 1 कुरिन्थियों 15:1-23; प्रेरितों के काम 17:31; ^{2 + 3} 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17; 1 कुरिन्थियों 15:51-54; ⁴ 2 कुरिन्थियों 5:10; 1 कुरिन्थियों 3:13-15; 4:4-5; ⁵ प्रकाशितवाक्य 20:4-6; ⁶ मत्ती 25:31-46; ⁷ प्रकाशितवाक्य 20:5; यूहन्ना 5:29; अय्यूब 14:10-12; ⁸ प्रकाशितवाक्य 20:11-15; 1 कुरिन्थियों 15:24; ⁹ 2 पतरस 3:13; 1 कुरिन्थियों 15:24; ¹⁰ प्रकाशितवाक्य 21:1-

8; ¹¹ मत्ती 18:8; यहूदा 7, 13; प्रकाशितवाक्य 14:11; 20:10; ¹² यूहन्ना 14:2-3; 17:24; 1 थिस्सलूनीकियों 4:17

1.5 पुराने और नए नियम में बाइबल का प्रकाशन

यदि हम पूरे पवित्रशास्त्र की जाँच इस प्रश्न को लेकर करें कि मृत्यु के बाद और अनन्तकाल में मनुष्य की अवस्था कैसी होती है, तो पुराने नियम और नए नियम के बीच बड़े अन्तर दिखाई देते हैं। मुख्य अन्तर प्रकाशन की मात्रा में है, अर्थात् परमेश्वर ने एक ओर पुराने नियम में और दूसरी ओर नए नियम में इन बातों के विषय में किस हद तक बात की है। परलोक और मनुष्य की अमरता के प्रश्न का व्यापक और अन्तिम उत्तर नया नियम ही देता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि पुराने नियम में इस विषय पर कम मिलता है। नहीं, पुराने नियम में तो मृत्यु और शिओल के विषय में नए नियम से भी अधिक कथन हैं। परन्तु पुराने नियम के मनुष्यों के कथनों में प्रायः मृत्यु के विषय में अनिश्चितता और अज्ञान, सन्देह, यहाँ तक कि भय भी झलकता है। इसका कारण यह है कि इन लोगों पर मृत्यु के बाद के जीवन के विषय में बहुत कम प्रकट किया गया था, और उनके पास परमेश्वर के साथ मेल और अनन्त छुटकारे की निश्चितता नहीं थी।

इसके विपरीत नए नियम के विश्वासियों में हम बिलकुल दूसरा रवैया पाते हैं। उनके लिए मृत्यु अब वह नहीं रही जो वह पुराने नियम के बहुत से विश्वासियों के लिए थी। उनके लिए यह अनिश्चितता और अज्ञान अब नहीं है, न ही सन्देह या भय। इस विषय में अय्यूब के कथनों की तुलना प्रेरित पौलुस के कथनों से करके देखिए।

अय्यूब ने कहा: “... इससे पहले कि मैं वहाँ चला जाऊँ (और फिर न लौटूँ), अन्धकार और मृत्यु की छाया के देश में, उस देश में जो अन्धेरे के समान धुँधला है, मृत्यु की छाया और अव्यवस्था के देश में, जहाँ उजियाला भी अन्धकार के समान है!” (अय्यूब 10:21)⁸

परन्तु पौलुस कह सका: “... क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य: सब कुछ तुम्हारा है” (1 कुरिन्थियों 3:22)⁹

यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु के प्रति विश्वासियों का दृष्टिकोण मूल रूप से बदल गया है। मसीही मृत्यु पर विजय और उस विजेता को जानते हैं। यह विजय केवल पुनरुत्थान में ही प्रकट नहीं होती, बल्कि मृत्यु के तुरन्त बाद की अवस्था में भी।

8. यह भी देखें: अय्यूब 14:12; 30:23; 38:17।

9. यह भी देखें: फिलिपियों 1:23; 1 कुरिन्थियों 15:54-56; 2 कुरिन्थियों 4:7-5:10।

1.5.1 नए नियम का प्रकाशन

नया नियम हम पर परलोक के विषय में अधिक क्यों प्रकट करता है? क्योंकि यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु पराजित और निष्फल कर दी गई है, और इस प्रकार एक मौलिक परिवर्तन हुआ है जो अपनी व्यापकता में सब कुछ बदल देता है। यही परिवर्तन सुसमाचार का सन्देश है:

“... जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, हमारे कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपनी ही मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में अनादि काल से हम पर हुआ, परन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रकट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ, जिसने मृत्यु को निष्फल कर दिया, और जीवन और अविनाश [या: अक्षयता] को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया” (2 तीमथियुस 1:9-10)।

लूका ने प्रेरितों के काम में इसी प्रकार कहा:

“... अर्थात् यह कि मसीह को दुःख उठाना होगा, और वही सबसे पहले मरे हुएों में से जी उठकर हमारे लोगों में और अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार करेगा” (26:23)।

पुराने नियम के लेखक उन बातों में स्पष्टता खोजते थे जो यीशु मसीह के कार्य के परिणामस्वरूप ही आ सकती थीं। उनके लिए मृत्यु – कम से कम उनके अपने अनुभव में – अभी मसीह के कार्य के द्वारा निष्फल नहीं की गई थी।¹⁰ वे मृत्यु को उस समय देखते थे जब जीवन और अविनाश अभी प्रकाश में नहीं लाए गए थे। यह केवल प्रकाशन का प्रश्न नहीं था, क्योंकि परमेश्वर के लिए परदा उठा देना तो छोटी सी बात होती। बात इन बातों के उस प्रकाशन की थी जो यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान से जुड़ा है।

परलोक की बातों के पूर्ण प्रकाशन को परमेश्वर के पुत्र के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ी। उससे पहले परलोक की बातों के विषय में केवल थोड़ी सी प्रतिज्ञाएँ या प्रकाशन थे – उनकी तुलना में, जिन्हें हम आज, प्रभु यीशु के आने के बाद, नए नियम के लेखों से जानते हैं (यूहन्ना 3:11-13; इफिसियों 1:3 से आगे; फिलिप्पियों 3:20)।

1.5.2 पुराने नियम का प्रकाशन

पुराने नियम में हमें बहुत भिन्न-भिन्न लेखक और इस कारण अलग-अलग प्रकार के पाठ¹¹ मिलते हैं। एक ओर ऐतिहासिक पुस्तकें हैं, जो अपनी प्रजा के साथ परमेश्वर के व्यवहार का लेखा देती हैं। फिर भविष्यद्वाणी की पुस्तकें हैं, जिनमें परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा अपनी प्रजा और दूसरी जातियों की नैतिक दशा तथा उनके भविष्य के विषय में बात की है।

10. फिर भी पुरानी वाचा के सभी विश्वासी अपनी मृत्यु के बाद स्वर्गीय परादीस में गए, जैसा हम आगे देखेंगे। यह बात उन्हें उनकी मृत्यु से पहले ज्ञात नहीं थी, अर्थात् उन पर प्रकट नहीं की गई थी।

11. इतिहास-लेखन, काव्य, नीतिवचन इत्यादि।

इसके अतिरिक्त काव्य-पुस्तकें भी हैं, जैसे अय्यूब, भजन संहिता और सभोपदेशक, जो विशेष रूप से मानवीय विचारों, अनुभूतियों और भावनाओं को व्यक्त करती हैं।¹² इन अन्तिम तीन पुस्तकों में हमें अपने विषय से संबंधित सबसे अधिक कथन मिलते हैं।

सभोपदेशक कभी-कभी जीवन और संसार का अर्थ केवल क्षैतिज दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास करता है: उसका क्षितिज उससे आगे नहीं जाता जो वह “सूर्य के नीचे” देखता है (1:3; 2:11, 18, 22)। जीवन के अर्थ के प्रश्न पर उसका एक उत्तर यह है:

“क्योंकि जहाँ तक मनुष्यों की और पशुओं की दशा की बात है, दोनों की एक ही दशा है: जैसे एक मरता है, वैसे ही दूसरा भी मरता है, और सब में एक ही श्वास है; मनुष्य पशु से कुछ बढ़कर नहीं, क्योंकि सब कुछ व्यर्थ है। सब एक ही स्थान को जाते हैं; सब मिट्टी से बने हैं, और सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। कौन जानता है कि मनुष्यों का श्वास ऊपर की ओर जाता है, और पशुओं का श्वास नीचे की ओर पृथ्वी में उतर जाता है?” (सभोपदेशक 3:19-21)।

सभोपदेशक ऐसे निष्कर्षों पर पहुँचता है जो केवल इहलोक के दृष्टिकोण से सच हैं। इसलिए इस पुस्तक को परलोक की, या अनन्त बातों की भी, मुख्य गवाह नहीं बनाया जा सकता। भजन संहिता में हमें कुछ ऐसे कथन मिलते हैं जो सभोपदेशक के कथनों से बहुत मिलते-जुलते हैं (उदाहरण के लिए भजन संहिता 49:12; 103:15-16)। ये कथन भी हमें परलोक के विषय में अन्तिम जानकारी नहीं देते।¹³

यदि कोई पुराने नियम को नए नियम से अलग करके देखे, तो उसे ऐसा लग सकता है कि यहाँ विरोधाभास हैं। परन्तु यह धारणा तभी बन सकती है जब हम भूल जाएँ कि पुराने नियम के समय परलोक की बातें केवल आंशिक रूप से प्रकट की गई थीं। ऐसा तर्क, जिसमें पुराने नियम के कथन सबसे प्रबल प्रमाण हों, पूरी सच्चाई प्रस्तुत नहीं कर सकता।

1.5.3 पुराने नियम में भी प्रकाश

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हमारे विषय के संबंध में कोई प्रकाश था ही नहीं। पुराना नियम भी हमें पर्याप्त संकेत देता है कि मृत्यु के साथ सब कुछ समाप्त नहीं हो जाता।

- “अपने लोगों में जा मिला”।¹⁴ सामान्यतः हमारी बोलचाल में भी “इकट्ठा होना” का अर्थ है कई व्यक्तियों को किसी ऐसे काम के लिए एक स्थान पर एकत्र करना जो सब उपस्थित लोगों से संबंध रखता है। जब यही अभिव्यक्ति मरने के लिए भी प्रयोग होती है, तो उसमें कम से कम यह संकेत है कि

12. जब मैं यहाँ कहता हूँ कि इन पुस्तकों की विषय-वस्तु मानवीय विचार हैं, तब भी वे बाइबल की अन्य सभी पुस्तकों के समान पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखी गई हैं और ईश्वरीय उद्देश्य से हमारे लिए लिखी गई हैं।

13. भजन संहिता का स्वरूप अलग है। उनका बड़ा भाग भविष्यद्वाणी के स्वभाव का है। इनकी विशेषता यह है कि ये भविष्यद्वाणियाँ बहुत बार मनुष्यों के विचारों और भावनाओं के रूप में व्यक्त होती हैं। उदाहरण के लिए जिन दुःखों की बात दाऊद करता है, वे परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई में ऐसा रूप ले लेते हैं जो अन्ततः केवल मसीह के दुःखों में ही पूरा हो सकता था।

14. उत्पत्ति 25:8, 17; 35:28-29; यह भी देखें: उत्पत्ति 37:35; न्यायियों 2:10।

- मृतक एक स्थान पर, अर्थात् मृतलोक में – पुराने नियम में शिओल¹⁵ में – एकत्र किए जाते हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि गाड़े जाने या दफन किए जाने को “अपने लोगों में जा मिलने” से अलग बताया गया है।¹⁶ इस प्रकार इतिहास के आरम्भ में ही ऐसे शब्द मिलते हैं जिनका संबंध परलोक से है।
- एन्दोर की भूत-सिद्धि करनेवाली स्त्री और शमूएल की आत्मा (1 शमूएल 28)। इसाएल में यह माना जाता था कि मृतकों को बुलानेवाले किसी मृतक की आत्मा को ऊपर ला सकते हैं। इससे यह पूर्व-धारणा प्रकट होती है कि मृतक की आत्मा किसी न किसी रूप में और कहीं न कहीं अस्तित्व में रहती होगी; कम से कम यह तो माना ही जाता था कि मृतकों की ये आत्माएँ होती हैं। इसके अतिरिक्त परमेश्वर ने मृत्युदंड की चेतावनी के साथ यह मना किया था कि तांत्रिक-गुप्त (ऑकल्ट) ओझाओं के द्वारा मृतकों की आत्माओं से पूछताछ की जाए।¹⁷
 - हनोक (उत्पत्ति 5:24) और एलिय्याह (2 राजाओं 2) का उठा लिया जाना। यद्यपि इन व्यक्तियों के साथ जो हुआ वह एक अपवाद है, फिर भी हम यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि स्वर्ग पर उठाए जाने के बाद ये व्यक्ति कहाँ रहे? ¹⁸ एलिय्याह और मूसा – मूसा स्वाभाविक मृत्यु से मरा था – दोनों रूपान्तर के पहाड़ पर प्रकट हुए और यीशु से बातें करते रहे।¹⁹
 - दाऊद और उसका मरा हुआ बच्चा (2 शमूएल 12:23)। दाऊद ने कहा: “परन्तु अब वह मर गया, फिर मैं उपवास क्यों करूँ? क्या मैं उसे लौटा ला सकता हूँ? मैं तो उसके पास जाऊँगा, परन्तु वह मेरे पास लौटकर नहीं आएगा।”

विश्वासियों की परमेश्वर के साथ संगति और परमेश्वर पर उनका भरोसा उनकी मृत्यु में भी नहीं टूटता। उन कथनों के साथ-साथ, जिनमें मृत्यु का भय व्यक्त होता है, कुछ ऐसे कथन भी हैं जिनमें हम भरोसा, शान्ति और आशा पाते हैं: भजन संहिता 16:9-11; 17:6; 31:5; 49:14-15; 73:24-26; 116:15।

सारांश में हम यह पाते हैं कि पुराना नियम हमें परलोक के विषय में केवल एक सीमा तक जानकारी देता है। इसलिए यदि हम उससे मृत्यु के बाद के जीवन के विषय में निश्चित कथन निकालने का प्रयास करें, तो हम उस प्रकाश को धुँधला कर देंगे जो इस विषय में नए नियम में मिलता है। हम पुराने नियम के कथनों को तभी ठीक से समझेंगे जब हम उनकी जाँच नए नियम के आधार पर करें और उसके प्रकाश में उनकी व्याख्या करें। नया नियम सदा पुराने नियम की कुंजी है, इसका उलटा नहीं।

निम्नलिखित पद में उद्धार के विषय में जो कहा गया है, वह भावार्थ में मनुष्य के भविष्य पर भी लागू हो सकता है। भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत कुछ देखा और लिखा, परन्तु वह एक खोज और छानबीन थी; पूरा ज्ञान उन्हें नहीं दिया गया था:

15. उत्पत्ति 37:35; 42:38; 44:31; गिनती 16:30; 1 शमूएल 2:6।

16. उत्पत्ति 35:29; 2 राजाओं 22:20; 2 इतिहास 34:28।

17. लैव्यव्यवस्था 19:31; 20:6, 27; व्यवस्थाविवरण 18:11।

18. तुलना करें: खंड 2.2।

19. मत्ती 17:3; मरकुस 9:4; लूका 9:30।

“... इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत ढूँढ़-ढाँढ़ और जाँच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वक्ता की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा, जो उनमें था, किस समय या कैसे समय की ओर संकेत करता था, जब वह मसीह के दुःखों की ओर उनके बाद होनेवाली महिमा की पहले ही से गवाही देता था” (1 पतरस 1:10-11)।

इस प्रश्न में पुराने और नए नियम के आपसी संबंध को जर्मनी के मूल संविधान (Grundgesetz), अनुच्छेद 31, के एक सिद्धांत से स्पष्ट किया जा सकता है: “संघीय कानून राज्य के कानून पर प्रबल है”, अर्थात् जब एक ही विषय पर धाराओं की विषय-वस्तु अलग-अलग हो, तो संघीय कानून को प्राथमिकता मिलती है।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- पुराने नियम में “मृत्यु के बाद के जीवन” के विषय में जो प्रकट किया गया है, उसका सारांश दीजिए!
- प्रकाशन की दृष्टि से पुराने और नए नियम में क्या अन्तर है?
- मनुष्य के भविष्य की शिक्षा के लिए पुराने नियम को आधार क्यों नहीं बनाया जा सकता?

1.6 मृत्यु की उत्पत्ति और उसका प्रभाव

अनन्त परमेश्वर के हाथ से,²⁰ जो अकेला अमरता रखता है,²¹ एक ऐसी सृष्टि निकली थी जिसमें कुछ भी इससे अच्छा और सुन्दर नहीं हो सकता था (उत्पत्ति 1:31; सभोपदेशक 3:11)। मनुष्य, जो परमेश्वर के स्वरूप और समानता में सृजा गया था (उत्पत्ति 1:26-27; याकूब 3:9) और इस प्रकार दृश्य सृष्टि का केन्द्र था, अपने सृष्टिकर्ता के साथ संगति में जीने के लिए ठहराया गया था। वह एक अद्भुत वाटिका में रहता था, जो इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए सबसे अनुकूल वातावरण था। वाटिका के बीच में जीवन का वृक्ष था (उत्पत्ति 2:9, 16; 3:22)। अपनी सामर्थ्य और विविधता में जीवन ही सृष्टि की पहचान था। जीवन, और वह भी बिना किसी समय-सीमा के, सबसे बड़ी वस्तु थी जो परमेश्वर ने मनुष्य को दी थी। वह किसी भी समय जीवन के वृक्ष का फल खा सकता था। मनुष्य आरम्भ से ही ऐसे जीवन के लिए बनाया गया था जिसका कोई अन्त न हो। केवल यही परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा के अनुरूप था।

इसलिए मृत्यु की वह चेतावनी और भी गम्भीर है, जो इस स्थिति के लिए दी गई थी कि मनुष्य आज्ञा न मानकर अपने सृष्टिकर्ता पर निर्भरता और उसकी संगति से बाहर निकल जाए (उत्पत्ति 2:17)। जीवन से

20. “इससे पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, या तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है” (भजन संहिता 90:2)। “... सनातन परमेश्वर की आज्ञा से” (रोमियों 16:26)।

21. “... जिसे वह ठीक समय पर दिखाएगा, जो परमधन्य और एकमात्र अधिपति, राजाओं का राजा [शाब्दिक: उनका, जो राजा हैं] और प्रभुओं का प्रभु [शाब्दिक: उनका, जो प्रभुता करते हैं] है, और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है; उसकी प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन” (1 तीमुथियुस 6:15-16)।

भरपूर इस क्षेत्र में मृत्यु की चेतावनी सबसे भयानक चेतावनी थी जो हो सकती थी। मनुष्य के लिए मृत्यु का अर्थ था कि उसे अपने लिए दृश्य सृष्टि – अर्थात् उसका पार्थिव क्षेत्र – छोड़नी पड़ेगी, और इस प्रकार उस सृष्टिकर्ता को भी, जिसे वह इस (दृश्य) सृष्टि के भीतर जानता था। वह मिट्टी से रचा गया था (उत्पत्ति 2:7), और फिर वही बन जाएगा:

“अपने माथे के पसीने की रोटी तू खाया करेगा, जब तक तू पृथ्वी [शाब्दिक: भूमि] में फिर न मिल जाए, क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है। तू मिट्टी तो है, और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा!” (उत्पत्ति 3:19)।

मनुष्य, जो जीवन के लिए सृजा गया था, नष्ट हो जाएगा और अपना पार्थिव जीवन खो देगा, मिट्टी के समान अर्थहीन हो जाएगा। क्या इससे बड़ा विरोधाभास हो सकता है!?

मनुष्य ने सर्प, अर्थात् शैतान, के बहकावे में आकर आज्ञा न मानने को, और इस प्रकार मृत्यु को चुना (उत्पत्ति 3:1-7)। पाप ने मृत्यु के लिए द्वार खोल दिया, ताकि वह इस सृष्टि में अपना भयानक काम आरम्भ करे (रोमियों 5:12 से आगे)। मृत्यु पाप की मज़दूरी है (रोमियों 6:23)। वह परमेश्वर से दूर हो जाने का भयानक परिणाम है। मृत्यु के विषय में बाइबल का यही मूल कथन है। पाप कारण है और मृत्यु उसका अनिवार्य परिणाम। पाप के द्वारा मनुष्य परमेश्वर पर अपनी निर्भरता से बाहर निकल जाता है और इस प्रकार उसे छोड़ देता है जिसके पास जीवन है और जो जीवन देता है।²²

इसलिए मृत्यु न तो जीवन का स्वाभाविक अन्त है और न ही दया से भरा अन्त। मृत्यु में कुछ भी अच्छा नहीं है। मृत्यु उस जीवन का अन्त कर देती है जिसे मनुष्य छोड़ना नहीं चाहता। वह अन्तिम और अटल है, उसे पलटा नहीं जा सकता। मृत्यु से मनुष्य का फिर कभी न लौट पाना (2 शमूएल 12:23; 14:14) उस मनुष्य की भयानक नियति है जो पापी बन गया है। इन्हीं अन्धकारमय सम्भावनाओं के साथ इतिहास की धारा आरम्भ होती है। सारी सृष्टि मृत्यु और नश्वरता के दंड के अधीन आ गई। परन्तु आशा है, क्योंकि स्त्री का वंश एक दिन सर्प के सिर को कुचलेगा और इस प्रकार सारी सृष्टि की स्वतंत्रता का मार्ग खोल देगा (उत्पत्ति 3:15):

“क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की बाट जोह रही है। क्योंकि सृष्टि व्यर्थता [या: नश्वरता, निस्सारता] के अधीन की गई (अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि उसके कारण जिसने उसे अधीन किया), इस आशा पर कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और प्रसव-पीड़ा में पड़ी तड़पती है” (रोमियों 8:19-22)।

22. यूहन्ना 1:4; यह भी देखें: नीतिवचन 14:27; 19:23।

मृत्यु सृष्टि में एक अस्वाभाविक वस्तु के रूप में घुस आई, और वह भी एक ऐसे शत्रु के रूप में जिसे मनुष्य पराजित नहीं कर सकता, और जो क्रूरता और निर्दयता से अपना काम करता है। साधारणतः मनुष्य मृत्यु को ऐसा ही अनुभव करता है। जो मनुष्य परमेश्वर के बिना जीता है, वह मृत्यु के भय से पीड़ित रहता है, क्योंकि वह नहीं जानता कि उसके साथ क्या होनेवाला है, और उसका विवेक भी उस पर दोष लगाता है, जो उसे दोषी ठहराता है और उसमें जीवते परमेश्वर का भय भर देता है (इब्रानियों 2:15)।

आदम और हवा के पाप करने के बाद परमेश्वर ने उन्हें चमड़े के वस्त्र पहिनाए (उत्पत्ति 3:21), ताकि उनका नंगापन ढँक जाए। पहली बार उनका सामना मृत्यु से हुआ। इन वस्त्रों को बनाने के लिए एक पशु को मरना पड़ा। इससे भी कहीं अधिक भयानक वह क्षण था जब उन्होंने अपने मरे हुए पुत्र को देखा, जिसे उसके भाई ने मार डाला था (उत्पत्ति 4:8)। मृत्यु एक विनाशकारी और अजेय शत्रु के रूप में प्रकट होती है। वह बिना रुके अपना विजय-अभियान आरम्भ करती है (होशे 13:14; 1 कुरिन्थियों 15:54)। यद्यपि आदम बहुत लम्बे समय तक जीवित रहा (उत्पत्ति 5:5), फिर भी यह बात सच निकली कि उसे मरना और मिट्टी बनना ही था।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- मृत्यु कहाँ से आती है?
- मृत्यु ने क्या-क्या बिगाड़ा है?

1.7 मरते समय क्या होता है?

यहाँ उस शारीरिक मृत्यु की बात है जो पाप के परिणामस्वरूप मनुष्य के पार्थिव जीवन का अन्त कर देती है। परन्तु मृत्यु के समय होता क्या है? हम पहले ही संकेत कर चुके हैं कि मृत्यु एक अलगाव लाती है और उसे चीरकर अलग कर देती है जो एक साथ होना चाहिए। मृत्यु एक इकाई का, अर्थात् मनुष्य की सम्पूर्णता का, अन्त है।

मनुष्य, यद्यपि एक इकाई है, फिर भी उसके अस्तित्व के बहुत से पहलू हैं। मृत्यु के संबंध में आत्मा, प्राण और देह की बात की जाती है।²³ मृत्यु देह को आत्मा और प्राण से अलग कर देती है; भीतरी मनुष्यत्व को बाहरी मनुष्यत्व से अलग कर देती है (2 कुरिन्थियों 4:16 से आगे)। परमेश्वर का वचन बहुत बार इसकी गवाही देता है।²⁴

23. इस पर विस्तार से देखें: अध्याय 3।

24. यहाँ मेरा उद्देश्य मनुष्य को दो भागों या तीन भागों में बँटा हुआ दिखाना नहीं है। आत्मा और प्राण शब्द प्रायः एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग होते हैं। महत्वपूर्ण यह है कि वे मनुष्य का वह भाग हैं जो मृत्यु के बाद भी बना रहता है और मृत्यु के पार भी मनुष्य के व्यक्तित्व को सुरक्षित रखता है। जब मनुष्य के स्वभाव की बात आती है, तो पवित्रशास्त्र में मनुष्य के मन का भी उतना ही महत्वपूर्ण स्थान है।

1.7.1 मनुष्य की आत्मा और मृत्यु

मनुष्य की मृत्यु पर उसकी आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाती है, जिसने उसे दिया था। यह बात सभोपदेशक भी कहता है, जो बहुत से प्रश्नों का उत्तर इहलोक के दृष्टिकोण से देता है:

“... और मिट्टी ज्यों की त्यों पृथ्वी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास, जिसने उसे दिया, लौट जाएगी” (सभोपदेशक 12:7)।

लूका भी यार्ड की बेटी के जिलाए जाने के अपने वृत्तान्त में इसका उल्लेख करता है:

“परन्तु उसने [यीशु ने] उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, ‘हे लड़की, उठ!’ तब उसकी आत्मा लौट आई और वह तुरन्त उठी; और उसने आज्ञा दी कि उसे कुछ खाने को दिया जाए” (लूका 8:54-55)।

लड़की की आत्मा, जो मृत्यु होने पर उसे छोड़कर चली गई थी, लौट आई। जब कोई मनुष्य मरता है, तो आत्मा देह को छोड़ देती है (भजन संहिता 146:4)। याकूब भी यही कहता है: “जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है” (याकूब 2:26)।

मनुष्य की सृष्टि के समय परमेश्वर ने उसे आत्मा दी (उत्पत्ति 2:7)। जब मनुष्य मरता है, तो परमेश्वर आत्मा को वापस ले लेता है:

“यहोवा जो आकाश का ताननेवाला, पृथ्वी की नींव डालनेवाला और मनुष्य की आत्मा का उसके भीतर रचनेवाला है, यों कहता है” (जकर्याह 12:1)।

“तू मुख फेर लेता है, और वे घबरा जाते हैं; तू उनकी साँस ले लेता है, और उनके प्राण निकल जाते हैं और वे मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। फिर तू अपनी ओर से साँस [शाब्दिक: श्वास (या: आत्मा)] भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है” (भजन संहिता 104:29-30)।

मरना आत्मा का परमेश्वर के हाथों में ग्रहण किया जाना है (भजन संहिता 31:5)। प्रभु यीशु मसीह ने भी, जब वह क्रूस पर मरा, यही कहा। सुसमाचार-लेखक इसका स्पष्ट उल्लेख करते हैं:²⁵

मत्ती: “तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए [शाब्दिक: आत्मा सौंप दी]” (मत्ती 27:50)।

लूका: “और यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, ‘हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ!’ और यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिए” (लूका 23:46)।

25. यीशु ने आत्मा सौंप दी, अर्थात् इस सौंपने का समय उसने स्वयं निर्धारित किया। इसमें वह अनुपम है। उसे अपना प्राण देने का अधिकार था (यूहन्ना 10:18)। सुजे गए प्राणी के रूप में मनुष्य के पास यह अधिकार नहीं है।

यूहन्ना: “जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, ‘पूरा हुआ!’ और सिर झुकाकर अपनी आत्मा सौंप दी” (यूहन्ना 19:30)।

आरम्भ में सृष्टिकर्ता के रूप में उसने मनुष्य में जीवन का श्वास फूँका था, परन्तु क्रूस पर, क्योंकि वह पूर्ण रूप से मनुष्य था, उसने अपनी आत्मा अपने पिता के हाथों में सौंप दी (भजन संहिता 31:5)। वह आत्मा (मरकुस 8:12), प्राण (मरकुस 14:34) और देह के अनुसार मनुष्य था – उसी देह में उसने दुःख उठाया और मरा।

स्तिफनुस ने मरते समय प्रार्थना की: “हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर!” (प्रेरितों के काम 7:59)।

1.7.2 मरते समय प्राण

जब राहेल बिन्यामीन को जन्म देते समय मरी, तब उसका प्राण निकल गया (उत्पत्ति 35:18)। एलिय्याह ने प्रार्थना की कि सारपत की विधवा के मरे हुए लड़के का प्राण लौट आए: “और यहोवा ने एलिय्याह की सुन ली, और बालक का प्राण उसमें फिर आ गया और वह जी उठा” (1 राजाओं 17:22)।

कभी-कभी पुराने नियम में प्राण के मरने की भी बात आती है (उदाहरण के लिए गिनती 23:10; न्यायियों 16:30)। परन्तु इसका अर्थ प्राण की मृत्यु नहीं, बल्कि शरीर की मृत्यु है। बात शरीर से प्राण के निकल जाने की है। यह बात जीवन से “थके हुए” एलिय्याह के शब्दों में स्पष्ट होती है, जब वह झाड़ के पेड़ के नीचे बैठ गया और उसकी सबसे बड़ी लालसा यही थी कि उसका प्राण मर जाए (1 राजाओं 19:4)। उसने प्रभु से विनती की कि उसका प्राण ले ले।

योना ने प्रार्थना की कि यहोवा उसका प्राण उससे ले ले, क्योंकि उसके लिए जीवित रहने से मर जाना ही अच्छा था (योना 4:3)।

हनन्याह और सफीरा के साथ भी और राजा हेरोदेस के साथ भी मृत्यु तब हुई जब उन्होंने “अपना प्राण छोड़ दिया” (प्रेरितों के काम 5:5, 10; 12:23)।²⁶

परमेश्वर ने धनी किसान से न केवल उसका जीवन, बल्कि उसका प्राण भी माँग लिया (लूका 12:20)।

इस प्रकार मरना प्राण का (केवल जैविक जीवन का नहीं!) परमेश्वर के पास ले लिया जाना है, और कभी भी उसका विलय या उसका मिटा दिया जाना नहीं। पवित्रशास्त्र बिना किसी सन्देह के स्पष्ट करता है कि मनुष्य का प्राण मृत्यु में नष्ट नहीं होता, बल्कि जीवित रहता है।

26. यूनानी शब्द *ek-psycho*, जिसका अनुवाद “प्राण छोड़ना” किया गया है, का शाब्दिक अर्थ है “प्राण बाहर निकलना”।

1.7.3 आत्मा और प्राण

उद्धृत पदों में आत्मा और प्राण दोनों उस भाग को दर्शाते हैं जो मृत्यु के समय मनुष्य को छोड़ देता है, ताकि किसी दूसरे स्थान पर जाए या एक “देह-रहित” अवस्था में अस्तित्व में रहे। “आत्मा” और “प्राण” – ये दोनों शब्द बहुत बार समानार्थी रूप में प्रयोग होते हैं; प्रायः वे एक ही बात को दर्शाते हैं। इसलिए जब मैं इस पुस्तक में आगे मनुष्य की आत्मा और प्राण की बात करूँगा, तो इन दोनों शब्दों को मिला दूँगा। मैं “आत्मा-प्राण” शब्द का प्रयोग करूँगा। यह शब्द पवित्रशास्त्र में तो नहीं मिलता, परन्तु इससे बात समझना सरल हो जाता है।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- बताइए कि मृत्यु के समय या मरते समय क्या होता है!
- मनुष्य मृत्यु से क्यों डरते हैं?
- मृत्यु और पाप का आपसी संबंध समझाइए!
- स्पष्ट कीजिए कि मृत्यु के संबंध में एक ओर शैतान और दूसरी ओर प्रभु यीशु क्या भूमिका निभाते हैं!

1.8 मृत्यु के विभिन्न पहलू

मृत्यु का संबंध केवल मनुष्य के शरीर से नहीं है। नया नियम एक आत्मिक मृत्यु की भी बात करता है, जिसमें हर मनुष्य अपने पाप के कारण पड़ा है।²⁷ आत्मिक मृत्यु मनुष्य की आत्मा का “अनस्तित्व” या उसका मिटा दिया जाना नहीं है, बल्कि उसकी आत्मा का परमेश्वर से अलग होना है।

नया नियम “दूसरी मृत्यु” की भी बात करता है।²⁸ “पहली मृत्यु” मनुष्य की शारीरिक मृत्यु को दर्शाती है, जब वह दृश्य संसार को छोड़ता है। अविश्वासियों के लिए उनके पुनरुत्थान के बाद दूसरी मृत्यु आती है। यह मानो जी उठने के बाद दूसरी बार मरना है, जो कभी समाप्त नहीं होगा। दूसरी मृत्यु मनुष्य का अन्तिम रूप से मिटा दिया जाना नहीं, बल्कि परमेश्वर से अन्तिम अलगाव है, जिसमें परमेश्वर की संगति में लौटने का कोई मार्ग नहीं है।

1.9 मृत्यु पर विजय

मनुष्य के पाप के कारण मृत्यु ने संसार में अपना विजय-अभियान आरम्भ किया। परमेश्वर से अलग होकर केवल मृत्यु ही है। मृत्यु पाप पर परमेश्वर का न्याय है। परन्तु क्या परमेश्वर की इच्छा यह है कि मृत्यु का अधिकार बना रहे और मनुष्य आत्मिक, शारीरिक और अन्ततः अनन्त मृत्यु के अधीन रहे? नहीं, पवित्रशास्त्र इस विषय में कहता है:

27. लूका 15:32; यूहन्ना 5:25; इफिसियों 2:1-10; कुलुस्सियों 2:13; 1 यूहन्ना 3:14; यहूदा 12; प्रकाशितवाक्य 3:1।
28. प्रकाशितवाक्य 2:11; 20:6, 14; 21:8।

“यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है, जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को भली-भाँति पहचान लें” (1 तीमुथियुस 2:3-4); और: “प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे?” (यहेजकेल 18:23)।

1.9.1 मृत्यु और पाप

जीवन देने के लिए मृत्यु की समस्या का समाधान आवश्यक था। उद्धारकर्ता परमेश्वर ने, जो मृत्यु और पाप के अधीन पड़े मनुष्य के उद्धार की खोज में था (तीतुस 2:11; 3:4), एक मार्ग निकाला। सनातन परमेश्वर (रोमियों 16:26), जो अपने आप में जीवन रखता है (यूहन्ना 5:26), जो ज्योति (1 यूहन्ना 1:5) और प्रेम (1 यूहन्ना 4:8) है, यीशु मसीह के व्यक्तित्व में जीवन की ज्योति के साथ (यूहन्ना 1:4; 8:12) मृत्यु के देश में चमकता है:

“जो लोग अन्धकार में बैठे थे, उन्होंने बड़ी ज्योति देखी, और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी” (मत्ती 4:16; यशायाह 9:2 से उद्धरण)।

यद्यपि इस पद में इस्राएल जाति का वर्णन है, फिर भी मूल रूप से यह बात सब मनुष्यों पर लागू होती है। जब समय पूरा हुआ, तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा (गलातियों 4:4; इब्रानियों 1:1), ताकि मृत्यु पर विजय पाए। परमेश्वर के पुत्र ने विजय प्राप्त कर ली है। क्रूस पर अपना कार्य पूरा करने और अपने पुनरुत्थान के बाद उसने कहा: “मैं प्रथम और अन्तिम और जीवित हूँ; मैं मर गया था, और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूँ, और मृत्यु और हेडीस की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं” (प्रकाशितवाक्य 1:17-18)। इन शब्दों से पहचाना जा सकता है कि यहाँ स्वयं परमेश्वर बोल रहा है, क्योंकि ये शब्द केवल परमेश्वर पर ही लागू होते हैं (प्रकाशितवाक्य 1:8; 2:8; 22:13)। यह वही परमेश्वर है जिसने पुराने नियम में अपने आप को प्रकट किया (यशायाह 41:4; 44:6; 48:12)।

पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में प्रभु यीशु के पास मृत्यु पर अधिकार था। लाजर (यूहन्ना 11), नाईन के जवान (लूका 7:11-14) और यार्ईर की बेटी (लूका 8:49-56) को जिलाकर उसने इसे प्रमाणित किया। मृतकों को जिलाना इस बात का प्रमाण था कि वह जीवन का कर्ता (प्रेरितों के काम 3:15) और इस प्रकार स्वयं परमेश्वर है।

मसीह के परमेश्वरत्व के समान ही यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि वह मनुष्य है। वह मनुष्य बना, ताकि पापियों के स्थान पर मर सके। वह पाप के लिए बलिदान होकर मरा। उसे एक क्रब्र में रखा गया। तीन दिन के बाद परमेश्वर ने उसे जिलाया। पुनरुत्थान में अब मनुष्य के रूप में उसके पास अविनाशी जीवन है (इब्रानियों 7:16)। इसलिए जी उठे और महिमा पाए हुए मनुष्य के रूप में मृत्यु और हेडीस की कुंजियाँ उसके पास हैं। कुंजी अधिकार का चित्र है।²⁹ मनुष्य यीशु मसीह के पास मृत्यु पर और हेडीस, अर्थात्

²⁹ नलजा कर्जे: गल्फाशिनताका 2:7-9:10-11; घन्नी 16:10-18:18; गशायाह 22:22।

मृतलोक, पर अधिकार है। मृत्यु अब उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती (रोमियों 6:9-10)। इसलिए मृत्यु उनका भी कुछ नहीं बिगाड़ सकती जो उससे जुड़े हुए हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने मन फिराकर उसकी ओर रुख किया है और जिनके पास उसका जीवन, जी उठे हुए का जीवन, है।

मनुष्यों को सदा के लिए मृत्यु से छुड़ाने के लिए परमेश्वर को स्वयं मनुष्य बनना और मरना पड़ा। इसके द्वारा पाप का प्रश्न भी सुलझ गया, और पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु पर भी विजय पाई गई। कैसी ईश्वरीय विजय!

यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, वह पवित्र था, अर्थात् वह जो स्वयं परमेश्वर पवित्र आत्मा से उत्पन्न हुआ (लूका 1:35)। इसलिए उसके जीवन में कोई पाप नहीं था (1 यूहन्ना 3:5), न शब्दों में, न विचारों में, न कामों में (2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 2:22)। इस कारण उस पर वह लागू नहीं होता था जो सब दूसरे मनुष्यों पर लागू होता है: उसे मरने की आवश्यकता नहीं थी। जब वह मरा, तो अपनी इच्छा से मरा। उसे अपना प्राण देने का अधिकार था, और उसे मृत्यु में से फिर लेने का भी अधिकार था (यूहन्ना 10:17-18)।

यह हमें फिर मृत्यु और पाप के आपसी संबंध पर ले आता है। पाप ने मृत्यु को उत्पन्न किया। मृत्यु की समस्या साथ ही पाप की समस्या भी है। इसलिए पहले इस कारण का समाधान करना आवश्यक था। आरम्भ में कहा गया था कि परमेश्वर ज्योति है, अर्थात् वह पूर्ण रूप से पवित्र है। वह पाप को देख नहीं सकता (हबक्कूक 1:13) और उसे बिना दंड के नहीं छोड़ सकता। परमेश्वर पापी को उसके पाप के साथ स्वीकार नहीं कर सकता और उसे जीवन नहीं दे सकता, जब तक उसके पापों का प्रायश्चित्त न हो। इसलिए मसीह, परमेश्वर का मेम्ना (यूहन्ना 1:29), मरा। उसने पापी के स्थान पर पाप पर परमेश्वर का क्रोध सहा (2 कुरिन्थियों 5:21)। मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर की माँगें पूरी हो गई हैं। उसकी पवित्रता की पूरी तरह पूर्ति हो गई है।

मसीह की मृत्यु, जिसने प्रायश्चित्त पूरा किया, किसी साधारण मनुष्य की मृत्यु नहीं थी। मसीह की मृत्यु पाप पर परमेश्वर का न्याय थी। वह, जो पवित्र था, पाप ठहराया गया। उसने परमेश्वर की ओर से पाप के लिए दुःख उठाया। हमारी शान्ति के लिए ताड़ना उस पर पड़ी। परमेश्वर ने निर्दोष को हमारे पापों के लिए दंड दिया। इसलिए जो मृत्यु मनुष्य पाप की मज़दूरी के रूप में पाता है, वह केवल शारीरिक मृत्यु नहीं, बल्कि अन्ततः अनन्त मृत्यु भी है। जो दंड अनन्त मृत्यु में, परमेश्वर से अनन्त अलगाव में है, उसे मसीह ने क्रूस पर सहा, ताकि हमें, जो विश्वास करते हैं, सदा के लिए उससे छुड़ाए।

जब मसीह तीन दिन के बाद जी उठा, तो उसने अपनी ही ईश्वरीय सामर्थ्य से मृत्यु के बन्धन तोड़ डाले। मसीह जी उठा है, पाप का प्रायश्चित्त हो गया है, और मृत्यु पराजित हो गई है। उसने पाप और मृत्यु की शक्ति को तोड़ दिया है (रोमियों 5:12-21)। यही पुनरुत्थान के सन्देश का केन्द्र है। यही मृत्यु के राज्य का अन्त है!

परन्तु इस विजय का अर्थ यह नहीं कि मृत्यु अभी से हटा दी गई है और संसार से निकाल दी गई है। मृत्यु अब भी संसार में राज्य करती है। विश्वासी भी, जिनके पास मसीह का पुनरुत्थान का जीवन है, अब भी मरते हैं। फिर भी विश्वासियों के लिए मृत्यु की शक्ति छीन ली गई है। “निष्फल करना” का अर्थ है “प्रभावहीन” और “शक्तिहीन करना”। संसार में मृत्यु पाप के द्वारा अब भी राज्य करती है, परन्तु विश्वासी मृत्यु की शक्ति से स्वतंत्र है। उसके लिए मृत्यु का अर्थ अब न्याय नहीं, बल्कि महिमा में प्रवेश है। इब्रानियों 2:14-15 इन विचारों का सारांश देता है:

“इसलिए जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उसी प्रकार उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को, निकम्मा कर दे, और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले।”

1.9.2 मृत्यु और शैतान

इसका क्या अर्थ है कि शैतान के पास मृत्यु की शक्ति है? क्या शैतान अपनी इच्छा से मनुष्यों को मार सकता है? क्या वह मृत्यु पर अधिकार रखता है? यह असम्भव है, क्योंकि परमेश्वर सब मनुष्यों का जीवन अपने हाथ में रखता है और जब चाहता है उसे वापस ले लेता है। शैतान ऐसा नहीं कर सकता, परन्तु मृत्यु की शक्ति उसके पक्ष में उसके सहयोगी के रूप में है। शैतान ने अपनी धूर्त परीक्षा के द्वारा मनुष्य को पाप की ओर बहकाया और इस प्रकार उसे मृत्यु की शक्ति के अधीन कर दिया। यही उसका लक्ष्य था।

इस प्रकार शैतान ने मनुष्य पर प्रभाव प्राप्त किया। वह इस संसार का ईश्वर (2 कुरिन्थियों 4:4) और इस युग का सरदार (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11) बन गया। इस संसार में मृत्यु और अन्धकार की शक्ति राज्य करती है, और शैतान आरम्भ से हत्यारा है (यूहन्ना 8:44; 1 यूहन्ना 3:8)। फिर से कहें: उसके पास मारने की शक्ति नहीं है, परन्तु वह एक कपटी बहकानेवाले के रूप में हत्या करता है, क्योंकि वह मनुष्य को जीवन के सोते, परमेश्वर से दूर ले जाता है। बहकावे का यह विष उसे आत्मिक और शारीरिक रूप से मार डालता है, और वह भी अनन्तकाल के लिए। हर मनुष्य जो परमेश्वर के बिना मरता है, सदा के लिए उसका शिकार है। इस अर्थ में मृत्यु शैतान के लिए काम करती है और उसके दुष्ट उद्देश्यों में उसका साथ देती है।

परन्तु मसीह ने शैतान को निकम्मा कर दिया है, क्योंकि वह उसके अधिकार-क्षेत्र, अर्थात् मृत्यु, में प्रवेश कर गया और अपने पुनरुत्थान के द्वारा विजय प्राप्त कर ली। उसकी क्रूस की मृत्यु शैतान पर विजय है (कुलुस्सियों 2:15)।

शैतान मिटाया तो नहीं गया, परन्तु उसे करारी हार झेलनी पड़ी है। वह अब भी जीवित है और आरम्भ के समान अब भी सक्रिय है। परन्तु शैतान और मृत्यु का अन्त पहले से ही निश्चित किया जा चुका है।

यीशु की विजय अभी केवल उन्हीं के लिए है जो मसीह से जुड़े हुए हैं। वे मृत्यु के भय से स्वतंत्र हैं, क्योंकि उनके लिए मृत्यु एक पराजित शत्रु है। प्रेरित पौलुस के शब्दों के अनुसार (1 कुरिन्थियों 3:22)

मृत्यु अब तो उनकी हो गई है, क्योंकि वह उन्हें मसीह के पास परादीस में पहुँचा देती है। जब यह कहा जाता है कि विश्वासियों के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं (रोमियों 8:28), तो मृत्यु भी इससे बाहर नहीं है।

उन सब के लिए जो मृत्यु के विजेता को नहीं जानते, मृत्यु का भय जीवन भर का दासत्व बन सकता है। मृत्यु के सामने मनुष्यों में मृत्यु का भय सबसे अधिक तब होता है जब उनका विवेक बिना प्रायश्चित के अपराध के विषय में जाग उठता है और उन पर दोष लगाता है। इसलिए इब्रानियों 2:14-15 के पदों में लेखक ने विशेष रूप से उनके विषय में सोचा होगा जो व्यवस्था के दासत्व में थे और जिनके पास अपने पापों की क्षमा की निश्चितता नहीं थी।

यीशु मसीह की विजय ने मृत्यु के और मृत्यु के भय के दासत्व को तोड़ दिया है। पाप, मृत्यु और शैतान प्रभु यीशु मसीह की प्रायश्चित की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा पराजित हो चुके हैं। यही इस बात का आधार है कि शीघ्र ही पाप सृष्टि से हटा दिया जाएगा (यूहन्ना 1:29; इब्रानियों 9:26) और मृत्यु अन्तिम शत्रु के रूप में नाश की जाएगी (प्रकाशितवाक्य 20:14)।

“सबसे अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा, वह मृत्यु है” (1 कुरिन्थियों 15:26)।

“और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा: ‘जय ने मृत्यु को निगल लिया।’ ‘हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?’” (1 कुरिन्थियों 15:54-55; तुलना करें: यशायाह 25:8; होशे 13:14)।

“परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करे” (1 यूहन्ना 3:8)।

उसने सचमुच यह किया है और वह इसे पूरा करेगा! प्रभु धन्य हो!

2 मृत्यु के बाद क्या आता है?

मृत्यु के बाद से पुनरुत्थान तक मनुष्य की अवस्था के विषय में पवित्रशास्त्र बहुत अधिक नहीं कहता। बल्कि वह हमारी आशा को पूर्णता के दिन की ओर मोड़ता है। मसीहियों की आशा प्रभु यीशु मसीह के आगमन पर टिकी है, जब वह अपनी प्रजा को स्वर्गीय घर में ले जाएगा। इस धन्य आशा के सामने मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच का जीवन पीछे रह जाता है।

ऐसा होना स्वाभाविक भी है, क्योंकि हमारी आशा मृत्यु के साथ पूरी नहीं होती। हम अपने अन्तिम लक्ष्य तक मृत्यु के द्वारा नहीं, बल्कि पुनरुत्थान के समय ही पहुँचते हैं। फिर भी मध्यवर्ती अवस्था अन्तिम लक्ष्य से पहले का अन्तिम पड़ाव है, और यह एक धन्य समझ है, जिसमें पूर्णता का पूर्वस्वाद पहले ही से है।

जब मृत्यु के बाद के जीवन की बात होती है, तो हम एक समय-सीमित मध्यवर्ती अवस्था की बात करते हैं। जिस प्रश्न की मैं आगे जाँच करना चाहता हूँ, वह यह है: मृत्यु के बाद मनुष्य की चेतना की अवस्था कैसी होती है? इसमें मैं कई बार उस दृष्टिकोण का सामना करूँगा जो मृत्यु के बाद हर प्रकार की चेतना का और सामान्य रूप से परलोक का इनकार करता है।

इन प्रश्नों की जाँच मैं अब 11 बिन्दुओं में करूँगा, और इसके लिए नए नियम के महत्वपूर्ण पदों पर विचार करूँगा। हर अध्याय अपने आप में इतना विस्तृत है कि उसे अलग से भी प्रयोग किया जा सकता है। इसलिए कहीं-कहीं कुछ बातें दोहराई जा सकती हैं।

2.1 लाजर और धनवान

जब मृत्यु के बाद के जीवन की बात आती है, तो बहुत से लोग निश्चय ही सबसे पहले इसी प्रसिद्ध कहानी के बारे में सोचते हैं। इसे सदा इसी अर्थ में समझा भी गया है। फिर भी व्याख्या के ऐसे प्रयास हैं जो इस कहानी को मृत्यु के बाद के जीवन से पूरी तरह अलग कर देते हैं, मानो वह इस विषय में कुछ कहती ही न हो। मैं एक ओर इसका अर्थ स्पष्ट करूँगा, और दूसरी ओर गलत व्याख्याओं पर भी अपनी राय दूँगा।

“एक धनी मनुष्य था, जो बैजनी वस्त्र और महीन मलमल पहनता था और हर दिन आनन्द और ठाठ-बाट से जीवन बिताता था। और लाजर नाम का एक कंगाल, जिसका शरीर फोड़ों से भरा था, उसके द्वार पर पड़ा रहता था; वह लालसा करता था कि धनी की मेज़ से जो कुछ गिरे, उसी से भूख मिटाए; यहाँ तक कि कुत्ते भी आकर उसके फोड़ों को चाटते थे। फिर ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूत उसे उठाकर इब्राहीम की गोद में ले गए। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। और हेडीस में, जब वह पीड़ा में था, उसने अपनी आँखें उठाई और दूर से इब्राहीम को और उसकी गोद में लाजर को देखा। तब उसने पुकारकर कहा, ‘हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर, और लाजर

को भेज दे कि अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।’ परन्तु इब्राहीम ने कहा, ‘हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अपनी अच्छी वस्तुएँ पा चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएँ; परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़, हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है, कि जो यहाँ से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके।’ उसने कहा, ‘तो हे पिता, मैं तुझ से विनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; वह उन्हें गम्भीर चेतावनी दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आएँ।’ इब्राहीम ने उससे कहा, ‘उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं; वे उनकी सुनें।’ उसने कहा, ‘नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुआओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।’ उसने उससे कहा, ‘जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुआओं में से कोई जी भी उठे, तौभी उन्हें विश्वास नहीं होगा।’” (लूका 16:19-31; जर्मन एल्बरफ़ेल्डर अनुवाद से अनूदित)।

2.1.1 क्या यहाँ मृत्यु के बाद के जीवन की बात है?

निम्नलिखित कारण स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि यहाँ मृत्यु के बाद के जीवन की बात है:

- इस कहानी का सबसे बड़ा भाग, जो दो-तिहाई से भी अधिक है, उन बातों का वर्णन करता है जो दोनों व्यक्तियों की मृत्यु के “बाद” होती हैं। दोनों व्यक्तियों के पुनरुत्थान की कोई बात नहीं है।
- “हेडीस” (यूनानी: *hadēs*; हिन्दी बाइबल में ‘अधोलोक’), जहाँ धनवान मृत्यु के बाद अपनी आँखें उठाता है, और “इब्राहीम की गोद”, जिसमें कंगाल को मृत्यु के बाद ले जाया जाता है – दोनों मृत्यु के पार के स्थानों या अवस्थाओं को दर्शाते हैं। इन शब्दों की कोई और व्याख्या नहीं की जा सकती।
- यहूदी इन शब्दों से परिचित थे। उनकी परंपरा में परलोक के ये या इनसे मिलते-जुलते वर्णन उनके लिए जाने-पहचाने थे।
- धनवान मृत्यु की अवस्था में था, जब उसके भाई अभी जीवित थे। भाई एक ही समय में अस्तित्व में हैं – कुछ पृथ्वी पर, और एक हेडीस में।³⁰

यहाँ परमेश्वर का पुत्र परदा हटाता है और वह बात प्रकट करता है जो तब तक पुराने नियम के लेखों में प्रकट नहीं की गई थी।

2.1.2 इस कहानी का अर्थ

जब हम कहते हैं कि इस कहानी में मृत्यु के तुरन्त बाद की अवस्था की बात है, तो इससे हम न तो संदर्भ (अन्य दृष्टान्तों) को अनदेखा करते हैं और न ही उन व्यक्तियों को – फरीसियों को – जिन्हें यह कहानी सीधे संबोधित करती है। इस कहानी में यीशु धनवान के वैभव-प्रेम और स्वार्थ को उसकी भयानक सीमा तक

30. इसलिए इस संसार की धारा में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, जैसे परमेश्वर के राज्य का आरम्भ या पुनरुत्थान।

दिखाता है। धनवान को व्यवस्था का खुला उल्लंघन करनेवाले के रूप में नहीं दिखाया गया है, क्योंकि उसका पाप इसमें नहीं था, और न ही फरीसियों का पाप। उनका पाप, अर्थात् धन का लोभ, भक्ति के कपटी आवरण के नीचे छिपा हुआ था (लूका 16:14)। धन के लोभ (1 तीमथियुस 6:10) के परिणाम अनन्तकाल तक पहुँचते हैं, और वे मृत्यु के तुरन्त बाद ही आरम्भ हो जाते हैं। यही इस कहानी का विषय है।

फरीसियों ने अधर्मी भंडारी की कहानी, जो प्रभु के चेलों के लिए थी (लूका 16:1), कुछ

दूरी से सुन ली थी (लूका 16:14)। क्योंकि इस पर उन्होंने प्रभु का ठट्ठा किया, इसलिए उसने सीधे उन्हें संबोधित किया। उन्हें एक विशेष रूप से गम्भीर और स्पष्ट शिक्षा मिली। यीशु ने धनवान के व्यवहार के द्वारा उनसे बात की।

यह शिक्षा फरीसियों के धन के लोभ को डॉटने तक ही सीमित नहीं है। यह चेतावनी इस बात पर भी समाप्त नहीं होती कि सब मनुष्य, चाहे धनी हों या कंगाल, एक दिन मरेंगे; बल्कि यह विशेष रूप से उस बात की ओर संकेत करती है जो उसके बाद आती है। इसलिए कहीं अधिक बड़ा भाग मृत्यु के पार की घटनाओं से, विशेषकर धनवान की नियति से, संबंध रखता है। दोनों की मृत्यु के बाद की घटनाएँ कोई अर्थहीन ढाँचा नहीं हैं, जिसमें धन के विषय में कोई शिक्षा रख दी गई हो; बल्कि वे इस कहानी की मुख्य विषय-वस्तु हैं।

2.1.3 एक दृष्टान्त?

इस प्रश्न पर बहुत कुछ कहा गया है कि यह कहानी एक दृष्टान्त है या नहीं। कुछ लोग ज़ोर देते हैं कि यह एक दृष्टान्त है, जिसका उद्देश्य न तो शिक्षा-संबंधी कथन देना है और न ही ऐसी बातें प्रकट करना जो पहले ज्ञात नहीं थीं। उनका कहना है कि किसी दृष्टान्त के हर विवरण की व्याख्या भी नहीं की जा सकती, क्योंकि उसमें केवल एक मुख्य विचार होता है। यहाँ वह मुख्य विचार फरीसियों के धन के लालच और धन के बुरे उपयोग को डॉटना है। यही, न कि मृत्यु के बाद का जीवन, इसका मुख्य कथन है – ऐसा वे कहते हैं।

लूका इस कहानी को दृष्टान्त नहीं कहता। शायद हम उससे यह आशा करते, क्योंकि वह अपने सुसमाचार में ग्यारह से कम बार दृष्टान्तों की बात नहीं करता। इसके दृष्टान्त न होने का सबसे प्रबल तर्क यह है कि इसमें एक व्यक्तिवाचक नाम, अर्थात् लाजर, का प्रयोग हुआ है, जो दृष्टान्तों में अन्यत्र कभी नहीं होता। यह व्यक्तिवाचक नाम – लाजर एक जाना-पहचाना नाम था (देखें: यूहन्ना 11) – संकेत करता है कि यहाँ एक ऐसी घटना की बात है जो वास्तव में घटी थी।

यीशु ऐसे शब्दों का प्रयोग क्यों करता है जो स्पष्ट रूप से परलोक के लिए प्रयोग होते थे? इसके द्वारा उसने फरीसियों को ठीक उनकी अपनी धारणाओं में, अर्थात् परलोक के विषय में उनके विश्वास में, पकड़ लिया; फिर भी उन्होंने इस बात की गम्भीरता को अपने ऊपर लागू नहीं किया।

2.1.4 मृत्यु से पहले

केवल पहले तीन पद पार्थिव जीवन का वर्णन करते हैं (लूका 16:19-21), और इनमें ठीक वही बात है जो मृत्यु के बाद दोनों व्यक्तियों के जीवन के लिए निर्णायक थी। धनवान, जिसका नाम नहीं बताया गया, स्वार्थ में जीता था। उसके वस्त्र सबसे उत्तम थे। चाहे वह अपने धन को परमेश्वर की आशीष ही समझता रहा हो, फिर भी परमेश्वर, जो हर दान का देनेवाला है, उसके जीवन में नहीं था। वह पड़ोसी से प्रेम करना जानता ही नहीं था, यह बात कंगाल के प्रति उसके व्यवहार से स्पष्ट होती है। कंगाल धनवान के घर के प्रवेश-द्वार पर कुत्तों के साथ एक जैसी दशा में था; वहाँ वह भिखारी का दयनीय जीवन बिताता था और धनवान के बचे-खुचे भोजन पर जीता था। धनवान का पाप उसका धन नहीं था, बल्कि उसका स्वार्थ था, जिसके कारण उसने कंगाल पर ध्यान नहीं दिया, यद्यपि वह शायद उसे प्रतिदिन देखता था। स्पष्ट है कि कुत्तों ने लाजर पर धनवान से अधिक दया दिखाई।

धनवान के विपरीत कंगाल का नाम बताया गया है। लाजर का अर्थ है “परमेश्वर सहायता है”। इसी नाम में कंगाल के जीवन-दृष्टिकोण की कुंजी है। उसे परमेश्वर से सहायता मिली, जिस पर वह अपनी कंगाली में पूरी तरह निर्भर था। फिर भी उसकी कंगाली ने उसे मृत्यु के बाद इब्राहीम की गोद में नहीं पहुँचाया, बल्कि परमेश्वर पर उसके भरोसे ने।

हर मनुष्य के समान इन दोनों के लिए भी वह दिन आया जब उन्हें पृथ्वी से विदा लेनी पड़ी। दोनों एक जैसी मृत्यु मरे। धनवान का अन्तिम संस्कार हुआ, कंगाल के अन्तिम संस्कार का उल्लेख नहीं है। परन्तु उनकी मृत्यु के साथ ही सब बातें अचानक दूसरे प्रकाश में दिखाई देने लगती हैं।

जब कोई मनुष्य मरता है, तो सत्य की घड़ी आती है, जिसमें उस पर प्रकट हो जाता है कि वास्तव में क्या मायने रखता है और मृत्यु के बाद भी क्या बना रहता है। तब न आत्म-छल रहता है, न अविश्वास;

तब मनुष्य उन प्रमाणों के बारे में नहीं पूछता जो वह जीवन भर माँगता रहा, जब भी उससे मृत्यु के बाद के जीवन की बात की गई।

यीशु बताता है कि मृत्यु के बाद दोनों के बीच का अन्तर उनके पार्थिव जीवन की तुलना में कहीं अधिक बड़ा है। पासा पलट गया है, क्योंकि कंगाल आशीष के स्थान पर है और उसे पार्थिव जीवन से विदा होने का कोई दुःख नहीं। स्वर्गदूत, जो उद्धार के उत्तराधिकारियों की सेवा के लिए भेजी गई सेवक आत्माएँ हैं (इब्रानियों 1:14), लाजर को उसकी मृत्यु के क्षण ही इब्राहीम की गोद में ले जाते हैं।

2.1.5 यहूदियों में परलोक की धारणा

यह सामान्य रूप से माना जाता है कि प्रभु यीशु यहाँ अपने सुननेवालों की उस धारणा से बात आरम्भ करता है, जिसे वह स्वयं एक यहूदी के रूप में जानता था। इसलिए उस समय की परलोक-संबंधी धारणा को संक्षेप में समझाना सहायक है।

यहूदी विश्वास करते थे कि मृतकों के प्राण या आत्माएँ शिओल में जाती हैं। यह मृतलोक है, जो पुनरुत्थान की प्रतीक्षा में केवल एक अस्थायी निवास-स्थान है। वे यह भी विश्वास करते थे – और यह पुराने नियम की बाइबल-गवाही से आगे की बात थी – कि वहाँ धर्मियों और अधर्मियों के बीच विभाजन है। एक ओर के लोग परम आनन्द में थे, और दूसरी ओर के लोगों को दंड और प्रतिफल मिलता था। इसलिए उनके लिए यह कोई प्रश्न ही नहीं था कि मृतकों की पूरी चेतना बनी रहती है, क्योंकि नहीं तो आशीष और दंड अर्थहीन हो जाते।

इतिहासकार जोसीफ़स (Flavius Josephus) फरीसियों के विश्वास का वर्णन इस प्रकार करता है: “वे यह भी मानते हैं कि प्राण अमर हैं, और कि वे – इस पर निर्भर करते हुए कि मनुष्य सद्गुणी रहा या दुराचारी – पृथ्वी के नीचे प्रतिफल या दंड पाते हैं, यहाँ तक कि दुराचारियों को अनन्त क्रैद में घुलना पड़ता है।”³¹ इस पृष्ठभूमि में फरीसियों के लिए इस कहानी को समझना कठिन नहीं था। यीशु ने मृत्यु के बाद मनुष्य के जीवन और अस्तित्व की

बात की, और इस बात की भी कि यह अस्तित्व पृथ्वी पर के जीवन से कैसे निर्धारित होता है।

मेरा उद्देश्य यह जाँचना नहीं है कि फरीसी इस धारणा तक कैसे पहुँचे, जो पुराने नियम से आगे जाती है। महत्वपूर्ण यह है कि यह विश्वास पुराने नियम के विरुद्ध नहीं है। प्रभु यीशु इस धारणा की निन्दा भी नहीं करता और न उसे सुधारता है, बल्कि इस धारणा के मूल विचार³² से बात आरम्भ करता है, और साथ ही ईश्वरीय सर्वज्ञता से यह प्रकट करता है कि मृत्यु के बाद क्या आता है।

परमेश्वर का पुत्र यहाँ स्पष्ट करता है – और वह भी यहूदी और यूनानी दर्शन से प्रभावित हुए बिना – कि मृत्यु के बाद जीवन है, आनन्द में भी और पीड़ा में भी। जो यीशु मसीह को मानता है, वह उसके व्यक्तित्व पर प्रश्न उठाए बिना इन शब्दों का अर्थ बदल नहीं सकता।

2.1.6 इब्राहीम की गोद

इब्राहीम की गोद एक विशिष्ट यहूदी अभिव्यक्ति है। सुननेवाले इससे परिचित थे। बाइबल में यह अभिव्यक्ति केवल एक बार आती है। इब्राहीम की गोद आशीष का वह स्थान थी, जहाँ धर्मी को उसकी मृत्यु के बाद ग्रहण किया जाता था। “धर्मियों की गोद” अभिव्यक्ति भी यहूदियों के लिए मृत्यु के पार के एक स्थान को दर्शाती थी। परमेश्वर का मित्र इब्राहीम यहाँ केन्द्र में है। कि इब्राहीम अपनी मृत्यु के बाद भी जीवित रहा, यह यहूदियों के लिए कोई प्रश्न नहीं था (लूका 20:27-40)। यहूदी के लिए इब्राहीम की गोद एक सम्मान का स्थान थी, जिसे वह अपनी मृत्यु के बाद हर हाल में पाना चाहता था। यह स्थान संगति, निकटता और आनन्द की ओर संकेत करता है (यूहन्ना 1:18; 13:23)।

31. Flavius Josephus, *Jüdische Altertümer*, 18वीं पुस्तक, अध्याय 1.3., Wiesbaden (Fourier Verlag), 1985, पृ. 506, 507।

32. मैं जानबूझकर “मूल विचार” की बात करता हूँ, क्योंकि उस समय के विचार-जगत में बहुत अधिक कल्पनाएँ थीं, जिनकी पुष्टि लूका 16 नहीं करता।

प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा केवल यहूदियों के लिए नहीं है, चाहे उसने उनकी धारणा से बात आरम्भ की हो; नए नियम के दूसरे वचनों के अनुरूप यह मूल रूप से सब मनुष्यों पर लागू होती है। इसलिए “इब्राहीम की गोद” को “परादीस” भी कहा जा सकता है। यह विचार भी यहूदियों के लिए अनजाना नहीं था। उदाहरण के लिए “श्रेष्ठगीत का तर्जुम”³³ में इसकी झलक मिलती है, जहाँ कहा गया है कि दिवंगत धर्मियों के प्राण स्वर्गदूतों के द्वारा परादीस में ले जाए जाते हैं।

इब्राहीम की गोद, जैसा कि कभी-कभी दावा किया जाता है, परमेश्वर का आनेवाला राज्य नहीं है। यद्यपि एक दूसरे स्थान पर इस राज्य में कुलपिताओं के साथ भोज की बात की गई है (मत्ती 8:11), परन्तु वह पृथ्वी पर होगा। यहाँ उसकी बात नहीं है। इस कहानी में हम देखते हैं कि लाजर और धनवान पृथ्वी पर नहीं, बल्कि दृश्य संसार के बाहर हैं। उसी समय धनवान के पाँच भाई अभी पृथ्वी पर जी रहे थे। धनवान तो यही चाहता था कि मरे हुएओं में से कोई उन्हें चेतवनी देने भेजा जाए, क्योंकि स्पष्ट है कि वे वैसे ही जी रहे थे जैसे वह कभी जीता था।

2.1.7 लाजर इब्राहीम की गोद में कैसे पहुँचा?

जब कोई मनुष्य मरता है, तो उसका आत्मा-प्राण जीवित रहता है, जबकि देह नष्ट हो जाती है। परन्तु इस कहानी में लाजर को एक पूरे मनुष्य के रूप में दिखाया गया है, जिसे इब्राहीम की गोद में ले जाया गया। यह नहीं कहा गया कि केवल उसका आत्मा-प्राण वहाँ ले जाया गया। यह कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि जो प्राण कूच कर गए हैं, उनके विषय में सदा इस प्रकार बात की जाती है मानो वे शारीरिक जीवन की अवस्था में हों। कूच कर गए लोगों की अनुभूतियों और जीवन के प्रकटीकरणों का वर्णन भाषा या चित्रों में इसके सिवा और किसी प्रकार नहीं किया जा सकता, जैसा प्रभु यीशु यहाँ करता है और जैसा शारीरिक जीवन की वास्तविकता के अनुरूप है।

दोनों की मृत्यु के बाद की घटनाओं का वर्णन मृत्यु से पहले के उनके जीवन के वर्णन से अलग नहीं है। जहाँ तक दोनों की चेतना और अनुभूति की बात है, स्पष्ट है कि मृत्यु ने यहाँ कुछ नहीं बदला। मनुष्य का व्यक्तित्व, अपने परिवेश का सचेत अनुभव और स्मृति मृत्यु के बाद बिना किसी कमी के बने रहते हैं।

2.1.8 हेडीस

धनवान हेडीस (यूनानी: **hadēs**; हिन्दी बाइबल में ‘अधोलोक’) में अपनी आँखें खोलता है और स्वयं को पीड़ा में पाता है। हेडीस यूनानी संसार का एक जाना-पहचाना शब्द था। वहाँ यह अधोलोक का देवता था और मृतकों का स्थान भी।

हेडीस को नरक के साथ नहीं मिलाना चाहिए। दुःख की बात है कि कुछ बाइबल अनुवादों में (उदाहरण के लिए लूथर (Luther) (जर्मन बाइबल अनुवाद) में) यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द “हेडीस” का अनुवाद

33. दोनों नियमों के बीच के समय की एक अप्रामाणिक (अपॉक्रिफ़ल) पुस्तक।

“नरक” (जर्मन: *Hölle*) किया गया है, जिससे कोई यह मान सकता है कि दोनों शब्द एक ही बात को दर्शाते हैं। परन्तु ये दो अलग-अलग बातें हैं, जिन पर मैं आगे और विस्तार से विचार करूँगा। लूका 16 के हेडीस पर विस्तार से विचार करने से पहले – ताकि हम किसी “अलग-थलग” और इसलिए गलत व्याख्या पर न पहुँचें – हम नए नियम के उन सभी 10 पदों को देखें जहाँ हेडीस का उल्लेख है।

पहला और तीसरा प्रयोग: “और हे कफरनहूम, तू जो स्वर्ग तक ऊँचा किया गया है, तू हेडीस तक नीचे गिराया जाएगा” (मत्ती 11:23; लूका 10:15)।

“हेडीस” यहाँ “स्वर्ग” के विपरीत है। कफरनहूम स्वर्ग तक ऊँचा किया गया था, क्योंकि मसीहा ने इसी नगर में सबसे अधिक सामर्थ्य के काम किए थे (मत्ती 9:1)। यहाँ न्याय के दिन कफरनहूम के गहरे पतन को “सबसे ऊँचे” और “सबसे नीचे” स्थान के बीच के बड़े अन्तर के द्वारा स्पष्ट किया गया है। इसी अर्थ में प्रायः “ऊपर” और “नीचे” की बात की जाती है।³⁴ हेडीस यहाँ न्याय का स्थान है, जो आशीष के स्थान अर्थात् स्वर्ग से अगम्य दूरी पर है।

दूसरा प्रयोग: “और मैं इस चट्टान पर अपनी सभा [या: कलीसिया] बनाऊँगा, और हेडीस के फाटक उस पर प्रबल न होंगे” (मत्ती 16:18)।

प्रभु यीशु मसीह, जीवित परमेश्वर का पुत्र, वह अजेय और अटल नींव है जिस पर वह अपनी कलीसिया बनाने वाला था। इस चट्टान पर बनी होने के कारण हेडीस भी कलीसिया पर प्रबल नहीं हो सकता। हेडीस के पास सामर्थ्य है, जो प्रतीक के रूप में फाटकों में व्यक्त होती है। हेडीस के पीछे मृत्यु की सामर्थ्य छिपी है। हेडीस और मृत्यु की सामर्थ्य कलीसिया पर प्रबल नहीं हो सकते और उसे “जीत” नहीं सकते, क्योंकि वह उस पर स्थापित है जो स्वयं जीवन है और जिसने मृत्यु को जीत लिया है। हेडीस एक बुरी शक्ति है, जो यहाँ कलीसिया के शत्रु के रूप में सामने आती है।

चौथा प्रयोग: “और हेडीस में, जब वह पीड़ा में था, उसने अपनी आँखें उठाई और दूर से इब्राहीम को और उसकी गोद में लाजर को देखा” (लूका 16:23)।

पाँचवाँ और छठा प्रयोग: पतरस ने भजन संहिता 16 का हवाला देते हुए प्रभु यीशु के विषय में कहा: “क्योंकि तू मेरे प्राण को हेडीस में न छोड़ेगा, और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा” (प्रेरितों के काम 2:27; पद 31 भी देखें)।

ये शब्द दाऊद ने सदियों पहले कहे थे (भजन संहिता 16:10)। पतरस पिन्तेकुस्त के दिन अपने प्रचार में इन्हें मसीहा की मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में एक भविष्यद्वाणी के रूप में उद्धृत करता है। हेडीस मानो उद्धारकर्ता के पवित्र प्राण की ओर हाथ बढ़ा रहा था, ताकि उसे झपटकर अपने अधिकार में ले ले। परन्तु हेडीस उसके प्राण पर अधिकार न कर सका, क्योंकि वह परमेश्वर का पवित्र जन था।³⁵ जब वह मरा, तो

34. तुलना करें यूहन्ना 8:23; 1 तीमुथियुस 6:9; 2 पतरस 2:4; यहूदा 6; प्रकाशितवाक्य 20:1; नीतिवचन 9:18; 15:24।

वह हेडीस के वश में नहीं पड़ा, बल्कि परादीस में गया। उसकी देह कब्र में रखी गई, परन्तु वह सड़ने न पाई, क्योंकि वह जिलाया गया।

यहाँ स्पष्ट होता है कि हेडीस वह स्थान है जहाँ अधर्मियों के प्राण रहते हैं। देह, अर्थात् शरीर, कब्र और सड़ने से जुड़ा है। प्राण यहाँ और अन्य सभी पदों में हेडीस से जुड़ा है। यहाँ कब्र और हेडीस को स्पष्ट रूप से एक दूसरे से अलग किया गया है। वे एक ही बात नहीं हैं।

सातवाँ प्रयोग: “... मैं मर गया था, और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूँ, और मृत्यु और हेडीस की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं” (प्रकाशितवाक्य 1:18)।

ये प्रभु यीशु के शब्द हैं, जो जी उठा है। क्योंकि वह मरा और जी उठा, इसलिए मृत्यु और हेडीस पर उसका अधिकार है। मृत्यु (देह के संबंध में) और हेडीस (प्राण के संबंध में) दोनों को परमेश्वर के पुत्र के सामने झुकना पड़ा। सब कुछ उसके अधीन है! मृतलोक और वहाँ के सब लोग उसके अधिकार के अधीन हैं, क्योंकि “मसीह इसी लिए मरा और फिर जी उठा कि वह मरे हुएों और जीवितों दोनों पर प्रभुता करे” (रोमियों 14:9)। विश्वासियों को अब डरने की आवश्यकता नहीं है!

उसकी सामर्थ्य इसमें भी है कि वह मृतकों को जिलाए, अर्थात् कुंजी से हेडीस को खोले और प्राणों को बाहर निकाल लाए, ताकि पुनरुत्थान में उन्हें शरीर के साथ जोड़ दे।

आठवाँ प्रयोग: “और मैं [यूहन्ना] ने दृष्टि की, और देखो, एक पीला-सा घोड़ा है; और उसके सवार का नाम मृत्यु है; और हेडीस उसके पीछे-पीछे था” (प्रकाशितवाक्य 6:8)।

मृत्यु और हेडीस का एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध है, क्योंकि वे मिलकर एक ही काम करते हैं।³⁶ उनका यह सहयोग किस बात में है? मृत्यु देह पर अधिकार कर लेती है और हेडीस प्राण पर। इसी अर्थ में हेडीस मृत्यु के पीछे-पीछे चलता है, ताकि उन प्राणों को ग्रहण करे जिन्हें मृत्यु छू नहीं सकती (मत्ती 10:28)।

भाषा के इतिहास की दृष्टि से “हेडीस” शब्द का अर्थ “सब कुछ ग्रहण करनेवाला” हो सकता है। हेडीस कभी तृप्त न होनेवाली भूख के साथ मृतकों को निगलता है। इसमें शिओल (पुराने नियम का हेडीस) से समानता है, जिसे इब्रानी भाषा-बोध में “माँगना” से जोड़ा जाता था (तुलना करें प्रेरितों के काम 2:27, 31)।³⁷

35. अधिकांश अनुवादों में यहाँ है: “तू मेरे प्राण को हेडीस में न छोड़ेगा” या ऐसा ही कुछ। इस शब्दावली के अनुसार प्रभु हेडीस में रहा होता। तब हेडीस, शिओल के समान, सामान्य रूप से मृतकों का स्थान होता, जिसमें धर्मियों और अधर्मियों के बीच कोई भेद नहीं। यह पुराने नियम के कथनों के अनुरूप है। इस विषय में देखें C. Briem, *Ein Volk für seinen Namen*, Teil 2, Hückeswagen (CSV), 1983, पृ. 100–103। मैं इस मत से सहमत नहीं हूँ, क्योंकि ठीक लूका ही, जो प्रेरितों के काम का लेखक है, अपने सुसमाचार में एकमात्र ऐसा लेखक है जो एक ओर लूका 16 में हेडीस और इब्राहीम की गोद को एक दूसरे के आमने-सामने रखता है (अर्थात् इब्राहीम की गोद हेडीस में नहीं है और न उसका कोई भाग है), और दूसरी ओर प्रभु का यह कथन उद्धृत करता है कि मरने पर वह परादीस में गया। इसके अतिरिक्त यीशु के समय में यह मत पहले से था कि धन्य लोगों का स्थान स्वर्ग में है और अधर्मियों का स्थान शिओल में। मैं नए नियम में हेडीस को पूरी तरह उन अधर्मियों का स्थान मानता हूँ जो मृत्यु की सामर्थ्य के अधीन हैं। वहाँ मसीह नहीं था (इस विषय में परिशिष्ट देखें)।

36. तुलना करें 2 शमूएल 22:6; यशायाह 28:15, 18; होशे 13:14; हबक्कूक 2:5।

नौवाँ और दसवाँ प्रयोग: “और मृत्यु और हेडीस ने उन मरे हुआँ को जो उनमें थे दे दिया; और उनमें से हर एक का न्याय उसके कामों के अनुसार किया गया। और मृत्यु और हेडीस आग की झील में डाले गए” (प्रकाशितवाक्य 20:13-14)।

मृतक हेडीस में हैं। लूका 16 की कहानी के अतिरिक्त यह हेडीस के स्वरूप का सबसे स्पष्ट संकेत है। हेडीस उन मृतकों का स्थान है जिन्होंने सुसमाचार पर विश्वास नहीं किया। केवल वे ही बड़े श्वेत सिंहासन के सामने उपस्थित होते हैं।

यहाँ हम शारीरिक मृत्यु का अन्त पाते हैं। मृत्यु को आग की झील में, अर्थात् नरक में, डाल दिया जाता है। क्योंकि उस समय तक सब मृतक जी उठे होंगे, इसलिए मृतकों के ऐसे प्राण या आत्माएँ फिर नहीं रहेंगी जो हेडीस में रह सकें। इसका अनिवार्य परिणाम हेडीस का भी अन्त है। जो खो गए हैं, वे उस देह के साथ जो उन्हें पुनरुत्थान में मिली है, नरक में डाले जाते हैं। इसलिए हेडीस की फिर आवश्यकता नहीं रहती, और मृत्यु की तरह उसका भी अन्त नरक में होता है।

सारांश: हेडीस उन मृतकों के प्राणों को ग्रहण करता है जो मृत्यु के द्वारा देह से अलग हो जाते हैं। हेडीस मृत्यु की सामर्थ्य से जुड़ा है। यह मृत्यु, जो अनन्त विनाश में ले जाती है, केवल अविश्वासियों पर प्रभुता करती है। इसलिए हेडीस भी केवल उन्हीं मृतकों के रहने का स्थान है जो मसीह के बिना मरे हैं। हेडीस पुनरुत्थान तक भक्तिहीनों के लिए एक पड़ाव और रहने का स्थान है।

2.1.9 लूका 16 में हेडीस

लूका 16 में हेडीस का अर्थ ठीक वही है जो जाँचे गए पदों से स्पष्ट हुआ है। इसके अतिरिक्त यहाँ कुछ और बातें भी मिलती हैं जिनका उल्लेख केवल यहीं है।

धनवान को गाड़ा गया। परन्तु उसका आत्मा-प्राण कब्र में नहीं, बल्कि हेडीस में था। उसके विषय में सबसे पहले यह कहा गया है कि वह “पीड़ा में” था। अर्थात् मृत्यु से उसकी अनुभूति समाप्त नहीं हुई थी। उसने केवल अपनी अनुभूति ही नहीं, बल्कि मृत्यु के पार अपनी पूरी चेतना भी बनाए रखी थी: वह बोलता है, अपने विचार प्रकट करता है और उसे बातें याद हैं। इसके अतिरिक्त वह अपनी आँखों से अपने परिवेश को देख सकता है, जिसकी पहचान पीड़ा और दुःख है। स्वयं धनवान इस परिवेश को पीड़ा का “स्थान” (पद 28) कहता है। इसलिए हेडीस केवल एक अवस्था नहीं, बल्कि रहने का एक वास्तविक स्थान भी है।

धनवान को जो पीड़ा अनुभव हुई और ज्वाला की जो गर्मी उसने महसूस की, वे मांस और लहू की शारीरिकता को मानकर चलती प्रतीत होती हैं। परन्तु मृत्यु के बाद अपने पुनरुत्थान तक मनुष्य के पास यह शारीरिकता नहीं रहती। इसलिए हम दुःखों के इस वर्णन को एक ऐसी वास्तविकता का चित्रात्मक वर्णन समझते हैं जो हमारे लिए, जो अभी देह में हैं, अपरिचित है, और जिसकी गहराई और विस्तार को केवल वही

समझता है जो स्वयं उसे सहता है। यह चित्र, जो नरक के विषय में भी हमें मिलते-जुलते रूप में मिलता है, इसलिए आवश्यक है कि हेडीस के दुःख हमारे सामने इस प्रकार रखे जाएँ कि हम उन्हें समझ भी सकें।

हरमन क्रैमर (Hermann Cremer) इन दुःखों का वर्णन इस प्रकार करते हैं: “[प्राण] मृत्यु में उस कंगाल के समान है, जिसके पास मरने के लिए बहुत अधिक और जीने के लिए बहुत कम है – कैसी भयानक अवस्था है यह, जीवन और मृत्यु के बीच का यह लटकना और काँपना, यह अन्तहीन मरना! जब तक मृत्यु ने मनुष्य की आँखें इस विषय में नहीं खोलीं, तब तक कोई धोखा खा सकता है और इस भ्रम में पड़ा रह सकता है कि उसके प्राण को किसी बात की घटी नहीं। जब तक हम अपनी देह के स्वामी हैं और अपने आसपास के संसार के साथ काम या मनबहलाव में लगे रह सकते हैं, तब तक हम अपने प्राण की सारी अनुभूतियों और आवश्यकताओं से बच सकते हैं। परन्तु मृत्यु के साथ यह संभावना समाप्त हो जाती है, और प्राण की असमर्थता एक अन्तहीन रुग्णता में प्रकट हो जाती है। परमेश्वर से कटकर, परमेश्वर से विमुख होकर, वह उस जीवन से भी विमुख है जो परमेश्वर से है। ... सदा के लिए शक्तिहीन, रुकी हुई और बँधी हुई, उसकी अमरता उसके लिए मृत्यु से कोई बेहतर बात नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक दयनीय और बुरी बात है – अस्तित्व के लिए एक अनन्त संघर्ष, हर तृप्ति से अनन्त वंचित रहना, पवित्र परमेश्वर के उस विरोध के नीचे, जो वह हर अभक्त और परमेश्वर से विमुख बात के विरुद्ध करता है, अन्तहीन रूप से घुलते जाना। पापी, बिना छुटकारा पाए मनुष्य के लिए अमरता अनन्त मृत्यु के सिवा और कुछ नहीं – रात को उजियाला करनेवाली कोई किरण नहीं, बल्कि केवल प्रकाश की छाया।”³⁸

निःसन्देह यह प्राण-निद्रा से, और मृत्यु के बाद अनस्तित्व से तो बिलकुल ही, सर्वथा भिन्न बात है। यह कहानी ठीक इसका उलटा सिद्ध करती है। प्राण-निद्रा की गलत शिक्षा को बनाए रखने के लिए इस कहानी की एक बिलकुल अलग व्याख्या करनी पड़ती है, जिसके अनुसार हेडीस उस कब्र के सिवा और कुछ नहीं जिसमें धनवान की लाश गाड़ी गई थी। इसके लिए ऐसे पाठ-रूपों का सहारा लिया जाता है जो एक अलग विराम-चिह्न-व्यवस्था³⁹ के द्वारा वाक्य का अर्थ बदल देते हैं। इस प्रकार हेडीस वह कब्र बन जाता है जिसमें धनवान को रखा गया। तब वाक्य इस प्रकार पढ़ा जाता है: “धनवान मरा और हेडीस में गाड़ा गया। जब उसने पीड़ा में अपनी आँखें उठाई ...” पाठ के इस विभाजन के पक्ष में दो या तीन यूनानी हस्तलिखित साक्षी भी उपलब्ध नहीं हैं। यह विभाजन आज विश्वसनीय माने जानेवाले किसी भी बाइबल अनुवाद में नहीं मिलता।

किसी वाक्य के विराम-चिह्नों के लिए पाठ का सन्दर्भ और पूरे नए नियम के साथ विषय-वस्तु की एकरूपता निर्णायक है। जैसा कि हम देख चुके हैं, नए नियम का कोई भी पद यह पुष्टि नहीं करता कि हेडीस और कब्र एक ही हैं।

38. Hermann Cremer, *Jenseits des Grabes*, Gießen (Brunnen-Verlag), बिना वर्ष, पृ. 31, 32।

39. विराम-चिह्न उन चिह्नों को कहते हैं जो मूल पाठ में नहीं थे और जो कुछ सदियों बाद जोड़े गए।

भाषा के इतिहास की दृष्टि से “हेडीस” शब्द का अर्थ “अदृश्य” और “जो अनुभव न किया जा सके” भी है।⁴⁰ इस कारण से भी यह संभव नहीं कि “हेडीस” शब्द किसी कब्र को दर्शाता हो।

हो सकता है कि यह धारणा, कि हेडीस और कब्र एक ही हैं, इस कारण उत्पन्न हुई हो कि “हेडीस” वास्तव में इब्रानी शब्द “शिओल” का यूनानी अनुवाद है; परन्तु पुराने नियम में “शिओल” शब्द का अर्थ इससे कहीं व्यापक है, जैसा कि हम अगले खंड में देखेंगे।

2.1.10 शिओल

प्रेरितों के काम 2:27 में भजन संहिता 16:10 के उद्धरण से स्पष्ट है कि “हेडीस” इब्रानी शब्द “शिओल” का अनुवाद है। सेप्टुआजेंट (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) में “शिओल” शब्द का अनुवाद “हेडीस” से, परन्तु कभी-कभी “मृत्यु” से भी किया गया है। पुराने नियम में “शिओल” 65 बार आता है। इनमें से आधे से अधिक प्रयोग अय्यूब, भजन संहिता और नीतिवचन की पुस्तकों में मिलते हैं।

पुराने नियम में शिओल का क्या अर्थ है? पुराने नियम में हम इस शब्द के कई अर्थ पहचान सकते हैं। सामान्य रूप से शिओल का संबंध मृत्यु के क्षेत्र से है, जिसमें मृत्यु का भय, कब्र, अथाह गड्ढा और मृतलोक भी आते हैं।

- शिओल कब्र या गड्ढे के रूप में: उत्पत्ति 37:35; 42:38; 44:29; गिनती 16:30; व्यवस्थाविवरण 32:22; 1 शमूएल 2:6; अय्यूब 7:9; भजन संहिता 139:8; सभोपदेशक 9:10; येहेजकेल 31:16।
- शिओल कब्र या गड्ढे के रूप में, परन्तु मृत्यु के बाद के सचेत जीवन की झलक के साथ: 2 शमूएल 22:6; 1 राजाओं 2:6-9; अय्यूब 17:13-16; आमोस 9:2।
- शिओल मृतलोक के रूप में, प्राणों के रहने का स्थान: भजन संहिता 16:10; नीतिवचन 15:11; 27:20; यशायाह 14:9-15।
- शिओल प्रतीकात्मक अर्थ में, मृत्यु, बुराई, भय, संकट और बन्धन की सामर्थ्य के रूप में: भजन संहिता 116:3; यशायाह 28:15; 57:9; योना 2:2।

ये पद स्पष्ट करते हैं कि “शिओल” शब्द के कई अर्थ हैं। यह कहना गलत होगा कि शिओल सदा कब्र या गड्ढा ही है। इसलिए इस अर्थ को नए नियम के हेडीस पर लागू करना भी उतना ही गलत है।

जब यीशु ने यह कहानी सुनाई, उस समय यहूदियों में शिओल की जो धारणा थी, वह मूल रूप से लूका 16 में शिओल या हेडीस के वर्णन के अनुरूप थी।

स्ट्राक और बिलरबेक (Strack & Billerbeck) लिखते हैं: “हनोक 22 और लूका 16:19 से आगे के बीच की अनेक समानताएँ यह संभावना दिखाती हैं कि हनोक 22 में प्रस्तुत शिओल की धारणा यहूदी

40. Dictionary of New Testament Theology, Vol. 2 (Paternoster Press) 1981, पृ. 206

लोगों में कुछ हद तक फैल चुकी थी और यीशु के दिनों में आम लोगों का प्रचलित मत थी।”⁴¹

यहूदियों के विभिन्न लेखों में (उदाहरण के लिए हनोक की पुस्तक में) हेडीस दिवंगत लोगों की आत्माओं या प्राणों के रहने का स्थान था। इसके साथ यह धारणा भी फैली हुई थी कि शिओल में धर्मियों और अधर्मियों के लिए अलग-अलग भाग हैं। वहाँ धर्मियों को आनन्द मिलता है, और अधर्मियों को पीड़ा।

यद्यपि शिओल प्रायः कब्र है, फिर भी शिओल और कब्र दो अलग-अलग शब्द हैं, जो सदा एक ही अर्थ में प्रयोग नहीं होते। कब्र, जो शिओल के विपरीत बहुवचन में भी आती है, खोदी जाती है (उदाहरण के लिए उत्पत्ति 50:5), वह विशेष व्यक्तियों की होती है (उदाहरण के लिए 1 राजाओं 13:30; 2 इतिहास 34:28), और उसमें लाश रखी जाती है।⁴² ये विशेषताएँ शिओल पर लागू नहीं होतीं। राजा हिजकियाह एक ही वाक्य में तीन शब्दों का उल्लेख करता है, जिन्हें उसने अलग-अलग समझा, और इसलिए उनका अर्थ एक नहीं हो सकता: “क्योंकि शिओल तेरी स्तुति नहीं करता, मृत्यु तेरा भजन नहीं गाती; जो गड्ढे में उतर गए हैं, वे तेरी सच्चाई की आशा नहीं रखते” (यशायाह 38:18)।

इसलिए नए नियम के “हेडीस” के संबंध में “शिओल” के विषय में निम्नलिखित बात कहनी है:

पुराने नियम में कब्र के पार की बातें बिलकुल प्रकट नहीं की गई थीं, या केवल संकेत के रूप में। इसलिए पुराने नियम की दृष्टि से शिओल के विषय में बहुत कुछ नहीं कहा जा सकता। शिओल के ऊपर बताए गए अर्थों में से केवल एक (उदाहरण के लिए कब्र वाले अर्थ) को नए नियम के हेडीस पर लागू करना उचित नहीं है।

2.1.11 आँखें खोलना

हम पढ़ते हैं कि धनवान ने हेडीस (यूनानी: *hadēs*; हिन्दी बाइबल में ‘अधोलोक’) में अपनी आँखें खोलीं (लूका 16:23)। “आँखें खोलना” किसी ऐसे मनुष्य की याद दिलाता है जो नींद से जागता है। यीशु इस अभिव्यक्ति का प्रयोग धनवान के आश्चर्य, अचम्भे और साथ ही उसकी घबराहट का वर्णन करने के लिए करता है। वह अचानक एक ऐसा परिवेश और एक ऐसी अवस्था अनुभव करता है जो उससे बिलकुल भिन्न है जिसका वह अब तक आदी था। इब्राहीम का वंशज होने के कारण उसने इसकी आशा नहीं की थी।

जो लोग इस कहानी में प्राण-निद्रा की शिक्षा देखने का प्रयास करते हैं, वे “आँखें खोलने” को पुनरुत्थान बताते हैं। यदि कोई कहे कि हेडीस कब्र है, तो उसके पास और कोई व्याख्या बचती भी नहीं। कब्र में आँखें नहीं खोली जातीं। पहली दृष्टि में यह व्याख्या पूरी तरह निराधार नहीं लगती, क्योंकि मृत्यु की नींद और जागने का पुनरुत्थान से संबंध स्वाभाविक लगता है। फिर भी यह व्याख्या संदिग्ध है, क्योंकि इसी कहानी में पद 30 और 31 में शब्दशः पुनरुत्थान की बात की गई है। यह असामान्य है कि एक बार पुनरुत्थान की बात शब्दशः की जाए, और दूसरी बार केवल चित्र के रूप में।

41. *Kommentar zu Talmud und Midrasch IV* से।

42. उदाहरण के लिए 2 राजाओं 13:21; भजन संहिता 88:5; यिर्मयाह 26:23।

“उठाना” शब्द (यूनानी: **epairo**) प्रायः “ऑखों” और “देखने” के साथ आता है।⁴³ नया नियम इस अभिव्यक्ति से कभी भी नींद से जागने की प्रक्रिया का, या पुनरुत्थान का तो बिलकुल भी नहीं, वर्णन करता। जब अधर्मी जी उठेंगे, तो उसके तुरन्त बाद बड़े श्वेत सिंहासन के सामने उनका न्याय होगा और वे आग की झील में डाले जाएँगे, जो नरक है (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। अन्तिम न्याय इस कहानी में सम्मिलित नहीं है। हेडीस में धनवान को अभी न्यायी के सामने खड़ा नहीं किया जाता। अन्तिम अवस्था हेडीस नहीं, बल्कि आग की झील है। हेडीस को नरक के साथ नहीं मिलाना चाहिए, यद्यपि वहाँ भी पीड़ा और यातना है। जब पापी नरक में डाले जाएँगे, तब हेडीस की, जो अधर्मियों के रहने का स्थान रहा है, फिर आवश्यकता नहीं रहेगी (ऊपर देखें)।

2.1.12 दूर से

धनवान लाजर को दूर से इब्राहीम की गोद में देखता है। “दूर से” शब्द उस स्थान की अगम्यता को और उस निराशाजनक रूप से खोई हुई और न बदलनेवाली स्थिति को स्पष्ट करते हैं। एक अर्थ में यह दूरी दोनों पुरुषों के जीवन में भी पहले से थी। अब यह दूरी कहीं अधिक बड़ी है और उसे फिर मिटाया नहीं जा सकता। क्या यह इस बात का भी संकेत नहीं है कि परमेश्वर से दूरी, जिसे भक्तिहीन लोग नरक में अनन्त दंड के रूप में सहेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:9), किसी हद तक मृत्यु के तुरन्त बाद ही आरम्भ हो जाती है?

धनवान अपनी पीड़ा में राहत पाने के लिए इब्राहीम से विनती करता है। वह माँगता है कि लाजर अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर उसकी जीभ को ठंडा करे। धनवान अपनी स्थिति समझ गया है, क्योंकि यह विनती बहुत छोटी है और उसके उस सामान्य व्यवहार से मेल नहीं खाती जो उसके जीवन से जाना जाता था। क्या उँगली से टपकनेवाली पानी की बूँद उन टुकड़ों के समान नहीं है जिनकी कंगाल ने व्यर्थ लालसा की थी? यह विनती भी पूरी नहीं की जाती। इब्राहीम भी धनवान की अवस्था में अब कुछ नहीं बदल सकता।

इससे स्पष्ट होता है कि मृतकों पर कोई भी प्रभाव – चाहे वह अच्छा हो या बुरा, चाहे वह मनुष्यों या उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा हो, या स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के द्वारा – पूरी तरह असम्भव है। मृत्यु के बाद मनुष्य केवल और केवल परमेश्वर के हाथ में है (इब्रानियों 10:31)। पवित्रशास्त्र दिवंगत लोगों के लिए न तो मध्यस्थता जानता है और न प्रार्थनाएँ।

2.1.13 बड़ी खाई

हेडीस और इब्राहीम की गोद के बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है, जिसे पाटा नहीं जा सकता। इस बात का शायद ही इससे अधिक प्रभावशाली वर्णन हो कि मृत्यु के बाद कोई अपने रहने का स्थान नहीं बदल सकता।

43. उदाहरण के लिए मत्ती 17:8; लूका 6:20; 18:13; यूहन्ना 4:35; 6:5; 17:1।

मन फिराने की कोई संभावना फिर नहीं रहती। इस खाई को न तो दया से पार किया जा सकता है और न मनमानी से। धनवान स्वयं देखता है कि उसके लिए इस स्थान से निकलने की कोई संभावना नहीं रही।

मृत्यु के बाद फिर कोई दया नहीं है, क्योंकि मनुष्य का पार्थिव जीवन यीशु मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह को ग्रहण करने के लिए पर्याप्त अवसर और समय देता है (रोमियों 2:4; 2 कुरिन्थियों 6:2)। प्रभु यीशु अपने सुननेवालों को गम्भीरता से इस बात की ओर ध्यान दिलाता है कि पार्थिव जीवन ही अनन्तकाल का निर्णय करता है।

जो मृत्यु के बाद मन फिराने की किसी संभावना का – एक दूसरे अवसर के रूप में – सहारा लेता है और उसका प्रचार भी करता है, वह एक भटकते हुए तारे के समान है, जो अन्धकार की ओर का मार्ग दिखाता है (यहूदा 13)। मृत्यु के बाद दूसरे अवसर की आशा करना घातक है। यह संभावना, चाहे मनुष्य उसे कितना भी चाहे, है ही नहीं।

धनवान के लिए अब कोई उद्धार नहीं है, परन्तु वह अपने भाइयों के बारे में सोचता है। उन्हें चेतावनी देने के लिए वह अब भी क्या कर सकता है? उसके मन में यह विचार आता है कि शायद वे किसी ऐसे व्यक्ति की बात सुनें जो मर चुका था और गवाही दे सकता है कि मृत्यु के बाद क्या आता है। परन्तु इब्राहीम उत्तर देता है कि धनवान के भाई किसी ऐसे व्यक्ति की भी नहीं सुनेंगे जो मरे हुआओं में से लौट आए। जो लोग आज के समय में परमेश्वर के वचन को ठुकराते हैं, उनके मन को मन फिराने के लिए प्रेरित करने में ऐसी चमत्कारी गवाही भी पर्याप्त न होगी।

कुछ समय बाद प्रभु एक दूसरे लाजर को मरे हुआओं में से वापस बुलाता है (यूहन्ना 11)। यह लाजर ठीक वैसा ही व्यक्ति था जैसा धनवान माँग रहा था। परन्तु लाजर के विषय में इब्राहीम का उत्तर सही सिद्ध होता है। उसकी गवाही को ग्रहण करने के बदले यहूदी यहाँ तक पहुँच जाते हैं कि वे जीवन और मृत्यु के प्रभु को मार डालने की सम्मति करते हैं, ताकि उसकी सर्वसामर्थ्य की इस गवाही को चुप करा दें।

प्रभु यीशु स्वयं मरे हुआओं में से लौटकर आया। यद्यपि उसका पुनरुत्थान आँखों देखे गवाहों के द्वारा प्रमाणित था और उसके चेलों ने यह सन्देश आगे पहुँचाया, फिर भी लोग इस गवाही को ग्रहण करना नहीं चाहते थे। मनुष्यों के बिगड़े हुए मन सच्चाई के सामने झुकना नहीं चाहते थे।

यह सच है कि पापी प्रमाणों के द्वारा परमेश्वर तक नहीं पहुँचाया जाता, बल्कि केवल एक पश्चात्तापी मन और एक प्रकाशित विवेक के द्वारा।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- कारण सहित बताइए कि लूका 16 की कहानी दृष्टान्त क्यों नहीं है!
- सारांश में लिखिए कि नए नियम में “हेडीस” और पुराने नियम में “शिओल” शब्दों का क्या अर्थ है!
- लूका 16 में किस बात से स्पष्ट होता है कि मृत्यु के बाद कोई दूसरा अवसर नहीं हो सकता?

2.2 जीवितों का परमेश्वर

यरूशलेम के मन्दिर में सदूकियों के यीशु के साथ प्रसिद्ध विवाद में मृतकों के पुनरुत्थान की बात है। सदूकी इस बात के लिए जाने जाते थे कि वे पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं करते थे। सुसमाचार-लेखक मत्ती, मरकुस और लूका एक स्वर से इसका उल्लेख करते हैं।

“फिर सदूकियों में से कुछ, जो कहते हैं कि पुनरुत्थान है ही नहीं, उसके पास आए और उससे पूछा, ‘हे गुरु, मूसा ने हमारे लिए लिखा है कि यदि किसी का भाई अपनी पत्नी के रहते हुए मर जाए और वह निःसन्तान हो, तो उसका भाई उस स्त्री से विवाह कर ले और अपने भाई के लिए वंश उत्पन्न करे। सात भाई थे। पहला भाई विवाह करके निःसन्तान मर गया; फिर दूसरे और तीसरे ने भी उससे विवाह किया; और इसी प्रकार सातों ने: वे कोई सन्तान छोड़े बिना मर गए। अन्त में वह स्त्री भी मर गई। तो पुनरुत्थान में वह स्त्री उनमें से किसकी पत्नी होगी, क्योंकि वह सातों की पत्नी रह चुकी थी?’ यीशु ने उनसे कहा, ‘इस युग के पुत्र विवाह करते हैं और विवाह में दिए जाते हैं; परन्तु जो लोग उस युग के और मरे हुएों में से पुनरुत्थान के भागी होने के योग्य ठहरेंगे, वे न विवाह करते हैं और न विवाह में दिए जाते हैं; क्योंकि वे फिर मर भी नहीं सकते, क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हैं और पुनरुत्थान के पुत्र होने के कारण परमेश्वर के पुत्र हैं। परन्तु मरे हुए जी उठते हैं, इसका संकेत मूसा ने भी ‘झाड़ी की कथा’ में दिया है, जब वह प्रभु को ‘इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर’ कहता है। वह मरे हुएों का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है; क्योंकि उसके लिए सब जीवित हैं।’ तब शास्त्रियों में से कुछ ने उत्तर दिया, ‘हे गुरु, तू ने ठीक कहा।’ क्योंकि फिर उन्हें उससे कुछ भी पूछने का साहस न हुआ” (लूका 20:27-40; जर्मन एल्बरफ़ेल्डर अनुवाद से अनूदित; तुलना करें मरकुस 12:18-27; मत्ती 22:23-33)।

आइए, सदूकियों के समूह और उनके मत को कुछ और निकट से देखें।

2.2.1 सदूकी⁴⁴

इस पाठ की कुछ बातों की जाँच करने से पहले एक बार फिर सुसमाचार-लेखक लूका की बात सुनें, इस बार प्रेरितों के काम से: “क्योंकि सदूकी कहते हैं कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत, न आत्मा” (अध्याय 23:8; तुलना करें प्रेरितों के काम 4:2)। सदूकियों की शिक्षा अपने आप में सुसंगत और तर्कसंगत थी।

44. सदूकी (शायद सुलैमान के समय के महायाजक सादोक के नाम पर कहाए) एक प्राचीन याजकीय कुलीन वर्ग से निकले थे और लगभग 150 ई.पू. से 70 ईस्वी तक के समय में यहूदी याजक-वंश का एक रुढ़िवादी और रोमियों के प्रति मित्रतापूर्ण दल थे। फरीसियों के विपरीत, जिनके वे “परम्परागत” विरोधी थे, सदूकी प्राण के आगे जीवित रहने का और स्वर्गदूतों और आत्माओं के अस्तित्व का इनकार करते थे। वे मानवीय मामलों में ईश्वरीय हस्तक्षेप पर भी विश्वास नहीं करते थे। इसके अतिरिक्त फरीसियों के विरोधी होने के कारण वे मौखिक तोराह को ठुकराते थे और परमेश्वर के विधान को मनुष्य की इच्छा की स्वतंत्रता से ऊपर रखते थे। वे केवल मूसा की पाँच पुस्तकों को प्रकाशन मानते थे, परन्तु पुनरुत्थान की आशाओं और स्वर्गदूतों पर विश्वास को अस्वीकार करते थे (प्रेरितों के काम 23:8)। क्योंकि सदूकियों को लोगों का व्यापक समर्थन प्राप्त नहीं था, इसलिए राजनीतिक और धार्मिक रूप से प्रभावशाली समूह के रूप में उनका अन्त हो गया।

यदि कोई पुनरुत्थान नहीं था, तो आत्माओं का, अर्थात् दिवंगत लोगों की उन आत्माओं का,⁴⁵ जो देह से अलग हैं, कोई अस्तित्व भी नहीं था (इब्रानियों 12:23; 1 पतरस 3:19)।

इतिहासकार जोसीफ़स (Flavius Josephus) की बाइबल से बाहर की गवाही इसकी पुष्टि करती है, जब वह लिखता है कि सदूकी प्राण की अमरता का, और साथ ही अधोलोक में दंड और प्रतिफल का भी इनकार करते थे।⁴⁶

यहाँ संकेत मिलता है कि पुनरुत्थान और मृत्यु के बाद आत्मा-प्राण का देह से बाहर अस्तित्व एक दूसरे से सीधे जुड़े हुए हैं और एक दूसरे पर निर्भर हैं। सदूकी जानते थे कि पुनरुत्थान और देह से अलग आत्मा-प्राण एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि इतनी घनिष्ठता से जुड़े हैं कि एक के बिना दूसरा हो ही नहीं सकता। इसलिए उन्होंने दोनों का इनकार किया।⁴⁷

इस चतुराई भरे तर्क पर प्रभु यीशु का उत्तर यह है कि परमेश्वर मरे हुएओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है, क्योंकि उसके लिए सब जीवित हैं (पद 38)। यह तथ्य प्रभु जलती हुई झाड़ी में से मूसा से कहे गए याहवे के शब्दों से निकालता है: “मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ” (निर्गमन 3:6; पद 14-15 भी देखें)। सुननेवाले जानते थे कि जिस समय याहवे ने ये शब्द कहे, उस समय तीनों कुलपिताओं में से कोई भी जीवित नहीं था। वे सब मर चुके थे। यदि मृत्यु का अर्थ पूर्ण, या केवल सीमित समय के लिए ही सही, मिट जाना और अनस्तित्व है, तो याहवे कैसे कह सकता है कि वह उनका परमेश्वर है? तब तो परमेश्वर सचमुच मरे हुएओं का परमेश्वर होता। परन्तु परमेश्वर किसी ऐसी चीज़ का परमेश्वर नहीं है जिसका अस्तित्व ही नहीं। सुननेवाले यह समझ गए, क्योंकि शास्त्रियों में से कुछ ने कहा कि उसने ठीक कहा है। सदूकी इस ईश्वरीय बुद्धि के सामने कोई उत्तर न दे सके⁴⁸ – उसने उनका मुँह बन्द कर दिया था, क्योंकि वे बड़ी भूल में थे (मत्ती 22:34)।

कुछ लोग इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि कुलपिता परमेश्वर की स्मृति या उसके संकल्प में जीवित हैं, क्योंकि वे एक दिन जिलाए जाएँगे। परन्तु यह पद इसके सिवा और कोई निष्कर्ष निकालने की अनुमति नहीं देता कि जिस समय परमेश्वर ने झाड़ी में से बात की, उस समय कुलपिताओं को किसी न किसी रूप में जीवित होना ही था (अर्थात् केवल स्मृति में एक विचार के रूप में नहीं)। यह नहीं कहा गया कि परमेश्वर कुलपिताओं का परमेश्वर “था” या पुनरुत्थान को ध्यान में रखते हुए “होगा”, बल्कि यह कि वह “है”, और आज तक है। यह भी नहीं कहा गया कि वे उसके लिए “जीवित थे”, बल्कि यह कि वे “जीवित हैं”।

45. इस पद में स्वर्गदूतों और आत्माओं में भेद किया गया है, जो यह सिद्ध करता है कि यहाँ आत्माएँ दिवंगत लोगों की आत्माएँ हैं। अन्य स्थानों पर स्वर्गदूतों को भी आत्माएँ कहा गया है (उदाहरण के लिए इब्रानियों 1:14)।

46. *Geschichte des Jüdischen Krieges*, दूसरी पुस्तक, अध्याय 8.14।

47. इसके विपरीत, ये शिक्षाएँ फरीसियों के विश्वास का भाग थीं (तुलना करें प्रेरितों के काम 23:6-7)।

48. रोचक बात यह है कि यीशु ने निर्गमन से उद्धरण दिया था, क्योंकि सदूकी केवल मूसा की 5 पुस्तकों को परमेश्वर का वचन मानते थे। पुनरुत्थान, स्वर्गदूतों के अस्तित्व और अमरता (क्योंकि स्वर्गदूत मरते नहीं) के विषय में अपने कथनों से उसने सदूकियों की एक साथ कई बातों का खंडन कर दिया।

केवल लूका बताता है कि प्रभु यीशु इस तथ्य को, कि मृतक जीवित हैं, सब मनुष्यों पर लागू करता है, क्योंकि वह कहता है: “क्योंकि उसके लिए सब जीवित हैं” (अर्थात् केवल कुलपिता नहीं)। इसमें निश्चय ही वे भी सम्मिलित हैं जो – कुलपिताओं की तरह – बहुत पहले मर चुके हैं।

2.2.2 रूपान्तर के पहाड़ पर मूसा और एलियाह

सुसमाचार-लेखक स्वयं पुराने नियम के समय के दो विश्वासियों का उदाहरण देते हैं, जो अपनी मृत्यु के बाद जीवित थे। रूपान्तर के पहाड़ पर यीशु की महिमा के प्रकट होने के समय⁴⁹ मूसा और एलियाह दिखाई दिए। एलियाह मरा नहीं था, बल्कि स्वर्ग में उठा लिया गया था (2 राजाओं 2:11), और वैसे ही हनोक भी (उत्पत्ति 5:24)।

यह तो समझ में आता है कि एलियाह वहाँ व्यक्तिगत रूप से प्रकट हुआ, क्योंकि वह मरा नहीं था। परन्तु मूसा के विषय में क्या? वह तो मर गया था (व्यवस्थाविवरण 34:6; तुलना करें यहूदा 9)। यदि मूसा मृत्यु के बाद जीवित नहीं था, तो वह आया कहाँ से? क्या वह पहले ही जी उठा था? बाइबल इस विषय में कुछ नहीं कहती, और ऐसा हो भी नहीं सकता, क्योंकि सोए हुए लोगों में पहला फल मूसा नहीं, बल्कि मसीह है (1 कुरिन्थियों 15:20, 23), और विश्वासियों का पुनरुत्थान अभी हुआ नहीं है।

सनातन परमेश्वर (रोमियों 16:26) जीवितों का परमेश्वर है। इसलिए मूसा भी अब, अपनी मृत्यु के बाद और अपने पुनरुत्थान से पहले, जीवित है। परमेश्वर ने इस प्रकटीकरण के लिए मूसा और एलियाह को जिलाकर फिर से सुला नहीं दिया। और यह कल्पना नहीं की जा सकती कि केवल वे ही – और सब विश्वासी नहीं – एक सचेत और आनन्दमय अवस्था में हैं। सब युगों के विश्वासी अब परादीस में हैं।⁵⁰

इस प्रकार मूसा और एलियाह के प्रकट होने से भी, सदूकियों को दिए गए प्रभु के उत्तर के शब्दों से भी, और पूरे पवित्रशास्त्र के सन्दर्भ से भी स्पष्ट होता है कि जो मर गए हैं, वे सब जीवित हैं।

बहुत से यहूदियों के लिए (सदूकियों को छोड़कर) यह स्वाभाविक बात थी कि दिवंगत लोग जीवित हैं। उदाहरण के लिए वे विश्वास करते थे कि इब्राहीम, इसहाक और याकूब अब एक ऐसे स्थान पर हैं जहाँ विश्वासयोग्य यहूदी भी जाता है, ताकि वहाँ कुलपिता उसका स्वागत करें।⁵¹

परमेश्वर स्वयं न केवल पृथ्वी पर जीनेवाले मनुष्यों के लिए, बल्कि दिवंगत लोगों के लिए भी जीवन को सम्भालनेवाला है, क्योंकि वे और जो कुछ भी जीवित है, सब उसी पर निर्भर हैं। इस अर्थ में प्राण की अमरता अपने आप में कोई अमरता नहीं है, बल्कि जीवन के स्रोत परमेश्वर पर निर्भर है।

जब प्रभु यीशु ने कुलपिताओं के विषय में बात की, तो विषय मृत्यु के बाद की अवस्था नहीं, बल्कि पुनरुत्थान था। परन्तु उसने कहा कि पुनरुत्थान का एक प्रमाण यह तथ्य है कि कुलपिता उस समय जीवित

49. मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; लूका 9:28-36।

50. तुलना करें खंड 2.3।

51. अप्रामाणिक (अपॉक्रिफ़ल) पुस्तक 4 मक्काबियों 13:16।

थे। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है और संक्षेप में इसका अर्थ यह है: क्योंकि दिवंगत लोगों के प्राण जीवित हैं, इसलिए पुनरुत्थान अवश्य होना चाहिए। ऐसा क्यों है?

2.2.3 मृत्यु के बाद के जीवन और पुनरुत्थान का संबंध

मृत्यु, जो पाप के द्वारा संसार में आई, ने मनुष्य के विषय में परमेश्वर की सृष्टि की योजना को काट दिया है। मृत्यु मनुष्य के शारीरिक जीवन का, पृथ्वी पर उसके देह-सहित अस्तित्व का अन्त कर देती है, जबकि मनुष्य एक आत्मा-प्राण-व्यक्तित्व के रूप में जीवित रहता है। परन्तु जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तो देह के बिना आत्मा-प्राण-व्यक्तित्व उसका उद्देश्य नहीं था।⁵² क्योंकि उसके उद्देश्य और योजनाएँ अटल हैं (रोमियों 11:29), इसलिए देह का जिलाया जाना आवश्यक है, ताकि परमेश्वर की वे योजनाएँ, जो आरम्भ से उसकी थीं, पूरी हों और मनुष्य अपनी “पूर्णता” में फिर से स्थापित किया जाए। अन्तिम शब्द मृत्यु का नहीं रहता। देह-रहित प्राण, यदि यही उनकी अनन्त अवस्था होती, तो यह सिद्ध करते कि मृत्यु जीत गई। इसके विपरीत यूनानी विश्वास था, जो मृत्यु को देह से स्थायी छुटकारा मानता था। पुनरुत्थान मनुष्य को उसकी उस एकता में फिर से स्थापित करता है जो परमेश्वर चाहता है।

2.2.4 बीज का चित्र

इस तथ्य से कि सब जीवित हैं, वह चित्र भी मेल खाता है जिसका प्रयोग पौलुस पुनरुत्थान को समझाने के लिए करता है। वह उस बीज की बात करता है जो फल लाने से पहले भूमि में डाला जाता है। वह इसकी तुलना दिवंगत विश्वासी की मृत देह से करता है, जो एक दिन जी उठेगी (1 कुरिन्थियों 15:35-44; तुलना करें यूहन्ना 12:24)।

रोचक बात यह है कि भूमि में बीज वास्तव में इस अर्थ में नहीं मरता कि उसकी जैविक प्रक्रिया पूरी तरह समाप्त हो जाए। यदि बीज पूरी तरह नष्ट होकर घुल जाता, तो कभी कोई फल न निकलता। परन्तु अंकुर में से, जो जीवित रहता है, एक नया पौधा निकलता है। अंकुर अपने भीतर वे सारी आनुवंशिक जानकारीयों रखता है जो उगनेवाले पौधे को निर्धारित करती हैं। बीज का खोल या छिलका, जो अंकुर को घेरे रहता है, अलग होकर नष्ट हो जाता है। इसलिए शाब्दिक अर्थ में केवल यही भाग मरता है।

यह प्रक्रिया इस तथ्य का एक और संकेत है कि मनुष्य (1 कुरिन्थियों 15 में वह एक विश्वासी है) अपनी मृत्यु के बाद जीवित रहता है। दाने के बाहरी खोल की तुलना देह से की गई है, जो नष्ट हो जाती है। अंकुर की तुलना भीतरी मनुष्यत्व (2 कुरिन्थियों 4:16), अर्थात् आत्मा-प्राण से की जा सकती है। मनुष्य का यह भाग मृत्यु के बाद जीवित रहता है। साथ ही यही इस बात का कारण भी है कि देह फिर से जिलाई जाती है, जैसे अंकुर एक नया फल उत्पन्न करता है।

52. तुलना करें खंड 3.4।

हम इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि भूमि में दाना बोने को स्पष्ट रूप से “मरना” कहा गया है, यद्यपि स्पष्ट है कि उसका एक भाग जीवित रहता है। यह कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि बाइबल में मनुष्य की मृत्यु का अर्थ कभी उसका पूर्ण अन्त नहीं, बल्कि आत्मा-प्राण का देह से अलग होना है।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- मृत्यु के बाद के जीवन और पुनरुत्थान के बीच क्या संबंध है?
- पुनरुत्थान क्यों अवश्य होना चाहिए?
- बीज का चित्र किस अर्थ में केवल पुनरुत्थान का ही नहीं, बल्कि मृत्यु के बाद के जीवन का भी चित्र है?

2.3 क्रूस पर टँगा अपराधी

अपराधियों में से एक से कहे गए प्रभु यीशु मसीह के शब्द स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि मृत्यु के बाद जीवन है। वह वहाँ कहता है: “मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ परादीस में होगा” (लूका 23:43)।

गुलगुता का दृश्य हृदय को छू लेनेवाला है। यीशु के दाहिने और बाएँ टँगों दोनों अपराधियों का अन्त आ गया था। वे अपने कामों का ठीक फल पा रहे थे। उनके लिए आशा की कोई छोटी-सी किरण भी नहीं बची थी। अपनी निराशा में अपराधियों में से एक अपने दोष पर पछताते हुए बीचवाले पुरुष की ओर मुड़ता है – यही एकमात्र काम था जो वह अब भी कर सकता था। उसने कहा: “हे प्रभु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मुझे स्मरण करना!” (लूका 23:42)। अपराधी को आभास होता है कि उसके पासवाला पुरुष, जिसकी निर्दोषता का उसे पक्का विश्वास है, अवश्य ही परमेश्वर का प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा और राजा होगा। इसलिए यदि उसके लिए अब भी किसी प्रकार की कोई आशा है, तो उसी के पास है जो एक दिन सब पर राजा होकर अन्तिम निर्णय करेगा।

उन क्षणों में अपराधी भविष्य के बारे में सोच रहा था, उस समय के बारे में जब मसीहा अपना राज्य आरम्भ करने के लिए आएगा। यहूदी की आशा इसी पर लगी थी। पुराने नियम से मसीहा के विषय में बहुत कुछ ज्ञात था: उसकी प्रभुता, उसका राज्य, उसकी महानता और सामर्थ्य।⁵³ अपराधी जानता था कि मसीहा के प्रकट होने पर, उसके राज्य के आरम्भ में, पुनरुत्थान होगा (दानियेल 12:2; यशायाह 26:19)। उसने उससे विनती की कि वह उसे स्मरण करे, ताकि वह भी उसके राज्य को देख सके।

प्रभु यीशु एक उल्लेखनीय उत्तर देता है: “आज ही तू मेरे साथ परादीस में होगा।” यह उत्तर इसलिए इतना उल्लेखनीय लगता है, क्योंकि उद्धारकर्ता अपने शब्दों में वास्तव में अपराधी की विनती का सीधा उत्तर नहीं देता। अपराधी आनेवाले राज्य के बारे में सोचता है, परन्तु उद्धारकर्ता परादीस की बात करता है। वह भविष्य की नहीं, बल्कि एक “आज” की बात करता है।

53. उदाहरण के लिए भजन संहिता 2; 8; 24; यशायाह 4; 9; 11; 53; दानियेल 2; 7; मीका 5 इत्यादि।

ऐसा होता था कि प्रभु यीशु कभी-कभी अपने से पूछे गए प्रश्नों का सीधा उत्तर देता हुआ नहीं दिखता था। परन्तु यदि ध्यान से देखें, तो पता चलता है कि उसके उत्तर कितने अद्भुत हैं, क्योंकि वे उससे कहीं अधिक प्रकट करते हैं जितना प्रश्नों का उद्देश्य था (तुलना करें यूहन्ना 2:19-22)। यहाँ भी ऐसा ही है, क्योंकि स्पष्ट है कि परादीस और राज्य का अर्थ एक नहीं है।

इसलिए आइए, जाँचें कि पवित्रशास्त्र में **परादीस** शब्द से क्या समझना चाहिए, और अपराधी की, या सामान्य रूप से यहूदी की, परादीस के विषय में क्या धारणा थी।

2.3.1 परादीस

यह शब्द संभवतः फ़ारसी भाषा से आया है और इसका अर्थ कुछ ऐसा है: “गोल बाड़ा या चारदीवारी”, “उपवन”। उस समय इसका प्रयोग फ़ारसी राजाओं के भव्य बागों के लिए होता था। पुराने नियम में भी इसका प्रयोग इसी प्रकार हुआ।⁵⁴ सेप्टुआजेंट में, जो पुराने नियम का यूनानी अनुवाद है, इसका प्रयोग अदन की वाटिका, अर्थात् पार्थिव परादीस⁵⁵, के लिए या केवल किसी बगीचे के लिए हुआ है।⁵⁶ बाइबल के पहले अध्यायों से हम जानते हैं कि पार्थिव परादीस कितना सुन्दर स्थान था। परमेश्वर ने उसे मनुष्य के रहने के लिए तैयार किया था। पतन के बाद मनुष्य को परादीस से निकाल दिया गया, और वह फिर उसमें प्रवेश भी नहीं कर सकता था। इसके बाद हम इस परादीस के विषय में फिर कुछ नहीं सुनते। अदन का मूल, पार्थिव परादीस अब नहीं है। इससे स्पष्ट है कि प्रभु यीशु का आशय इस परादीस से नहीं था।

क्योंकि पुराने नियम की जानकारी अदन के परादीस तक सीमित है और पुराने नियम में कहीं भी किसी दूसरे परादीस की बात नहीं की गई, इसलिए यह जानने के लिए कि यीशु के समय में **परादीस** से क्या समझा जाता था, हम बाइबल से बाहर के सूचना-स्रोत के रूप में यहूदी परंपरा का सहारा लेते हैं।

2.3.2 यहूदी परंपरा में परादीस

यीशु के समय में यहूदी परंपरा, या प्राचीन आराधनालय, परादीस को तीन अलग-अलग रूपों में जानती थी।

57

- मूल, पार्थिव परादीस, जो परादीस की सब बाद की धारणाओं के लिए निर्णायक था।
- प्राणों का परादीस, जो मध्यवर्ती अवस्था के दौरान धर्मियों के सोए हुए प्राणों के रहने का स्थान है। लोग प्राणों के एक स्वर्गीय परादीस पर विश्वास करते थे। इस धारणा के अनुसार हनोक और एलिय्याह, और कुलपिता भी, वहाँ उठा लिए गए थे।

54. नहेम्याह 2:8; सभोपदेशक 2:5; श्रेष्ठगीत 4:13।

55. उत्पत्ति 2:8; 13:10; यशायाह 51:3; यहजकेल 31:8।

56. गिनती 24:6; यशायाह 1:30; यहजकेल 31:8।

57. Strack & Billerbeck, *Kommentar zum Neuen Testament aus Talmud und Midrasch*, München (C.H. Beck)।

- अन्त के समय का पृथ्वी पर का परादीस, जिसका केन्द्र मसीहा के अधीन इस्राएल और यरूशलेम होंगे, और जो पुनरुत्थान और अन्तिम न्याय के बाद धन्य लोगों को सौंप दिया जाएगा।

क्योंकि परमेश्वर ने पार्थिव परादीस को बन्द कर दिया था और पृथ्वी से हटा लिया था, इसलिए लोग इस निश्चय पर पहुँचे थे कि अब वह स्वर्ग में है और साथ ही फिर से परादीस-जैसे शान्ति के राज्य के रूप में प्रकट होगा। पार्थिव परादीस परलोक के और भविष्य के परादीस का आदर्श-रूप बन जाता है।

धन्य लोगों के स्वर्गीय निवास-स्थान के लिए यहूदी धर्म में ज्ञात अन्य नाम ये हैं:

- “जीवितों का देश” – भजन संहिता 116:9 के आधार पर: “मैं जीवितों के देश में यहोवा के सामने चलता फिरता रहूँगा।”
- “जीवितों की गठरी” (1 शमूएल 25:29) – जीवितों की वह गठरी, जो प्रभु के पास बँधी है, बहुधा धन्य लोगों का स्थान समझी जाती थी।
- “भंडार-घर”⁵⁸ – “तेरा प्राण अनन्त जीवन के भंडार-घर में सुरक्षित रखा जाए।”
- “परमेश्वर के सिंहासन के नीचे” – धर्मियों के प्राण महिमा के सिंहासन के नीचे सुरक्षित रखे जाते हैं।⁵⁹
- “स्वर्ग” – प्राण तब तक स्वर्ग में रहते हैं जब तक पुनरुत्थान में वे फिर से शरीर के साथ एक नहीं हो जाते।

ये प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि यीशु के समय में परलोक की एक ऐसी समझ या धारणा थी जो पुराने नियम के प्रकाशन से स्पष्ट रूप से आगे जाती थी। यह समझ कहाँ से आई, यह पता लगाना कठिन है। निर्णायक बात यह है कि यीशु इस सन्दर्भ में “परादीस” (लूका 23:43), “नरक”⁶⁰ और “हेडीस” (उदाहरण के लिए लूका 16:23) शब्दों का प्रयोग करता है, जो उस समय के यहूदियों के, और विशेषकर फरीसियों के, परलोक-विश्वास का वर्णन करते थे। पौलुस एक फरीसी था, और वह भी मृत्यु के बाद प्राण के जीवित रहने पर और पुनरुत्थान पर विश्वास करता था। इसलिए ये शब्द यहूदियों के लिए नए नहीं थे। इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह इस विश्वास के मूल कथन को मान्यता देता है, जिसमें कुछ हद तक सच्चाई थी।⁶¹ यह पृष्ठभूमि हमारी समझ के लिए सहायक है। परन्तु क्या ईश्वरीय सत्य है, इसका निर्णय करने के लिए मापदंड सदा और केवल बाइबल, परमेश्वर का प्रेरित वचन, ही रहता है।

2.3.3 नए नियम में परादीस

स्पष्ट है कि प्रभु यीशु उस समय की धारणा से जुड़ता है, जिसके अनुसार परादीस वह स्थान है जहाँ धर्मियों के कूच कर गए प्राण रहते हैं। यह बात परिस्थिति से अनिवार्य रूप से निकलती है। क्रूस पर अपनी मृत्यु के

58. वही।

59. तुलना करें प्रकाशितवाक्य 6:9।

60. यूनानी “गेहेन्ना” (उदाहरण के लिए मत्ती 5:22)।

61. इस विषय में देखें “Facts and Theories as to a future State” in F.W. Grant, *Old Testament Shadows*, Charlotte, North Carolina (Books for Christians), 1972, पृ. 246 से आगे।

दिन वे परादीस में जाने वाले थे। उद्धारकर्ता का आशय कुछ ऐसा है: “तुझे तब तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं जब तक मैं राजा के रूप में प्रकट न हो जाऊँ; नहीं, तू आज ही परादीस में मेरे पीछे आ सकता है।” उद्धारकर्ता उसी दिन मरा और उसने अपना आत्मा पिता के हाथों में सौंप दिया। अपराधी उसके थोड़ी देर बाद मरा। जब प्रभु मरा, तो वह परादीस में गया, और अपराधी एक क्षमा पाए हुए पापी के रूप में उसके पीछे वहाँ पहुँचा।

नए नियम में लूका 23:43 के अतिरिक्त “परादीस” शब्द केवल दो बार और आता है। पौलुस परादीस के विषय में और वहाँ उठा लिए जाने के अपने असाधारण अनुभव के विषय में बताता है:

“मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूँ, चौदह वर्ष हुए (न जाने देह-सहित, न जाने देह-रहित; परमेश्वर जानता है), ऐसा मनुष्य जो तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया। और मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूँ (न जाने देह-सहित या देह-रहित, मैं नहीं जानता; परमेश्वर जानता है), कि वह परादीस में उठा लिया गया और उसने ऐसी अकथनीय बातें सुनीं, जिनका कहना मनुष्य को उचित नहीं” (2 कुरिन्थियों 12:2-4)।

पौलुस परादीस को तीसरा स्वर्ग कहता है। यह नाम केवल इसी सन्दर्भ में आता है और स्पष्ट दिखाता है कि यह एक स्वर्गीय परादीस है। परादीस के समानार्थी के रूप में “तीसरा स्वर्ग” शब्द को इस प्रकार समझाया जा सकता है: पहला स्वर्ग वह वायुमंडल है जिसमें हम रहते हैं, दूसरा स्वर्ग तारों का अन्तरिक्ष है, और तीसरा स्वर्ग वह परादीस है जहाँ परमेश्वर रहता है।

इसकी एक सहायक समानता हमें इब्रानियों 9:23 में मिलती है (तुलना करें 8:5)। वहाँ कहा गया है कि पुराने नियम में मिलापवाला तम्बू और उससे जुड़ी आराधना स्वर्गीय बातों का प्रतिरूप हैं। “तीसरा स्वर्ग” एक क्रम और सीढ़ी को दर्शाता है, जैसी मिलापवाले तम्बू में भी दिखाई देती है। आँगन (1) से होकर पवित्रस्थान (2) में से परमपवित्रस्थान (3) में जाया जाता था। वहाँ वाचा का सन्दूक था, परमेश्वर का सिंहासन। वहाँ परमेश्वर रहता था। मिलापवाला तम्बू परमेश्वर का घर था, पृथ्वी पर परमेश्वर का निवास-स्थान।⁶²

इसलिए “तीसरा स्वर्ग” शब्द परमेश्वर के निवास-स्थान का विचार सामने लाता है। यह परादीस की एक मुख्य पहचान है। इसलिए वहाँ, जैसे कभी मिलापवाले तम्बू में, परमेश्वर की महिमा है। यह महिमा अब मसीह के मुख में देखी जाती है (2 कुरिन्थियों 4:4-6), क्योंकि वह वहाँ परमेश्वर के दाहिने बैठा है (1 पतरस 3:22)।

पौलुस के लिए इस अभिभूत कर देनेवाली महिमा का वर्णन मानवीय शब्दों में करना असम्भव था। जो कुछ उसने वहाँ देखा और सुना, वह मनुष्य की कल्पना-शक्ति से परे था, जैसा कि उसके शब्दों से समझा

62. मसीह के पूरे किए गए कार्य के आधार पर विश्वासियों को अब आत्मिक रूप से, विश्वास में, परमेश्वर की उपस्थिति में, उसकी निकटतम समीपता में, खुला प्रवेश प्राप्त है (इब्रानियों 4:16; 10:19 से आगे; इफिसियों 2:18)।

जा सकता है।

हम पहले ही देख चुके हैं कि जब प्रभु यीशु ने अपराधी से बात की, तो वह परादीस के विषय में उस यहूदी धारणा से जुड़ा, जिसके अनुसार वह मृत्यु के बाद प्राणों के रहने का स्थान है। परन्तु 2 कुरिन्थियों 12:2 में यह अर्थ नहीं मिलता। इससे यह निकलता है, जैसा कि तीसरा पद भी दिखाएगा, कि हम “परादीस” शब्द को केवल सोए हुए विश्वासियों के रहने के स्थान तक सीमित नहीं कर सकते। परादीस इस उद्देश्य के लिए और एक सीमित समय के लिए “बनाया” नहीं गया है। निश्चय ही परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं था कि पौलुस को परादीस में सोए हुए विश्वासियों की अवस्था से परिचित कराए। नहीं, उसका उद्देश्य उसे वे स्वर्गीय महिमाएँ दिखाना था, जिनका केन्द्र महिमा पाया हुआ मसीह है,⁶³ और वह भी उसकी आगे की सेवा के लिए प्रोत्साहन और तैयारी के रूप में।

फिर भी 2 कुरिन्थियों 12 से एक मूलभूत तथ्य सामने आता है, जो मध्यवर्ती अवस्था के लिए निर्णायक है। पौलुस दो बार (पद 2-3) कहता है कि वह नहीं जानता था कि वह देह-सहित या देह-रहित परादीस में उठा लिया गया था। इसलिए उसके लिए देह से बाहर परादीस में होना संभव था। ठीक यही तब भी होता है जब कोई विश्वासी मरता है। उसका शरीर नष्ट होकर मिट्टी में मिल जाता है, जबकि आत्मा-प्राण परादीस में जाता है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि देह से बाहर, या देह के बिना, एक सचेत अस्तित्व है।

प्रकाशितवाक्य 2:7 में परादीस का तीसरी बार उल्लेख है:

“जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। जो जय पाए, उसे मैं उस जीवन के वृक्ष में से, जो परमेश्वर के परादीस में है, फल खाने को दूँगा।”

यहाँ भी स्वर्गीय परादीस का उल्लेख है। यह वर्णन अदन की वाटिका के वर्णन से जुड़ता है, क्योंकि यहाँ भी जीवन के वृक्ष की बात की गई है। वह उस समय वाटिका के बीच में था (उत्पत्ति 2:9), जैसे मसीह अपने स्वर्गारोहण के समय से एक महिमा पाए हुए मनुष्य के रूप में स्वर्गीय परादीस का केन्द्र है। जीवन के वृक्ष में मसीह को जीवन के सच्चे स्रोत के रूप में देखा जाता है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के काम 3:15)।

जय पानेवालों से प्रतिज्ञा की गई है कि वे उस जीवन के वृक्ष में से खाएँगे जो परमेश्वर के परादीस में है। यह प्रतिज्ञा, जो मूल रूप से सब विश्वासियों के लिए है, मृत्यु के बाद से पुनरुत्थान तक के समय तक सीमित नहीं है, बल्कि सदा-सर्वदा विश्वासियों की आशीष होगी। इसलिए हम जीवन के वृक्ष को नई सृष्टि में भी पाते हैं (प्रकाशितवाक्य 22:2, 14, 19)।

यहाँ भी “परादीस” शब्द समय से सीमित किसी मध्यवर्ती अवस्था तक और कूच कर गए प्राणों के रहने के स्थान तक सीमित नहीं है। यहाँ यह शान्ति के राज्य और नई सृष्टि का परादीस है, जिसमें तब जातिर्याँ और जी उठे पवित्र लोग जीवन के वृक्ष का आनन्द लेंगे।

63. इफिसियों 1:3; 2:6; कुलुस्सियों 3:1-4; फिलिप्पियों 3:20।

इस अध्ययन से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि स्वर्गीय परादीस वह स्थान है (और सदा से रहा है) जहाँ परमेश्वर पिता रहता है। जब प्रभु ने क्रूस पर अपना आत्मा पिता के हाथों में सौंपा, तो वह पिता के पास गया। परमेश्वर की निकटतम उपस्थिति का यह स्थान परमेश्वर की उस महिमा से भरा है जो अब मसीह में देखी जाती है। सब युगों के पवित्र लोग, जब सो जाते हैं, तो वहीं जाते हैं। वे घर जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग उनका घर है (2 कुरिन्थियों 5:8; फिलिप्पियों 3:20)। वहाँ वे (अर्थात् उनका आत्मा-प्राण) पुनरुत्थान के दिन तक रहते हैं। वहाँ वे अपने छुड़ानेवाले की उपस्थिति में (फिलिप्पियों 1:23) अपने परिश्रमों से विश्राम का आनन्द लेते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:13)।

2.3.4 क्या लूका 23:43 की कोई और व्याख्या संभव है?

यदि कोई यह मानकर चले कि मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है, तो निःसन्देह परादीस कूच कर गए प्राणों का स्थान नहीं हो सकता। इसलिए यह सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है कि यहाँ परादीस आनेवाला राज्य है। परन्तु यहूदी परंपरा (ऊपर देखें) इस विचार का खंडन करती है। सबसे बढ़कर क्रूस पर कहे गए प्रभु के शब्द इसे स्पष्ट करते हैं: “आज [भविष्य में नहीं] तू मेरे साथ परादीस में होगा।” प्रभु ने “आज” इसलिए कहा, क्योंकि अपनी मृत्यु के दिन वह परादीस में गया।

जो यह मानते हैं कि राज्य और परादीस एक ही हैं, उनके लिए यह “आज” एक समस्या है, क्योंकि सामर्थ्य में प्रकट राज्य अब तक आया नहीं है। इस समस्या को इस प्रकार सुलझाने का प्रयास किया गया कि अल्पविराम या कोलन “आज” से पहले नहीं, बल्कि “आज” के बाद रखा गया। तब “आज” परादीस में प्रवेश के समय से नहीं, बल्कि यीशु के कथन के समय से जुड़ जाता है।

मूल रूप से यह ध्यान देने योग्य है कि नए नियम के लेखक विराम-चिह्न नहीं जानते थे। विराम-चिह्न और शब्दों के बीच की दूरी बाद में, लगभग चौथी शताब्दी ईस्वी में, जोड़ी गई। फिर भी केवल एक ही(!) हस्तलिपि विराम-चिह्नों के द्वारा “आज” को कथन के समय से जोड़ती है,⁶⁴ न कि परादीस में प्रवेश से।⁶⁵ यह लूका की भाषा-शैली के भी बिलकुल विपरीत होता, जैसा कि लूका 2:11; 4:21; 19:5, 9; 22:34 दिखाते हैं।

यही बात याकूब 4:13 और इब्रानियों 3:7 पर भी लागू होती है। इन पदों में हमें मिलती-जुलती वाक्य-रचना मिलती है। यहाँ भी “आज” कथन का समय बताने के लिए नहीं, बल्कि घटना के समय पर बल देने के लिए है। “आज” शब्द का अर्थ स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त लूका में एक अनावश्यक दोहराव हो जाता,

64. सीरियाई हस्तलिपि, क्यूरेटन सीरियाई (Cureton), 5वीं शताब्दी।

65. नकल करते समय इस पद को बदला भी गया या इसमें कुछ जोड़ा भी गया। कुछ हस्तलिपियों से पता चलता है कि “तो अब ढाढ़स रख”, “परादीस” के स्थान पर “अदन की वाटिका”, “क्या तू सचमुच विश्वास करता है” जैसे वाक्यांश बाद में जोड़े गए। देखें Bruce Metzger, *A Textual Commentary on the Greek New Testament*, London (United Bible Societies), 1975, पृ. 181, 182।

क्योंकि “मैं तुझ से कहता हूँ” शब्द पहले से वर्तमान काल में हैं। क्या अपराधी के लिए यह अस्पष्ट था कि उसने प्रभु के शब्द कब सुने? नहीं।

प्रभु यीशु अपने उत्तर में अपराधी की वास्तविक आवश्यकता को पूरा करता है। वह आवश्यकता यह थी कि उसकी मृत्यु के दिन, क्रूस के उस “आज” में, उसके साथ क्या होगा। मृत्यु के उस पार वह कहाँ जाएगा? इसी मूलभूत और उन क्षणों में निर्णायक प्रश्न का उत्तर प्रभु यीशु देता है, यद्यपि अपराधी ने स्वयं यह नहीं पूछा था। इस प्रकार मृत्यु की घड़ियों में अपराधी की प्रतीक्षा और आशा पूरी से भी अधिक होती है। वह उससे कहीं बढ़कर पूरी होती है, क्योंकि उसे अपनी मृत्यु के तुरन्त बाद मसीह के पीछे स्वर्गीय परादीस में जाने का अधिकार मिलता है।

इस प्रकार हमें सान्त्वना का एक ईश्वरीय वचन दिया गया है, अर्थात् यह कि जो अपराधी को मिला, वही हमारे लिए भी है। हमारी अवस्था ठीक उस अपराधी जैसी थी। हम आशाहीन थे और पाप के दोष के कारण मृत्यु-दंड के अधीन थे। परन्तु उसके अनुग्रह ने दंड की आज्ञा को रद्द कर दिया, क्योंकि वह क्रूस पर मरा। और इसलिए यदि हम उसके आने से पहले मर जाएँ, तो हम भी परादीस में जा सकते हैं। हो सकता है कि हम मरने से न बचाए जाएँ, जैसे अपराधी भी नहीं बचाया गया। परन्तु मृत्यु हमें हमारे प्रभु के पास पहुँचा देती है।

मनुष्य ने अपनी अनाज्ञाकारिता के द्वारा स्वयं परादीस तक पहुँचने का अधिकार खो दिया, परन्तु मसीह ही है जो अपने अनुग्रह से हमारे लिए परादीस का मार्ग खोलता है, और वह भी केवल नई सृष्टि में नहीं, बल्कि तभी, जब हम मरते हैं।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- “परादीस” का क्या अर्थ है
- पुराने नियम में?
- लूका 23 में यीशु मसीह के कथन में?
- 2 कुरिन्थियों 12 में पौलुस के कथन में?
- वहाँ कौन है?
- सामान्य रूप से मनुष्य के लिए परादीस का क्या महत्व है?

2.4 अनन्त महिमा – मृत्यु के सामने आशा

शायद कुरिन्थियों के नाम पौलुस की दूसरी पत्री का यह पाठ हमारे विषय पर वह सबसे विस्तृत और सबसे अधिक प्रकाश डालनेवाला खंड है जो हमें नए नियम की पत्रियों में मिलता है। मसीह के कारण सहे गए दुःखों के द्वारा मृत्यु से लगातार सामना होना प्रेरित पौलुस को मृत्यु, पुनरुत्थान और उनके बीच के समय के विषय में लिखने के लिए प्रेरित करता है। इन पदों में एक महान, ईश्वरीय सान्त्वना है (2 कुरिन्थियों 1:3; 2 थिस्सलुनीकियों 2:16), जिसे संसार नहीं जानता (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)।

वास्तव में कोई सोचेगा कि कुरिन्थियों को 1 कुरिन्थियों 15 में पहले ही इस विषय की विस्तृत शिक्षा दी जा चुकी थी। वहाँ बात एक भ्रामक शिक्षा का विरोध करने की थी, जो पुनरुत्थान का इनकार करती थी (पद 12)। इसी कारण पौलुस ने पुनरुत्थान के विषय में मूलभूत बातें लिखीं। यहाँ बात यह है कि यह आशा प्रतिदिन के जीवन के संकट में कैसे काम करती है, वह कैसा प्रोत्साहन, कैसी सान्त्वना और कैसा भरोसा दे सकती है। सन्दर्भ के कारण हम 2 कुरिन्थियों 4:16 से 5:10 तक का पाठ उद्धृत करते हैं (जर्मन एल्बरफ्रेल्डर अनुवाद से अनूदित):

“इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; परन्तु यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का यह हल्का-सा क्लेश हमारे लिए हर माप से बढ़कर महिमा का अनन्त भार उत्पन्न करता है, क्योंकि हम देखी हुई वस्तुओं को नहीं, बल्कि अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ अनन्त हैं।

क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का घर, अर्थात् यह डेरा [या: डेरा-रूपी घर], गिराया जाएगा, तो हमें परमेश्वर की ओर से एक भवन मिलेगा, एक ऐसा घर जो हाथों का बनाया हुआ नहीं, बल्कि अनन्त है और स्वर्ग में है। क्योंकि इसमें तो हम कराहते हैं और लालसा करते हैं कि अपने स्वर्गीय निवास को ऊपर से पहिन लें: यदि सचमुच ऐसा हो कि पहिने हुए होने पर भी हम नंगे न जाएँ। क्योंकि हम जो इस डेरे में हैं, बोझ से दबे कराहते हैं, क्योंकि हम उतारना नहीं, बल्कि ऊपर से पहिन लेना चाहते हैं, ताकि जो मरनहार है वह जीवन में डूब जाए। और जिसने हमें इसी के लिए तैयार किया है, वह परमेश्वर है, जिसने हमें आत्मा का बयाना दिया है। इसलिए हम सदा ढाढ़स बाँधे रहते हैं और जानते हैं कि जब तक हम देह में घर किए हुए हैं, तब तक प्रभु से दूर परदेश में हैं (क्योंकि हम विश्वास से चलते हैं, न कि देखने से); परन्तु हम ढाढ़स बाँधे रहते हैं, और देह से दूर परदेश में और प्रभु के पास घर में रहना अधिक अच्छा समझते हैं। इसलिए हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे घर में हों चाहे परदेश में, हम उसे भाते रहें। क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय-आसन के सामने खुल जाए, ताकि हर एक व्यक्ति अपने भले-बुरे कामों का बदला, जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए।”

पवित्रशास्त्र के इस वचन में अस्थायी, नाशमान बातों और अनन्त, स्वर्गीय बातों को आमने-सामने रखा गया है। विश्वास के तराजू पर अनन्त महिमा के भार की तुलना में क्लेश का कोई भार नहीं। विश्वास के द्वारा हम अभी से उस आनेवाली महिमा की ओर देखते हैं, जिसके लिए हम बुलाए गए हैं (1 पतरस 5:10; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12), हाँ, जो अभी से विश्वास में हमारी सम्पत्ति है। पवित्र आत्मा का निरन्तर प्रयास यही है कि हमारे मनों में महिमा की आशा को जीवित बनाए रखे (कुलुस्सियों 1:27; तीतुस 2:13; 1 पतरस 4:14)। यह बिलकुल आवश्यक है, क्योंकि हमारा झुकाव यह है कि हम अपने जीवन को देखी हुई वस्तुओं की ओर लगाएँ और उन्हें अपने ऊपर हावी होने दें (4:18)।

पौलुस अनन्त महिमा के विषय में तब लिखता है जब वह उन दुःखों के बारे में सोचता है जो मसीह के लिए उसकी अथक सेवा के कारण आए। कितनी बार उसने मृत्यु को आँखों के सामने देखा (2 कुरिन्थियों 4:7-15; 11:23-28)! यह संभावना थी कि वह मसीह के कारण मृत्यु सहे। ऐसा लगता है कि पौलुस अब इस बात से इनकार नहीं करता कि वह मसीह के लौटने से पहले मर सकता है।

इस पाठ में मरने की, मृत्यु के बाद से पुनरुत्थान तक की अवस्था की, और पुनरुत्थान तथा मरनहार देह के बदल जाने की बात है। इसे स्पष्ट रूप से समझाने के लिए पौलुस प्रतिदिन के जीवन से तीन चित्रों का प्रयोग करता है। ये ऐसे चित्र हैं जो भविष्य की बातों को हमारे निकट लाते हैं। नए नियम का कोई भी लेखक इस मध्यवर्ती अवस्था का या महिमा में पुनरुत्थान की देह का ऐसा वर्णन नहीं कर सका कि हम उसे समझ पाते।⁶⁶ नहीं, हमारे लिए यह एक बड़ी, आशा भरी उत्सुकता बनी रहती है कि वह एक दिन कितना महिमामय होगा।

पौलुस 5वें अध्याय के पहले 10 पदों में निम्नलिखित चित्रों का प्रयोग करता है:

- पृथ्वी पर का डेरा-रूपी घर
- पहिनाया जाना
- यात्रा और घर

पहले चित्र को ध्यान से देखने से पहले हम 2 कुरिन्थियों 4:16 की जाँच करें, जहाँ हमें इन चित्रों को समझने की एक कुंजी मिलती है।

“इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; परन्तु यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।”

यहाँ दो मूलभूत शब्द बताए गए हैं, जो मृत्यु के बाद मनुष्य के अस्तित्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं: बाहरी मनुष्यत्व और भीतरी मनुष्यत्व।

2.4.1 बाहरी मनुष्यत्व

बाहरी मनुष्यत्व वह नाशमान, मरनहार मनुष्य है, जिसके क्षय की प्रक्रिया हमारी आँखों के सामने चलती है। अध्याय 4 और 5 में बाहरी मनुष्यत्व का वर्णन इन अभिव्यक्तियों से भी किया गया है:

- मिट्टी का बरतन (4:7)
- देह (4:10)
- मरनहार शरीर (4:11)
- पृथ्वी पर का डेरा-रूपी घर (5:1)

66. यद्यपि पौलुस परादीस में उठा लिया गया था, फिर भी वह यह नहीं बता सका कि उसने वहाँ क्या सुना, देखा और अनुभव किया।

- जो मरनहार है (5:4)

“बाहरी मनुष्यत्व” किसी मनुष्य का वह भाग है जो बाहर की ओर संसार को दिखाई देता है। अपने पार्थिव अस्तित्व में वह उन सब बातों से जो उस पर आती हैं और उस पर आक्रमण करती हैं, घुलता और घिसता जाता है। पौलुस के साथ यह विशेष रूप से मसीह के कारण सताव से और परमेश्वर के राज्य और परमेश्वर की कलीसिया के लिए उसके अथक परिश्रम से हुआ (2 कुरिन्थियों 4:7-12; 11:23-28)।

बाहरी मनुष्यत्व मानो भीतरी मनुष्यत्व को घेरे रहता है, और इसलिए हम मरनहार खोल की भी बात करते हैं। फिर भी यहाँ प्राण और देह को, भौतिक और आत्मा-संबंधी को, अलग करना सरल नहीं है। बाहरी मनुष्यत्व में वह सब आता है जो एक मरनहार शरीर में हमारे पार्थिव अस्तित्व को बनाता है। प्राण-संबंधी और मानसिक क्रियाएँ, और भावनाएँ भी, बाहरी मनुष्यत्व से इस प्रकार जुड़ी हैं कि निराशा, उदासी और शिथिलता का उद्गम वहीं है।

बाहरी मनुष्यत्व नश्वरता और समय की सीमा के अधीन है। अन्त में मृत्यु इस आसानी से टूटनेवाले बरतन को तोड़ देगी। परन्तु जिस परमेश्वर ने प्रभु यीशु को मृत्यु में से जिलाया, वह देह के उस टूटे हुए बरतन को भी, जो मानो ठीकरों में बिखर गया है, पुनरुत्थान में फिर से जोड़ेगा और सिद्ध रूप में प्रस्तुत करेगा (2 कुरिन्थियों 4:14)।

2.4.2 भीतरी मनुष्यत्व

परन्तु मनुष्य केवल बाहरी मनुष्यत्व से नहीं, बल्कि भीतरी मनुष्यत्व से भी बना है। भीतरी मनुष्यत्व मनुष्य के भीतर की ओर मुड़े हुए, अभौतिक और अदृश्य पक्ष को दर्शाता है। 2 कुरिन्थियों 4:16-5:10 में बात विश्वासियों की है,⁶⁷ क्योंकि केवल वे ही प्रतिदिन नए होने का अनुभव करते हैं। भीतरी मनुष्यत्व आयु की कोई सीमा नहीं जानता; वह पवित्र आत्मा के द्वारा निरन्तर नया होता रहता है। भीतरी मनुष्यत्व अनन्त बातों को देख सकता है और विश्वास में उन्हें ग्रहण कर सकता है। परमेश्वर भीतरी मनुष्यत्व को ताज़गी देता है, जिसके पास इस प्रकार शक्ति का एक गुप्त स्रोत है।

पतरस “मन के गुप्त मनुष्यत्व” की बात करता है (1 पतरस 3:4)। मन में से वह अविनाशी (समय से परे!, अर्थात् जो सदा, मृत्यु के पार भी, बना रहता है) नम्र और शान्त आत्मा निकलता है।

प्रभु यीशु कहता है: “क्योंकि भीतर से, अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरे विचार निकलते हैं ... ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं” (मरकुस 7:21-23; तुलना करें मत्ती 7:15; लूका 11:39-40)।

भीतरी मनुष्यत्व परमेश्वर से और परमेश्वर के लिए जीता है। वह परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है (रोमियों 7:22)। विश्वासी परमेश्वर के आत्मा के द्वारा भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाता है, ताकि मसीह

67. अविश्वासी के पास भी एक भीतरी मनुष्यत्व है, परन्तु दूसरे अर्थ में, अर्थात् आत्मा-प्राण।

विश्वास के द्वारा उसके मन में वास करे (इफिसियों 3:16-17)।

इन सब बातों से यह निकलता है कि जो पौलुस पद 18 में कहता है, वह भीतरी मनुष्यत्व पर भी लागू होता है: “क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ अनन्त हैं।” भीतरी मनुष्यत्व अनन्तकाल तक जीवित रहेगा।⁶⁸ वह शारीरिक मृत्यु के अधीन नहीं है।

में “बाहरी” और “भीतरी मनुष्यत्व” शब्दों को कुंजी-शब्द क्यों कहता हूँ?

आगे के चित्रों में हमें एक समानता मिलती है: डेरा-रूपी घर और पहिनाया जाना बाहरी मनुष्यत्व के अनुरूप हैं। इसी देह में भीतरी मनुष्यत्व का घर है, और वह उसमें रहता है। वह एक डेरा-रूपी घर में रहता है, उसे पहिनाया जाता है, और वह देह से दूर परदेश में भी हो सकता है।

2.4.3 पृथ्वी पर का डेरा-रूपी घर

“क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का घर, अर्थात् यह डेरा, गिराया जाएगा, तो हमें परमेश्वर की ओर से एक भवन मिलेगा, एक ऐसा घर जो हाथों का बनाया हुआ नहीं, बल्कि अनन्त है और स्वर्ग में है” (2 कुरिन्थियों 5:1)।

यहाँ पहला चित्र प्रस्तुत किया गया है: मानवीय शरीर में हमारे पार्थिव अस्तित्व की, अर्थात् शरीर के अस्थायी-पार्थिव रूप की, तुलना एक डेरा-रूपी घर से की गई है, उसके अनन्त-स्वर्गीय रूप, अर्थात् परमेश्वर के भवन, के विपरीत। तम्बू बनानेवाला पौलुस (प्रेरितों के काम 18:3) अपने जीवन के अनुभव से बोलता है। डेरा-रूपी घर पार्थिव है, क्योंकि मनुष्य मिट्टी से रचा गया (उत्पत्ति 2:7) और पार्थिव क्षेत्र में रहता है (1 कुरिन्थियों 15:48)। डेरा-रूपी घर जीवन की अस्थिरता की, यात्री जीवन की, और किसी स्थान पर थोड़े समय के ठहराव की भी याद दिलाता है। मनुष्य को एक दिन पृथ्वी को छोड़ना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त डेरा आश्रय और निवास की बात करता है। उसमें रहा जाता है, जैसे हम अपनी देह में रहते हैं।⁶⁹

जब यह पृथ्वी पर का डेरा-रूपी घर, अर्थात् देह में हमारा पार्थिव अस्तित्व, मृत्यु के द्वारा गिराया जाता है, तो उसके **तुरन्त** बाद हमें परमेश्वर की ओर से एक भवन मिलता है। यह एक बड़ी सान्त्वना है, क्योंकि तब मृत्यु अस्तित्व के एक ऐसे स्वर्गीय रूप में सीधा प्रवेश है जो हाथों का बनाया हुआ नहीं है। इसलिए उसकी तुलना हमारी मरनहार देह में हमारे पार्थिव अस्तित्व से नहीं की जा सकती। इस प्रकार परमेश्वर का यह भवन पहले तो मृत्यु के बाद की हमारी उस अवस्था का वर्णन करता है, जिसका वर्णन प्रेरित पद 8 में “प्रभु के पास घर में [अपने घर पर]” शब्दों से करता है।

मृत्यु के द्वारा इस डेरा-रूपी घर को “उतारा” भी जा सकता है (पद 4)। पौलुस जिन तीन चित्रों का प्रयोग करता है, वे एक दूसरे में घुल-मिल जाते हैं, इसलिए पद 2 में निवास साथ ही साथ वस्त्र भी है।

68. भीतरी मनुष्यत्व नई सृष्टि या नए मनुष्यत्व का ही दूसरा नाम है। विश्वासी को जो अनन्त जीवन मिलता है, उसका भी इससे घनिष्ठ संबंध है।

69. यशायाह 38:12; मरकुस 14:58; यूहन्ना 2:19-22।

इसलिए कोई इस डेरा-रूपी घर से “निकल” भी सकता है और उसे छोड़ भी सकता है (पद 8)। यहाँ संकेत मिलता है कि मनुष्य देह (डेरा-रूपी घर) में रह (बस) भी सकता है, और उसे छोड़ (उसमें से निकल) भी सकता है, ताकि कहीं और रहे।

यही विचार हमें प्रेरित पतरस के यहाँ 2 पतरस 1:13-14 में मिलता है। वह शीघ्र ही शहीद होकर मरने वाला था और पृथ्वी से विदा लेने वाला था (पद 15), ताकि घर में, अपने प्रभु के पास, रहे। अपनी मृत्यु के लिए वह “विदाई” (यूनानी: **exodus**) शब्द का प्रयोग करता है। यह पृथ्वी पर के डेरा-रूपी घर से निकलना है। स्पष्ट है कि पतरस का अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ। वह मृत्यु के पार एक दूसरे स्थान पर गया – अपने प्रभु के पास। उसने टूटनेवाले डेरा-रूपी घर को परमेश्वर के अविनाशी भवन से बदल लिया।

अस्तित्व के इस रूप के विषय में हम केवल इतना जानते हैं कि वह अनन्त और स्वर्गीय है। परन्तु इन दोनों पहचानों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हमारे पुनरुत्थान से पहले ही हमारा आनन्द और हमारी धन्यता बड़ी है। फिर भी यह एक मध्यवर्ती अवस्था है, अन्तिम अवस्था नहीं। देह मिट्टी में मिल चुकी है और अभी मृत्यु की सामर्थ्य के अधीन है। ऐसा लगता है मानो अन्तिम शब्द मृत्यु का हो। यदि ऐसा होता, तो परमेश्वर अपनी पूर्ण महिमा तक नहीं पहुँच पाता। परन्तु परमेश्वर अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचेंगा, क्योंकि वह मृत्यु पर विजयी है। यह यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा सिद्ध हो चुका है। इसलिए विश्वासियों के पुनरुत्थान में परमेश्वर मनुष्य की उस एकता को, जो आत्मा, प्राण और देह से बनी है, फिर से स्थापित करेगा। इस प्रकार “परमेश्वर की ओर से भवन” में हमारी पुनरुत्थान की देह भी सम्मिलित है, जो हमारा अनन्त भाग है।

आगे के पद 2 और 4 में भवन का यही अर्थ है। परमेश्वर विश्वासी को एक टूटनेवाले तम्बू के विपरीत एक अनन्त घर देता (बनाता) है। यह महिमा की वह देह है जो मसीह के पास अब है (फिलिप्पियों 3:21; 1 यूहन्ना 3:2)। यह घर स्वर्ग का है, क्योंकि यह एक स्वर्गीय देह है (1 कुरिन्थियों 15:48-49), जिसका उद्देश्य और घर वहीं है। मृत्यु उसे फिर छू नहीं सकती, नष्ट करना तो दूर की बात है, क्योंकि यह एक अनन्त घर है, जो (मानवीय) हाथों से नहीं, बल्कि परमेश्वर के द्वारा बनाया गया है।

2.4.4 पहिनाया जाना

“क्योंकि इसमें तो हम कराहते हैं और लालसा करते हैं कि अपने स्वर्गीय निवास को ऊपर से पहिन लें” (2 कुरिन्थियों 5:2)।

हमारी पार्थिव देह पाप के परिणामों के कारण दुःख उठाती है। हम प्रतिदिन उन कष्टों, संकटों और बाधाओं के कारण कराहते हैं जो पाप के द्वारा संसार में आए हैं। इसलिए हम उस क्षण की लालसा करते हैं जब हमें एक नई देह मिलेगी, जिसका पाप और उसके परिणामों से फिर कोई संबंध न होगा। यह निवास हमारे लिए तैयार है। जब ऐसा होगा, तब हम उसे “ऊपर से पहिन लेंगे”। (यहाँ निवास का पहला चित्र वस्त्र के दूसरे चित्र में बदल जाता है।) उस क्षण वस्त्रों की अदला-बदली होती है। पुराना वस्त्र, अर्थात् जो मरनहार है (पद

4), सदा के लिए उतार दिया जाता है, क्योंकि उसे जीवन के नए वस्त्र के लिए स्थान छोड़ना पड़ता है। 1 कुरिन्थियों 15:51-54 में इस क्षण को “बदल जाना” कहा गया है।

हम, जो जीवित हैं, तब बदल जाएँगे जब प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर की सन्तान को स्वर्गीय घर में, पिता के घर में (यूहन्ना 14:3), ले जाने के लिए फिर आएगा। इस पद में बात केवल उन विश्वासियों की है जो उस क्षण जीवित होंगे, क्योंकि सोए हुए विश्वासी पुनरुत्थान की देह पाते समय उसे “ऊपर से पहिनेंगे” नहीं, बल्कि उन्हें वह “पहिनाई जाएगी”: “क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले” (1 कुरिन्थियों 15:53)।

मसीह में मरे हुए जी उठेंगे, और जीवित लोग बदल जाएँगे। तब सब परमेश्वर के पुत्र के समान होंगे और उनके पास स्वर्गीय पुनरुत्थान की देह होगी, ताकि वे सदा के लिए पिता के स्वर्गीय घर में रहें।⁷⁰

2 कुरिन्थियों 5:3 में पौलुस नंगेपन के विषय में एक गम्भीर चेतावनी देता है:

“... यदि सचमुच ऐसा हो कि पहिने हुए होने पर भी हम नंगे न पाए जाएँ।”

इस बीच के वाक्यांश में पौलुस बताता है कि वस्त्र पहिने होने पर भी नंगे होने की संभावना है। यह एक प्रत्यक्ष विरोधाभास लगता है, क्योंकि जो वस्त्र पहिने है, वह उसी समय नंगा नहीं हो सकता। नंगा पाया जाने का क्या अर्थ है? इस अभिव्यक्ति का एक न्यायिक अर्थ है: किसी न्यायालय के सामने उपस्थित होना और अपनी अवस्था में – दोषी या निर्दोष – पहचाना जाना। इस पद में “नंगा पाया जाना” का निर्णय मन की आत्मिक अवस्था से संबंधित है।

इसका एक उपयुक्त उदाहरण हमें आदम में मिलता है। जब उसने पाप किया, तो परमेश्वर ने उसे उसके छिपने के स्थान से पुकारकर बाहर बुलाया। वह छिप गया था, क्योंकि उसने जान लिया था कि वह नंगा है (उत्पत्ति 3:7, 10-11)। अपना नंगापन ढाँकने के लिए उसने अंजीर के पत्तों का एक लंगोट बना लिया था। परन्तु यह वस्त्र परमेश्वर के सामने टिक न सका। पत्ते उसके नंगेपन को ढाँक न सके। परमेश्वर के सामने वह वस्त्र के बावजूद नंगा था।

तब परमेश्वर ने स्वयं मनुष्य के लिए पशुओं के चमड़े के अंगरखे बनाए (उत्पत्ति 3:21)। इन पशुओं को मरना पड़ा। यह प्रतीक के रूप में मसीह की मृत्यु और उसके बहाए गए लहू की बात करता है, जिसके द्वारा पापी का उद्धार होता है, जब उसे “उद्धार के वस्त्र” पहिनाए जाते हैं।⁷¹

विश्वासी मसीह की धार्मिकता को पहिने हुए है और उसमें लिपटा हुआ है। इसके विपरीत अविश्वासी आत्मिक रूप से नंगे हैं, और इसी अवस्था में वे एक दिन आदम की तरह परमेश्वर के सामने खड़े होंगे (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। वहाँ वे अपने पाप में उघाड़े और खोले हुए होंगे, क्योंकि उनके पास “धार्मिकता का बागा” नहीं है। इसलिए वे खोए हुए हैं और अनन्त पीड़ा में जाते हैं।

70. यूहन्ना 14:1-3; 17:24; 1 कुरिन्थियों 15:51-55; फिलिप्पियों 3:20-21; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; यहूदा 21।

71. यशायाह 61:10; लूका 15:22; गलातियों 3:27; प्रकाशितवाक्य 3:17-18।

यह छोटा-सा बीच का वाक्यांश उन सबके लिए एक गम्भीर चेतावनी है जो केवल दिखावे के मसीही हैं और जिन्होंने मसीही होने का केवल एक बाहरी रूप अपना लिया है। प्रभु के आने पर प्रकट हो जाएगा कि उन्होंने उद्धार के वस्त्र नहीं पहिने, जो परमेश्वर के सामने टिकनेवाली एकमात्र बात है। उनके लिए परमेश्वर के सिंहासन के सामने का वह दिन आता है, जब सब कुछ प्रकट हो जाएगा। तब न कोई दिखावा रहेगा और न कोई ढाँकना; सब कुछ परमेश्वर की आँखों के सामने खुला और बेपरदा है (इब्रानियों 4:13)।

पाठ आगे इन शब्दों के साथ चलता है:

“क्योंकि हम जो इस डेरे में हैं, बोझ से दबे कराहते हैं, क्योंकि हम उतारना नहीं, बल्कि ऊपर से पहिन लेना चाहते हैं, ताकि जो मरनहार है वह जीवन में डूब जाए” (2 कुरिन्थियों 5:4)।

“उतारना” मृत्यु के द्वारा पृथ्वी पर के डेरा-रूपी घर का गिराया जाना (पद 1) है। यद्यपि मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु हमारी सेवक बन गई है (1 कुरिन्थियों 3:22-23), ताकि हमें परादीस में मसीह के पास पहुँचाए, फिर भी पौलुस उतारा जाना (मरना) नहीं, बल्कि ऊपर से पहिन लेना (बदल जाना) चाहता था, ताकि मरनहार देह को अनन्त और स्वर्गीय देह से बदल ले।

परमेश्वर की सन्तान ने मृत्यु-शय्या पर भी, अपनी मृत्यु की घड़ी में भी, मसीह के आने की प्रतीक्षा की है। विश्वासी मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं करते।⁷² उनकी आशा यह है कि वे स्वर्ग से यीशु मसीह के आने की बात जोहें (1 थिस्सलुनीकियों 1:10), ताकि तब बदल जाएँ। इसलिए पौलुस अपनी मृत्यु से पहले मसीह के आने को देखना अधिक पसन्द करता है।

“और जिसने हमें इसी के लिए तैयार किया है, वह परमेश्वर है, जिसने हमें आत्मा का बयाना दिया है” (2 कुरिन्थियों 5:5)।

भविष्य की ओर दृष्टि और उससे जुड़ी प्रतीक्षा हमारे लिए कोई अनिश्चित बात नहीं है। परमेश्वर हमारी निर्बलता में हमसे मिलने आता है और हमें, जो सन्देहों से घेरे जा सकते हैं, एक गारंटी और ज़मानत देता है। वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए स्वयं को बाध्य करता है। उसने हमें पवित्र आत्मा को बयाने (या अग्रिम राशि) के रूप में दिया है (2 कुरिन्थियों 1:22; 1 थिस्सलुनीकियों 4:8)।

यदि परमेश्वर हमें न बदले या न जिलाए, तो वह उस बयाने को खो देगा जो पवित्र आत्मा है! यही बात यह वचन कहना चाहता है! आत्मा सदा हमारे साथ रहेगा (यूहन्ना 14:16); मृत्यु के बाद भी वह हम में वास करता है (रोमियों 8:2, 11)। यह सत्य स्पष्ट रूप से मृत्यु के बाद के जीवन के पक्ष में बोलता है।

विश्वासियों की देहें परमेश्वर के आत्मा का मन्दिर हैं (1 कुरिन्थियों 6:19; 1 यूहन्ना 4:13), और अनन्तकाल तक रहेंगी। पवित्र आत्मा पवित्र लोगों की उन देहों को, जिनमें उसने वास किया है, नहीं छोड़ता

72. दूसरी ओर अगले पद दिखाते हैं कि मसीह के आने की आशा के साथ-साथ यह भरोसा भी है कि मरने के बाद हम प्रभु के पास होंगे। मसीह के आने की आशा के साथ-साथ यह भी उतनी ही बड़ी सान्त्वना है।

(रोमियों 8:11)। मरनहार देहों के पुनरुत्थान और बदल जाने में परमेश्वर के कार्य में वह स्वयं भागी होगा।

2.4.5 यात्रा और घर

“इसलिए हम सदा ढाढ़स बाँधे रहते हैं और जानते हैं कि जब तक हम देह में घर किए हुए हैं, तब तक प्रभु से दूर परदेश में हैं” (2 कुरिन्थियों 5:6)।

बयाने का हमारे पास होना हमें सदा ढाढ़स बाँधे रखता है, क्योंकि वह इस बात की गारंटी है कि हम में जो कुछ मरनहार है, वह शीघ्र ही जीवन में डूब जाएगा।

यहाँ तीसरा चित्र प्रस्तुत किया जाता है: परदेश में ठहरना और घर में रहना। हम जानते हैं कि जब तक हम देह में हैं, तब तक हम प्रभु के पास नहीं हैं, जहाँ वास्तव में हमारा स्थान है। इसलिए परदेश में हमारा ठहराव केवल सीमित समय का हो सकता है। यहाँ “घर किए हुए” शब्द का अर्थ है देह में रहना, या देह को अपना घर बनाए रखना। इसके विपरीत प्रभु से दूर परदेश में होने का अर्थ है कि हम पराए देश में हैं, अर्थात् संसार में, जहाँ हम परदेशी और यात्री हैं (1 पतरस 2:11)।

यह कथन मृत्यु के बाद की अवस्था के लिए बहुत प्रकाश डालनेवाला है। इस विरोध का अर्थ है कि केवल ये ही दो अवस्थाएँ, या रहने के दो स्थान, हैं। यहाँ इन दोनों अवस्थाओं के बीच किसी मध्यवर्ती चरण का उल्लेख नहीं है। कुछ लोग सोचते हैं कि इस चरण का सचेत अनुभव नहीं होता, और इसलिए वह व्यक्तिपरक रूप से (अर्थात् अपने अनुभव में) होता ही नहीं। परन्तु इन पदों से स्पष्ट होता है कि कोई अचेत मध्यवर्ती अवस्था, वह चाहे जैसी भी हो, वस्तुपरक रूप से है ही नहीं। और ऐसी अवस्था की कोई लालसा भी कैसे कर सकता है?

विश्वासी या तो देह में हो सकता है या प्रभु के पास; **कोई और संभावना नहीं है**। ठीक यही कारण है कि हम ढाढ़स बाँधे रह सकते हैं।

“(क्योंकि हम विश्वास से चलते हैं, न कि देखने से)” (2 कुरिन्थियों 5:7)

क्योंकि बात अदृश्य और इसलिए अनन्त वस्तुओं की है, इसलिए यह सत्य (पद 6) केवल विश्वास में ही पहचाना और समझा जा सकता है (इब्रानियों 11:1)। स्वर्गीय घर को केवल विश्वास में ही ग्रहण किया जा सकता है (इब्रानियों 11:13-15)। इसलिए यह पद हमें मसीहियों के रूप में हमारे जीवन के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धांत दिखाता है, जो घर के मार्ग पर परदेशी हैं। हमारी आशा विश्वास की बात है: “आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है; परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है, जब वह देखने में आए, तो फिर आशा कहाँ रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है, उसकी आशा क्या करेगा?” (रोमियों 8:24)।

विश्वासी को मृत्यु-निकट अनुभवों की और उन बातों की रिपोर्टों की आवश्यकता नहीं है जो रोगियों ने अपने मरते समय अनुभव कीं। विश्वासी केवल परमेश्वर के विश्वसनीय वचन पर भरोसा रखते हैं। उन्हें इन

रिपोर्टों से विचलित होने की आवश्यकता नहीं।

“परन्तु हम ढाढ़स बाँधे रहते हैं, और देह से दूर परदेश में और प्रभु के पास घर में रहना अधिक अच्छा समझते हैं” (2 कुरिन्थियों 5:8)।

इस पद में पद 6 का कथन उलट दिया गया है। पौलुस कहीं अधिक यह चाहता था कि वह देह से दूर परदेश में हो, क्योंकि वह जानता था कि तब हम तुरन्त प्रभु के पास घर में, अर्थात् अपने घर पर, होते हैं। मृत्यु के बाद की अवस्था को समझने के लिए यह पद एक कुंजी-पद है।

इसलिए जब कोई मर गया हो और देह में न रहा हो, तो वह घर में प्रभु के पास है। इस प्रकार देह और आत्मा-प्राण अलग हैं। अन्यथा कोई एक ही समय में देह से बाहर और घर में प्रभु के पास कैसे हो सकता है?

“देह से दूर परदेश में” होना साथ ही एक परदेशीपन भी है, क्योंकि आत्मा-प्राण, या भीतरी मनुष्यत्व, देह से अलग है। यह एक अपूर्ण अवस्था है, जिसका आरम्भ में उद्देश्य नहीं था। परमेश्वर ने मनुष्य को आत्मा-प्राण-देह-व्यक्तित्व के रूप में एक इकाई में बनाया। यद्यपि मृत्यु के कारण यह एकता अब नहीं रहती, फिर भी पुनरुत्थान में वह फिर से स्थापित की जाएगी। इसलिए “देह से दूर परदेश में” होना जी उठे विश्वासियों पर लागू नहीं होता, क्योंकि उनके पास पुनरुत्थान की देह है और इसलिए वे देह से दूर परदेश में नहीं हैं। यहाँ वर्णित अवस्था केवल सोए हुए विश्वासियों पर लागू होती है।

जब इस वर्तमान क्षण में परदेश और घर के बीच चुनने की बात हो, अर्थात् सबसे शीघ्र मार्ग से मसीह तक पहुँचने की, तो पौलुस मसीह के साथ रहने के लिए मरना अधिक पसन्द करता था (फिलिप्पियों 1:23)। यदि पौलुस यह चुन सकता कि उसे अनन्त घर किस प्रकार पहिनाया जाए, तो निःसन्देह वह उतारा जाना (मरना) नहीं, बल्कि ऊपर से पहिन लेना (बदल जाना) चाहता था (पद 4)।

“इसलिए हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे घर में हों चाहे परदेश में, हम उसे भाते रहें। क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय-आसन के सामने खुल जाए, ताकि हर एक व्यक्ति अपने भले-बुरे कामों का बदला, जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए” (अध्याय 5:9-10)।

घर की सारी लालसा और शीघ्र वहाँ पहुँचने की सारी प्रतीक्षा के बीच एक महत्वपूर्ण तथ्य को भूलना नहीं चाहिए। अनन्तकाल में केवल वही गिना जाएगा जो हमने देह में प्रभु को प्रसन्न करने के लिए किया है। यह मसीह के न्याय-आसन के सामने प्रकट होगा। बाकी सब कुछ, जिसका उसके लिए कोई मूल्य नहीं था, वहाँ टिक नहीं सकता और उसका प्रतिफल नहीं मिलेगा (1 कुरिन्थियों 3:12-15)। उन क्षणों में हम स्वयं अपने पूरे जीवन को मसीह की आँखों से देखेंगे, और अपने कामों के विषय में उसके निर्णय से पूरी तरह सहमत हो जाएँगे। वहाँ छुटकारे के प्रश्न पर विचार करने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि उसका निपटारा बहुत पहले हो चुका है। यहाँ बात केवल हमारे कामों के मूल्यांकन की है।

पौलुस कहता है कि हमें अपनी पूरी शक्ति लगाकर परमेश्वर की महिमा के लिए जीने का प्रयत्न करना चाहिए, चाहे हम देह में घर किए हुए (पद 6) हों या प्रभु से दूर परदेश में (पद 8)। दोनों बातें केवल पृथ्वी पर हमारे जीवन पर लागू होती हैं। वहीं हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए भलाई करने का प्रयत्न करना चाहिए। वह समय आ रहा है जब देह में, उस अनोखे और अद्वितीय रूप में जैसा अभी पृथ्वी पर है, यह फिर संभव न होगा, और जो छूट गया उसे फिर पूरा भी नहीं किया जा सकेगा।

2.4.6 अन्य व्याख्याएँ

पाठक से यह छिपाना उचित नहीं कि इस पाठ-खंड की अलग-अलग व्याख्याएँ हैं, जिनके द्वारा उस मत को भी सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है जिसका इस पुस्तक में खंडन किया गया है।

परमेश्वर की ओर से भवन – केवल पुनरुत्थान की देह

एक बहुत प्रचलित व्याख्या कहती है कि भवन केवल पुनरुत्थान की देह को दर्शाता है, न कि मृत्यु के बाद और पुनरुत्थान से पहले की किसी अवस्था को। इसमें पृथ्वी पर के डेरा-रूपी घर को केवल देह समझा जाता है। जब वह मृत्यु के द्वारा गिरा दिया जाता है, तो परमेश्वर हमें एक नई देह देगा, जिसे उसने स्वयं रचा है और जो फिर कभी नष्ट नहीं होगी। इसके अतिरिक्त यह देह स्वर्गीय है, क्योंकि उसी के साथ हम स्वर्ग में रहेंगे।

मूल रूप से मैं इस मत से सहमत हूँ, परन्तु फिर भी “हमें परमेश्वर की ओर से एक भवन मिलेगा” शब्दों में मैं उस क्षण के लिए परमेश्वर का सीधा प्रबन्ध देखता हूँ जब हम मरते हैं। डेरा-रूपी घर के गिराए जाने के तुरन्त बाद एक नया घर तैयार है। यह अभी पुनरुत्थान की देह नहीं है, क्योंकि उस समय अभी पुनरुत्थान नहीं होता। यह मृत्यु के बाद से पुनरुत्थान तक की वह अवस्था है जो परमेश्वर के भवन का एक भाग है। इसलिए यह भी स्वाभाविक है कि इस मध्यवर्ती अवस्था को यहाँ सम्मिलित किया जाए, क्योंकि पौलुस पद 8 में सीधे इसका उल्लेख करता है, और वह भी इसी सन्दर्भ में: देह से बाहर विश्वासी केवल प्रभु के पास हो सकता है; कोई और स्थान या अवस्था नहीं है। इसलिए बात दो प्रकार की देहों की नहीं, बल्कि दो प्रकार के जीवन की, दो प्रकार के अस्तित्व की है: पार्थिव और स्वर्गीय।

परमेश्वर की ओर से भवन – मध्यवर्ती अवस्था के लिए एक आत्मिक देह

क्या यह “परमेश्वर की ओर से भवन” एक ऐसी देह है जो मध्यवर्ती अवस्था के लिए उपलब्ध है? कम से कम दो कारण इसके विरुद्ध हैं: पहला, इस भवन के विषय में कहा गया है कि वह अनन्त है। परन्तु मध्यवर्ती अवस्था अनन्त नहीं है; वह निश्चित रूप से पुनरुत्थान के साथ समाप्त हो जाती है। दूसरा, पवित्रशास्त्र में जहाँ भी इस अवस्था की बात है, वहाँ कहीं भी इस समय के लिए किसी विशेष शरीर का वर्णन नहीं मिलता। मध्यवर्ती अवस्था के लिए किसी शरीर की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस समय में आत्मा-प्राण पृथ्वी पर देह में रहनेवाले मनुष्य के समान दिखाई देता है (प्रकाशितवाक्य 6:9-11)। मध्यवर्ती अवस्था के दौरान उसके स्वरूप के विषय में पवित्रशास्त्र हमें इससे अधिक कुछ नहीं बताता।

परमेश्वर की ओर से भवन – स्वर्ग, पिता का घर

कुछ व्याख्याकार “परमेश्वर की ओर से भवन” को पिता का घर (यूहन्ना 14:2), हमारा स्वर्गीय देश (फिलिप्पियों 3:20) समझते हैं। परन्तु “परमेश्वर की ओर से भवन” और “स्वर्ग” में स्पष्ट भेद किया गया है। यहाँ स्वर्ग वह स्थान है जहाँ हम रहेंगे; इस अर्थ में उसे पिता का घर कहा जा सकता है। परन्तु “भवन” – और यही शब्द पिता के घर से संबंध की ओर ले जाता है – हर विश्वासी के अस्तित्व के उस व्यक्तिगत स्वर्गीय रूप का वर्णन करता है, जो मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच भी है और पुनरुत्थान की देह में भी। परमेश्वर की ओर से इस भवन के साथ हम स्वर्ग में हैं। दूसरे शब्दों में: इस भवन के साथ हम पिता के घर में हैं।

“नंगे पाए जाना” – देह-रहित प्राण?

नंगापन शारीरिक मृत्यु की उस अवस्था का वर्णन नहीं करता जिसमें प्राण पुनरुत्थान के दिन तक अचेत होकर ठहरा रहता है। पद 1 के अनुसार विश्वासियों के पास मृत्यु के बाद परमेश्वर की ओर से एक भवन है, और पद 8 के अनुसार वे घर में प्रभु के पास हैं। यद्यपि इस बीच के वाक्यांश को समझाने की अलग-अलग संभावनाएँ हैं, फिर भी देह-रहित मध्यवर्ती अवस्था का विकल्प यहाँ लागू नहीं होता। फिलिप्पियों 1:23 या 2 कुरिन्थियों 5:8 के अर्थ में मध्यवर्ती अवस्था को एक ठंडा, भयानक नंगापन अनुभव करना असम्भव है।

उतारे हुए या पहिने हुए?

यह प्रश्न अनुवाद की एक समस्या से जुड़ा है। बहुत से अनुवादक “पहिने हुए” को प्राथमिकता देते हैं। यदि यह सचमुच “उतारे हुए” होता, तो भी ऊपर प्रस्तुत व्याख्या में मूल रूप से कुछ नहीं बदलता। तब मृत्यु में विश्वासी के वस्त्र उतारे जाते, अर्थात् वह देह के बिना होता, और फिर भी नंगा न पाया जाता। “नंगा पाया जाना” न देह से संबंधित है, न डेरा-रूपी घर से, और न वस्त्र से। यह न्यायिक जाँच का परिणाम है और केवल मनुष्य की आत्मिक अवस्था की ओर संकेत करता है: या तो वह मसीह में है, और तब इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि वह देह में है या देह से बाहर; या वह मसीह के बिना है, और तब वह सदा के लिए नंगा है, चाहे देह में हो या मृत्यु में।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- “बाहरी” और “भीतरी” मनुष्यत्व में क्या अन्तर है?
- प्रेरित पौलुस 2 कुरिन्थियों 4-5 में किन तीन चित्रों का प्रयोग करता है?
- इस खंड से हम कौन-सी गम्भीर चेतावनी ले सकते हैं?
- घर के लिए हमारी लालसा किन बातों से नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है?

2.5 मर जाना लाभ है

मर जाना लाभ है! यह कथन उस सब कुछ को उलट देता है जो मृत्यु मनुष्य के लिए अर्थ रखती है: उसे अब मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं। मृत्यु एक निर्मम शत्रु है, यद्यपि बहुत से शोक-सन्देशों में मृत्यु को, विशेषकर बीमारी में, छुटकारे के रूप में दिखाया जाता है। यदि कोई ऐसा न होता जिसने मृत्यु को जीत लिया है, तो मृत्यु लाभ के सिवा और सब कुछ होती। उसकी विजय मृत्यु को भी लाभ में बदल देती है।

यही परमेश्वर की बुद्धि है! परमेश्वर सब कुछ उलट सकता है और आशीष में बदल सकता है। जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ (रोमियों 5:20)! शिमशोन की कहानी में हमें इसका एक सुन्दर पूर्व-चित्र मिलता है, जब उसने सिंह को मार डाला और उसकी लोथ में मधुमक्खियों के एक झुंड ने छत्ता बनाकर मधु तैयार किया: “खानेवाले में से खाना, और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकली” (न्यायियों 14:14)। मृत्यु एक शिकारी पशु के समान है, जो फाड़ता और खा जाता है; परन्तु मारे गए शिकारी पशु में से मधु निकलता है, जो मनुष्य को तृप्त करता और ताज़गी देता है। पौलुस मृत्यु पर विजय पानेवाले को जानता था:

“क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। परन्तु यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे भाग में है – तो यह मेरे लिए परिश्रम के योग्य है, और मैं नहीं जानता कि किसे चुनूँ। मैं दोनों के बीच दबा हुआ हूँ, मेरी लालसा है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है; परन्तु शरीर में बना रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है” (फिलिप्पियों 1:21-24)।

ये पद मृत्यु के बाद की अवस्था के विषय में पवित्रशास्त्र के सबसे स्पष्ट कथनों में से हैं।

जब पौलुस ने ये शब्द लिखे, तब वह बन्दीगृह में था (फिलिप्पियों 1:13)। क्या वह इस कारागार से फिर जीवित निकल पाएगा? हो सकता था कि उसे मृत्यु-दंड दे दिया जाए। इसी परिस्थिति में उसने कुछ विचार लिखे कि मृत्यु के सामने वह क्या अनुभव करता था, किस बात की आशा रखता था और कौन-सी बातें उसके मन में थीं।

उस क्षण तक मसीह ही उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य और विषय-वस्तु रहा था। जिस क्षण दमिश्क के मार्ग पर उससे उसकी भेंट हुई थी (प्रेरितों के काम 9), उसी समय से उसके लिए मसीह और उसके काम के सिवा और कुछ था ही नहीं। उस भेंट के बाद से पौलुस ने अपने जीवन को ऐसी वस्तु नहीं समझा जो अपने आप में मूल्यवान हो, बल्कि वह उस सेवा को पूरा करना चाहता था जो उसे प्रभु यीशु से मिली थी (प्रेरितों के काम 20:24)। वह शहीद होकर मरने के लिए भी तैयार था, यदि इससे केवल यह हो कि मसीह की महिमा हो (पद 20)।

इसमें पौलुस ने पहचाना कि शहादत केवल मसीह की महिमा के लिए ही नहीं, बल्कि उसके अपने लिए भी एक व्यक्तिगत लाभ है। वह दिखाता है कि मरने से उसे व्यक्तिगत रूप से क्या मिलेगा। शरीर में उसका

जीवन तो पहले से मसीह से भरा हुआ था। परन्तु उसकी मृत्यु इसके अतिरिक्त और भी लाभ का कारण होती। यह लाभ उसके जीवन के आदर्श-वाक्य, “मेरे लिए जीवित रहना मसीह है”, से भी बढ़कर होता। उसके लिए मृत्यु मसीह से भरे जीवन का केवल अन्त नहीं, बल्कि किसी कहीं अधिक उत्तम बात में प्रवेश थी।

केवल तभी, जब मसीह हमारे जीवन को भर देता है, मृत्यु हमारे लिए लाभ है। मसीह के बिना मनुष्य के लिए मृत्यु उसके अपने, स्वयं-निर्धारित जीवन का कड़वा, अटल अन्त और समाप्ति है। एक शब्द में: हानि। जीवन खो जाता है, क्योंकि मसीह के बिना वह टिक नहीं सकता। विश्वासी के जीवन में मसीह अनन्त महिमा के लाभ की गारंटी है! परन्तु मसीह के बिना मनुष्य अनन्तकाल के लिए खोया हुआ है – एक कभी न समाप्त होनेवाली हानि।

पौलुस विचार करता है कि यदि वह अपने बन्दीगृह के परिणाम का निर्णय स्वयं कर सकता, तो वह किसे चुनता: या तो मृत्यु को (जो लाभ है) या स्वतंत्रता को (शरीर में जीवन)। यहाँ बने रहने के विषय में वह बिलकुल भी उदास नहीं है, क्योंकि तब वह प्रभु की सेवा करता रह सकता है। जब वह फिलिप्पियों और सुसमाचार के लिए उनके उत्साह के बारे में सोचता था, तो वह आनन्द और धन्यवाद से भर जाता था। वह उनके विश्वास की उन्नति के लिए सब कुछ करना चाहता था।

इस प्रकार पौलुस दोनों संभावनाओं की ओर खिंचा हुआ था। एक ओर वह बड़े व्यक्तिगत लाभ को देखता था, दूसरी ओर प्रभु की सेवा और विश्वासियों की भलाई को। वह खुलकर स्वीकार करता है कि वह इतनी आसानी से निर्णय नहीं कर सकता।

तो लाभ से पौलुस का ठीक-ठीक क्या अर्थ था? उसके लिए लाभ यह था कि वह कूच करके मसीह के पास जा रहे। मृत्यु उसे इससे कम कुछ नहीं देती। यह बहुत ही अच्छा था, और जो कुछ उसने तब तक अनुभव किया था, उससे इसकी किसी प्रकार तुलना नहीं की जा सकती थी। अपनी मृत्यु पर वह तत्काल अपने छुड़ानेवाले की निकटतम उपस्थिति में पहुँच जाता। इस लाभ का पूरा विस्तार इन थोड़े-से शब्दों में है: “मसीह के पास जा रहना”। वह अपने छुड़ानेवाले को आमने-सामने देखने की बड़ी लालसा रखता था। उसे परिश्रम भरी सेवा के बाद का विश्राम आकर्षित नहीं करता था – यद्यपि वह भी था⁷³ –, बल्कि एक व्यक्ति, जिसने पृथ्वी पर ही उसके जीवन को भर दिया था। यहाँ वह इस व्यक्ति को जान चुका था। दुःख की बात है कि जीवन की परिस्थितियाँ, और सबसे बढ़कर पुराना स्वभाव, पापमय शरीर, मसीह के साथ इस संगति और घनिष्ठता में बाधा डाल सकते थे। परन्तु तब यह भी न रहता; मसीह के साथ जीने में फिर कोई बात उसे बाधा न दे सकती। मसीह के साथ जिस गहरी संगति का आनन्द वह यहाँ ले रहा था, वह वहाँ सिद्धता में जी जाती।

73. प्रकाशितवाक्य 14:13

उसके व्यक्तित्व की पहचान (फिलिप्पियों 3:8) ने उसमें मरने की लालसा जगाई, क्योंकि मृत्यु एक सेवक की तरह (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 3:22) उसे मसीह के पास पहुँचा देती। आज भी केवल मसीह यीशु की पहचान ही विश्वासियों में यही लालसा जगा सकती है।

परन्तु फिर पौलुस को कलीसिया की चिन्ता फिर से घेर लेती है, और वह व्यक्तिगत रूप से इस निश्चय पर पहुँचता है कि वह उनकी भलाई के लिए बना रहेगा (पद 25)।

2.5.1 अन्य स्पष्टीकरण

दुःख की बात है कि इन पदों के विषय में भ्रामक मत भी हैं। इस बात का इनकार किया जाता है कि विश्वासी अपनी मृत्यु के बाद तुरन्त मसीह के पास होता है।

2.5.1.1 क्या यह मसीह का पुनरागमन है?

कुछ लोग कहते हैं कि यहाँ मनुष्यों की मृत्यु और मरने की नहीं, बल्कि मसीह के पुनरागमन की बात है। इसके अनुसार विश्वासी मसीह के पुनरागमन और उससे जुड़े पुनरुत्थान के समय ही मसीह के पास पहुँचाए जाएँगे, ताकि तब उसके पास रहें। परन्तु यह केवल आधा सत्य है। यह सच है कि प्रभु के आने पर हम पुनरुत्थान में सिद्ध अवस्था को प्राप्त करेंगे। परन्तु यहाँ न तो प्रभु के पुनरागमन की बात है और न सिद्ध अन्तिम अवस्था की प्राप्ति की। पौलुस मरने की बात करता है!

यदि यहाँ सचमुच प्रभु के आने की बात होती, तो यह बहुत संदिग्ध होता कि क्या प्रभु केवल पौलुस के लिए आता। इसका परिणाम यह होता कि फिलिप्पी के लोग पीछे रह जाते। पौलुस चला जाता, और वे यहीं रह जाते। यदि यहाँ प्रभु के आने की बात होती, तो यही निष्कर्ष निकलता। इस पर बल देने की शायद ही आवश्यकता है कि प्रभु के आने पर कोई भी विश्वासी पीछे नहीं रहेगा।

2.5.1.2 कूच करना

यहाँ मसीह के पुनरागमन और पुनरुत्थान की बात न होने का एक और कारण “कूच करना” शब्द है। “कूच करना” से संबंधित संज्ञा पौलुस के यहाँ केवल एक बार और आती है, अर्थात् 2 तीमोथियुस 4:6 में। वहाँ वह निःसन्देह इसका प्रयोग अपनी शहादत के लिए करता है।

उस समय की बोलचाल की भाषा में “कूच करना”⁷⁴ शब्द का प्रयोग बन्दरगाह में खड़े किसी ऐसे जहाज़ के रस्से खोलने और लंगर उठाने के वर्णन के लिए होता था जो समुद्र में निकलने वाला हो। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग प्रस्थान के समय किसी डेरे के छावनी को उखाड़ने (तुलना करें 2 कुरिन्थियों 5:1, 4; 2 पतरस 1:14) के वर्णन के लिए भी होता था। इस शब्द में उन वस्तुओं के अलग होने का भाव भी था

74. “कूच करना” का यहाँ शाब्दिक अर्थ है “खोल-देना” (बन्धन खोलना)। इसी प्रकार मृत्यु के समय डेरा-रूपी घर और देह का वस्त्र मानो खोल दिया जाता है (2 कुरिन्थियों 5:1, 4)।

जो एक साथ जुड़ी होती हैं। मृत्यु के संबंध में यह आत्मा-प्राण का देह से अलग होना है। “कूच करना” शब्द का यह अन्तिम प्रयोग भी इस विचार का समर्थन करता है कि यहाँ बात मृत्यु की है।

2.5.1.3 प्राण-निद्रा?

कुछ लोग यह भी दावा करते हैं कि मृत्यु प्राण-निद्रा का आरम्भ है। मान लीजिए कि पौलुस अपनी मृत्यु के बाद सचमुच प्राण-निद्रा में चला जाता, जहाँ वह किसी भी चेतना के बिना एक शून्य क्षेत्र में होता। तब हम उसके इन शब्दों को कैसे समझें कि उसकी लालसा कूच करने की थी? क्या पौलुस अपनी परिस्थिति से बच निकलना, अपने कार्य से भाग जाना चाहता था? उसकी इच्छा तो यह थी कि फिलिप्पियों और सब विश्वासियों की भलाई के लिए बना रहे, न कि किसी अस्थायी शून्य में कूच कर जाए। यदि इस मत के अनुसार उसके लिए मृत्यु के बाद का समय (व्यक्तिपरक रूप से) अस्तित्व में न रहता, और इसलिए उसके लिए मृत्यु से पुनरुत्थान तक कोई समय न बीतता, तौभी फिलिप्पियों के लिए तो कम से कम वह समय बीतता ही, जिसमें उन्हें पौलुस की सहायता और सेवा की आवश्यकता थी। यदि पौलुस प्राण-निद्रा की शिक्षा देता, तो वह शायद यह कहता कि वह इसलिए बना रहना चाहता है ताकि एक व्यर्थ प्राण-निद्रा में एक घंटा भी न खोए। उसने विश्वासियों को समय को बहुमूल्य समझकर उपयोग करने, न कि उसे सोकर गँवाने, की शिक्षा दी (तुलना करें इफिसियों 5:16; कुलुस्सियों 4:5)!

2.5.1.4 क्या यह केवल पौलुस का अधिकार था?

कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि हर विश्वासी अपने लिए वही दावा नहीं कर सकता जो प्रेरित पौलुस कर सकता था। निश्चय ही कुछ बातें ऐसी हैं जो केवल पौलुस का अधिकार थीं और केवल उसे प्रेरित होने के नाते दी गई थीं। परन्तु मृत्यु के बाद की अवस्था सब विश्वासियों के लिए एक समान है, क्योंकि वह मसीह के पूरे किए गए कार्य का परिणाम है। उसने सबके लिए मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। ये आशीर्षे परमेश्वर के लोगों में किसी विशेष पद या किसी विशेष सेवा-पद पर, या विशेष अनुभवों पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि सब विश्वासियों को एक समान और पूरी मात्रा में दी गई हैं।

2.5.2 उससे भेंट!

आइए, इस अध्याय को एक ऐसी दृष्टि के साथ समाप्त करें जिसे हम पौलुस से सीखना चाहते हैं। यदि यह निश्चित है कि सब विश्वासी मरने पर मसीह के पास जाते हैं, तो इसका हम पर क्या प्रभाव पड़ता है? क्या हम हर क्षण प्रभु यीशु मसीह के द्वारा बुला लिए जाने के लिए तैयार हैं? यह महत्वपूर्ण है कि विश्वासी इस विषय में विचार करे, ताकि यह जान सके कि क्या वह इस जीवन और इसकी सब वस्तुओं से चिपका हुआ है, या मसीह को ध्यान में रखते हुए किसी भी समय सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार है। मृत्यु पर विचार करना ही हमारे जीवन की बहुत-सी बातों को प्रकाश में लाता है। क्या हम प्रभु पर भरोसा करेंगे कि वह हमारे परिवार की देखभाल करेगा? क्या हम छोड़ देने के लिए तैयार होंगे? हम परमेश्वर की सन्तान होने पर

भी कभी इस बात को असम्भव न समझें कि किसी भी समय, किसी भी आयु में, हम मृत्यु के द्वारा उसके स्वर्गीय राज्य में बुला लिए जा सकते हैं!

क्या हम अपने उद्धारकर्ता को अभी से इस प्रकार जानते हैं कि उस पार हमारी भेंट किसी अजनबी से नहीं, बल्कि किसी परिचित से होगी? ऐसा नहीं कि हमने उसे अभी देह में देखा है। नहीं, परन्तु हम उससे प्रेम रखते हैं, यद्यपि हमने उसे नहीं देखा (1 पतरस 1:8)। जो संगति हम अभी से उसके साथ रख सकते हैं, वह उसके साथ एक घनिष्ठ संबंध बनाती है, जिसे हम वहाँ आगे बढ़ाएँगे। जो पहचान हमने यहाँ पाई है, और जो कुछ हमने यहाँ विश्वास की आँखों से देखा है, उसे हम वहाँ साथ ले जाएँगे।

हम उससे अभिभूत हो जाएँगे, क्योंकि तब हम उसे विश्वास की आँखों से नहीं, बल्कि साक्षात् उसकी पूरी सुन्दरता में देखेंगे।⁷⁵ मसीह के पास होने का अर्थ है उसे वैसा ही देखना जैसा वह है⁷⁶।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- समझाइए कि पौलस के लिए मर जाना लाभ क्यों था!
- क्या आप व्यक्तिगत रूप से इससे सहमत हो सकते हैं?
- इसकी पूर्व-शर्त क्या है?
- इस जीवन में यीशु मसीह के विषय में हमारी पहचान अनन्तकाल में हमारी पहचान पर कैसे प्रभाव डालती है?
- प्राण-निद्रा की बात करना ग़लत क्यों है?

2.6 जो सो गए हैं

“जो सो गए हैं” अभिव्यक्ति उन मनुष्यों का एक और नाम है जो मर चुके हैं। ठीक-ठीक कहे तो नया नियम यह वर्णन केवल उन मनुष्यों के लिए सुरक्षित रखता है जो मसीह से जुड़े हुए हैं।⁷⁷

“सो जाना” अपने आप में मृत्यु का एक कोमल शब्दों में किया गया वर्णन है। इसलिए यह विशेष रूप से विश्वासियों पर लागू होता है, क्योंकि उनके लिए मृत्यु पर मसीह की विजय के द्वारा मृत्यु एक पराजित शत्रु है (इब्रानियों 2:14)। यह वर्णन इसलिए भी इतना सुन्दर है कि नींद सदा केवल एक निश्चित समय तक रहती है। जागने का, अर्थात् उठने और जी उठने का, क्षण आएगा, और एक अनन्त दिन निकलेगा, जिसकी फिर कोई साँझ न होगी।

75. भजन संहिता 45:2; 1 राजाओं 10:7; यशयाह 33:17 के लाक्षणिक अर्थ में।

76. 1 यूहन्ना 3:2।

77. नए नियम में “सो गए हुए” शब्द इन स्थानों पर आता है: 1 कुरिन्थियों 15:20; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13, 14, 15; “सो जाना” शब्द इन स्थानों पर: मत्ती 27:52; 1 कुरिन्थियों 7:39; 11:30; 15:6, 18, 51; 2 पतरस 3:4। पुराने नियम में यह शब्द विश्वासियों तक सीमित नहीं है: यिर्मयाह 51:39, 57; दानियेल 12:2।

मृत्यु को नींद कहे जाने का⁷⁸ एक कारण यह भी है कि सोते हुए व्यक्ति और मरे हुए व्यक्ति में बाहर से दिखाई देनेवाली समानता होती है। परन्तु नींद केवल मृत्यु का एक ऐसा चित्र नहीं है जो मृत्यु की वास्तविकता को हल्का करने के लिए हो, बल्कि यह मृतकों की वास्तविक अवस्था का वर्णन करती है। इस प्रकार यह नींद पहले से संकेत देती है कि मृत्यु मनुष्य का अन्त नहीं, बल्कि केवल एक समय-सीमित अवस्था है। जिस नींद को हम जानते हैं, वह भी सदा एक निश्चित अवधि की होती है। यही बात उनके साथ भी है जो सो गए हैं। वह समय आएगा जब वे नींद से जागेंगे, अर्थात् जी उठेंगे।

“सो जाना” के लिए प्रयुक्त शब्द “लेटना”, “विश्राम के लिए लेट जाना”, “नींद में डूब जाना” के मूल अर्थ से निकला है। इसका विपरीत पुनरुत्थान है, जो नींद से “उठने” को दर्शाता है (1 कुरिन्थियों 15:20, 51-52)। इस प्रकार यह नींद पुनरुत्थान की प्रतीक्षा के समान है, जो मध्यवर्ती अवस्था को समाप्त करता है और अन्तिम अवस्था का आरम्भ करता है।

परन्तु “सो जाना” का वास्तविक अर्थ यह नहीं कि मृत्यु के आते ही मृत्यु की नींद आरम्भ हो जाती है, यद्यपि यह भाव शब्द में हो सकता है। बल्कि यह अभिव्यक्ति मरने और कूच करने की प्रक्रिया का वर्णन करती है। जब नए नियम में इस शब्द का प्रयोग होता है, तो इसका अर्थ यह नहीं कि मृतक अब सो रहे हैं, बल्कि यह कि वे मरते हैं और इस प्रकार एक दूसरी अवस्था में पहुँच जाते हैं। इसलिए जो सो गए हैं, वे ऐसे विश्वासी हैं जो मर चुके हैं और तब से जीवन की एक दूसरी अवस्था में हैं।

2.6.1 क्या सोए हुए लोग प्राण-निद्रा में हैं?

मृत्यु में अवस्था के विषय में प्रश्न यह है कि नींद और पुनरुत्थान का संबंध किससे है। क्या यह नींद केवल शरीर को घेरती है, या इसका संबंध भीतरी मनुष्यत्व से, अर्थात् उसके आत्मा-प्राण से, भी है? जिसे प्राण-निद्रा कहा जाता है, वह पूरे मनुष्य की – विश्वासियों की भी और अविश्वासियों की भी – अचेत या चेतना-रहित अवस्था है। कुछ लोग दावा करते हैं कि यह नींद मृत्यु की रात में व्यक्ति के पूरी तरह बुझ जाने के समान है। परन्तु इससे दिवंगत विश्वासियों की नींद और मृतकों की अवस्था की कोई व्याख्या नहीं होती, जैसा कि आगे के पद दिखाते हैं।

इससे पहले यह भी कह दें कि जो मनुष्य सोता है और जिसका शरीर विश्राम की स्थिति में है, वह उसी समय, उदाहरण के लिए स्वप्न में, कुछ अनुभव कर सकता है। यद्यपि शरीर सक्रिय नहीं है, फिर भी अवचेतन मन सक्रिय हो सकता है। इससे केवल यह संकेत करना है कि सोने के चित्र का अर्थ यह नहीं कि सोनेवाले को कोई चेतना नहीं, क्योंकि वह एक व्यक्ति के रूप में स्वप्न में स्वयं को और अपने परिवेश को भली-भाँति अनुभव कर सकता है। जैसे नींद जागने से केवल भिन्न एक जीवन-अवस्था है, वैसे ही मृत्यु भी उसी व्यक्ति के पार्थिव अस्तित्व से भिन्न एक जीवन-अवस्था है। मृत्यु मरनेवाले व्यक्ति के अस्तित्व का मिट जाना नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे शारीरिक नींद का अर्थ सोनेवाले का निर्जीव होना नहीं है।

78. यिर्मयाह 51:39; दानियेल 12:2; मत्ती 9:24; मरकुस 5:39; लूका 8:52; यूहन्ना 11:11-14।

2.6.2 नींद का संबंध किससे है?

इस सन्दर्भ में यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय की एक घटना रोचक है: “... और धरती डोल गई, और चट्टानें फट गई, और कब्रें खुल गई, और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत-सी देहें जी उठीं; और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाई दिए” (मत्ती 27:51ख-53)।

इस पद में हमारे द्वारा जाँचे गए तीन शब्द – पुनरुत्थान, सोए हुए और देहें – एक साथ आते हैं। ये तीनों शब्द एक साथ जुड़े हैं और स्पष्ट करते हैं कि देह ही है जो सोती है और जिलाई जाती है। कहा गया है कि सोए हुए पवित्र लोगों की देहें जिलाई गई, और परिणाम में निःसन्देह पूरा मनुष्य, अर्थात् आत्मा-प्राण भी, क्योंकि वे यीशु के जी उठने के बाद यरूशलेम में गए।

पुनरुत्थान केवल देह का होता है (1 कुरिन्थियों 15:35-44)। जब दूसरे स्थानों पर कहा गया है कि मृतक जी उठते हैं, और इससे निःसन्देह पूरा व्यक्ति अभिप्रेत है, तो यह दिखाता है कि पुनरुत्थान में पुनरुत्थान की देह और आत्मा-प्राण के एक होने के द्वारा पूरा मनुष्य फिर से प्रकट होता है।⁷⁹

इन पवित्र लोगों का सो जाना वह मृत्यु थी जो केवल मरनहार देह पर आती है, उनके आत्मा-प्राण पर नहीं। इसी प्रकार केवल उनकी देह ही जिलाई गई। यहाँ भी इसके सिवा और कोई निष्कर्ष नहीं निकलता कि सो जाना और जिलाया जाना केवल शरीर से संबंधित हैं।

इसलिए इस पाठ में एक स्पष्ट संकेत है कि मृत्यु में नींद की अवस्था का संबंध पवित्र लोगों के शरीर से है। नए नियम में कहीं भी मृत्यु की नींद का प्रयोग प्राण या आत्मा के लिए नहीं किया गया। यह आत्मा-प्राण के स्वरूप के भी विरुद्ध होता, क्योंकि वह देह से बँधा नहीं है। नींद तो केवल देह की एक अवस्था है।

2.6.3 स्तिफनुस की मृत्यु का उदाहरण

स्तिफनुस की मृत्यु का उदाहरण भी इसे स्पष्ट करता है (प्रेरितों के काम 7)। उसे – जैसे कुछ समय पहले उसके प्रभु को – उसके अपने देशवासियों ने मार डाला। अपने जीवन के अन्तिम मिनटों में उसने खुले हुए स्वर्ग में देखा। वहाँ उसने मसीह को परमेश्वर के दाहिने खड़ा देखा, जो एक विश्वासयोग्य महायाजक के रूप में उसके लिए, जो बड़े संकट में था, मध्यस्थता कर रहा था। फिर जब उसके हत्यारों के पत्थर उस पर बरसने लगे, तो उसने प्रार्थना की: “हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर!” (प्रेरितों के काम 7:59; तुलना करें लूका 23:46)। यद्यपि इस मृत्यु की तुलना शान्ति से सो जाने से नहीं की जा सकती, फिर भी कहा गया है कि वह सो गया। उसकी आत्मा को प्रभु यीशु ने अपने पास स्वर्ग में ग्रहण कर लिया। इस वर्णन के रहते कौन दावा करेगा कि स्तिफनुस एक अचेत प्राण-निद्रा में डूब गया? यदि वह अन्त में एक अचेत

79. नया नियम देह के पुनरुत्थान और आत्मिक पुनरुत्थान के बीच स्पष्ट भेद करता है, जिसमें आत्मिक रूप से मरे हुए लोग मसीह के साथ जिलाए जाते हैं, उदाहरण के लिए इफिसियों 2:5।

प्राण-निद्रा में ही चला गया, तो उसकी मृत्यु से ठीक पहले उसके लिए स्वर्ग में, मृत्यु पर विजय पानेवाले की ओर, दृष्टि क्यों खोली गई? और तब इस विनती का क्या अर्थ कि प्रभु यीशु उसकी आत्मा को ग्रहण करे?

स्तिफनुस (अर्थात् उसका आत्मा-प्राण), मरने के बाद, अपने प्रभु की तरह परादीस में गया। प्रभु यीशु के पवित्र और प्रिय लोग उसमें, “मसीह में”, सो जाते हैं (1 कुरिन्थियों 15:18)। इसलिए स्तिफनुस की तरह वह स्वयं उनका स्वागत करता है और उन्हें ग्रहण करता है, ताकि वे सदा उसके पास रहें – पहले सोए हुए लोगों के रूप में, और फिर एक दिन जी उठे हुए लोगों के रूप में।

2.6.4 उठा लिए जाने के समय सोए हुए लोग

स्वर्ग में उठा लिया जाना (रैप्चर) विश्वासियों की आशा है। प्रभु यीशु स्वयं अपने लोगों को स्वर्ग में ले जाने के लिए आता है। थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने इस आशा को धीरज के साथ थामे रखा था (1 थिस्सलुनीकियों 1:3)। परन्तु उचित ही है कि उन्होंने पूछा होगा कि जब वे, जो जीवित हैं, उठा लिए जाएंगे, तब उनके सोए हुए विश्वासी भाई-बहनों का क्या होगा। पौलुस उन्हें प्रोत्साहित करता है और कहता है कि वे औरों की तरह शोक न करें जिन्हें कोई आशा नहीं, क्योंकि:

“क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु के द्वारा सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा” (1 थिस्सलुनीकियों 4:14)।

स्वयं जीवित परमेश्वर से कम कोई नहीं, जिसकी ओर वे फिरे थे, सोए हुए लोगों की सुधि ले चुका है। जब उसका पुत्र उठा लेने के लिए स्वर्ग से आएगा, तब वह उन्हें उसके हाथ में सौंप देगा। वे उसमें, परमेश्वर के पुत्र यीशु में, सो गए थे, और इसलिए वे फिर उसके साथ आएंगे। तब वह होगा जो पद 16 कहता है:

“क्योंकि प्रभु आप ही ललकार, और प्रधान स्वर्गदूत के शब्द, और परमेश्वर की तुरही के साथ स्वर्ग से उतरेगा, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।”

दूसरे शब्दों में: यीशु सोए हुए लोगों को स्वर्ग से अपने साथ लाता है, और तब सोए हुए लोग, अर्थात् मसीह में मरे हुए, जी उठेंगे।⁸⁰ यहाँ हम देखते हैं कि सोए हुए लोगों का आत्मा-प्राण किस प्रकार

स्वर्ग में यीशु मसीह के पास था और फिर उसके द्वारा साथ लाया जाता है, ताकि पुनरुत्थान में देह के साथ एक हो जाए।⁸¹ इस प्रकार यह वचन भी पुष्टि करता है कि पुनरुत्थान आत्मा-प्राण का देह के साथ एक होना है।

80. एक दूसरी व्याख्या इस पद को इस प्रकार समझाती है कि मसीह सामर्थ्य और महिमा में अपने आने के समय सोए हुए लोगों को, जब वे अपने पुनरुत्थान के समय वहाँ उठा लिए जा चुके होंगे, स्वर्ग से “साथ लाएगा”।

81. मनुष्य की उत्पत्ति को भी इसी प्रकार समझा जा सकता है। गर्भधारण से देह, अर्थात् बाहरी मनुष्यत्व, बनती है, परन्तु परमेश्वर उसके भीतर आत्मा भेजता या रचता है (जकर्याह 12:1; भजन संहिता 33:15; 104:30)।

2.6.5 उठा लिए जाने से पहले सोए हुए लोग

जब थिस्सलुनीके के विश्वासी इस विषय में निश्चित हो गए कि उनके सोए हुए भाई-बहन भी उनकी तरह, जो जीवित हैं, उठा लिए जाने की महान घटना में सम्मिलित होंगे, तो पौलुस ने अब उन्हें यह भी बताया कि सोए हुए लोग उठा लिए जाने तक कहाँ हैं:

“क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिए नहीं, बल्कि इसलिए ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें, जो हमारे लिए मरा, ताकि हम चाहे जागते हों चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ” (1 थिस्सलुनीकियों 5:9-10)।

एक महान वचन, जो संक्षेप में मसीहियों के सारे धन का वर्णन करता है! हम सब समयों से पहले उद्धार के लिए चुने गए हैं, और मसीह के कार्य के द्वारा यह वास्तव में हमारा भाग होगा। उद्धार हमें वहाँ ले आया है कि हम अब सदा मसीह के साथ मिलकर जीएँ।

इस पद में “जागना” का अर्थ है: पृथ्वी पर जीना; और इसलिए “सोना” का अर्थ है: विश्वासी के रूप में⁸² मर जाना, अर्थात् सो जाना।⁸³ पौलुस कहता है कि दोनों अवस्थाओं में यही बात है कि हम मसीह के साथ मिलकर जीएँगे। इसका अर्थ है कि शरीर सोता है, जबकि आत्मा-प्राण मसीह के पास है। इस प्रकार सोए हुए लोगों के विषय में पौलुस कोई प्रश्न खुला नहीं छोड़ता।

मसीह में हमारे पास केवल जीवन ही नहीं है, बल्कि हम “उसके साथ मिलकर” जीते भी हैं। निःसन्देह पहली बात दूसरी की पूर्व-शर्त है। यहाँ इसका अर्थ एक सचेत साथ-साथ जीना है। इस संबंध और संगति का अनुभव जीवित लोग आज ही विश्वास में करते हैं, सोए हुए लोग भी, और शीघ्र ही ये दोनों समूह जी उठे हुए लोगों के रूप में इसका अनुभव करेंगे।

यह पद भविष्य के उस अनन्त पहलू का वर्णन करता है कि जीवित और सोए हुए लोग एक समान सदा प्रभु के पास रहेंगे, अर्थात् उसके साथ मिलकर जीएँगे, ताकि फिर थोड़े समय बाद उसके साथ सार्वजनिक रूप से प्रकट भी हों (2 थिस्सलुनीकियों 1:10; कुलुस्सियों 3:4)।

2.6.6 निष्कर्ष

इसलिए विश्वासियों के सो जाने और सोने का अर्थ कभी भी प्राण-निद्रा नहीं है। यह केवल और केवल मरने की प्रक्रिया का और जिलाए जाने के समय तक मानवीय और मरनहार शरीर की अवस्था का वर्णन करता है।

82. यहाँ सोनेवाले वे लोग नहीं हैं जिनकी बात अध्याय 5:4-7 में है, क्योंकि वे कभी मसीह के साथ नहीं जीएँगे। वे मसीह को नहीं जानते, क्योंकि वे रात की सन्तान हैं और अन्धकार में हैं। वह उनके लिए चोर की तरह आएगा, और इसलिए उसका आना उनके लिए न्याय होगा।

83. शायद यही एकमात्र स्थान है जहाँ “सोना” मरे हुए विश्वासियों की अवस्था को दर्शाता है।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- “सो जाना” शब्द केवल देह से ही क्यों संबंधित है?
- थिस्सलुनीके के विश्वासियों को अपने दिवंगत लोगों के विषय में क्या चिन्ता थी, और पौलुस उन्हें कैसे प्रोत्साहित करता है?

2.7 मसीह – जीवितों और मृतकों पर प्रभुता करनेवाला

यह तथ्य कि मसीह जीवितों और मृतकों पर प्रभुता करता है, रोमियों 14 का एक कुंजी-वचन है। वहाँ बात उन विश्वासियों की है जिनके उन बातों में अलग-अलग मत और व्यवहार हैं जिनके लिए प्रभु की कोई स्पष्ट आज्ञा नहीं है, अर्थात् जहाँ परमेश्वर की हर सन्तान व्यक्तिगत रूप से अपने प्रभु के प्रति उत्तरदायी है। विश्वासी जो कुछ भी करता है, वह अपने उस प्रभु की ओर लक्षित है जिसका वह है। पौलुस कहता है, “क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है”, और बल देते हुए जोड़ता है: “और न कोई अपने लिए मरता है” (पद 7)। मृत्यु में भी, जिसका समय हम निर्धारित नहीं करते, उसका लक्ष्य मसीह में है। पौलुस इस सत्य को एक बार फिर दोहराता है:

“क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं। इसलिए चाहे हम जीएँ या मरें, हम प्रभु ही के हैं” (पद 8)।

अपना जीवन हम उसके लिए जीते हैं, और अपनी मृत्यु में हम उसके लिए मरते हैं। इसका आधार यह तथ्य है कि हम प्रभु के हैं। अपने प्रतिदिन के जीवन में और मृत्यु में भी हम उसी के हैं। मृत्यु में हम उसके लिए खो नहीं जाते, क्योंकि उसमें भी हम उसकी सम्पत्ति हैं। कितनी अद्भुत बात! हम परमेश्वर की उस सर्वव्यापी युक्ति में बाँध लिए गए हैं, जिसका केन्द्र उसका पुत्र है:

“क्योंकि मसीह इसी लिए मरा और फिर जी उठा कि वह मरे हुएों और जीवितों दोनों पर प्रभुता करे!” (रोमियों 14:9)।

सब समयों से पहले परमेश्वर की यह युक्ति थी कि सब कुछ अपने पुत्र के अधीन कर दे (इफिसियों 1:9-10, 21-22)। सब वस्तुओं के सृष्टिकर्ता होने के नाते पुत्र के, जो परमेश्वर है, अधीन तो स्वाभाविक रूप से सदा सब कुछ था (कुलुस्सियों 1:16; इब्रानियों 1:2-3)। फिर भी मनुष्य के रूप में भी सब कुछ उसके अधीन किया जाना था।⁸⁴ क्योंकि प्रभु यीशु ने छुटकारे का कार्य पूरा किया और हर एक के लिए मृत्यु का स्वाद चखा (इब्रानियों 2:9) और उसमें परमेश्वर की पूरी महिमा की, इसलिए मनुष्य के रूप में वह सब से ऊपर ऊँचा किया गया। अब वह परमेश्वर के सिंहासन पर पिता के दाहिने बैठा है।⁸⁵ वहाँ वह उस समय की प्रतीक्षा कर रहा है जब सब शत्रु उसके पाँवों तले होंगे, क्योंकि उसने अभी संसार में सार्वजनिक रूप से

84. तुलना करें उदाहरण के लिए भजन संहिता 8; इब्रानियों 2:5-9; 1 कुरिन्थियों 15:25-28।

85. इब्रानियों 8:1; 12:2; प्रकाशितवाक्य 3:21।

अपना राज्य आरम्भ नहीं किया है (इब्रानियों 1:3; 10:12-13)। अभी वह ठुकराया हुआ है। परमेश्वर अभी अनुग्रह का समय दे रहा है, और इसके साथ यह अवसर भी कि लोग इस समय में परमेश्वर के पुत्र के अधीन हो जाएँ, उसके अधिकार को स्वीकार करें और उसकी सेवा करें।

परमेश्वर की सन्तान अभी से यीशु की प्रभुता को स्वीकार करती है। वे उसकी सेवा करते हैं और उसके पीछे चलते हैं (2 कुरिन्थियों 5:15; प्रेरितों के काम 17:7)। परन्तु बाकी सब मनुष्यों के लिए भी वह समय आएगा जब उन्हें यीशु की प्रभुता स्वीकार करनी पड़ेगी। तब उन्हें इसके लिए विवश किया जाएगा, क्योंकि स्वेच्छा से ऐसा करने का समय बीत चुका होगा। तब किसी से यह नहीं पूछा जाएगा कि वह इसके लिए तैयार है या नहीं, क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि सब उसके पुत्र का आदर करें (फिलिप्पियों 2:9-11; यूहन्ना 5:23)।

प्रभुता करने का मसीह का दावा और अधिकार मनुष्यों को दिखाई देनेवाले क्षेत्र और पार्थिव जीवन से आगे तक जाता है। मृतक भी उसकी प्रभुता से बच नहीं सकते। हेडीस (यूनानी: *hadēs*; हिन्दी बाइबल में ‘अधोलोक’), अर्थात् मृतलोक, भी उसी प्रकार उसके अधीन है। इसी प्रकार महिमा पाया हुआ मसीह प्रेरित यूहन्ना से मिलता है:

“जब मैं ने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुर्दा-सा गिर पड़ा। और उसने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखकर कहा, ‘मत डर! मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूँ; मैं मर गया था, और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूँ, और मृत्यु और हेडीस की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।’” (प्रकाशितवाक्य 1:17-18)।

यहाँ प्रभु यीशु अपना परिचय उस व्यक्ति के रूप में देता है जिसके अधीन मृत्यु और हेडीस हैं। क्योंकि जिसके पास कुंजियाँ हैं, उसी के पास अधिकार है (यशायाह 22:22; मत्ती 16:19)। जीवितों और मृतकों पर मसीह की प्रभुता का क्या अर्थ है, वे किस प्रकार उसके अधीन हैं, और वह कब से उन पर प्रभुता करता है?

“प्रभुता करना” के लिए यहाँ वही शब्द है जो लूका 22:25 में है, जहाँ कहा गया है कि जातियों के राजा उन पर “प्रभुता करते हैं” और उन पर अधिकार जताते हैं। प्रभुता के लिए ऐसी प्रजा का होना आवश्यक है जो प्रभुता करनेवाले की शक्ति के अधीन हो और उसके अधिकार के सामने झुकने के लिए बाध्य हो। रोमियों 14:9 में यह प्रजा जीवित और मृतक हैं।

प्रभु यीशु ने अपनी प्रभुता कब आरम्भ की? संकेत दिया जा चुका है कि सर्वव्यापी प्रभुता भविष्य में ही आरम्भ होगी, क्योंकि हम अभी सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते (इब्रानियों 2:8)। जीवितों में मसीह की प्रभुता विश्वासियों तक सीमित है, क्योंकि अविश्वासी परमेश्वर के पुत्र के अधीन नहीं होते। रोमियों 14 के सन्दर्भ से स्पष्ट होता है कि हर विश्वासी (सामान्य स्थिति में) अपना जीवन प्रभु के अधीन रखता है और केवल उसी के प्रति उत्तरदायी है (पद 7-8, 12)। विश्वासी अपने पूरे जीवन में और मृत्यु में भी अपने प्रभु के हैं। इसलिए जहाँ तक विश्वासियों की बात है, मसीह की प्रभुता तभी से आरम्भ हो चुकी है जब से ऐसे

विश्वासी हैं जो मसीह के अधीन होते हैं। परमेश्वर के राज्य के अस्थायी और छिपे हुए रूप में अभी ठुकराया हुआ राजा विश्वासियों पर अपनी “निर्वासन”-सरकार चलाता है (पद 17; कुलुस्सियों 1:13)।

परन्तु पद 9 में जीवितों से पहले मृतकों का नाम लिया गया है, और उन पर भी यही बात लागू होती है। वह उन पर भी प्रभुता करता है, क्योंकि वे उसके अधिकार में हैं। हर मनुष्य जो मरता है, अपनी मृत्यु के तुरन्त बाद इस तथ्य का सामना करता है कि मसीह प्रभु है। कहा गया है कि “जो पृथ्वी के नीचे हैं”, अर्थात् वे मृतक जो हेडीस में हैं, उन्हें भी घुटने टेककर अंगीकार करना पड़ेगा कि मसीह प्रभु है (फिलिप्पियों 2:10-11)। अविश्वासी के लिए इसका अर्थ न्याय है, क्योंकि पाप के प्रश्न का निपटारा नहीं हुआ। वे परमेश्वर से मेल किए बिना अनन्तकाल में चले जाते हैं (इब्रानियों 9:27)। वे अटल रूप से खोए हुए हैं। मृत्यु के बाद दिवंगत व्यक्ति अब अपना जीवन अपने ढंग से नहीं जी सकता; तब उसे अन्तिम रूप से मसीह के अधिकार के सामने झुकना ही पड़ता है।

मृतकों पर प्रभुता, चाहे वे विश्वासी हों या अविश्वासी, निःसन्देह तभी समझ में आती है जब उसका अनुभव भी किया जाए। और इसके लिए दिवंगत और सोए हुए लोगों की पूरी चेतना अनिवार्य रूप से आवश्यक है। यदि उनके पास कोई चेतना न होती, या वे अचेत प्राण-निद्रा में होते, तो मृतकों पर मसीह की कोई प्रभुता भी न होती।

केवल इसी जीवन में कोई मसीह की प्रभुता का विरोध कर सकता है। मृत्यु के बाद कोई विरोध नहीं रहता। हर मनुष्य जो मरता है, उसकी प्रतीक्षा वह करता है जो जीवित और सत्य है। परन्तु एक निर्णायक अन्तर है। यही प्रभु, जो खोए हुएों के लिए न्यायी है, विश्वासियों से उस व्यक्ति के रूप में मिलता है जो उनसे प्रेम रखता है और उनके लिए मरा। इसलिए विश्वासी पौलुस की तरह ढाढ़स के साथ उस क्षण की ओर देख सकते हैं जब वे मृत्यु के द्वारा अपने प्रिय प्रभु के पास जाएँगे, ताकि परादीस में उसके पास रहें (फिलिप्पियों 1:23)।

उनकी आशा मृत्यु नहीं, बल्कि मसीह का लौटना है (1 थिस्सलुनीकियों 1:10; 4:13-18), परन्तु मृत्यु उन्हें उससे पहले ही उनके प्रभु के पास पहुँचा देती है। सोए हुए लोगों के लिए मसीह की प्रभुता का अर्थ आनन्द, शान्ति और अकथनीय धन्यता है। प्रभु यीशु मसीह न केवल जीवित विश्वासियों को, बल्कि सोए हुए लोगों को भी पुनरुत्थान तक अपने हाथ में थामे रहता है, ताकि वह उन्हें न खोए, क्योंकि यही उसके पिता की इच्छा है (यूहन्ना 6:39; 10:29)। मृत्यु भी विश्वासी को परमेश्वर के प्रेम से और मसीह के प्रेम से अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:38-39)!

दिवंगत अविश्वासियों पर मसीह की प्रभुता किस बात में है, इस विषय में पवित्रशास्त्र अधिक कुछ नहीं कहता।⁸⁶ पतरस एक संकेत देता है, जब वह उस स्थान को, जहाँ दिवंगत अविश्वासी रहते हैं, “कैदखाना”

86. यह पूछना उचित है कि मसीह के प्रभुता ग्रहण करने से पहले शिओल (मृतलोक) में कैसा था। क्या भिन्न था? क्या उससे पहले न हेडीस था और न परादीस? लाजर और धनवान की कहानी (लूका 16) से पता चलता है कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले भी हेडीस और परादीस थे। मसीह की मृत्यु के बाद ही यह कहा गया है कि विश्वासी उसके पास हैं। परादीस को “इब्राहीम की गोद” कहा

कहता है (1 पतरस 3:19-20)। कैदखाने के लिए ऐसे व्यक्तियों और अधिकारियों का होना आवश्यक है जिनके पास मनुष्यों को हिरासत में रखने का अधिकार हो। यह कैदखाना, अर्थात् हेडीस, महिमा पाए हुए मनुष्य के रूप में मसीह के अधिकार के अधीन कर दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 1:18)। दिवंगत अविश्वासियों को वह वहाँ रोके रखता है और बड़े श्वेत सिंहासन के सामने (प्रकाशितवाक्य 20:11-15) न्याय के दिन तक (2 पतरस 2:9) रखे रहता है।

कुछ लोग पुनरुत्थान तक अपने प्रभु की उपस्थिति में सुरक्षित रखे जाते हैं (जैसे लाजर इब्राहीम की गोद में), दूसरे बड़े श्वेत सिंहासन के सामने दंड की आज्ञा सुनाए जाने तक बन्दी रखे जाते हैं (जैसे धनवान हेडीस में)।

प्रभु की प्रभुता पुनरुत्थान में उसकी सामर्थ्य के एक बार के प्रयोग और प्रदर्शन तक सीमित नहीं है, जब वह मृतकों को उनकी कब्रों में से पुकारेगा (यूहन्ना 5:28-29)। इसका अर्थ एक मूलभूत और स्थायी अधीनता है, जिसका आरम्भ तब हुआ जब मसीह परमेश्वर के सिंहासन पर बैठा।

सारांश में हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मृतकों पर मसीह की प्रभुता के लिए यह आवश्यक है कि मृत्यु के बाद आत्मा-प्राण-व्यक्तित्व सचेत रूप से जीवित रहे।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- मसीह की प्रभुता को कैसे समझाया जा सकता है, या उसमें कैसे भेद किया जा सकता है:
- एक ओर विश्वासियों में और दूसरी ओर अविश्वासियों में?
- मृत्यु से पहले और मृत्यु के बाद?
- मसीह की प्रभुता के अधीन एक सचेत जीवन कैसा दिखता है?

2.8 वेदी के नीचे के प्राण

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमारे सामने सृष्टि के साथ परमेश्वर के मार्गों की पूर्णता प्रकट करती है, और मृत्यु के बाद मनुष्य की अवस्था के विषय में भी हमें जानकारी देती है। इस बात में यह पुस्तक ठीक उसी से मेल खाती है जो नए नियम के दूसरे भागों से पहले ही निकाला जा चुका है।

“जब उसने पाँचवीं मुहर खोली, तो मैंने वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा जो परमेश्वर के वचन के कारण और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे। और उन्होंने ऊँचे शब्द से

गया है, और उसकी पहचान महिमा पाए हुए मनुष्य मसीह की उपस्थिति नहीं है (और हो भी नहीं सकती)। फिर भी वह आशीष का स्थान और आशीष की अवस्था है। क्या इन विश्वासियों के लिए मसीह की मृत्यु से पहले और बाद में कोई परिवर्तन हुआ, यह हम नहीं जानते। परन्तु सब युगों के दिवंगत विश्वासी मसीह के मरने और जी उठने के समय से उसकी उपस्थिति का अनुभव करते हैं, क्योंकि जब वह मरा तो वह परादीस में था। उस समय से “परादीस में होना” का अर्थ मसीह के पास होना है (फिलिपियों 1:23)। इस प्रश्न पर हम इससे अधिक कुछ नहीं कह सकते, क्योंकि पवित्रशास्त्र इस विषय में इससे अधिक नहीं कहता। अविश्वासी (श्वेत सिंहासन के सामने न्याय तक) यीशु मसीह को नहीं देखेंगे। वे उसके पास नहीं हैं। परन्तु उन सब मृतकों को, जो अपने पापों में मरे हैं – ऐसा मेरा विश्वास है – अनुभव होने योग्य रूप से स्पष्ट कर दिया जाएगा कि मसीह अभी भी मृतकों पर प्रभुता करता है।

पुकारकर कहा, ‘हे स्वामी, हे पवित्र और सत्य, तू कब तक न्याय न करेगा और पृथ्वी के रहनेवालों से हमारे लहू का बदला न लेगा?’ और उनमें से हर एक को श्वेत वस्त्र दिया गया, और उनसे कहा गया कि थोड़ी देर और विश्राम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दासों और भाइयों की, जो तुम्हारी नाई मार डाले जानेवाले हैं, गिनती पूरी न हो जाए” (प्रकाशितवाक्य 6:9-11)।

इस पाठ की जाँच में हम स्वयं को इन प्रश्नों तक सीमित रखते हैं:

- वेदी के नीचे के प्राण कौन हैं?
- ये प्राण कहाँ हैं?
- यह घटना किस समय की है?

2.8.1 शहीदों के प्राण

यूहन्ना यहाँ उन लोगों के प्राणों को देखता है जो परमेश्वर के वचन के कारण और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वध किए गए थे। वह यहाँ केवल शहीदों की नहीं, बल्कि शहीदों के प्राणों की बात क्यों करता है? अन्तर किस बात में है?

प्राण शहीद का वह भाग है जो मृत्यु के बाद जीवित रहता है।⁸⁷ हत्यारों के पास केवल देह को मारने की शक्ति है, प्राण को नहीं। प्रभु यीशु यही सच्चाई उन लोगों को सांत्वना के रूप में देता है जो उसके नाम के कारण मार डाले जाते हैं:

“जो देह को घात करते हैं, पर प्राण को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो जो प्राण और देह दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है” (मत्ती 10:28)।

यहाँ ऐसे ही लोगों की बात है। वे स्वयं परमेश्वर के वचन के कारण मार डाले गए, परन्तु उनके प्राण नहीं। प्रभु यीशु यहाँ स्पष्ट रूप से प्राण और देह में अन्तर करता है। प्राण अमर है और उसे मारा नहीं जा सकता, जबकि देह को मारा जा सकता है। इसलिए यहाँ “प्राण” शब्द में यह बात सम्मिलित है कि पृथ्वी की देह में जीवन मृत्यु के द्वारा समाप्त हो गया है, परन्तु बिना किसी रुकावट के – देह के बाहर – एक दूसरे संसार में जारी रहता है। यूहन्ना प्राणों को देखता है, परन्तु मांस और लहू से बने पृथ्वी के शरीरों को नहीं, क्योंकि वे पृथ्वी पर ही रह गए हैं।⁸⁸

87. तुलना करें खंड 3.2।

88. प्रकाशितवाक्य में “प्राण” शब्द का अर्थ भिन्न-भिन्न है। यूनानी शब्द *psyche* सात बार प्रयुक्त हुआ है: 6:9 (शहीदों के व्यक्ति); 8:9; 12:11 (जीवन, अर्थात् पृथ्वी का अस्तित्व); 16:3 (समुद्र के सब जीवधारी); 18:13, 14 (मनुष्यों के प्राण, प्राण); 20:4 (अर्थ 6:9 के समान)। पवित्रशास्त्र की व्याख्या का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि किसी शब्द के अर्थ के लिए पाठ का संदर्भ निर्णायक होता है। पहले कदम के रूप में स्वाभाविक रूप से यह जानना रोचक है कि लेखकों ने स्वयं इन शब्दों का प्रयोग कैसे किया, और उसके बाद दूसरे लेखकों के प्रयोग की जाँच की जाए।

अध्याय 6:9 और 20:4 में प्राण स्पष्ट रूप से शहीदों के व्यक्तियों के लिए आते हैं। यह इस बात से स्पष्ट होता है कि वे बोलते हैं और उनसे बात की जाती है। यहाँ एक वास्तविक बातचीत होती है, जो प्रतीकात्मक नहीं है। बातचीत के लिए पूरी चेतना और सक्रिय मानसिक क्षमताएँ आवश्यक हैं, और वे इन प्राणों में स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं। इस प्रकार शहीदों का व्यक्तित्व उनकी मृत्यु के बाद उन सभी लक्षणों के साथ पूरी तरह बना रहा है जो एक मानवीय व्यक्तित्व के लिए आवश्यक हैं।

यूहन्ना ने प्राणों को देखा। जब प्राणों की अब कोई देह ही नहीं है, तो यूहन्ना ने आखिर क्या देखा? स्पष्ट है कि यूहन्ना ने मनुष्य के रूप देखे, जिन्हें उसने शहीदों के रूप में पहचाना। केवल मानवीय रूप ही (श्वेत) वस्त्र पा सकते हैं, जिसे वे पहिन सकें और धारण कर सकें।⁸⁹

तो प्राणों की एक “देह” है, जो पृथ्वी की देह से भी भिन्न है और पुनरुत्थान की देह से भी (क्योंकि पुनरुत्थान अभी हुआ नहीं है)। इससे हमारा अर्थ कोई विशेष आत्मिक देह नहीं है जो विशेष रूप से मध्यवर्ती अवस्था के समय के लिए बनाई गई हो, बल्कि व्यक्तिगत पहचान का बना रहना है, जिसमें यह भी सम्मिलित है कि मृत्यु के बाद और पुनरुत्थान से पहले व्यक्ति को पहचाना जा सकता है। प्राण ही मनुष्य है, और इस मध्यवर्ती अवस्था में वह इस प्रकार मनुष्य है कि परलोक में वह एक दिखाई देनेवाले शरीर में प्रकट होता है। परलोक में प्राण का “रूप-रंग” पृथ्वी की दैहिकता से जुड़ा हुआ है, क्योंकि नहीं तो स्वर्ग में कोई पहचान नहीं होती। इहलोक में हमारे लिए इसकी कल्पना करना संभव नहीं है। हम बस इतना मान लेते हैं कि यहाँ मृतकों में पूरी चेतना है और उन्हें व्यक्तियों के रूप में देखा और पहचाना भी जाता है।

पहचाने जा सकने की बात रूपान्तर के पहाड़ पर मूसा और एलिय्याह के प्रकट होने में भी स्पष्ट होती है (मत्ती 17:1-8)। वहाँ ये दोनों पुरुष व्यक्तिगत रूप से मनुष्य के रूप में प्रकट होते हैं (नहीं तो पतरस को शायद ही उनके लिए मण्डप बनाने का विचार आता)। इसमें यह ध्यान रखना चाहिए कि मूसा और एलिय्याह के पास पुनरुत्थान की देह नहीं थी, क्योंकि पुनरुत्थान अभी तक नहीं हुआ है। उनका रूप-रंग मृत्यु के बाद से पुनरुत्थान तक की अवस्था के अनुरूप है।⁹⁰

इस स्थान पर हम फिर से उल्लेख करते हैं कि यहाँ “प्राण” शब्द का अनुवाद देह के “जीवन” के रूप में शायद ही किया जा सकता है। तब यूहन्ना ने वेदी के नीचे क्या देखा होता? इसलिए जब इस संदर्भ में प्राण शब्द का प्रयोग होता है, तो बात व्यक्ति को पहचाने जा सकने की है। इसी कारण प्रकाशितवाक्य 6:9 और 20:4 में ठीक “प्राण” शब्द का प्रयोग हुआ है, क्योंकि बात इन कूच कर चुके लोगों के पहचाने जा सकने की है, जो दैहिकता पर भी निर्भर है। मृत्यु के बाद मनुष्य का व्यक्तित्व और उसका रूप, अर्थात् व्यक्ति का अपना और उसे पहचान देनेवाला रूप-रंग, बना रहता है।

89. प्रकाशितवाक्य प्रतीकों से भरा है, परन्तु हर बात की प्रतीकात्मक व्याख्या करना आवश्यक नहीं। यहाँ बात वास्तविक व्यक्तियों की है, जो मार डाले गए और एक वास्तविक स्थान पर हैं।

90. मैं जानता हूँ कि यह प्रकट होना एक अपवाद है और इसलिए इससे वह बात नहीं निकाली जा सकती जो सब पर लागू हो। मैं केवल इतना कहता हूँ कि बाइबल के अन्य सभी कथनों के आधार पर इस अपवाद की तर्कसंगत व्याख्या की जा सकती है।

हम सारांश देते हैं: यहाँ प्राण ऐसे व्यक्ति हैं जो मर चुके हैं और देह के बाहर पूरी चेतना के साथ (अर्थात् प्राण-निद्रा में नहीं) स्वर्ग में हैं।

स्वर्ग ही प्राणों के रहने का स्थान है, यह अगले खंड में दिखाया जाएगा।

2.8.2 वेदी के नीचे

प्राण “वेदी के नीचे” देखे जाते हैं। यह अभिव्यक्ति इस तथ्य से गहराई से जुड़ी है कि उन्होंने परमेश्वर के वचन के कारण अपना जीवन बलिदान कर दिया। यह बात कि वे वेदी के “नीचे” हैं, पुराने नियम की एक मिलती-जुलती बात की याद दिलाती है। वहाँ कुछ बलिपशुओं का लहू पीतल की होमबलि की वेदी के पाए पर उण्डेला जाता था (निर्गमन 29:12; लैव्यव्यवस्था 4:7-34)। प्राण लहू में है (लैव्यव्यवस्था 17:10-14)। इसलिए मनुष्य की मृत्यु को प्राण का उण्डेला जाना भी कहा जा सकता है (भजन संहिता 141:8; यशायाह 53:12)। नए नियम में बलिदान परमेश्वर के लिए जीवन अर्पित करने का एक जाना-पहचाना चित्र है (फिलिप्पियों 2:17; 2 तीमोथियुस 4:6; रोमियों 12:1)।

प्रकाशितवाक्य में वेदी आठ बार आती है: अध्याय 6:9; 8:3, 3, 5; 9:13; 11:1; 14:18; 16:7। प्रकाशितवाक्य में पुराने नियम की तरह दो वेदियों (पीतल की होमबलि की वेदी और धूप की वेदी) में अन्तर नहीं किया जाता, यद्यपि कुछ स्थानों पर पीतल की होमबलि की वेदी (6:9; 16:7) और दूसरे स्थानों पर सोने की धूप की वेदी (8:3; 9:13) का विचार किया जा सकता है।

वेदी का स्थान बहुत ठीक-ठीक बताया गया है।

- वह उस मन्दिर में है जो स्वर्ग में है: “फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर में से निकला, जो स्वर्ग में है ... फिर एक और स्वर्गदूत, जिसे आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला” (14:17-18)।
- वह परमेश्वर के सिंहासन के सामने है: “और मैंने उन सातों स्वर्गदूतों को देखा जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं ... फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिए हुए आया और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उसको बहुत धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं को बल दे, उस सोने की वेदी पर जो सिंहासन के सामने है” (8:2-3)।
- वह परमेश्वर के ठीक निकट है: “और मैंने सोने की उस वेदी के चारों सींगों में से, जो परमेश्वर के सामने है, एक शब्द सुना” (9:13)।

इससे स्पष्ट है कि शहीदों के प्राण कहाँ हैं। वे परमेश्वर के ठीक निकट रहते हैं। यह स्थान उस परादीस के अनुरूप है, जहाँ प्रभु यीशु गया, जब उसने क्रूस पर मरने के बाद अपनी आत्मा पिता के हाथों में सौंप दी (लूका 23:43, 46)। प्रभु परमेश्वर के ठीक निकट, अपने पिता के पास गया। पौलुस उसी “स्वर्गीय परादीस” में उठा लिया गया, जहाँ उसने ऐसी बातें सुनीं जो कहने की नहीं (2 कुरिन्थियों 12:2-4)।

वेदी के नीचे के प्राण क्या करते हैं? उनसे कहा गया कि थोड़ी देर विश्राम करें। यह प्राण-निद्रा का विश्राम नहीं है और न कोई अचेत अस्तित्व, बल्कि एक सचेत अवस्था है, जिसमें विश्राम का आनन्द एक सुखद परम-आनन्द के रूप में लिया जाता है। स्पष्ट रूप से लिखा है:

“धन्य हैं वे मृतक जो अब से प्रभु में मरते हैं! आत्मा कहता है, हाँ, क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएँगे, और उनके कार्य उनके साथ हो लेते हैं” (प्रकाशितवाक्य 14:13)।

इनके लिए परिश्रम और काम का समय बीत चुका है। वे इसका आनन्द लेते हैं कि उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में विश्राम करने दिया गया है। प्राणों का वेदी से जुड़ा होना इस निष्कर्ष की भी अनुमति देता है कि यह आराधना का स्थान है (प्रकाशितवाक्य 8:3)। पवित्र लोग मसीह के मुख में परमेश्वर की महिमा को निहारते हुए विस्मय के साथ आराधना करेंगे।

हम दोहराते हैं: प्राण परमेश्वर के सिंहासन के सामने उसके ठीक निकट हैं और अपने कामों से विश्राम कर रहे हैं। वे परमेश्वर की महिमा को देखते हैं और उसे दण्डवत् करते हैं।

यहाँ हम सोए हुए पवित्र लोगों के रहने के स्थान और नए नियम के बाकी कथनों के बीच एक उल्लेखनीय सहमति पाते हैं, और पवित्रशास्त्र की एकता को देखते हुए इसके अलावा किसी और बात की आशा भी नहीं की जा सकती। सभी सोए हुए पवित्र लोगों को हम बिना किसी अपवाद के उसी स्थान पर पाते हैं जिसे प्रभु यीशु परादीस कहता है। वे मसीह के पास हैं और वहाँ अपने घर में हैं, अर्थात् प्रभु के पास घर पर।

2.8.3 यह घटना किस समय की है?

हम फिर से इस बात पर लौटते हैं कि ये प्राण ऐसे मरे हुए मनुष्य हैं जो अभी मृत्यु की अवस्था में हैं। लिखा है कि वे वध किए गए थे (पद 9), कि उनका लहू बहाया गया (पद 10) और कि वे मार डाले गए थे (पद 11)। वे वेदी के नीचे हैं। उन्हें – अभी जीवित संगी दासों की तरह – “भाई” नहीं कहा जाता (पद 11b), बल्कि “प्राण”, क्योंकि वे अभी जी नहीं उठे हैं। पाँचवीं मुहर के खुलने के समय (प्रकाशितवाक्य 6:9) इन शहीदों का पुनरुत्थान अभी नहीं हुआ है।

हम क्यों मानते हैं कि पुनरुत्थान अभी नहीं हुआ है? वे अपने साथ हुए अन्याय का बदला लेने के लिए पुकारते हैं। उनकी इस इच्छा को तुरन्त पूरा नहीं किया जाता। उनसे कहा जाता है कि थोड़ी देर ठहरे रहें, जब तक कि उनके भाई, जो अभी पृथ्वी पर हैं, शहादत के द्वारा अपना जीवन पूरा न कर लें। अपने दासों के लहू का बदला (19:2) प्रभु यीशु मसीह स्वयं अपने सामर्थी प्रकट होने के समय लेगा। मसीह के प्रकट होने पर ही पुनरुत्थान होगा (20:4)। इसलिए तब तक वह नहीं हुआ है, क्योंकि भाई अभी पृथ्वी पर हैं और सताए जा रहे हैं।

इस प्रकार पाँचवीं मुहर के अन्तर्गत बताए गए थोड़े से संकेतों से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि भाइयों का पुनरुत्थान और मसीह का आगमन अभी नहीं हुआ है। 6:9-11 का दृश्य मृत्यु के बाद प्राण की अवस्था का वर्णन करता है।

2.8.4 बदला लेने की माँग

अब हम एक बार फिर प्राणों की बदला लेने की माँग पर लौटते हैं। जो लोग मृत्यु के बाद सचेत जीवन का इनकार करते हैं, वे इन शब्दों को व्यक्तिगत रूप से कहे गए शब्द नहीं मानते, बल्कि इन्हें पूरी तरह प्रतीकात्मक बताते हैं (तुलना करें उत्पत्ति 4:10; याकूब 5:4; लूका 19:40)। इसके अलावा वे यह तर्क देते हैं कि मसीही कभी बदले के लिए नहीं चिल्लाते, क्योंकि वे मसीह के आदर्श पर चलना चाहते हैं, जिसने क्रूस पर भी अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना की। इसलिए उनके अनुसार यह लहू भी, हाबिल के लहू की तरह, केवल प्रतीकात्मक रूप से ही बदला माँग सकता है।

यह सचमुच ध्यान देने योग्य है कि प्राण बदला माँगते हैं और इस प्रकार वास्तव में मसीही मनोभाव के अनुरूप नहीं हैं। परन्तु वे मसीही मनोभाव का इनकार तभी करते, जब वे मसीही होते। इस प्रश्न का हल इस बात पर निर्भर है कि प्रकाशितवाक्य की ऐतिहासिक व्याख्या कैसे की जाती है। यह मुख्य रूप से इस प्रश्न से जुड़ा है कि क्या हम मसीही, ऐतिहासिक दृष्टि से, प्रकाशितवाक्य के आरम्भ में, उसके बीच में, या पहले ही उसके अन्त में खड़े हैं। यहाँ इस पर विस्तार से विचार किए बिना, मैं अपनी समझ के अनुसार ऐतिहासिक या भविष्यद्वाणी-संबंधी ढाँचे को संक्षेप में प्रस्तुत करता हूँ।

प्रकाशितवाक्य 1:19 के विभाजन के अनुसार सात पत्र मसीही कलीसिया के इतिहास का, उसके आरम्भ से उसके अन्त तक, एक भविष्यद्वाणी-संबंधी सिंहावलोकन देते हैं। इसके अनुसार नया जन्म पाए हुए मसीही अध्याय 4 से आगे पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में हैं। वहाँ मसीहियों को पुराने नियम के समय के विश्वासियों के साथ, महिमा पाए हुए विश्वासियों के रूप में, 24 प्राचीनों में दर्शाया गया है।

जब मसीही स्वर्ग में होंगे, उसके बाद इस्राएल में से (प्रकाशितवाक्य 7:3-8) और जातियों में से भी (प्रकाशितवाक्य 7:9-12) लोग विश्वास में आएँगे। इसका अर्थ यह है कि वेदी के नीचे के प्राण मसीही नहीं हैं और परमेश्वर की कलीसिया से भी संबंध नहीं रखते। वेदी के नीचे के प्राणों ने राज्य के सुसमाचार के प्रचार पर विश्वास किया, जिसका प्रचार कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद किया जाएगा (मती 24:14)। वे अपने विश्वास के कारण मार डाले जाते हैं। बदले के लिए उनकी पुकार पुराने नियम के ढंग की है (व्यवस्थाविवरण 32:43; 2 राजाओं 9:7; भजन संहिता 79:10), मसीही ढंग की नहीं। इसलिए बदला लेने की माँग को प्रतीकात्मक रूप से समझना आवश्यक नहीं है, क्योंकि वह महा-क्लेश के समय के विश्वासियों की समझ और स्थिति के अनुरूप है।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- “वेदी के नीचे के प्राणों” का वृत्तान्त हमारे लिए किस प्रकार सात्वना बन सकता है?

- यहाँ दिवंगत पवित्र लोगों की बात क्यों है?
- उनकी कौन सी देह है?

2.9 अनन्त जीवन

जब कोई मृत्यु के बाद, पुनरुत्थान में या अनन्तकाल में मनुष्य की अवस्था पर विचार करता है, तो वह लगभग अनिवार्य रूप से उस बात तक पहुँचता है जिसे बाइबल “अनन्त जीवन”⁹¹ कहती है। विशेष रूप से अनन्त जीवन मसीही सन्देश के एक अनुपम तत्व के रूप में मृत्यु और नश्वरता के सामने खड़ा है। यदि मनुष्य इस जीवन को प्राप्त कर सकता, तो वह इसके लिए क्या मूल्य चुकाता, इसे पाने के लिए वह क्या कुछ न दे देता! परमेश्वर के पुत्र के द्वारा हम इस जीवन को सचमुच पा सकते हैं, और वह भी बिना मूल्य चुकाए। इसलिए अनन्त जीवन के संबंध में केवल विश्वासियों की ही बात हो सकती है। केवल उन्हीं के पास अनन्त जीवन है, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हैं और उसके अधीन हो जाते हैं।⁹² अनन्त जीवन उनके पास परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान के रूप में है (रोमियों 6:23)।

विश्वासी की मृत्यु के संबंध में अनन्त जीवन का क्या महत्व है? क्या ऐसा हो सकता है कि वह मृत्यु में अनन्त जीवन को त्याग दे या खो दे और पुनरुत्थान में उसे फिर से दान में पाए?

इस प्रश्न की जाँच करने से पहले हमें यह स्पष्ट करना होगा कि अनन्त जीवन वास्तव में है क्या।

2.9.1 अनन्त जीवन क्या है?

परमेश्वर के अलावा न कोई वस्तु अनन्त है और न कोई व्यक्ति। वही अनन्त है, जिसका न आदि है न अन्त (उत्पत्ति 21:33; यशायाह 40:28; रोमियों 16:26)। इसलिए अनन्त जीवन स्वयं अनन्त परमेश्वर का जीवन है। परमेश्वर के अनन्त पुत्र यीशु मसीह के विषय में लिखा है: “सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है” (1 यूहन्ना 5:20)। अपने विषय में वह स्वयं गवाही देता है: “मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ” (यूहन्ना 14:6; तुलना करें 11:25)। अनन्त जीवन पुत्र में साकार हुआ है। उसमें स्वयं में जीवन है (यूहन्ना 1:4), और इसलिए वही एकमात्र था जो उसे प्रकट कर सकता था। “अनन्त जीवन स्वयं परमेश्वर का सचेत, सोचनेवाला, इच्छा करनेवाला, अनुभव करनेवाला, जाननेवाला, प्रेम करनेवाला जीवन है।”⁹³

परमेश्वर का एक और लक्षण इस जीवन से गहराई से जुड़ा है: परमेश्वर स्वर्ग में वास करता है (भजन संहिता 115:3; मत्ती 6:9 इत्यादि), और इसलिए अनन्त जीवन स्वर्ग का जीवन है। वहीं उसका घर है। यह

91. नए नियम के वे सभी पद जिनमें अनन्त जीवन की बात है: मत्ती 19:16, 29; 25:46; मरकुस 10:17, 30; लूका 10:25; 18:30; यूहन्ना 3:15, 16, 36; 4:14, 36; 5:24, 39; 6:27, 40, 47, 54, 68; 10:28; 12:25, 50; 17:2, 3; प्रेरितों के काम 13:46, 48; रोमियों 2:7; 5:21; 6:22, 23; गलातियों 6:8; 1 तीमथियुस 1:16; 6:12; तीतुस 1:2; 3:7; 1 यूहन्ना 1:2; 2:25; 3:15; 5:11, 13, 20; यहूदा 21।

92. यूहन्ना 3:16, 36; 6:40, 47, 54; 10:28; 11:25; 1 यूहन्ना 5:13।

93. W.J. Ouwenel, *Das ewige Leben*, Neustadt (Ernst-Paulus Verlag), 1980; पृ. 9।

जीवन इस सृष्टि के स्वाभाविक जीवन के क्षेत्र से संबंध नहीं रखता। वह एक दूसरे संसार से संबंध रखता है, जो मनुष्य की इन्द्रियों की पहुँच के बाहर है (2 कुरिन्थियों 4:18)।

इसी अर्थ में यीशु नीकुदेमुस से अनन्त जीवन की बात करता है। वह उसे “स्वर्ग की बातें” कहता है (यूहन्ना 3:12)। अनन्त जीवन पिता के घर का जीवन है (यूहन्ना 14:3), जिसकी पहचान पिता और पुत्र की सहभागिता (1 यूहन्ना 1:2-3) और प्रेम (यूहन्ना 17:24) है।

अनन्त जीवन स्वर्गीय आशीष की परिपूर्णता (इफिसियों 1:3) और उस आत्मिक धन का सार है, जो विश्वासियों को मसीह में दान किया गया है। इसमें यह भी सम्मिलित है कि उन्हें पिता और पुत्र की सहभागिता में रखा गया है (1 यूहन्ना 1:1-4; यूहन्ना 14:23; 1 कुरिन्थियों 1:9)। अनन्त जीवन उनके पास अभी से है; वे इसकी प्रतीक्षा नहीं करते कि उसे भविष्य में पाएँगे (यूहन्ना 3:36; 5:24)।

2.9.2 अनन्त जीवन और अमरता

प्रायः इन शब्दों को आपस में मिला दिया जाता है, मानो अनन्त जीवन और अमरता एक ही बात हों। यह एक बड़ी भूल है। ऊपर कही गई बातों से स्पष्ट है कि अनन्त जीवन में मुख्य रूप से समय की अवधि या जीवन की लम्बाई (मात्रा) की बात नहीं है, बल्कि वह जीवन की “गुणवत्ता” का वर्णन करता है। अनन्त जीवन की गुणवत्ता इस बात में है कि यह उस अनन्त परमेश्वर का जीवन है जो स्वर्ग में वास करता है। यह जीवन परमेश्वर की वह सारी परिपूर्णता अपने साथ लाता है जो पुत्र में है। यह वह जीवन है जिसका आनन्द पिता के घर में लिया जाता है, जहाँ त्रिएक परमेश्वर अनन्तकाल से वास करता आया है।

इसलिए अनन्त जीवन को अमरता या अनन्त अस्तित्व के बराबर मान लेना पर्याप्त नहीं है।⁹⁴ निस्सन्देह अनन्त जीवन में अमरता भी सम्मिलित है, नहीं तो वह “अनन्त” जीवन न होता। परन्तु अनन्त जीवन का अर्थ समय के पहलू से बहुत आगे तक जाता है।

यदि “अनन्त जीवन” और “अमरता” को पर्यायवाची रूप में प्रयोग किया जाए, तो आसानी से यह गलत निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अविश्वासी मनुष्यों का, जिनके पास अनन्त जीवन नहीं है, कोई अनन्त अस्तित्व नहीं है। परन्तु अनन्त अस्तित्व अनन्त जीवन के होने पर निर्भर नहीं है।

एक बार फिर: अनन्त जीवन केवल ऐसा जीवन नहीं है जो कभी समाप्त न हो, बल्कि एक पूरी तरह भिन्न जीवन है। यह जीवन अविश्वासी के पास नहीं है। यूहन्ना यह बात स्पष्ट करता है, जब वह ऐसे लोगों की बात करता है जो “[अनन्त] जीवन” को नहीं देखेंगे। उन पर परमेश्वर का क्रोध बना रहता है (यूहन्ना 3:36)। परन्तु परमेश्वर का क्रोध इस बात में समाप्त नहीं हो जाता कि मनुष्य मिटा दिया जाए और परिणाम अनन्त मृत्यु हो। परमेश्वर का क्रोध उत्तरदायी प्राणियों के विरुद्ध है, और इसलिए वह सदा के लिए केवल

94. पाठक स्वयं यह प्रयास कर सकता है कि अनन्त जीवन के स्थान पर अमरता पढ़े। उसे शीघ्र ही पता चल जाएगा कि बहुत कम स्थानों पर ये शब्द एक दूसरे के स्थान पर रखे जा सकते हैं।

उन्हीं मनुष्यों पर “बना” रह सकता है जो सदा, अर्थात् अनन्तकाल तक, अस्तित्व में रहते हैं। यह पद स्पष्ट करता है कि अनन्त जीवन और अनन्त अस्तित्व में बड़ा अन्तर है।

2.9.3 मनुष्य परमेश्वर का जीवन कैसे पा सकता है?

मनुष्य अनन्त जीवन, अर्थात् परमेश्वर का जीवन, तब तक नहीं पा सकते थे जब तक परमेश्वर स्वयं मनुष्य न बन जाता। ठीक यही हुआ। प्रेरित यूहन्ना जीवन के वचन के विषय में, जो स्वयं मसीह है, कहता है: “और यह जीवन प्रकट हुआ, और हमने उसे देखा, और उसकी गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं जो पिता के साथ था और हम पर प्रकट हुआ” (1 यूहन्ना 1:2)।

मसीह जीवन का वचन (logos) है, अर्थात् जीवन की सिद्ध अभिव्यक्ति और उसका प्रकाशन, क्योंकि उसमें जीवन है (यूहन्ना 1:4; 14:6)। मनुष्य के रूप में उसमें स्वयं में जीवन है, और इसलिए वह उसे मनुष्यों को दे सकता है (यूहन्ना 5:26)। वचन देहधारी हुआ, ताकि संसार में जीवन लाए, क्योंकि मनुष्य मृत्यु में पड़े थे (यूहन्ना 5:24; इफिसियों 2:1)। आत्मिक मृत्यु पाप का परिणाम थी। इसलिए परमेश्वर के पुत्र को हमारे पापों का प्रायश्चित बनना पड़ा (1 यूहन्ना 4:9-10), ताकि हम जीवन पा सकें।

यह “आत्मिक” जीवन है, जिसे वे पाते हैं जो अपने पापों में आत्मिक रूप से मरे हुए हैं (कुलुसियों 2:13)। वे इस जीवन को परमेश्वर के दान के रूप में तब पाते हैं, जब वे परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हैं (1 यूहन्ना 5:13)। इसके लिए नए जन्म के द्वारा परमेश्वर का हस्तक्षेप आवश्यक है, क्योंकि कोई मनुष्य यह जन्म अपने आप से उत्पन्न नहीं कर सकता (यूहन्ना 1:13)। नए जन्म के साथ ऐसे मनुष्यों के आत्मिक जीवन का इतिहास आरम्भ होता है, जो फिर कभी समाप्त नहीं होगा।

यह जीवन उनकी सम्पत्ति बन जाता है, यहाँ तक कि वह उनमें स्वयं में होता है (यूहन्ना 6:53; 1 यूहन्ना 3:15)। साथ ही लिखा है कि वह उनके पास पुत्र में है (1 यूहन्ना 5:11), क्योंकि वे उसे केवल उस पर, जो जीवन का स्रोत है, निर्भर रहकर ही रख सकते हैं। वे उसे उससे अलग होकर नहीं पा सकते। इस प्रकार वे ईश्वरीय स्वभाव के “सहभागी” बन जाते हैं (2 पतरस 1:4), ठीक वैसे ही जैसे एक पत्ता केवल डाली पर ही ताज़ा और हरा रह सकता है।

2.9.4 विश्वासियों के पास अनन्त जीवन किस रूप में है?

जो जीवन विश्वासियों ने नए जन्म के द्वारा पाया है (यूहन्ना 3; 1 पतरस 1:23-25) और जो परमेश्वर के सामने उनके पास है, वह “अनन्त जीवन” है। इसका अर्थ यह है कि यह जीवन विश्वासियों का केवल एक अंश नहीं है, जो (चाहे किसी भी कारण से) फिर उनसे अलग हो सके। यह किसी ऐसे बहुमूल्य उपहार के समान नहीं है जिसे परिस्थितिवश फिर खोया जा सके। अनन्त जीवन विश्वासियों का जीवन बन गया है; वह मसीह में परमेश्वर के सामने उनकी अवस्था और उनका नया अस्तित्व है। मृतकों में से जीवित हुए लोगों के

रूप में इस नए अस्तित्व का वर्णन पौलुस नई सृष्टि के रूप में,⁹⁵ परमेश्वर के कार्य के रूप में करता है।⁹⁶ नया जीवन पाने के द्वारा पापी एक नया मनुष्य बन जाता है।

ऊपर कही गई बात को समझाने के लिए एक उदाहरण: अपने स्वाभाविक जीवन (यूनानी: **bios**) को हम किसी ऐसे पार्सल की तरह अपने साथ लिए नहीं फिरते, जिसे बिना किसी परिणाम के खोया जा सके। जो उसे खो देता है, वह मर जाता है। स्वाभाविक जीवन का अर्थ ही हमारा सम्पूर्ण पार्थिव अस्तित्व है, जो दैहिक मृत्यु के द्वारा समाप्त हो जाता है। अनन्त जीवन हमारे पास जिस प्रकार है, उसकी तुलना भी इसी से की जा सकती है। यदि अनन्त जीवन खोया जा सकता, तो इससे नई सृष्टि नष्ट हो जाती। परन्तु बात ठीक इसके विपरीत है। नई सृष्टि अब नष्ट नहीं की जा सकती, क्योंकि वह मसीह यीशु में परमेश्वर का कार्य है।

पृथ्वी पर के जीवन में एक सचेत अस्तित्व सम्मिलित है, जो मनुष्य को व्यक्तित्व बनाता है। यह अपने को व्यक्त करने की क्षमता है, सोचने, अनुभव करने, पहचानने और प्रेम करने की शक्ति है। पृथ्वी के जीवन के इन लक्षणों को हम अनन्त जीवन पर लागू कर सकते हैं। जैसे स्वाभाविक जीवन मनुष्य को व्यक्तित्व बनाता है, वैसे ही पौलुस एक नए व्यक्तित्व की, एक नए “मैं” की बात करता है: “... अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है” (गलातियों 2:20)। विश्वासी के पास नया जीवन इस प्रकार है कि वह उसे एक नया व्यक्तित्व बना देता है। इसलिए अब हम परमेश्वर का अनुकरण करनेवाले हो सकते हैं, क्योंकि हमारे पास उसका जीवन और उसका स्वभाव है। इस जीवन की शक्ति पवित्र आत्मा है, जो ठीक अनन्त जीवन की तरह हमें दान में दिया गया है।

इस अवस्था पर और इस अस्तित्व पर मृत्यु का अब कोई प्रभाव नहीं है, क्योंकि अनन्त जीवन स्वाभाविक रूप से मर नहीं सकता।

अब जब हमने अनन्त जीवन के स्वरूप, अर्थ और व्यापकता की सीमाएँ निर्धारित कर ली हैं, तो हम अपने आरम्भिक प्रश्न की ओर मुड़ते हैं।

2.9.5 अनन्त जीवन और मृत्यु

जब विश्वासी मरता है, तो अनन्त जीवन का क्या होता है? जो सो गए हैं, उनके लिए अनन्त जीवन का क्या महत्व है? मृत्यु के बाद विश्वासियों की अवस्था के संबंध में यही मुख्य प्रश्न है।

प्रभु यीशु इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देता है: “पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा; और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा” (यूहन्ना 11:25-26)। यह तथ्य कि प्रभु यीशु मसीह अपने व्यक्तित्व में

95. निस्सन्देह अनन्त जीवन कोई सृष्टि नहीं है, परन्तु यह तथ्य कि विश्वासियों के पास वह अभी है और वह उनकी नई अवस्था की पहचान है, नई सृष्टि के एक भाग के रूप में देखा जा सकता है।

96. 2 कुरिन्थियों 5:17; गलातियों 6:15; इफिसियों 2:5, 10; 4:23-24; कुलुस्सियों 3:9-11।

पुनरुत्थान और जीवन है, विश्वासियों के लिए – जीवितों के लिए भी और दिवंगत लोगों के लिए भी – दूरगामी और आशीर्षित परिणाम रखता है।

2.9.6 दिवंगत विश्वासी

जो विश्वासी मर चुके हैं, उनके लिए प्रभु के इस वचन का क्या अर्थ है कि वह

- पुनरुत्थान है?
- जीवन है?

वे जीएँगे, क्योंकि वे एक दिन जी उठेंगे। हम पहले ही देख चुके हैं कि इससे दैहिक पुनरुत्थान अभिप्रेत है। क्योंकि वह पुनरुत्थान है, इसलिए पुनरुत्थान का अर्थ उनकी दैहिक मृत्यु का अन्त और जीवन में फिर से प्रवेश है। यही पुनरुत्थान की आशा है, जो उसके व्यक्तित्व में, उसके प्रायश्चित के कार्य में और उसके पुनरुत्थान में आधारित है। अनन्त जीवन इस बात की ज़मानत है कि देह जिलाई जाएगी। तब देह भी पूरी तरह अनन्त जीवन में भागी होगी।

वे जीएँगे, चाहे वे मर भी जाएँ: यहाँ मृत्यु के तुरन्त बाद विश्वासी की अवस्था बताई गई है। जब विश्वासी मरता है, तो जीवन अनन्त जीवन के सब लक्षणों के साथ बना रहता है (देखें खंड 2.9.4)। मृत्यु अनन्त जीवन को छूती तक नहीं; वह बिना किसी हानि के “मृत्यु के द्वार” से होकर निकल जाता है। ठोस रूप में इसका अर्थ यह है कि नया जीवन, अर्थात् विश्वासी का नया “मैं”, नए मनुष्य की व्यक्ति-चेतना, मृत्यु के बाद भी बनी रहती है। अनन्त जीवन विश्वासी के साथ अटूट रूप से जुड़ा है।

इस संदर्भ में यह फिर से स्पष्ट होता है कि अनन्त जीवन को विश्वासी से फिर कभी अलग नहीं किया जा सकता। वह मर जाने पर भी इस जीवन की शक्ति और चेतना में जीवित रहता है। पिता और पुत्र के साथ सहभागिता, जो अनन्त जीवन के द्वारा ही संभव हुई है, टूटती नहीं।

2.9.7 जीवित विश्वासी

यूहन्ना 11:26 में प्रभु बताता है कि जीवितों के लिए इस बात का क्या अर्थ है कि वह पुनरुत्थान और जीवन है: जीवित लोग अनन्तकाल तक नहीं मरेंगे। यह सच्चाई प्रभु दो बार और दूसरे स्थानों पर कहता है: “जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है; बापदादों के समान नहीं कि खाया और मर गए; जो कोई यह रोटी खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा” (यूहन्ना 6:58); और “यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु को न देखेगा” (यूहन्ना 8:51)।

यह ध्यान देने योग्य है कि यूहन्ना 11:26 के पद के पहले भाग में प्रभु ऐसे विश्वासियों की बात करता है जो मर चुके हैं, यद्यपि दूसरे भाग में वह कहता है कि विश्वासी मरते ही नहीं। परन्तु विश्वासी तो अब भी ठीक अविश्वासी की तरह मरता है। क्या यह विरोधाभास है? पद के दूसरे भाग में मृत्यु का एक दूसरा पहलू है। विश्वासियों की मृत्यु और अविश्वासियों की मृत्यु एक ही बात नहीं है। जो विश्वासी मरता है, वह उस अनन्त

मृत्यु को नहीं देखेगा, जिसकी ओर अविश्वासी अपनी दैहिक मृत्यु के बाद बढ़ता है। दैहिक मृत्यु पापी को अनन्त न्याय की ओर ले जाती है, और वही अनन्त मृत्यु है (प्रकाशितवाक्य 20:14), क्योंकि “मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है” (इब्रानियों 9:27)। पापी के लिए मृत्यु और न्याय के अलावा कुछ नहीं बचता। उसके लिए अब न कोई आशा है और न कोई सहायता। यही अविश्वासी की मृत्यु है!

पापी की यह मृत्यु विश्वासी नहीं मरेगा। मनुष्य पर पाप का प्रभाव (मृत्यु) मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा विश्वासियों के लिए पूरी तरह रद्द कर दिया गया है। उनके पास अभी से एक नया स्वभाव है, जो अब मर नहीं सकता – भले ही उन्हें अभी दैहिक मृत्यु से होकर जाना पड़े। यह उसका जीवन है, जिसने ईश्वरीय जीवन की शक्ति में मृत्यु पर जय पाई है। क्योंकि वह पुनरुत्थान है, इसलिए यह ऐसा जीवन है जिस पर मृत्यु का अब कोई अधिकार नहीं है।

विश्वासी, चाहे वह जीवित हो या मर चुका हो, सदा अनन्त जीवन की शक्ति और चेतना में जीवित रहता है। मृत्यु के कारण केवल देह एक निश्चित समय तक इससे बाहर रहती है।

सारांश: अनन्त जीवन उन तीन भिन्न-भिन्न समय-खंडों में, जिनमें विश्वासी रहता है, उसकी सम्पत्ति है। वह उसके पार्थिव जीवन के दौरान आरम्भ होता है, जब उसका नया जन्म होता है। फिर वह मृत्यु के बाद भी उसकी सम्पत्ति है। अन्त में वह पुनरुत्थान में अनन्त पूर्णता तक पहुँचाता है।

2.9.8 अनन्त जीवन का भावी रूप

प्रेरित पौलुस भी (रोमियों 5:21 और 6:22 में) और पहले तीन सुसमाचार-लेखक भी (मत्ती 18:8; 25:46; मरकुस 10:30; लूका 18:30 में) अनन्त जीवन की बात उसके भावी रूप में करते हैं, न कि वर्तमान सम्पत्ति के रूप में, जैसा यूहन्ना के यहाँ है।

पौलुस अनन्त जीवन की पूरी सम्पत्ति और उसके पूरे आनन्द को पुनरुत्थान में अविनाश के साथ जोड़ता है। वह कहता है कि जो “सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा और आदर और अविनाश [पुनरुत्थान में देह का] की खोज में हैं”, उनका प्रतिफल अनन्त जीवन होगा (रोमियों 2:7)। पौलुस के लिए अनन्त जीवन अपने पूरे अर्थ में महिमा में जी उठे मसीह के समान होना है। यही वह वातावरण है जिसमें अनन्त जीवन का घर है।

अभी हम पृथ्वी पर जीवित लोगों के रूप में अनन्त जीवन को एक मरनहार देह में रखते हैं। पुनरुत्थान में हमें एक “अनन्त देहा” पहिनाया जाएगा (2 कुरिन्थियों 5:1)। यह एक ऐसी देह है जो पूरी तरह अनन्त जीवन के, अर्थात् पूर्णता की अवस्था के, अनुरूप होगी। यूहन्ना भी अनन्त जीवन के इस पहलू को जानता है।

अनन्त जीवन की आशा और प्रतीक्षा (तीतुस 1:2; 3:7; रोमियों 6:22) इस बात में है कि स्वर्ग की, पिता के घर की बातों का शीघ्र ही उस वातावरण और परिवेश में अनुभव और आनन्द लिया जा सके जो उस जीवन का अपना है।

2.9.9 पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा हमें दान में दिया गया है।⁹⁸ यहाँ और विवरण में गए बिना, मैं इस बात की ओर ध्यान दिलाता हूँ कि वह, जैसा यीशु कहता है, अनन्तकाल तक हमारे साथ रहेगा:

“... और मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे, अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा” (यूहन्ना 14:16-17)।

इसलिए परमेश्वर का आत्मा मृत्यु में भी हमारे साथ है। तब भी वही हमारी शक्ति है। वह अनन्त जीवन की तरह इस मध्यवर्ती समय में इस बात की गारंटी है कि हम पूरी चेतना, पूरी शक्ति और पूरे ज्ञान के साथ यीशु के पास होंगे। ठीक इसी के लिए परमेश्वर का आत्मा हमें बयाने के रूप में, इस क्षण के लिए ज़मानत के रूप में, दिया गया है:

“और जिसने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है, वह परमेश्वर है, जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है” (2 कुरिन्थियों 5:5)।

जो कुछ परमेश्वर ने हमें हमारे जीवन में दान किया है, वह मृत्यु में भी हमारा ही रहेगा!

2.9.10 निष्कर्ष

अन्त में हम मूल प्रश्न “मृत्यु के बाद विश्वासियों की अवस्था क्या है?” के विषय में यह कह सकते हैं: अनन्त जीवन भी और पवित्र आत्मा भी इस बात की ज़मानत हैं कि विश्वासी मृत्यु के बाद मसीह के साथ सचेत सहभागिता में जीवित रहता है।

विश्वासी में जो जीवन है, वह मर नहीं सकता (तब भी नहीं, जब बाहरी मनुष्यत्व मर जाता है), क्योंकि वह जीवन उसके पास पुत्र में है, जो अनन्तकाल तक जीवित है। विश्वासी उसे अब खो भी नहीं सकता, क्योंकि नहीं तो वह अपना वह सारा अस्तित्व खो देता जो परमेश्वर से जन्मे हुए के रूप में उसके पास है। यह नया अस्तित्व परमेश्वर का कार्य है, एक नई सृष्टि, जो न नष्ट की जा सकती है और न कभी उसका अन्त होगा।

98. यूहन्ना 7:39; 14:16; 15:26; प्रेरितों के काम 1:8; 19:2; रोमियों 8:9, 11, 14-16; 1 कुरिन्थियों 2:12; 3:16; 6:19; 2 कुरिन्थियों 1:22; इफिसियों 4:30; 1 थिस्सलुनीकियों 4:8; 2 तीमुथियुस 1:14; याकूब 4:5।

इसी प्रकार पवित्र आत्मा के वे सब लक्षण, जो हमें दान में दिए गए हैं, मृत्यु में हमारे अस्तित्व को निर्धारित करेंगे।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- “अनन्त जीवन” और “अमरता” में अन्तर बताइए!
- एक विश्वासी की मृत्यु एक अविश्वासी की मृत्यु से किस प्रकार भिन्न है? इसके लिए यूहन्ना 11:26 के कथन पर ध्यान दीजिए!
- मध्यवर्ती अवस्था के लिए पवित्र आत्मा का क्या महत्व है?

2.10 कैद में पड़ी आत्माएँ

“कैद में पड़ी आत्माएँ” एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका हमारे विषय से सीधा संबंध है। यह पवित्रशास्त्र में केवल एक बार आती है, और वह भी केवल पतरस की पहली पत्री में। ठीक इसी में उसे सही ढंग से समझने की कठिनाई भी है। पतरस अपनी दूसरी पत्री में लिखता है कि पौलुस की कुछ पत्रियों की बातें समझने में कठिन हैं (2 पतरस 3:16)। परन्तु यहाँ यह बात शायद उसकी अपनी पत्री पर भी लागू होती है, क्योंकि वह पाठ-खंड जिसमें आत्माओं का उल्लेख है (1 पतरस 3:19-20), नए नियम के सबसे कठिन खंडों में से है। इसका परिणाम यह हुआ है कि कलीसिया के इतिहास में बहुत सी अत्यन्त भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ हुई हैं, और आज भी हैं।⁹⁹

स्वयं पतरस ही पवित्रशास्त्र की व्याख्या का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत बताता है, अर्थात् “पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी की अपनी व्याख्या से नहीं होती” (2 पतरस 1:20)। इसलिए हम इस पाठ की जाँच भी नए नियम के उन सब पदों के प्रकाश में करेंगे, जिन पर हम खंड 2.1–2.9 में पहले ही विचार कर चुके हैं, और जिन्होंने हमें धर्मियों और अधर्मियों दोनों की मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच की अवस्था का एक व्यापक चित्र दिया है।

पतरस तितर-बितर होकर रहनेवाले परदेशियों को लिखता है:

“क्योंकि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्म ने, पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए; वह शरीर के भाव से तो मारा गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया; उसी में उसने जाकर कैद में पड़ी आत्माओं को भी प्रचार किया, जिन्होंने उस समय आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग, अर्थात् आठ प्राणी, पानी के द्वारा बच गए” (1 पतरस 3:18-20)।

99. इस विषय में देखें: William Kelly, *Christ Preaching to the Spirits in Prison*, The Bible Treasury, Vol. 9, 1872; और: Jürgen Kuberski, *Eine Höllenfahrt Jesu?*, Bibel und Gemeinde, 2/1988; और: H.L. Heijkoop, *Der erste Brief des Petrus*, Neustadt (Schriftenverlag Ernst Paulus) 1978। इस विषय में परिशिष्ट भी देखें।

2.10.1 पतरस का उद्देश्य

पतरस के सामने यह प्रश्न नहीं है कि मृत्यु के बाद की अवस्था क्या है। किसी ने उससे इसके विषय में नहीं पूछा था, और न किसी ने कोई गलत शिक्षा फैलाई थी जिसका खंडन करना आवश्यक हो।¹⁰⁰ जिन विश्वासियों को पतरस लिखता है, वे यीशु के कारण भारी सताव का सामना कर रहे थे।¹⁰¹ वह इस कठिन परिस्थिति में उनका उत्साह बढ़ाना चाहता था। इसलिए उसने उनकी स्थिति की तुलना जल-प्रलय से पहले के दिनों में नूह की स्थिति से की। नूह अपने परिवारवालों के साथ केवल आठ प्राणियों का एक छोटा सा अल्पसंख्यक समूह था। प्रभु के वचन पर उसने अपने पुत्रों के साथ सूखी भूमि पर एक जहाज़ बनाया। और किसी ने उसका अनुसरण नहीं किया। जैसे नूह ने परमेश्वर को नहीं देखा, वैसे ही विश्वासियों ने मसीह को नहीं देखा (1:8); यह विश्वास की बात थी। नूह का आदर्श, और अपने आत्मा के द्वारा मसीह का कार्य और उसकी उपस्थिति, उन्हें दृढ़ बने रहने के लिए प्रेरित करें, चाहे उनका सन्देश ठुकराया जाए और उन्हें अन्यायपूर्वक सताया जाए।

2.10.2 इस पाठ की मेरी व्याख्या

दुःख उठानेवाला मसीह उन विश्वासियों के लिए आदर्श है, जिन्हें उसकी तरह भलाई करने के कारण दुःख उठाना पड़ा। इस पद में बात पापों के कारण मसीह के दुःखों की है। धर्मी होकर वह अधर्मियों के लिए मरा, इस उद्देश्य से कि उन्हें परमेश्वर के पास पहुँचाए। ये मसीह के प्रायश्चित करनेवाले दुःख हैं, जिन्हें विश्वासियों को सहना नहीं पड़ा। मसीह के प्रायश्चित ने उसे मृत्यु तक पहुँचाया; वह “शरीर के भाव से मारा गया”। परन्तु यह अन्त नहीं था, क्योंकि वह परमेश्वर के आत्मा की शक्ति में मृतकों में से जी उठा (रोमियों 1:4; 8:11)।

इसी आत्मा में – पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में नहीं – उसने जाकर उन कैद में पड़ी आत्माओं को प्रचार किया, जिन्होंने पहले आज्ञा नहीं मानी थी। पवित्र आत्मा, दूसरे शब्दों में मसीह का आत्मा (1 पतरस 1:11), नूह में, जो धार्मिकता का प्रचारक था (2 पतरस 2:5), कार्य करता था। नूह के समकालीन लोगों को प्रचार तब तक होता रहा, जब तक जहाज़ बनता रहा। उनमें से किसी ने मन नहीं फिराया; वे सब अपनी आज्ञा न मानने के कारण जल-प्रलय में मर गए। मसीह का आत्मा अब उसी उद्देश्य से उन विश्वासियों में कार्य करता था (1 पतरस 4:14; तुलना करें 1:11), जिन्हें पतरस ने लिखा, ताकि उनके द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह की गवाही फैलाए।

पतरस नूह के समय के मरे हुए लोगों को “कैद में पड़ी आत्माएँ” कहता है। उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास नहीं किया (1 पतरस 4:6), और परमेश्वर के धीरज को उन बहुत से वर्षों तक, जिनमें जहाज़ बनता रहा, यों ही बीत जाने दिया। इसलिए मृत्यु में उनका न्याय आरम्भ होता है (इब्रानियों 9:27), और वे स्वयं

100. पौलुस ने ऐसा किया, उदाहरण के लिए 1 कुरिन्थियों 15 में, जहाँ वह पुनरुत्थान के इनकार का विरोध करता है।

101. 1 पतरस 1:6; 2:12, 19-21; 3:14, 17; 4:1, 4, 12, 16; 5:8-9।

को हेडीस (यूनानी: *hadēs*; हिन्दी बाइबल में ‘अधोलोक’) में पाते हैं, जो पीड़ा का स्थान है (लूका 16:23), और जिसे यहाँ क़ैद कहा गया है। इसमें भी विश्वासियों के लिए एक प्रोत्साहन है। उनका सन्देश और उनकी आशा, जिसके विषय में उन्हें उत्तर देना था (1 पतरस 3:15), पूरी तरह सही थी। जो कोई उनके सन्देश को नहीं मानेगा, वह उसी स्थान पर पहुँचेगा। मृत्यु के बाद उनकी भी प्रतीक्षा क़ैद ही कर रही थी। वहाँ पुनरुत्थान के दिन और न्याय के बड़े दिन तक उनका स्थान होता, जैसा पतरस थोड़ा आगे लिखता है:

“... वे उसको, जो जीवितों और मरे हुएों का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे” (1 पतरस 4:5)।

नूह जहाज़ में जल-प्रलय में से होकर बचाया गया। इसका प्रतिरूप, अर्थात् बपतिस्मा, अब विश्वासियों को भी बचाता है, क्योंकि वे भी नूह की तरह पृथ्वी पर एक नई स्थिति में लाए जाते हैं। संसार से और अपने समकालीन लोगों से अलग होकर (प्रेरितों के काम 2:40-41) वे अब जी उठे और महिमा पाए हुए मसीह की सेवा करते थे, जिसे सारा अधिकार दिया गया है।

आगे के शीर्षकों के अन्तर्गत मैं कुछ ऐसी अवधारणाओं और व्याख्याओं पर विस्तार से विचार करता हूँ, जिन्हें मैं बाइबल के अनुसार नहीं मानता।

2.10.3 शरीर के भाव से मारा गया – आत्मा के भाव से जिलाया गया

यद्यपि ऊपर इन दोनों अभिव्यक्तियों की व्याख्या दी जा चुकी है, फिर भी मैं यहाँ कुछ और पहलुओं का उल्लेख करता हूँ। “शरीर के भाव से मारा गया” इस अभिव्यक्ति के विषय में कोई भिन्न-भिन्न मत नहीं हैं। निस्सन्देह इससे मसीह की प्रायश्चित की मृत्यु अभिप्रेत है। उसकी मृत्यु उस बात के विपरीत खड़ी है जो उसके बाद आई, अर्थात् उसका पुनरुत्थान। पुनरुत्थान को “आत्मा के भाव से जिलाया गया” कहा गया है। “जिलाया गया” वही अभिव्यक्ति है जो रोमियों 4:17; 8:11; 1 कुरिन्थियों 15:22, 36, 45 में है। परन्तु पुनरुत्थान का अर्थ प्रभु की आत्मा का “जिलाया जाना” नहीं, बल्कि देह का पुनरुत्थान है (यूहन्ना 2:19-22)।

परमेश्वर का पवित्र आत्मा ही पुनरुत्थान में कार्य करता है, क्योंकि उसके विषय में लिखा है: “आत्मा तो जीवनदायक है” (यूहन्ना 6:63)। पौलुस पवित्र आत्मा की बात प्रभु के और विश्वासियों के भी पुनरुत्थान के संबंध में करता है:

“... और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुएों में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा ... हमारा प्रभु यीशु मसीह” (रोमियों 1:4)।

“यदि उसी का आत्मा, जिसने यीशु को मरे हुएों में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह को मरे हुएों में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने उस आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा” (रोमियों 8:11)।

प्रभु यीशु में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है (कुलुस्सियों 1:19-20; 2:9), अर्थात् त्रिएक परमेश्वर। ईश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों का छुटकारे के कार्य में, और इस प्रकार उसके पुनरुत्थान में भी, भाग था।

इसी आत्मा में उसने जाकर प्रचार किया। तो उसने यह व्यक्तिगत रूप से नहीं किया, अर्थात् मांस और लहू वाले मनुष्य के रूप में नहीं। यह मसीह का आत्मा था,¹⁰² जो मसीह के देहधारण से पहले ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में कार्य करता था (1 पतरस 1:11), और जो अब सुसमाचार के प्रचार में भी कार्य करता है और वहाँ “पवित्र आत्मा” कहलाता है (1 पतरस 1:12)।

नूह के दिनों में परमेश्वर का आत्मा नूह के द्वारा कार्य करता था, जिसे पतरस “धार्मिकता का प्रचारक” कहता है (2 पतरस 2:5)। मूसा भी जल-प्रलय के द्वारा होनेवाले न्याय के संबंध में नूह के समय में परमेश्वर के आत्मा के कार्य की बात करता है (उत्पत्ति 6:3)। नए नियम में भी हमें एक समानान्तर बात मिलती है, जहाँ लिखा है कि मसीह ने आकर मेल का सुसमाचार सुनाया (इफिसियों 2:17)। परन्तु वहाँ भी उसने यह व्यक्तिगत रूप से नहीं, बल्कि अपने सेवकों के द्वारा किया। वह स्वर्ग पर चढ़ चुका था और व्यक्तिगत रूप से अब उपस्थित नहीं था।

2.10.4 क़ैद में पड़ी आत्माओं को प्रचार

अत्यन्त भिन्न-भिन्न व्याख्याओं के बीच इस बात पर व्यापक सहमति है कि मसीह ने अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान के बीच के थोड़े से समय में व्यक्तिगत रूप से हेडीस में आत्माओं को प्रचार किया। इसके साथ दूरगामी प्रश्न जुड़े हुए हैं।

2.10.5 प्रचार की विषय-वस्तु

यद्यपि व्याख्याओं की विविधता से यह पता चलता है कि प्रचार की विषय-वस्तु, अर्थात् सन्देश, ज्ञात नहीं है, फिर भी मैं किसी प्रचार को केवल इसी उद्देश्य से समझ सकता हूँ कि मनुष्यों से मन फिराया जाए, ताकि उनका उद्धार हो। सामान्य रूप से “प्रचार” का यही अर्थ है।¹⁰³ इस प्रचार की परिभाषा स्वयं पतरस देता है। वह कहता है कि मरे हुएओं को सुसमाचार सुनाया गया (4:6)। इसलिए हेडीस में इस प्रकार के प्रचार का अर्थ यह होता कि दिवंगत लोगों को मन फिराने का दूसरा अवसर दिया गया।

प्रचार की विषय-वस्तु के विषय में व्याख्याएँ मसीह की विजय की घोषणा से लेकर सुसमाचार सुनाने तक जाती हैं। यह विचार कि दिवंगत लोगों को मसीह की विजय की घोषणा सुनाई जाती है, पवित्रशास्त्र में कहीं नहीं मिलता। इसका कोई विशेष अर्थ इसलिए भी नहीं बनता, क्योंकि वैसे भी एक दिन वह समय

102. “मसीह का आत्मा” या “यीशु का आत्मा” अभिव्यक्ति प्रेरितों के काम 16:7; रोमियों 8:9; फिलिप्पियों 1:19; 1 पतरस 1:11 में आती है; “प्रभु का आत्मा” प्रेरितों के काम 5:9; 8:39; 2 कुरिन्थियों 3:17 में। सब स्थानों पर यह परमेश्वर का पवित्र आत्मा है।

103. उदाहरण के लिए मत्ती 26:13; 1 कुरिन्थियों 1:23; गलातियों 2:2; फिलिप्पियों 1:15।

आएगा जब सब – और केवल वे मनुष्य नहीं जो मसीह की मृत्यु के समय तक मर चुके थे – मसीह की प्रभुता को स्वीकार करेंगे। पौलुस कहता है कि पृथ्वी पर के लोग (अर्थात् जीवित लोग) और पृथ्वी के नीचे के लोग (अर्थात् मृतक) इसमें सम्मिलित हैं:

“... कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें, और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है”
(फिलिप्पियों 2:10-11)¹⁰⁴

मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच क़ैद में पड़ी आत्माओं के लिए मन फिराने की पुकार के रूप में प्रचार को इन कारणों से भी अस्वीकार करना होगा:

- पवित्रशास्त्र में हमारे पास कोई और संकेत नहीं है जो इस मत का समर्थन करे। इसके विपरीत, मसीह परादीस में विश्वासियों के पास गया, हेडीस में नहीं, जैसा उसने स्वयं लूका 23:43 में कहा है।
- पतरस कहता है कि मरने के बाद वह जिलाया गया। वह इस विषय में कुछ नहीं कहता कि मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच क्या हुआ।
- यह समझ में नहीं आता कि ठीक उन्हीं मनुष्यों को फिर से प्रचार किया जाए, जिनके विषय में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उन्होंने अपने जीवनकाल में परमेश्वर के धीरज का अनुभव किया और उसे ठुकरा दिया। पवित्रशास्त्र की गवाही स्पष्ट है कि मृत्यु के बाद मन फिराने का कोई अवसर नहीं रहता।
- इसका अर्थ यह होता कि उसने केवल उन्हीं मनुष्यों को प्रचार किया जो जल-प्रलय में मरे। स्पष्ट है कि यहाँ इन्हीं मनुष्यों की बात है। परन्तु उन मनुष्यों का क्या, जो इनसे पहले या बाद में मरे, और जो कुल मिलाकर निश्चय ही इनसे कहीं अधिक हैं? तब तो सब मरे हुएों को प्रचार सुनने का अवसर मिलना चाहिए।

इसका भी कोई अर्थ नहीं बनता, और यह मृत्यु के बाद मन फिराने की संभावना खोल देता है। परन्तु यह ग़लत है और पवित्रशास्त्र की शिक्षा नहीं है। लूका 16 में हेडीस के विषय में यीशु की शिक्षाएँ स्पष्ट दिखाती हैं कि मृत्यु के बाद कोई परिवर्तन नहीं होता। एक बड़ी, न लौंघी जा सकनेवाली खाई आशीष के स्थान को पीड़ा के स्थान से अलग करती है।

2.10.6 प्राण और आत्माएँ

जो आठ मनुष्य जहाज़ में बचाए गए, उन्हें “प्राणी” कहा गया है। पतरस अपनी पहली पत्नी में “प्राण” शब्द का प्रयोग छह बार करता है।¹⁰⁵ पाँच बार वह “प्राण” से विश्वासी के अस्तित्व का एक मूल तत्व समझता

104. फिलिप्पियों 2:11 से यह पता नहीं चलता कि यह कब होगा, और क्या जिन सबका उल्लेख है उनके लिए यह एक ही समय होगा। परन्तु पवित्रशास्त्र के दूसरे वचनों के अनुसार – विशेष रूप से न्याय-सभाओं के आधार पर – यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह बड़े सिंहासन के सामने जीवितों और मृतकों का न्याय है, जो तब सब पर एक साथ आएगा। इसी अर्थ में प्रभु यीशु “न्याय के दिन” की भी बात करता है (मत्ती 10:15; 11:22, 24; लूका 10:14)।

105. 1:9, 22; 2:11, 25; 3:20; 4:19।

है; केवल एक बार – हमारे पाठ में – वह इससे पूरे मनुष्य को अभिप्रेत करता है। यदि उसने यहाँ “प्राण” के स्थान पर “मनुष्य” कहा होता, तो अर्थ वही रहता, क्योंकि पवित्रशास्त्र में “प्राण” शब्द का प्रयोग प्रायः इसी प्रकार होता है।¹⁰⁶ “प्राण” का यह अर्थ हमारी आज की बोलचाल में भी मिलता है।

अब यदि “प्राण” उस मनुष्य को दर्शाता है जो नूह के समय में पृथ्वी पर रहता था, तो फिर क्रैद में पड़ी “आत्माओं” का क्या अर्थ है? क्या “आत्माएँ” शब्द दिवंगत मनुष्यों के लिए है? यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि “आत्मा” शब्द कहीं भी पृथ्वी पर रहनेवाले मनुष्य के लिए प्रयुक्त नहीं होता, और यह “प्राण” से स्पष्ट रूप से भिन्न है। निस्सन्देह “आत्मा” शब्द बहुत बार मनुष्य के संबंध में प्रयुक्त होता है, परन्तु तब केवल मनुष्य के अस्तित्व के एक घटक के रूप में, जैसा कि प्राण के साथ भी होता है। इसके विपरीत “आत्मा” शब्द स्वर्गदूतों के लिए प्रयुक्त होता है, उनके लिए भी जो परमेश्वर की सेवा करते हैं, और दुष्टात्माओं, अर्थात् पतित स्वर्गदूतों, के लिए भी (उदाहरण के लिए मत्ती 10:1; प्रकाशितवाक्य 12:8)।

2.10.7 क्या ये आत्माएँ पतित स्वर्गदूत हैं?

परन्तु इससे यह मत सिद्ध नहीं होता कि यहाँ उन स्वर्गदूतों की बात है जो अब सबसे गहरे अथाह कुण्ड में बन्द हैं।¹⁰⁷ इस मत के लिए इन पदों का हवाला दिया जाता है:

“क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, बल्कि उन्हें सबसे गहरे अथाह कुण्ड [यूनानी: *Tartarus*] में गिराकर अन्धकार की जंजीरों के हवाले कर दिया, ताकि वे न्याय के लिए रखे जाएँ ...” (2 पतरस 2:4; तुलना करें यहूदा 6),

और इसके साथ उत्पत्ति 6:2-4:

“... तब परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि मनुष्यों की पुत्रियाँ सुन्दर हैं; और उन्होंने जिस-जिस को चाहा, उनसे ब्याह कर लिया। तब यहोवा ने कहा, ‘मेरा आत्मा मनुष्य से सदा विवाद करता न रहेगा, क्योंकि वह भी शरीर ही है; उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी।’ उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे, और उसके बाद भी, जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्यों की पुत्रियों के पास गए और उनसे सन्तान उत्पन्न हुई।”

यहूदा जिन जंजीरों के विषय में लिखता है, उनमें लोग उस क्रैद के समानान्तर बात देखते हैं जिसके विषय में पतरस लिखता है। उत्पत्ति 6 की घटना, जिसमें स्वर्गदूत स्त्रियों से संबंध जोड़ते हैं, निस्सन्देह नूह के समय से संबंध रखती है। तब मसीह ने इन पतित, अब बँधे हुए और न्याय के लिए रखे गए स्वर्गदूतों के पास कोई सन्देश पहुँचाया होता। परन्तु वह अनुग्रह और उद्धार का सन्देश नहीं हो सकता, क्योंकि इब्रानियों 2:16 के अनुसार प्रभु स्वर्गदूतों को छुड़ाने के लिए उनकी सुधि नहीं लेता।

106. उदाहरण के लिए उत्पत्ति 12:5; निर्गमन 1:5; गिनती 31:35; प्रेरितों के काम 2:41; 7:14।

107. देखें Kenneth S. Wuest, *First Peter in Greek New Testament*, Michigan (Eerdmans Publishing), 1942।

पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि मसीह ने स्वर्गदूतों को गुलगुता पर अपनी विजय की घोषणा सुनाई हो, और इसका कोई अर्थ भी नहीं बनता, क्योंकि उनके लिए न्याय का एक दिन है जो पहले से निश्चित है। मसीह न्यायी होगा (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 6:3)। तब वैसे भी उसके अधिकार और उसकी महानता का प्रदर्शन होगा।

अन्ततः मसीह की शक्ति की किसी घोषणा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पतित स्वर्गदूतों, अर्थात् दुष्टात्माओं या अशुद्ध आत्माओं, को गुलगुता से पहले भी मसीह की शक्ति का पता था, और वह भी न्याय के संबंध में, और वे उसकी शक्ति से डरते थे (लूका 8:27-33; मत्ती 8:29)। दुष्टात्मा विश्वास रखते और थरथराते हैं (याकूब 2:19), और इसके लिए उन्हें किसी ऐसे सन्देश की आवश्यकता नहीं जो मसीह उन्हें सुनाता।

उत्पत्ति 6 से यह समझा जा सकता है कि स्वर्गदूतों ने नूह के समय से पहले स्त्रियों से संबंध जोड़ा था, और इसलिए यह घटना आवश्यक रूप से नूह के दिनों में नहीं आती।

इस स्थान पर “आत्माओं” से स्वर्गदूतों को समझना ग़लत है, चाहे ऊपर से देखने पर कुछ संबंध-बिन्दु दिखाई दें। यहाँ भी फिर से पाठ के संदर्भ और पवित्रशास्त्र की सम्पूर्ण गवाही पर ध्यान देना आवश्यक है।

2.10.8 आत्माएँ – दिवंगत मनुष्य

यहाँ नूह के समकालीन लोगों को “आत्माएँ” कहा गया है, क्योंकि अब, पत्नी लिखे जाने के समय, वे क्रैद में थे। “क्रैद” शब्द से उनकी आज्ञा न मानने का परिणाम संकेत किया गया है, क्योंकि उनके न्याय का कोई अन्त नहीं है। मृत्यु के बाद उनका अस्तित्व मांस और लहू की देह में नहीं है; पौलुस की एक अभिव्यक्ति का प्रयोग करें तो वे “देह से अलग” हैं (2 कुरिन्थियों 5:8)। इसलिए उन्हें आत्माएँ कहा गया है। जिन व्यक्तियों को यहाँ आत्माएँ कहा गया है, उनके लिए पतरस कुछ ही पद आगे एक दूसरा नाम प्रयोग करता है। वे पद भी ऊपर उद्धृत पदों से संबंध रखते हैं और वास्तव में विचार-क्रम का समापन हैं:

“क्योंकि मरे हुएों को भी सुसमाचार इसी लिए सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें” (1 पतरस 4:6)।

अब – आत्मा-प्राण की दृष्टि से – वे क्रैद में पड़ी आत्माएँ हैं। अपनी देह की दृष्टि से अब वे मृतक हैं। दोनों वर्णन एक ही अवस्था को समझाते हैं, परन्तु दो पहलुओं से। एक ओर दैहिक पहलू (“मरे हुए”) है और दूसरी ओर आत्मा-प्राण का पहलू। सुसमाचार उन लोगों को नहीं सुनाया गया जो उस समय मर चुके थे, बल्कि उन्हें जो अब मरे हुए हैं, और जो उस समय, जीवित मनुष्यों के रूप में सन्देश सुनने के बाद, जल-प्रलय में नाश हो गए।¹⁰⁸

108. कुछ व्याख्याकार इस मृत्यु की आत्मिक व्याख्या करते हैं (तुलना करें इफिसियों 2:1, 5; कुलुस्सियों 2:13; लूका 15:24, 32)। परन्तु मेरे विचार में पुराने नियम में आत्मिक मृत्यु का कभी उल्लेख नहीं होता, और न उसे पुराने नियम के समय के मनुष्यों पर लागू किया जाता है।

“आत्माएँ” शब्द का यही अर्थ है, जो – मूल भाषा के ज्ञान के बिना भी – पाठ के संदर्भ से पहचाना जा सकता है।

एक और स्थान है जहाँ आत्माओं की, अर्थात् मृत्यु के बाद के मनुष्यों की, बात है:

“... पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास, और लाखों स्वर्गदूतों की महासभा के पास, और उन पहिलौठों की कलीसिया के पास जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं के पास आए हो” (इब्रानियों 12:22-23)।

इस महिमामय सूची के अन्त में वह अभिव्यक्ति है जो इस संदर्भ में हमारे लिए महत्वपूर्ण है: “सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माएँ”।¹⁰⁹ तो यहाँ आत्माएँ अपनी देह से अलग हैं और पहिलौठों की कलीसिया का एक भाग हैं। इस अभिव्यक्ति में केवल इन्हीं की बात है, क्योंकि केवल पापी ही यीशु के लहू के द्वारा धर्मी ठहराए गए। यीशु का लहू स्वर्गदूतों के लिए नहीं है। ये आत्माएँ स्वर्गदूत नहीं हो सकतीं, क्योंकि इस सूची में स्वर्गदूतों का अलग से उल्लेख है।

2.10.9 कैदखाना

क्या यह कैदखाना सचमुच हेडीस (यूनानी: *hadēs*; हिन्दी बाइबल में ‘अधोलोक’) है? इस प्रश्न का उत्तर सरल नहीं है, क्योंकि आत्माओं के संबंध में “कैद” शब्द हमें पवित्रशास्त्र में केवल एक बार मिलता है।

“कैद” शब्द यहाँ किसी दूसरे अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है, बल्कि उसी अर्थ में जिसे हम नए नियम के दूसरे स्थानों से भी जानते हैं।¹¹⁰ अपराधी को हिरासत में लिया जाता है, और दोष के प्रश्न के निपटारे के बिना वह इस स्थान¹¹¹ से निकल नहीं सकता। “कैद” शब्द को इस बात से अच्छी तरह समझाया जा सकता है कि अधर्मी अपनी मृत्यु के बाद न्याय के दिन तक रोके रखे जाते हैं। पतरस ही अपनी दूसरी पत्री में भी इसका उल्लेख करता है:

“प्रभु भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है” (2 पतरस 2:9)।

109. 1 पतरस और इब्रानियों 12 की अभिव्यक्तियों में अन्तर यह है कि पतरस के यहाँ “आत्माएँ” पूरे व्यक्ति को दर्शाती हैं, और इब्रानियों 12 में आत्माओं को विश्वासियों के अस्तित्व के एक तत्व के रूप में देखा गया है; इससे स्पष्ट होता है कि आत्मा के अलावा एक देह भी है। मूल रूप से इन अभिव्यक्तियों का अर्थ एक ही है। इस संदर्भ में मैं “गवाहों के बादल” की अभिव्यक्ति की ओर ध्यान दिलाता हूँ, जो विश्वास के धावक को मानो किसी अखाड़े में घेरे हुए हैं। ये गवाह इब्रानियों 11 के विश्वास के नायक हैं, जो अब स्वर्गीय परादीस में हैं। यह संकेत किया गया है कि वे मसीहियों को किसी प्रतियोगिता के दर्शकों की तरह देखते हैं। मेरे विचार में ऐसा नहीं हो सकता। तब वे हमारा सारा जीवन देखते, निजी बातें भी। निश्चय के साथ हम इसके विषय में कुछ नहीं कह सकते, क्योंकि पवित्रशास्त्र इस विषय में मौन है।

110. उदाहरण के लिए मत्ती 14:10; लुका 3:20; प्रेरितों के काम 5:19; 2 कुरिन्थियों 6:5।

111. शायद प्रेरितों के काम 1:25 में भी हमें इस स्थान का संकेत मिलता है।

यह सच्चाई हमारी आज की समझ से भी मेल खाती है, क्योंकि मुकदमे की सुनवाई तक विचाराधीन कैद (हवालात) होती है। यह व्याख्या उन सब दूसरे पाठों का किसी भी प्रकार विरोध नहीं करती, जिन पर हम अपने विषय के संबंध में पहले ही विचार कर चुके हैं। इसके विपरीत, यह मृत्यु के बाद अधर्मियों के भाग के चित्र को पूरा करती है।¹¹²

कुछ स्वर्गदूतों पर भी यह बात लागू होती है कि वे “कैद” में हिरासत में रखे गए हैं। वहाँ वे न्याय के दिन तक रोके रखे जाते हैं। निर्णय सुनाए जाने के दिन तक वे कालकोठरी में हैं।

“कैद” शब्द को “पाप की कैद” के अर्थ में भी समझा जाता है। यशायाह (42:7; 49:9; 61:1) और लूका (4:18-19) इस अभिव्यक्ति का इसी प्रकार प्रयोग करते हैं। परन्तु मेरे विचार में यहाँ यह प्रयोग संभव नहीं है, क्योंकि ये आत्माएँ जीवित मनुष्य नहीं हैं, बल्कि थीं। यदि आत्माओं के संबंध में पाप की कैद की बात होती, तो केवल इस अर्थ में कि वे अब अपने पाप से बँधी हुई हैं, क्योंकि उन्हें क्षमा नहीं मिली है।

2.10.10 पुराने नियम के विश्वासियों का शिओल से छुटकारा?

एक और काफ़ी व्यापक मत यह है कि पुराने नियम के विश्वासी, जो शिओल में थे, या तो पीड़ा के स्थान में थे, या फिर एक प्रकार की प्रतीक्षा की स्थिति में, जिसे परम-आनन्द नहीं कहा जा सकता। जब मसीह अपनी मृत्यु के बाद उस स्थान पर गया, तो उसने विश्वासियों को छोड़ाया और उन्हें परादीस में ले गया, या उसने अपनी उपस्थिति के द्वारा उस स्थान को परादीस बना दिया।

इस मत का एक आधार अन्य बातों के साथ पुराने नियम में “शिओल” शब्द का अर्थ है। शिओल अन्य बातों के साथ एक नकारात्मक, अस्थकारमय स्थान है, जहाँ मृतक पहुँचते हैं। इसके विपरीत, पुराने नियम में परादीस का उल्लेख दिवंगत विश्वासियों के स्थान के रूप में नहीं हुआ है। परन्तु यह तथ्य कि वह प्रकट नहीं किया गया था, इसका अर्थ यह नहीं कि कोई परादीस था ही नहीं। क्या इब्राहीम मृत्यु के बाद भय और आतंक में पड़ गया होगा? वह तो पहले ही उस नगर की बाट जोहता था जिसकी नींव है, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है, और एक स्वर्गीय देश की, जो इस संसार का नहीं है (इब्रानियों 11:10, 14, 16)।

इसी प्रकार यह भी पूछना पड़ेगा: क्या वह पापों की क्षमा को जानता भी था, या क्या उसे क्षमा मिली भी थी, जबकि मसीह अभी आया ही नहीं था?¹¹³

मैं इस प्रश्न का, कि क्या शिओल से कोई छुटकारा हुआ, केवल उलटे प्रश्नों से उत्तर देना नहीं चाहता। परन्तु इसके विषय में हमारे पास बाइबल का कोई पाठ नहीं है जिस पर विचार किया जा सके। मेरे विचार में

112. यह उल्लेख करना लगभग अनावश्यक लगता है कि जो कैद में हैं, उनमें पूरी चेतना है, क्योंकि सोए हुए लोगों को कैदखाने में रखने की आवश्यकता नहीं होती।

113. रोमियों 3:25-26 के आधार पर हम मान सकते हैं कि परमेश्वर ने यीशु के बलिदान को ध्यान में रखते हुए, मानो पहले से ही, पुराने नियम के विश्वासियों के पाप उनके नाम नहीं गिने। इसलिए इसका भी कोई कारण नहीं था कि इब्राहीम को अपनी मृत्यु के बाद कोई पीड़ा या शुद्धिकरण अनुभव करना पड़े।

इस धारणा का कोई अर्थ भी नहीं बनता, और पवित्रशास्त्र में कोई समानान्तर बात नहीं है जो मसीह के ऐसे किसी कार्य का संकेत मात्र भी करती हो।

इब्राहीम अपने पितरों में जा मिला।¹¹⁴ हम मान सकते हैं कि परलोक में वह उनसे फिर मिला। उसका परमेश्वर, जिसे वह सर्वशक्तिमान के रूप में जानता था, जीवितों का परमेश्वर है (लूका 20:38)। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इब्राहीम, जिसे परमेश्वर का मित्र कहा गया है (याकूब 2:23), अब एक आनन्दमय जीवन बिता रहा है, जिसे पुनरुत्थान तक किसी छुटकारे या सुधार की आवश्यकता नहीं है।

जब प्रभु यीशु ने परम-आनन्द के स्थान को “इब्राहीम की गोद” कहा, तो उसने एक ऐसी अभिव्यक्ति का प्रयोग किया जिसे यहूदी या तो पहले से जानते थे, या भली-भाँति समझ सकते थे: यह मृत्यु के बाद धर्मियों के लिए आशीष का स्थान था। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि मृत्यु में पुराने नियम के विश्वासियों के लिए इब्राहीम केन्द्र था, जब तक कि मसीह ने अपनी मृत्यु के बाद परादीस का द्वार – इब्राहीम के लिए भी – न खोल दिया। परादीस – यदि इसे इस प्रकार कहें – सब युगों के विश्वासियों के लिए खुला था। परादीस सदा से था, क्योंकि वह परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन के सामने उसकी उपस्थिति है।

2.10.11 क्या यीशु नरक में उतरे?

वास्तव में यह प्रश्न अनावश्यक है कि क्या प्रभु यीशु नरक में उतरा, क्योंकि इसका उत्तर विभिन्न पहलुओं से पहले ही दिया जा चुका है। कुछ विश्वास-अंगीकार, जिनमें स्वयं भी समय-समय पर परिवर्तन होते रहे, यीशु का अंगीकार ऐसे व्यक्ति के रूप में करते हैं जो नरक में या मृत्यु के लोक में उतरा। लूथर (Luther) और उसके साथ दूसरे लोग “हेडीस” का अनुवाद “नरक” (जर्मन: *Hölle*) करते हैं, और इसी से मसीह के “नरक में उतरने” की धारणा बनी है।

“नरक में उतरने” के समर्थन में उदाहरण के लिए इफिसियों 4:8-10 प्रस्तुत किया जाता है:

“इसलिए वह कहता है, ‘वह ऊँचे पर चढ़ा, और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।’ उसके चढ़ने से, और क्या अर्थ पाया जाता है, केवल यह कि वह पृथ्वी के निचले भागों में उतरा भी था? और जो उतर गया, यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे।”

यहाँ बात यीशु के ऊँचे किए जाने और उसकी दीनता की गहराई की है। उसकी दीनता का सबसे निचला बिन्दु मृत्यु थी। यह भी एक दीनता थी कि वह, परमेश्वर पुत्र, मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर था (तुलना करें फिलिप्पियों 2:5-11)। परन्तु वह हमारे लिए मृत्यु तक भी गया और गाड़ा गया। “पृथ्वी के निचले भागों” से यही अभिप्रेत है, जैसा अगला पद भी कहता है।

मत्ती 12:40 में बात शारीरिक मृत्यु की है, मृतलोक में ठहरने की नहीं।

114. उत्पत्ति 25:8; तुलना करें गिनती 27:13 में मूसा (देखें खंड 1.5.3)।

“क्योंकि जैसे योना तीन रात दिन बड़े मच्छ के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।”

प्रेरितों के काम 2:27 में भजन संहिता 16:10 के उद्धरण से कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि प्रभु यीशु हेडीस में था:

“... क्योंकि तू मेरे प्राण को हेडीस में न छोड़ेगा, और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा।”

परन्तु यह पद इस बात का प्रमाण नहीं है कि प्रभु सचमुच हेडीस में था। इसके विषय में खंड 2.1.8 की व्याख्या देखें। (और परिशिष्ट भी)

2.10.12 निष्कर्ष

मैं यह बात ज़ोर देकर कहते हुए नहीं थकता कि प्रभु यीशु अपनी मृत्यु के बाद हेडीस में नहीं गया, और नरक में तो बिलकुल नहीं। वह परादीस में गया, जैसा उसने स्वयं क्रूस पर उस डाकू से कहा था।

वहाँ प्रचार करने के उद्देश्य से हेडीस में उतरने का पवित्रशास्त्र में कोई और आधार नहीं मिलता। इसके अलावा वहाँ कोई प्रचार, चाहे उसकी विषय-वस्तु कुछ भी रही हो, कोई अर्थ नहीं रखता। सब मृतक, पतित स्वर्गदूतों सहित, मन फिराने के किसी अवसर के बिना अपने न्याय तक रखे जाते हैं, जहाँ फिर उनका सामना मसीह के न्याय करनेवाले अधिकार से होगा।

मन न फिरानेवाले पापी का अन्त विश्वासियों के लिए एक प्रेरणा है कि वे कठिनाइयों के बावजूद चुप न रहें और नूह की तरह धार्मिकता के प्रचारक बनें।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- 1 पतरस 3 में “आत्माएँ” कौन हैं?
- उन्हें किसने प्रचार किया, और यह कब हुआ?
- अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान के बीच प्रभु यीशु कहाँ था – और कहाँ नहीं?
- क्यों?
- पतरस इस पद का प्रयोग उस समय के विश्वासियों को (और आज हमें) उत्साहित करने के लिए कैसे करता है?

2.11 मृत्यु-अनुभव और मृत्यु-निकट अनुभव

पवित्रशास्त्र की गवाही से हमें परलोक का एक स्पष्ट चित्र मिला है। परन्तु हमारे समय में इस चित्र का सामना केवल ग़लत धर्मवैज्ञानिक या सैद्धान्तिक मतों से ही नहीं, बल्कि मृत्यु के निकट होनेवाले अनुभवों से भी होता है, अर्थात् मृत्यु-अनुभवों और मृत्यु-निकट अनुभवों से। इनमें ऐसे लोगों की बात है जो “चिकित्सकीय रूप से” तो मर चुके थे और फिर से जीवित किए गए, परन्तु “जैविक रूप से” मरे नहीं थे। वे

मृत्यु और जीवन के बीच के क्षेत्र में “कहीं” थे। वे उस अर्थ में मरे हुए नहीं थे जिस अर्थ में मैंने अपने विवेचन में मृत्यु को सदा माना है, अर्थात् कुछ ऐसा जिसे पलटा नहीं जा सकता और जो अन्तिम है।

चिकित्सकीय मृत्यु से क्या समझा जाए, इसे अच्छी तरह समझाने के लिए मैं एक चिकित्सक का उद्धरण देता हूँ: “चिकित्सकीय मृत्यु का अर्थ एक ओर साँस का रुक जाना है, अर्थात् आसपास की वायु से ऑक्सीजन लेने और आसपास कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ने का पूरी तरह बन्द हो जाना। इसका अर्थ आगे हृदय का रुक जाना है, अर्थात् रक्त-संचार का पूरी तरह ठप हो जाना। चिकित्सकीय मृत्यु हो जाने पर इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम की स्क्रीन पर तथाकथित शून्य-रेखा दिखाई देती है, अर्थात् हृदय की कोई रेखा नहीं रहती। एक बहुत सीमित समय-अवधि के भीतर चिकित्सकीय मृत्यु को पलटा जा सकता है, उदाहरण के लिए बहुत तेज़ बिजली के झटकों के द्वारा। यदि पुनर्जीवन सफल न हो, तो कुछ ही मिनटों में ‘जैविक मृत्यु’ हो जाती है। जैविक मृत्यु का अर्थ यह है कि अलग-अलग अंग-तंत्र, विशेषकर मस्तिष्क, काम करना बन्द कर देते हैं ... जैविक मृत्यु की दहलीज़ के पार सामान्यतः कोई वापसी नहीं होती।”¹¹⁵

जीवन और “अन्तिम” मृत्यु के बीच के इस क्षेत्र में ऐसी घटनाएँ सामने आई हैं, जिन पर मैं अब विचार करना चाहता हूँ।¹¹⁶ इनमें उन लोगों की बात नहीं है जो पुनरुत्थान के द्वारा जीवन में लौटे, बल्कि उनकी जो केवल बहुत थोड़े समय के लिए चिकित्सकीय रूप से मरे हुए थे। इस समय में उनका प्राण – उनकी चेतना – शरीर को छोड़ गया। उदाहरण के लिए उन्होंने देखा कि ऑपरेशन-कक्ष में डॉक्टर उनके जीवन के लिए कैसे संघर्ष कर रहे थे। वे सुखद वातावरण में मित्रवत प्रकाशमय प्राणियों और पुराने परिचितों से भेंट के विषय में बताते हैं। वे अपने शरीर में लौटना नहीं चाहते थे। ये सकारात्मक अनुभव केवल मसीही ही नहीं बताते, बल्कि वे भी जिनका मसीह पर विश्वास से कोई लेना-देना नहीं है। ऐसे अनुभव के बाद उनके लिए मृत्यु में कुछ भी भयावह नहीं रह जाता, और वे इस अनुभव को एक शुभ सन्देश की तरह आगे बताते हैं।

मसीहियों को इन घटनाओं के विषय में स्पष्ट रूप से अपना मत रखने में समर्थ होना चाहिए, क्योंकि ये वृत्तान्त हमारे समाज में मृत्यु को एक नए, बल्कि आकर्षक प्रकाश में प्रस्तुत करते हैं। ऐसा लगता है कि मनुष्य का अन्तिम शत्रु पराजित हो गया है, क्योंकि इन अनुभवों के अनुसार मृत्यु एक सिद्ध, प्रेम से भरे संसार में प्रवेश का मार्ग है। तब “हम सब, सब के सब स्वर्ग जाएँगे” (जर्मन: *Wir kommen alle, alle in den Himmel*) एक ऐसा गीत है जिसे ठीक ही गाया जा सकता है। या फिर बात यही रहती है: “सब कुछ ठीक हो जाएगा।”

डॉ. रेमंड मूडी (Raymond Moody), रॉबर्ट ए. मुनरो (Robert A. Monroe), ई. क्यूबलर-रॉस (E. Kübler-Ross) इत्यादि के प्रकाशनों के बाद से मृत्यु के विषय में ये विचार दूर-दूर तक फैल

115. Dr. med. Hartmut Maier-Gerber, *Sterben – Der Höhepunkt des Lebens*, Wuppertal, 1994, पृ. 20 से आगे; उद्धृत R. Moeckel, *Ist Sterben doch ganz anders*, Sehnde में।

116. मुझे स्वयं कोई मृत्यु-अनुभव नहीं हुआ है, और न मैं व्यक्तिगत रूप से किसी ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे ऐसा अनुभव हुआ हो। इसलिए इन घटनाओं का मूल्यांकन केवल उस लिखित सामग्री के आधार पर किया गया है जो मेरे पास उपलब्ध है और जो सबके लिए सुलभ है।

गए हैं। श्रीमती क्यूबलर-रॉस मृत्यु के शोधकर्ताओं के सन्देश को संक्षेप में इस प्रकार कहती हैं: “परमेश्वर कोई दण्ड देनेवाला और दोषी ठहरानेवाला प्राणी नहीं है। जो लोग वापस लौट आए हैं, उनसे हमें यह आश्वासन मिलता है कि हर मनुष्य अपने उस पार जाने के बाद शान्ति, सन्तुलन और सम्पूर्णता की परिपूर्णता की अनुभूति कर सकेगा”¹¹⁷।

क्या ये चौंका देनेवाली खोजें नहीं हैं? वास्तव में मृत्यु और परलोक के रहस्य से पर्दा उठाना इससे अधिक महत्वपूर्ण है कि कोई मनुष्य चन्द्रमा या मंगल पर उतरे। ऐसा लगता है कि आखिरकार उस पार झाँकने का अवसर मिला है, और यह हमसे मृत्यु का भय दूर कर देता है, क्योंकि वहाँ कोई परमेश्वर नहीं है जिसके सामने अपने जीवन का लेखा देना पड़े। इस सब पर वैज्ञानिकता का रंग चढ़ाया जाता है, ताकि ये खोजें गम्भीर और विश्वसनीय दिखाई दें।

2.11.1 इन वृत्तान्तों में कितनी सच्चाई है?

इन वृत्तान्तों को बड़ी सावधानी से देखना चाहिए। उल्लिखित लेखकों के विवरणों को शब्दशः गम्भीरता से नहीं लिया जा सकता, क्योंकि वे प्रायः एक मूर्तिपूजक विश्व-दृष्टि से, प्रेतवाद से और न्यू-एज आन्दोलन से प्रभावित हैं, और इन घटनाओं की व्याख्या भी इसी विश्व-दृष्टि के अनुसार की जाती है। फिर भी इन असाधारण घटनाओं को गम्भीरता से लेने और उनकी सच्चाई पर सन्देह न करने के पर्याप्त कारण हैं। इसके लिए ऐसे लोग बहुत अधिक हैं, मसीही भी और गैर-मसीही भी, जिन्होंने ऐसा कुछ अनुभव किया है। इन वृत्तान्तों को भूत-प्रेत की बात और कल्पना कहकर ठुकरा देना बहुत सरल, बल्कि गलत निष्कर्ष होगा। परन्तु हमें वास्तव में इनके विषय में क्या सोचना चाहिए, और बाइबल के अनुसार इन वृत्तान्तों को किस स्थान पर रखा जाए और उनका मूल्यांकन कैसे किया जाए?

2.11.2 बाइबल में मृत्यु-अनुभव?

पहला प्रश्न सदा यही होता है कि क्या हमें परमेश्वर के वचन में इस प्रकार की घटनाएँ मिलती हैं। क्योंकि हमारे पास मृतकों के जिलाए जाने के वृत्तान्त हैं, इसलिए हम संबंधित व्यक्तियों पर ध्यान देते हैं।

सबसे प्रसिद्ध वृत्तान्त यीशु के द्वारा लाजर को जिलाने का है (यूहन्ना 11)। यह वृत्तान्त बताता है कि लाजर को मरे चार दिन हो चुके थे और उसका शरीर सड़ने लगा था। यहाँ हमें जैविक मृत्यु ही माननी होगी। जीवन और मृत्यु के प्रभु ने लाजर को जीवन में वापस बुलाया। यह एक आश्चर्यकर्म था और यहूदियों के लिए गवाही का एक चिह्न।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस विषय में कुछ नहीं बताया गया कि लाजर ने अपनी मृत्यु के समय में क्या अनुभव किया। वैसे भी लाजर के विषय में लगभग कुछ भी नहीं बताया गया है, परन्तु यहाँ तो निश्चय

117. Elisabeth Kübler-Ross, *Über den Tod und das Leben danach*, Berlin, 1994, पृ. 44।

ही बताने के लिए कुछ होता। परलोक के विषय में उसके कथन उन बातों से बिलकुल भिन्न स्तर के होते जो हमें आज सुनने को मिलती हैं।

यीशु के द्वारा जिलाए जाने की दूसरी दो घटनाएँ भी कम आश्चर्यजनक नहीं हैं। एक याईर की बेटी है (मरकुस 5:22; लूका 8:41) और दूसरा नाईन का जवान (लूका 7:11)। वे भी जैविक रूप से मरे हुए थे और प्रभु यीशु ने, जो जीवन का कर्ता है (प्रेरितों के काम 3:15), उन्हें जिलाया। उनके विषय में भी परलोक के किसी अनुभव के बारे में कुछ नहीं बताया गया।

संयोग से यही बात उन सभी दूसरे पुनर्जीवनों पर भी लागू होती है, जिनका वर्णन पुराने नियम या नए नियम में है।

स्वयं यीशु ने भी, जो अपने ही शब्दों के अनुसार अपनी मृत्यु के समय परादीस में था, वहाँ के अपने ठहरने के विषय में कुछ नहीं बताया। क्या वह यह नहीं बता सकता था कि परादीस कितना महिमामय है, और जब वहाँ उसकी भेंट सब युगों के विश्वासियों से हुई, तो वहाँ कैसा आनन्द था?

यह ध्यान खींचनेवाली बात है कि परमेश्वर अपने वचन में केवल एक ही अनुभव की बात करता है, जो किसी अनुभव के वृत्तान्त के आधार पर हमारे लिए परादीस के अस्तित्व की पुष्टि करता है। वह पौलुस था, जो तीसरे स्वर्ग तक, परादीस में, उठा लिया गया (2 कुरिन्थियों 12:1-4)।

दूसरी ओर, यह तथ्य कि बाइबल में ऐसे अनुभवों के विषय में (एक अपवाद को छोड़कर) कुछ नहीं बताया गया, अभी इस बात का प्रमाण नहीं है कि ऐसे अनुभव होते ही नहीं। परन्तु इससे एक मौलिक बात स्पष्ट होती है। परमेश्वर प्रमाण नहीं देता, क्योंकि उसे इसकी आवश्यकता नहीं है। वह अपने वचन में पर्याप्त और स्पष्ट रूप से, बिना किसी भ्रम के, बता देता है कि परादीस और हेडीस (यूनानी: *hadēs*; हिन्दी बाइबल में 'अधोलोक'), तथा स्वर्ग और नरक, हैं।

यह बात लूका 16 में कंगाल लाजर और धनवान के वृत्तान्त में बहुत स्पष्ट होती है। धनवान हेडीस में पीड़ा में था, और जानता था कि उसके भाई, यदि वे मन न फिराएँ, तो एक दिन उसके पीछे-पीछे इस भयानक स्थान में आएँगे। वे वैसे ही जी रहे थे जैसे वह जिया था। उसे उनके मन फिराने का एकमात्र मार्ग यह दिखाई दिया कि कोई उनके घर भेजा जाए, ताकि उन्हें गम्भीरता से चेतावनी दे: “उसने कहा, ‘तो हे पिता, मैं तुझ से विनती करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; ताकि वह उन्हें गम्भीरता से चेतावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आएँ।’” इब्राहीम उससे कहता है, ‘उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं; वे उन्हीं की सुनें।’ उसने कहा, ‘नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुआओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।’ उसने उससे कहा, ‘जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि कोई मरे हुआओं में से जी भी उठे तौभी उन्हें विश्वास न होगा।’” (लूका 16:27-31; जर्मन एल्बरफेल्डर अनुवाद से अनूदित)।

परमेश्वर मनुष्य को और उसके अविश्वास को जानता है, और वह जानता है कि यदि कोई मरे हुआओं में से जी भी उठे, तब भी पापी कोई प्रतिक्रिया नहीं करता। परमेश्वर पापी से मन फिराने और विश्वास की आज्ञाकारिता की माँग करता है। पापी के पास सृष्टि की गवाही और एक विवेक है। इसके अलावा परमेश्वर ने उसे अपना वचन और सुसमाचार का प्रचार दिया है। पवित्रशास्त्र की गवाही मूल रूप से पर्याप्त है। मनुष्य प्रमाण और चिह्न माँगते हैं; परन्तु अत्यन्त विविध प्रकार के बहुत से आश्चर्यकर्मों के द्वारा यीशु के कार्य ने दिखा दिया कि उसकी ईश्वरता के प्रबल प्रमाणों ने भी मनुष्य का मन नहीं फिराया, बल्कि केवल और अधिक घृणा उत्पन्न की।

प्रभु यीशु मसीह ने कहा कि वह परादीस में गया, जहाँ से वह पुनरुत्थान में लौट आया। परादीस में बिताए अपने समय के विषय में उसने हमें कुछ नहीं बताया। मेरा निष्कर्ष यह है कि इसके विषय में कुछ जानना हमारे लिए महत्वपूर्ण नहीं है। उसका ध्यान परलोक पर नहीं, बल्कि इहलोक पर था, और वह भी पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य पर। चेलों के मन में यह प्रश्न था कि प्रभु परमेश्वर का राज्य कब स्थापित करेगा। पुनरुत्थान के बाद के 40 दिनों में प्रभु यीशु ने उनसे कई-कई घंटे इसके विषय में बात की (प्रेरितों के काम 1:3)। यहाँ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि पवित्रशास्त्र का मुख्य विषय कुल मिलाकर परलोक या मध्यवर्ती अवस्था नहीं है, बल्कि सदा पुनरुत्थान में पूर्णता और पूरी सृष्टि के साथ परमेश्वर के मार्गों की पूर्णता है।

2.11.3 प्रेरित पौलुस और यूहन्ना

ऊपर कही गई बातें मृत्यु-अनुभवों से संबंधित कठिन प्रश्नों का अन्तिम उत्तर नहीं देतीं। परन्तु हमने एक सिद्धांत को स्पष्ट किया है, जिसका सहारा हमें इन घटनाओं का सामना करते समय लेना होगा।

हम पौलुस और यूहन्ना में, और दूसरे विश्वासियों में भी, देखते हैं कि वे स्वर्ग और परादीस के विषय में बताते हैं। अपने जीवन के अन्त में यूहन्ना पतमुस टापू पर बन्दी था (प्रकाशितवाक्य 1)। वहाँ उसे दर्शन मिले, जिन्हें उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखा। प्रकाशितवाक्य स्वर्ग से लाया गया एक अनुभव-वृत्तान्त है। यूहन्ना प्रभु के दिन आत्मा में था। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा और उसने एक दूसरे संसार में प्रवेश किया, जहाँ उसकी भेंट जी उठे प्रभु से हुई। यहाँ तक लिखा है कि उसे स्वर्ग में ऊपर बुलाया गया। यह कोई स्वप्न नहीं था; यह वास्तविकता थी, जिसने उसे इतना झकझोर दिया कि उसने जो कुछ देखा, उसे विस्तार से लिख लिया। यह न मृत्यु-अनुभव था और न मृत्यु-निकट अनुभव। परन्तु इससे स्पष्ट होता है कि परमेश्वर ने मनुष्यों को ऐसे अनुभव दिए, जिनके द्वारा उनका संपर्क स्वर्ग से, स्वर्गदूतों से और स्वयं प्रभु यीशु से हुआ। यशायाह (उदाहरण के लिए अध्याय 6), दानियेल, यहेज्केल इत्यादि भविष्यद्वक्ताओं ने भी यही अनुभव किया। परन्तु इन व्यक्तियों के साथ बात भविष्यद्वक्ताओं के रूप में उनकी विशेष सेवा की पूर्ति की है, जिन्होंने पुराने और नए नियम के लेख लिखे। इसलिए ये “साधारण” मृत्यु-अनुभव नहीं हैं।

पौलुस के साथ भी ऐसा ही था: “यद्यपि घमण्ड करना तो मेरे लिए ठीक नहीं, फिर भी मैं प्रभु के दिए हुए दर्शनों और प्रकाशनों की चर्चा करूँगा। मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूँ, चौदह वर्ष हुए कि (न जाने देह सहित, न जाने देह रहित, परमेश्वर जानता है) ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया। और मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूँ (न जाने देह सहित, न जाने देह रहित, परमेश्वर ही जानता है), कि वह परादीस में उठा लिया गया, और ऐसी बातें सुनीं जो कहने की नहीं, और जिनका मुँह में लाना मनुष्य को उचित नहीं” (2 कुरिन्थियों 12:1-4)।

पौलुस के साथ बात एक मृत्यु-अनुभव और एक पुनरुत्थान की हो सकती है। कुरिन्थियों के नाम दूसरी पत्री के लिखे जाने और लुस्त्रा में पौलुस पर पथराव के बीच, जिसका वर्णन प्रेरितों के काम 14:19 में है, 14 वर्ष का अन्तर है। पथराव तब तक समाप्त नहीं किया जाता था जब तक यह निश्चित न हो जाए कि जिस पर पथराव हुआ, वह सचमुच मर चुका है। पौलुस को घसीटकर नगर के बाहर ले जाया गया, क्योंकि लोगों को विश्वास था कि वह मर चुका है। परन्तु फिर पौलुस सीधे उठ खड़ा हुआ – यहाँ चेलों के द्वारा उसे होश में लाने के किसी प्रयास की कोई बात नहीं – और फिर नगर में चला गया। यह एक आश्चर्यकर्म है। या तो पौलुस को जिलाया गया, या वह अपने आप होश में आ गया। क्या इस घटना के समय वह परादीस में उठा लिया गया था? हम इसे सिद्ध नहीं कर सकते, परन्तु इसे असंभव भी नहीं कह सकते। प्रेरित का उदाहरण स्पष्ट करता है कि परलोक में असाधारण अनुभव – इस स्थिति में विश्वासियों के – मूल रूप से हो सकते हैं।

इसी प्रकार शहीद स्तिफनस ने भी, किसी स्वप्न में नहीं, बल्कि वास्तव में, स्वर्ग को खुला देखा (प्रेरितों के काम 7:55-56)। यह कोई मृत्यु-अनुभव नहीं था, यद्यपि इसके थोड़ी ही देर बाद पथराव से उसकी मृत्यु हो गई। हमें आज भी इस प्रकार के प्रकाशन को मूल रूप से असंभव नहीं मान लेना चाहिए।

2.11.4 मृत्यु-अनुभव – स्वर्ग और नरक

हमारे समय में मृत्यु-अनुभवों की बहुतायत का एक बड़ा कारण आधुनिक तकनीकी साधन हैं, जो पुनर्जीवन को संभव बनाते हैं। हमारे समाज का अत्यधिक तकनीकीकरण ऐसे प्रश्न खड़े करता है जिन पर पवित्रशास्त्र में सीधे विचार नहीं किया गया। यहाँ हमें ऐसे उत्तर या सिद्धांत खोजने होंगे, जिन्हें हम केवल परमेश्वर के आत्मा की सहायता से उसके वचन में पा सकते हैं। परमेश्वर का वचन हमारे दिनों में भी सामयिक और बाध्यकारी है, चाहे कभी-कभी उसे हमारे समय के प्रश्नों पर लागू करना सरल न हो। पवित्रशास्त्र की जीवित और आत्मा के द्वारा उत्पन्न समझ की पहचान ठीक यही है कि परमेश्वर के वचन को हमारे समय में लागू किया जाए और समयों को उनके आत्मिक आयाम में पहचाना और परखा जाए (1 इतिहास 12:32)।

मृत्यु-अनुभवों के संबंध में यह बात महत्वपूर्ण है कि अत्यन्त नकारात्मक अनुभव भी होते हैं। स्वर्ग और नरक जितने भिन्न हैं, मृत्यु-अनुभवों में होनेवाले अनुभव भी उतने ही भिन्न हैं। लोग नरक के अनुभवों, पीड़ाओं और दुष्टात्माओं के विषय में बताते हैं। इन भयानक अनुभवों का वर्णन बेस्टसेलर पुस्तकों में नहीं

किया जाता, क्योंकि वे सुखद अनुभवों वाले मृत्यु के सुन्दर चित्र को बिगाड़ देते हैं और इस संभावना की ओर संकेत करते हैं कि फिर भी एक नरक है और पापों का दंड है। कुछ लोग अपने अनुभव को जल्दी ही दबा देते और भूल जाते हैं; दूसरे मसीह में उद्धार खोजते हैं।

इस जानकारी के साथ, जिसे डॉ. रॉलिंग्स (Rawlings)¹¹⁸ ने विस्तार से प्रस्तुत किया है, परिभाषा के अनुसार अब यह नहीं कहा जा सकता कि सब मनुष्यों के लिए स्वर्ग है और नरक केवल कलीसिया का गढ़ा हुआ विचार है। इसलिए श्रीमती क्यूबलर-रॉस (Kübler-Ross) का ऊपर दिया गया उद्धरण असत्य है!

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मृत्यु-अनुभव इस अर्थ में पवित्रशास्त्र के चित्र के अनुरूप हैं कि वे परलोक के दोनों स्थानों या अवस्थाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं। यह ऐसा है मानो हेडीस और परादीस जीवन और मृत्यु के बीच के इस क्षेत्र में अपनी छाया पहले से डाल रहे हों।

2.11.5 अन्धकार का बहकावा

यह बात हमें चौंकाती है कि जो लोग यीशु मसीह और बाइबल से कोई संबंध नहीं रखना चाहते, उन्हें सुखद मृत्यु-अनुभव होते हैं, और वे स्वर्गदूत-जैसे प्राणियों और ऐसे परिचितों से मिलते हैं, जो स्पष्ट रूप से परलोक में बहुत अच्छी स्थिति में हैं। उनकी भेंट किसी ऐसे न्यायी से नहीं होती जो उनसे लेखा ले, बल्कि उनके किए हुए बुरे कामों के विषय में भी उनका बचाव किया जाता है और उन्हें निर्दोष ठहराया जाता है।

जिन प्राणियों से उनकी भेंट होती है, वे मित्रवत, उज्ज्वल चमकते हुए प्राणी हैं, जिनसे प्रेम झलकता है। इन प्राणियों के विषय में हमारा मूल्यांकन स्पष्ट है, क्योंकि वे असत्य बोलते हैं: वे दुष्टात्माएँ हैं, जो अपने सबसे बड़े सरदार, शैतान (2 कुरिन्थियों 12:7; प्रकाशितवाक्य 12:8), की चाल का अनुकरण करती हैं। वह ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है (2 कुरिन्थियों 11:14), और इस प्रकार मनुष्य के सामने अपने भ्रष्ट उद्देश्यों को अच्छा दिखाता है।

परलोक की सीमा पर ये आत्माएँ बस अपना बुरा प्रभाव डालने की ताक में रहती हैं। इससे हमें स्पष्ट दिखाई देता है कि ये आत्माएँ मनुष्यों के कितने निकट रहती हैं, और केवल मृत्यु की दहलीज़ पर ही नहीं। इन वृत्तान्तों के द्वारा दुष्ट आत्माओं की उपस्थिति और भी स्पष्ट हो जाती है। वे वायु में हैं और इस प्रकार मनुष्यों के बीच रहती हैं; उन्होंने कुछ मनुष्यों पर अधिकार भी कर लिया है और उनमें वास करती हैं, जो विशेष रूप से प्रभु यीशु मसीह की उपस्थिति के समय और उसके चंगा करने या छुटकारा देने के कामों के द्वारा प्रकट हुआ। पौलुस इफिसियों को लिखता है: “जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के अधिपति, अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है” (इफिसियों 2:2), और: “क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से

118. Dr. med. Maurice S. Rawlings, *Zur Hölle und zurück, Leben nach dem Tod – überraschende Beweise*, Hamburg (Verlag C.M. Fliß), 1996।

और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं” (इफिसियों 6:12)।

मुझे आशंका है कि मसीही प्रायः दुष्टात्माओं के कार्य और प्रभाव को कम आँकते हैं; इसलिए दुःख की बात है कि वे कुछ हद तक शत्रु की चाल के शिकार हो चुके हैं। यह मनुष्यजाति की सोच पर एक भयंकर शैतानी आक्रमण है। मृत्यु का भय मिटा दिया जाता है। परन्तु यह एक निर्लज्ज झूठ है। शैतान के अलावा और किसकी रुचि इसमें है कि मृत्यु को हानिरहित और एक अनन्त सुन्दर संसार में प्रवेश के रूप में प्रस्तुत करे?

कंगाल लाजर को उसकी मृत्यु के क्षण में परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने इब्राहीम की गोद में पहुँचाया। इन स्वर्गदूतों के विषय में हम पढ़ते हैं: “क्या वे सब सेवा टहल करनेवाली आत्माएँ नहीं, जो उद्धार पानेवालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं?” (इब्रानियों 1:14)। इसलिए वे इहलोक और परलोक की सीमा पर उपस्थित रहते हैं।

2.11.6 मृतकों को बुलानेवाले प्रभु की दृष्टि में घृणित हैं

परमेश्वर ने जीवितों और मृतकों के बीच एक स्पष्ट सीमा निर्धारित की है। वह मृतकों से संपर्क करने के हर प्रयास को वर्जित करता है। मृतकों को बुलानेवाले इस स्पष्ट सीमा को लाँघते हैं। इसलिए इन पुरुषों और स्त्रियों पर परमेश्वर का निर्णय बहुत कठोर है: “यदि कोई पुरुष या स्त्री ओझाई या भूत-सिद्धि करे, तो वह निश्चय मार डाला जाए; ऐसों पर पथराव किया जाए, उनका लहू उन्हीं के सिर पर पड़ेगा” (लैव्यव्यवस्था 20:27)¹¹⁹

यह वचन यह भी स्पष्ट करता है कि मृतकों से संपर्क करने की क्षमताओं, या अधिक ठीक कहें तो प्रयासों, को दुष्ट आत्माएँ चलाती हैं, जिन्होंने मृतकों को बुलानेवालों पर अधिकार कर लिया है (1 शमूएल 28:7-8)। विशेष रूप से इसी कारण परमेश्वर इन मनुष्यों को इतनी कठोरता से दोषी ठहराता है। इसलिए यहाँ जो दिखाई देता है, वह मनुष्यों की क्षमताएँ नहीं, बल्कि अलौकिक शक्तियाँ हैं, जिनका स्रोत बुराई का राज्य है। यह स्पष्ट रूप से दुष्ट शक्तियों का प्रभाव है।

इसलिए यह भी स्पष्ट है कि ये आत्माएँ बहकाती हैं, क्योंकि वे मृतकों की आत्माओं को बुलाकर नहीं ला सकतीं। यह झूठ है कि पतित स्वर्गदूत, जिन्होंने शैतान के विद्रोह में उसका साथ दिया, मृतकों को अपने वश में करने में समर्थ हैं। उनकी क्षमता इस बात में है कि वे संबंधित व्यक्ति की ऐसी नकल करते हैं कि वह धोखे से बिलकुल असली लगे। वे उन सबको धोखा देते हैं जो मृतकों को बुलानेवालों के द्वारा मृतकों से संपर्क करना चाहते हैं, ताकि ऐसी बातें जानें जो वे और किसी प्रकार नहीं जान सकते। इस प्रकार शैतान इस संसार के ईश्वर के रूप में अपना प्रभाव बढ़ाता है।

119. इसके अलावा देखें लैव्यव्यवस्था 19:31; 20:6; व्यवस्थाविवरण 18:11-12; 1 शमूएल 28:3; 2 राजाओं 21:6; 1 इतिहास 10:13।

परमेश्वर ने यशायाह के द्वारा अपनी प्रजा से कहा कि वह अपने परमेश्वर से पूछे: “जब लोग तुम से कहें, ‘ओझों और टोन्हों के पास जाकर पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं,’ तब तुम यह कहना, ‘क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर न पूछना चाहिए? क्या जीवितों के लिए मुर्दों से पूछना चाहिए?’” (यशायाह 8:19)।

इस संदर्भ में यह देखना महत्वपूर्ण है कि मृत्यु के बहुत से शोधकर्ताओं, जैसे उदाहरण के लिए श्रीमती क्यूबलर-रॉस, का आत्माओं के संसार से भी गहरा संपर्क था। वह अपनी उन आत्माओं के विषय में बताती हैं जिनसे उनका प्रायः मेल-जोल रहता था। शैतान, जिसके पास मृत्यु पर शक्ति है, मृत्यु के प्रति मनुष्य के भय को जानता है और उसका लाभ उठाकर मनुष्य को यह भ्रम देता है कि मृत्यु कोई न्याय और पाप का परिणाम नहीं है। तब मनुष्य को किसी छुटकारे की आवश्यकता नहीं, यद्यपि मृत्यु पर विजय पानेवाले ने उसे पूरा किया है। “तुम निश्चय न मरोगे” – यह आरम्भ से बहकानेवाले का झूठ था (उत्पत्ति 3:4), और वह इस झूठ को छिपाने के लिए बार-बार नए तर्क ढूँढ़ लेता है।

मृत्यु के बहुत से शोधकर्ता प्रेतवादी हैं और न्यू-एज आन्दोलन से जुड़े हुए हैं। इसलिए वे स्वयं बहकाए हुए ही हो सकते हैं।

2.11.7 शाऊल और शमूएल

1 शमूएल 28 में एन्दोर की भूत-सिद्धि करनेवाली स्त्री और शाऊल की घटना एक उल्लेखनीय अपवाद है। यद्यपि शाऊल ने यहाँ एक बड़ी भूल की, और मृतकों को बुलानेवाले मृतकों को ऊपर नहीं ला सकते, फिर भी इस घटना में शमूएल सचमुच प्रकट हुआ। दो बातें इसे स्पष्ट करती हैं: पहली, शमूएल को उस स्त्री ने नहीं बुलाया। वह उसके किसी कार्य के बिना प्रकट हुआ। स्त्री का भयभीत हो जाना दिखाता है कि यहाँ कुछ ऐसा हुआ जो उसकी आदत की बातों से बिल्कुल भिन्न था। परिस्थिति उसके नियंत्रण में नहीं थी। परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता कभी भी किसी भविष्य बतानेवाली आत्मा के द्वारा ऊपर नहीं लाया जाता। दूसरी, शमूएल ने स्पष्ट रूप से सत्य कहा, जो शाऊल को पहले से ही मालूम था। इसलिए यह कोई ऐसी आत्मा नहीं थी जो स्वयं को शमूएल बताकर शाऊल से झूठ बोल रही थी। शमूएल यहाँ उसी प्रकार प्रकट हुआ, जैसे बाद में मूसा और एलिय्याह रूपान्तर के पहाड़ पर प्रकट हुए।

इसलिए यह घटना इस बात की पुष्टि करती है कि मृतकों को बुलानेवाले या दुष्टात्मिक आत्माएँ मृतकों को ऊपर नहीं ला सकतीं। यह केवल परमेश्वर कर सकता है, और जहाँ तक पवित्रशास्त्र बताता है, उसने यह केवल यहीं किया। इहलोक के जीवितों के संसार और परलोक के मृतकों के संसार के बीच बस कोई आदान-प्रदान नहीं है। जीवितों और दिवंगत लोगों के बीच एक ऐसा विभाजन है जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। इससे मेरा अभिप्राय दुष्टात्माओं के संसार से नहीं है, जो इहलोक के संसार से संपर्क करने का पूरा प्रयास करता है। परन्तु दिवंगत लोगों से दुष्टात्माओं का अब कोई लेना-देना नहीं है।

2.11.8 अन्त के समय में मसीह-विरोधी बहकावा

तीव्र गति से बढ़ते तकनीकी विकास से जो नैतिक और आचार-संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, वे अन्त के समय का एक चिह्न हैं। मृत्यु-अनुभव, जो बड़े पैमाने पर तकनीक के द्वारा ही संभव हुए हैं, दुष्टात्माओं और उनकी शिक्षाओं के लिए भी द्वार खोलते हैं: “परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे” (1 तीमथियुस 4:1)।

आज ही अन्त के समय की घटनाएँ, जैसा कि प्रकाशितवाक्य में उनका वर्णन है, अपनी छाया पहले से डाल रही हैं: “ये चिह्न दिखानेवाली दुष्टात्माओं की आत्माएँ हैं, ...” (प्रकाशितवाक्य 16:14)। मसीह-विरोधी की आत्मा अभी से कार्य कर रही है, और कलीसिया के उठा लिए जाने (रैप्चर) के बाद ऐसे पैमाने पर पूरी तरह प्रकट होगी जैसा पहले कभी नहीं देखा गया। वह चिह्न और आश्चर्यकर्म करेगा, और हम नहीं जानते कि परमेश्वर शैतान को ऐसे आश्चर्यकर्म करने के लिए कितना स्थान देगा, जिन्हें लोग केवल परमेश्वर का काम मानते। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को लिखा: “तब वह अधर्मी प्रकट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा; उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ्य, और चिह्न, और अद्भुत काम के साथ, और नाश होनेवालों के लिए अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा, क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिससे उनका उद्धार होता” (2 थिस्सलुनीकियों 2:8-10)।

मैं इन पदों का उल्लेख इसलिए करता हूँ, क्योंकि वे ठीक आज की स्थिति का वर्णन करते हैं। ऐसे मृत्यु-अनुभव भी, जो किसी भी प्रकार परमेश्वर के वचन के अनुरूप नहीं हैं, शैतान के अन्त-समय के कार्यक्रम का भाग हैं। वह कोई अवसर नहीं छोड़ता, और यह तो केवल आरम्भ है।

2.11.9 निष्कर्ष¹²⁰

तो हम मृत्यु-अनुभवों के विषय में क्या सोचें? इस प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में नहीं दिया जा सकता। मृत्यु-अनुभवों के कुछ पहलू बहुत जटिल हैं और मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान और तांत्रिक-गुप्त (ऑकल्ट) विद्याओं के प्रश्नों को छूते हैं। इसलिए मैं इस अध्याय को कुछ मौलिक कथनों के साथ समाप्त करता हूँ, जिनकी सहायता से एक स्पष्ट निर्णय तक पहुँचा जा सकता है।

जिन मनुष्यों को मृत्यु-अनुभव हुए, अर्थात् जो मनुष्य “लौट आए”, उनकी मृत्यु वह मृत्यु नहीं थी जिसे पलटा न जा सके; इसलिए उनके अनुभव वास्तव में परलोक के विषय में कोई जानकारी नहीं देते।

120. मृत्यु-अनुभवों पर और विस्तार से विचार करने के लिए मैं John Ankerberg & John Weldon की पुस्तकों की अनुशंसा करता हूँ (देखें ग्रंथसूची)।

वे न स्वर्ग में थे और न नरक में। “मरना” “मृत होने” के बराबर नहीं है। म्यूनिख (München) की ओर जाना और उसी रास्ते से लौट आना, इसका अर्थ यह नहीं कि कोई म्यूनिख पहुँच गया, या वहाँ रहने भी लगा।

यदि उन्होंने जो अनुभव किया वह स्वर्ग या नरक के अनुरूप था,¹²¹ तो हमारा सामना जीवन और मृत्यु के बीच के एक ऐसे क्षेत्र से है, जिसके विषय में पवित्रशास्त्र कुछ नहीं कहता। फिर भी ऐसे अनुभवों की बहुत सी गवाहियों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उस क्षेत्र में, जहाँ प्राण थोड़े समय के लिए शरीर को छोड़ देता है,¹²² आत्माएँ प्राण के पास आ सकती हैं – परमेश्वर के स्वर्गदूत भी, परन्तु दुष्टात्माएँ, अर्थात् शैतान के दूत, भी (2 कुरिन्थियों 12:7)। शैतान का बहकावा इस बात में है कि वह इन मनुष्यों को स्वर्ग का धोखा देता है, यद्यपि वे खोए हुए हैं। “परलोक” से लाई गई जानकारी अधिकतर स्थितियों में बाइबल की सच्चाई के अनुरूप नहीं होती।

अन्त का समय दुष्टात्मिक बहकावे से भरा है, जो मसीहियों के सामने भी नहीं रुकता। जो कुछ बताया जाता है, उसमें से बहुत कुछ लेखकों और तथाकथित शोधकर्ताओं की मनचाही कल्पनाओं से भरा है; और कुछ तो सीधे धोखा है। अधिकतर स्थितियों में तथाकथित मृत्यु-शोधकर्ताओं की विश्व-दृष्टि न्यू-एज आन्दोलन, रहस्यवाद और पूर्वी धर्मों और दर्शनों के अनुरूप है। केवल इसी कारण ये लोग शैतानी बहकावे के सामने असहाय छोड़ दिए गए हैं।

जब अपने को मसीही कहनेवालों को मृत्यु-अनुभव होते हैं, तो एक बात सदा बनी रहनी चाहिए: पवित्रशास्त्र का सिद्धान्त-ग्रंथ-संग्रह (कैनन) पूरा हो चुका है। कोई नया ज्ञान नहीं आया जो हमें कुछ ऐसा प्रकट करे जिसे हम बाइबल से पहले से न जानते हों। जिन मसीहियों को ऐसे अनुभव हुए, उन्हें कोई धर्मवैज्ञानिक निष्कर्ष नहीं निकालने चाहिए, बल्कि स्वयं से पूछना चाहिए कि इस अनुभव के द्वारा परमेश्वर उनके व्यक्तिगत आत्मिक जीवन के विषय में उनसे क्या कहना चाहता है।

हम इसके लिए प्रार्थना करें कि हम आत्माओं को परख सकें (1 कुरिन्थियों 12:10; 1 यूहन्ना 4:1) और एक स्पष्ट, बाइबल-आधारित मत अपनाएँ।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- यदि कोई मनुष्य यह दावा करे कि वह मर गया था और फिर लौट आया, तो आप उसे क्या उत्तर देंगे?
- दूसरी ओर, आप इस आपत्ति का क्या उत्तर देंगे: “आखिर आज तक कोई भी लौटकर नहीं आया!”?
- मृत्यु-अनुभव स्वर्ग और नरक के विषय में क्यों नहीं बताते?
- जिस मसीही को मृत्यु-अनुभव हुआ हो, उसे इस पर कैसी प्रतिक्रिया करनी चाहिए?
- मृत्यु-अनुभव कोई नया ज्ञान सामने क्यों नहीं ला सकते?

121. ऐसे लोग भी हैं जो चिकित्सकीय रूप से मरे हुए थे और जिन्होंने कुछ भी अनुभव नहीं किया।

122. ऐसे ही अनुभव नशीले पदार्थों के द्वारा भी उत्पन्न किए जा सकते हैं, और इसलिए आवश्यक नहीं कि उनका मृत्यु से कोई संबंध हो। ऐसे लोगों के अनगिनत वृत्तान्त हैं जिन्हें, किसी मृत्यु-अनुभव के बिना ही, अपने शरीर से बाहर होने का अनुभव हुआ।

3 बाइबल की दृष्टि में मनुष्य

“आत्मा-प्राण” शब्द का प्रयोग हमें बाइबल की दृष्टि में मनुष्य की जाँच करने के लिए बाध्य करता है। वैसे भी “मृत्यु” और “प्राण की अमरता” के विषय को वास्तव में तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक मनुष्य की, और जिन बातों से वह मनुष्य है उनकी, जाँच न की जाए। यह यहाँ सीमित रूप में और हमारे विषय को ध्यान में रखकर किया जाएगा। परन्तु बाइबल मानव-विज्ञान (एन्थ्रोपोलॉजी)¹²³ की कोई पाठ्य-पुस्तक नहीं है, जो किसी एक स्थान पर मनुष्य के विषय में व्यापक रूप से बात करे। इसके अलावा वह मनुष्य के विषय में धर्मविज्ञानियों या मनोवैज्ञानिकों की भाषा में नहीं, बल्कि बोलचाल की भाषा में बात करती है। बाइबल की भाषा बहुआयामी है और प्रायः एक ही अभिव्यक्ति को भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग करती है। केवल इसी कारण यह विषय कठिन और विस्तृत नहीं है; इसलिए इसका सिंहावलोकन पाने के लिए परिश्रम की आवश्यकता है। चाहे यह विषय कठिन हो और इसके विषय में भिन्न-भिन्न मत हों, फिर भी विश्वासी को इससे जुड़ने से पीछे नहीं हटना चाहिए। आखिर इसमें बात उसी की है – कि परमेश्वर ने उसे कैसा सृजा, और परमेश्वर ने उसे कैसा चाहा! इसमें परमेश्वर की महानता और बुद्धि पहचानी जा सकती है।

जो कोई इस विषय पर परमेश्वर का वचन हाथ में लेता है, उसे कई शब्द मिलेंगे जो मनुष्य के अस्तित्व के तत्त्वों का वर्णन करते हैं। ये ऐसे शब्द हैं जैसे “मन, आत्मा, प्राण, गुर्दे, हड्डियाँ, शरीर, देह, विचार, विवेक, बुद्धि, इच्छा” इत्यादि। इन शब्दों की जाँच उनके पाठ-संदर्भ में करनी होगी।

ऐसा करते हुए यह पता चलेगा कि ये शब्द अर्थों और अनुवादों की विविधता में प्रयुक्त होते हैं। इसलिए जाँच के अन्त में कोई ऐसा हल नहीं होगा जिसमें हमारे पास बिलकुल शुद्ध और एकार्थी परिभाषाएँ हों। परन्तु मुख्य शब्द अधिक स्पष्ट होंगे, और हम बहुतों को अधिक अच्छी तरह उनके स्थान पर रख सकेंगे। एक सामान्य संरचना या व्यवस्था पहचानी जा सकेगी, जिसे हम बाइबल की दृष्टि में मनुष्य कह सकते हैं।¹²⁴

मेरी जाँच कोई स्वतंत्र और हर संदर्भ से अलग विस्तृत अध्ययन भी नहीं है। यह विशेष रूप से उस भ्रामक मत को ध्यान में रखकर की जा रही है कि मृत्यु के बाद मनुष्य का किसी भी रूप में अस्तित्व नहीं रहता। दावा किया जाता है कि मनुष्य के पास देह से भिन्न तत्त्वों के रूप में न कोई प्राण है और न कोई आत्मा। मनुष्य को केवल उसकी सम्पूर्णता और एकता में देखा जाता है, जो मृत्यु के द्वारा नष्ट हो जाती है।

123. मनुष्य की शिक्षा।

124. इस जाँच में मूल रूप से यह मानकर चलना चाहिए कि मनुष्य अपनी पूरी बनावट में, अर्थात् उसके अस्तित्व के सब तत्व, पाप के प्रभाव के अधीन आ गए हैं, और इसलिए उनमें से किसी को भी तटस्थ या पाप से अप्रभावित नहीं माना जा सकता। यहाँ स्पष्ट होता है कि मनुष्य के विषय में सामान्य धारणाएँ बाइबल की धारणा के बिलकुल विपरीत हैं। जो मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक सृष्टिकर्ता को नहीं जानते और इसलिए उसके प्रकाशन को अस्वीकार करते हैं, उनके यहाँ हमें शायद ही ऐसे उत्तर मिलेंगे जो पतन या सृष्टिकर्ता के सामने उत्तरदायित्व का ध्यान रखें।

परिणामस्वरूप मृत्यु का अर्थ पुनरुत्थान में नई सृष्टि तक अनस्तित्व है। इसके अनुसार आत्मा और प्राण, जो मनुष्य के व्यक्तित्व का आसन और केन्द्र हैं, अस्थायी हैं और देह की तरह नाशमान हैं।

क्योंकि मैं पहले ही विस्तार से दिखा चुका हूँ कि मृत्यु के बाद चेतना रहती है, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि ये ग़लत मत मनुष्य की एक ऐसी धारणा पर आधारित हैं जो बाइबल की धारणा के अनुरूप नहीं है।

3.1 मनुष्य किन बातों से बना है?

जैसा पहले संकेत किया गया, पुराने और नए नियम में कई शब्द हैं जो मनुष्य के अस्तित्व के घटकों को दर्शाते हैं। और पहले स्थान पर “आत्मा” और “प्राण” शब्द नहीं हैं, बल्कि “मन” है, जो सब दूसरे शब्दों से अधिक मनुष्य के स्वरूप का वर्णन करता है। “मन” (जर्मन: *Herz*, ‘हृदय’) बाइबल में एक हज़ार से अधिक बार आता है, और वह भी भिन्न-भिन्न अर्थों में। मनुष्य का मन – न कि वह खोखली मांसपेशी जो रक्त को पम्प करती है – लाक्षणिक अर्थ में मनुष्य का केन्द्र है, उसका सबसे भीतरी और इसलिए छिपा हुआ अस्तित्व।

सृष्टि के मुकुट और परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मनुष्य एक अत्यन्त जटिल प्राणी है। उसे दो या तीन तत्वों में बाँट देना बहुत सरल होगा। मनुष्य ऐसे “पदार्थों” से नहीं बना जिन्हें अलग-अलग किया जा सके, बल्कि वह भिन्न-भिन्न पहलुओं वाली एक एकता है। एक पहलू¹²⁵ मनुष्य का वर्णन किसी निश्चित दृष्टिकोण या कोण से करता है। हम मनुष्य को उसकी कालातीतता के पहलू से देखते हैं। हमारा प्रश्न यह है कि मृत्यु में मनुष्य के साथ क्या होता है।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह प्रश्न प्रायः अस्तित्व के उन तत्वों या पहलुओं को छूता है जिन्हें “आत्मा” और “प्राण” कहा जाता है।¹²⁶ मन, जो सब दूसरे शब्दों से अधिक बाइबल का सबसे प्रमुख मानव-वैज्ञानिक शब्द है, इस संदर्भ में बहुत कम या बिल्कुल चर्चा में नहीं आता।

मेरी जाँच के आरम्भ-बिन्दु के रूप में पवित्रशास्त्र के दो पद लिए जाएँगे। एक मनुष्य की सृष्टि की ओर लौटता है, दूसरा भविष्य की ओर संकेत करता है:

“तब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और मनुष्य जीवित प्राण बन गया” (उत्पत्ति 2:7) और:

“शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें” (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)।

125. इस विषय में विस्तार से देखें W.J. Ouweneel, *Psychologie, Ein Bibelorientiert-Wissenschaftlicher Entwurf*, Dillenburg (CVD), 1993, पृ. 61–67।

126. उदाहरण के लिए उत्पत्ति 8:21; व्यवस्थाविवरण 6:5; 26:16; नीतिवचन 4:23; मत्ती 22:37; मरकुस 7:21; रोमियों 1:21; 2:15; 10:9।

इन पदों में हमें “आत्मा”, “प्राण” और “देह” शब्द मनुष्य की उत्पत्ति या सृष्टि के संबंध में और उसके भविष्य को ध्यान में रखकर मिलते हैं। पौलुस प्रभु के आगमन की बात करता है, और इस पद में उसके लिए पूरा मनुष्य आत्मा, प्राण और देह से बना है। “तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे” की अभिव्यक्ति इस सच्चाई पर स्पष्ट रूप से ज़ोर देती है। अस्तित्व के तत्वों का यह “क्रम” हमें वास्तव में परमेश्वर के वचन में केवल एक बार मिलता है, और वह भी यहीं। इस पद से बहुत लोग मनुष्य का एक अनन्य त्रि-विभाजन निकालते हैं।¹²⁷ यदि ऐसा होता, तो मनुष्य का मन कहाँ रह जाता, और तब ऊपर बताए गए सब दूसरे शब्दों की व्याख्या कैसे की जाती? पौलुस सामान्य रूप से मनुष्य को इन तीन पहलुओं तक सीमित नहीं करता, क्योंकि वह भी अपनी पत्रियों में और शब्दों का प्रयोग करता है। यहाँ उसकी आँखों के सामने भविष्य है, और वह कहता है कि पूरा मनुष्य अपनी विविधता में, अपने सब पहलुओं में, मसीह के दिन तक सुरक्षित रखा जाता है।

पौलुस के लिए यह महत्वपूर्ण है कि भविष्य को ध्यान में रखते हुए मनुष्य के विषय में यह दृष्टिकोण हो। और उसका दृष्टिकोण पुराने नियम के उन सब पदों को अपनाने और उनका सारांश देने के अलावा कुछ नहीं है, जो उत्पत्ति 2:7 से आरम्भ करके मनुष्य की बनावट के विषय में कुछ कहते हैं। इसके अलावा कुछ हो भी नहीं सकता, क्योंकि पुराने और नए नियम से बना पवित्रशास्त्र परमेश्वर के द्वारा जोड़ी गई एक एकता है। इसलिए मनुष्य के विषय में पौलुस की धारणा पूरी तरह परमेश्वर के उस प्रकाशन के अनुरूप है जो पुराने नियम में पहले ही दिया जा चुका था। इसलिए यह मनुष्य की कोई नई, या यूनानी, धारणा नहीं है, बल्कि, यदि ऐसा कहना चाहें, मनुष्य की इब्रानी या यहूदी धारणा है।

पौलुस एक निश्चित क्रम बताता है, जिसमें वह मनुष्य की आत्मा को पहले स्थान पर रखता है। परन्तु इससे देह का मूल्य इसलिए कम नहीं हो जाता कि वह अन्तिम स्थान पर है¹²⁸। यह क्रम क्यों चुना गया, यह मनुष्य की सृष्टि से स्पष्ट होता है, जहाँ आत्मा (जीवन का श्वास) वह मुख्य तत्व है जो मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य बनाता है।

3.2 मनुष्य की आत्मा

मनुष्य की सृष्टि के विषय में पुराने नियम के मुख्य कथन ये हैं:

127. यह पुराना विवाद कि बाइबल के अर्थ में मनुष्य द्वि-भागी (डाइकॉटॉमी, दो भागों वाला) है या त्रि-भागी (ट्राइकॉटॉमी, तीन भागों वाला), मैं यहाँ नहीं उठाता। मैं उस दृष्टिकोण को पसन्द करता हूँ जिसमें प्राण और आत्मा के अनेक अर्थों के कारण उनके बीच ऐसी स्पष्ट सीमा-रेखा नहीं है। इसलिए यह कथन सहायक है: “कार्य की दृष्टि से देखें तो जीवित मनुष्य के विषय में, यदि उसकी सम्पूर्णता का ध्यान रखा जाए, आत्मा, प्राण और देह की बात निश्चय ही की जा सकती है, जैसा उदाहरण के लिए 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 में होता है। परन्तु तत्व की दृष्टि से बात यही रहती है कि मनुष्य केवल दो ‘भागों’ से बना है: आत्मा-प्राण का लोकातीत भाग और देह का इहलौकिक भाग। इस प्रकार एक तात्विक द्वि-विभाजन और एक कार्यात्मक त्रि-विभाजन की बात की जा सकती है। इसलिए प्राण का देह और आत्मा से स्वतंत्र कोई अपना अस्तित्व नहीं है, यद्यपि वह आत्मा के साथ पूरी तरह एक भी नहीं है, बल्कि सदा – मनुष्य की मृत्यु के बाद भी – उससे अलग पहचाना जा सकता है” (Roland Antholzer, *Geist, Seele und Leib – der Mensch in seiner Beschaffenheit*)।

128. फिर भी यह एक ऐसा क्रम है जिस पर मसीही को ध्यान देना चाहिए: देह की आवश्यकताएँ एक अनावश्यक बोझ और इस प्रकार आत्मिक उन्नति में बाधा सिद्ध हो सकती हैं। इसलिए पौलुस ने कहा: “मैं अपनी देह को मारता-कूटता और वश में लाता हूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27)। वह “देह के द्वारा संचालित” नहीं होना चाहता था, बल्कि अपनी आत्मा के द्वारा, जो पवित्र आत्मा के द्वारा नई की जाती है। उसकी देह उसकी आत्मा का साधन हो और उसके विचारों का अनुसरण करे, न कि इसके विपरीत।

“फिर परमेश्वर ने कहा, ‘हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ ...’ तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया” (उत्पत्ति 1:26-27)।

“तब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और मनुष्य जीवित प्राण बन गया” (उत्पत्ति 2:7)।

यहाँ हम पहले मनुष्य को देखते हैं, जो पहले निर्जीव था, पृथ्वी की धूल से गढ़ा गया। फिर सृष्टि के वृत्तान्त की वह अनुपम घटना आती है जिसमें जीवन दिया जाता है: परमेश्वर उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँकता है। परिणाम जीवित मनुष्य है, जिसका शरीर भौतिक है और मिट्टी से बना है, और जो एकमात्र प्राणी है जिसके भीतर परमेश्वर के जीवन का श्वास है। जीवन का श्वास उसके भीतर जाता है और वहीं रहता है; इस प्रकार वह उसकी संरचना¹²⁹ का भाग है। वही उसे परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य बनाता है।

3.2.1 जीवन का श्वास

जीवन का श्वास, जिसे परमेश्वर ने अपने में से दिया, मनुष्य की आत्मा के अनुरूप है, जैसा कि पौलुस भी उसे 1 थिस्सलुनीकियों 5 में कहता है।¹³⁰ “श्वास” शब्द का अनुवाद भिन्न-भिन्न प्रकार से किया जाता है। इस शब्द के अर्थों का दायरा विस्तृत है। यह परमेश्वर के लिए, मनुष्य के लिए और पशुओं के लिए प्रयुक्त होता है। एक अर्थ यह है कि जीवन का श्वास वह आत्मा है जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को दिया है, जो पशु के विपरीत, मनुष्य की बनावट के सबसे मुख्य तत्व के रूप में उसमें फूँका जाता है।

उस आत्मा के द्वारा, जिसे परमेश्वर हर मनुष्य को देता है,¹³¹ मनुष्य एक स्वतंत्र व्यक्ति बनता है, अर्थात् एक “मैं”, और इस प्रकार परमेश्वर के लिए एक “तू” भी। “व्यक्ति” की अवधारणा, जो हमें इतनी परिचित है, ठीक यहीं से उत्पन्न होती है। परमेश्वर असीम परमेश्वर है, फिर भी व्यक्तिगत परमेश्वर; वह मनुष्य का सृष्टिकर्ता और पालनहार है।

परमेश्वर के स्वरूप में सृजा गया मनुष्य एक व्यक्ति है, जिसका व्यक्तित्व परमेश्वर के व्यक्तित्व से निकला है।

129. बनावट, गठन, व्यवस्था।

130. पुराना नियम इसकी कई बार पुष्टि करता है: अय्यूब 27:3; 32:8; 33:4, 6; 34:14-15; यशायाह 42:5; 57:16; 1 राजाओं 17:17, 21, भजन संहिता 104:29-30 और यहजकेल 37:1-14 के संबंध में।

131. “परमेश्वर की ओर से आत्मा” को पवित्र आत्मा के साथ नहीं मिलाना चाहिए, जिसे हम ईश्वरत्व का तीसरा व्यक्ति कहते हैं। यह परमेश्वर की ओर से आत्मा है, परन्तु व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि जीवन देनेवाली शक्ति के रूप में। यह वह है जो परमेश्वर ने अपने में से मनुष्य को दिया है।

3.2.2 परमेश्वर का आत्मा और मनुष्य की आत्मा

यदि वह आत्मा, जिसे परमेश्वर देता है, मनुष्य की आत्मा को गढ़कर मनुष्य को व्यक्ति बनाता है, तो हमें इस आत्मा के दो पहलुओं में स्पष्ट अन्तर करना होगा, जो हमारे विषय के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। एक ओर यह वह आत्मा है और बना रहता है जो परमेश्वर से आता है। यह बात मनुष्य को परमेश्वर के बराबर नहीं बनाती, बल्कि यह आत्मा उसके पास देनेवाले पर निर्भर रहते हुए एक **वरदान** के रूप में है, ठीक वैसे ही जैसे किसी पेड़ के पत्तों में शक्ति और जीवन केवल पेड़ से जुड़े रहने पर ही होता है। इसी अर्थ में पौलुस के उस कथन को भी समझना चाहिए, जब वह अरियुपगुस पर यूनानियों से कहता है कि हम “परमेश्वर के वंश” हैं (प्रेरितों के काम 17:28-29; तुलना करें लूका 3:38 में यीशु की वंशावली, जहाँ आरम्भ में परमेश्वर मनुष्यजाति के कर्ता के रूप में खड़ा है: “आदम का, और वह परमेश्वर का”)।

दूसरा पहलू इस आत्मा के मानवीय निजी अस्तित्व में है। परमेश्वर की ओर से आया आत्मा मनुष्य में **मनुष्य की आत्मा** बन गया, जो उसे व्यक्ति बनाती है (रोमियों 1:9; 1 कुरिन्थियों 16:18; 2 कुरिन्थियों 2:13; 7:13; फिलिप्पियों 4:23; 2 तीमुथियुस 4:22, फिलेमोन 25)।

इसी प्रकार “उनकी” – अर्थात् मनुष्यों की – आत्मा (श्वास) की भी बात की गई है, जो परमेश्वर के सामने मूर्छित हो जाती है (यशायाह 57:16)। यहाँ यह मनुष्य की आत्मा अपनी निर्बलता और क्षीणता में है, उस आत्मा के विपरीत जो परमेश्वर से है और मूर्छित नहीं हो सकता।

आत्मा मनुष्य का सबसे भीतरी अस्तित्व है (भजन संहिता 32:2; इसे मन भी कहा गया है: मरकुस 7:20-23; यशायाह 57:15; 1 कुरिन्थियों 7:34)¹³²। वह कर्ता का केन्द्र है, व्यक्ति के रूप में “मैं” (यशायाह 26:9)। परमेश्वर की ओर से आया यह आत्मा मनुष्य को परमेश्वर का स्वरूप प्रदान करता है (“परमेश्वर आत्मा है”; यूहन्ना 4:24), और उसकी मनुष्यता को वैसा बनाता है जैसा परमेश्वर ने चाहा था।

आत्मा, जैसा कि प्रायः माना जाता है, मनुष्य की बुद्धि नहीं है। इस मत का मूल यूनानी दर्शन में है, जहाँ आत्मा “बुद्धि” और “ज्ञान” का पर्यायवाची है। यह मत बाइबल में मनुष्य की अनुपम धारणा को धुँधला कर देता है। बाइबल स्वयं “आत्मा” और “बुद्धि” के अन्तर को स्पष्ट करती है, यद्यपि आत्मा सोचती भी है और अनुभव भी करती है। सोचना, जिसे हम बुद्धि से जोड़ते हैं, आत्मा का केवल **एक** कार्य है (नीतिवचन 20:27; 1 कुरिन्थियों 2:11; 14:14; यशायाह 29:24)।

मनुष्य की आत्मा हमारे भीतर वह “स्थान” भी है जहाँ परमेश्वर बोल सकता है। वह मनुष्य में परमेश्वर के कार्य का आरम्भ-बिन्दु और ऎंटेना है (नीतिवचन 20:27)। उदाहरण के लिए पवित्र आत्मा हमारी आत्मा के साथ (अर्थात् मनुष्य की आत्मा के साथ) गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं (रोमियों 8:16)।

132. तुलना करें 2 कुरिन्थियों 4:16 में “भीतरी मनुष्यत्व”, जहाँ यह विश्वासी के नए जीवन का वर्णन करता है।

परन्तु परमेश्वर पूरे मनुष्य से बात करता है। आत्मा परमेश्वर के बोलने का प्रवेश-द्वार है, परन्तु जब मनुष्य स्वयं को परमेश्वर के अधीन करता है, तो पूरा मनुष्य ही स्वयं को परमेश्वर की सेवा में लगाता है।

मनुष्य की आत्मा मनुष्य का सार है, विश्वासी में भी और अविश्वासी में भी (उत्पत्ति 41:8; 45:27; एज्जा 1:1, 5; दानियेल 6:3)। परन्तु पवित्र आत्मा के बिना मनुष्य की आत्मा शारीरिक है (रोमियों 8:4-8), और परमेश्वर से संबंध जोड़ने में असमर्थ है।

पाप में गिरे हुए मनुष्य और उसकी मानवीय आत्मा का परमेश्वर की ओर उन्मुख होना धर्मों में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। परमेश्वर की ओर अपने इस झुकाव में मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता की ओर नहीं, बल्कि मूर्तियों की ओर मुड़ता है, जिनके पीछे दुष्टात्माएँ खड़ी हैं।

हमारे विचार के लिए मुख्य बात यह है कि परमेश्वर का दिया हुआ आत्मा अमरता का गुण रखता है। यद्यपि मनुष्य की आत्मा की अमरता का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं हुआ है, फिर भी यह इस तथ्य से निकलती है कि परमेश्वर का श्वास मर नहीं सकता। यह अनन्त परमेश्वर का श्वास या आत्मा है (रोमियों 16:26)। परन्तु परमेश्वर का वह श्वास, जो हर मनुष्य में आरम्भ से है, ईश्वरत्व के व्यक्ति के रूप में पवित्र आत्मा नहीं है। केवल परमेश्वर की सन्तान के विषय में लिखा है कि पवित्र आत्मा उनमें वास करता है। परमेश्वर के श्वास से परमेश्वर के आत्मा का व्यक्ति अभिप्रेत नहीं है, बल्कि परमेश्वर का श्वास ऐसी वस्तु के रूप में, जो परमेश्वर के जीवन के अनुरूप है और इस प्रकार मनुष्य की जीवन देनेवाली शक्ति है। परमेश्वर का यह श्वास अपने स्वरूप और “तत्त्व” के अनुसार परमेश्वर से है। यदि मनुष्य के पास यह आत्मा है, तो उसकी आत्मा को भी – सदा अनन्त परमेश्वर पर निर्भर रहते हुए – अमर या कालातीत होना ही चाहिए।

इस स्थान पर मैं दोहराता हूँ: मनुष्य के पास परमेश्वर का श्वास एक वरदान के रूप में है, जो उसके मनुष्य होने के लिए निर्णायक है। अपने निजी अस्तित्व में वह साथ ही मनुष्य के व्यक्ति का निर्माण करता है। इसलिए यह जानना रोचक है कि मृत्यु के संबंध में मनुष्य की आत्मा के विषय में क्या कहा गया है।¹³³ सभोपदेशक की पुस्तक का वह प्रसिद्ध पद, जिसका प्रायः हवाला दिया जाता है, कहता है कि मिट्टी, अर्थात् मनुष्य का शरीर, पृथ्वी में मिल जाती है, और आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाती है जिसने उसे दिया (सभोपदेशक 12:7)। यहाँ आत्मा को उसकी अविनाशिता में देखा गया है, कि वह शरीर की मृत्यु और क्षय के बाद भी बनी रहती है। परन्तु यह आत्मा केवल परमेश्वर की ओर से आया आत्मा ही नहीं है, जैसे वह मनुष्य को जीवन देता है। वह साथ ही मनुष्य की आत्मा है, जिसमें उसका व्यक्तित्व और उसकी “मैं”-चेतना है। जब आत्मा परमेश्वर के पास लौटती है, तो इसके साथ मनुष्य की आत्मा, अर्थात् व्यक्ति (केवल देह का जीवन नहीं), परमेश्वर के पास लौटता है, और परमेश्वर उसे ग्रहण करता है – चाहे न्याय के लिए, चाहे आशीष के लिए।

133. तुलना करें खंड 1.7.1।

मनुष्य की आत्मा देह से बँधी नहीं है, और मृत्यु में देह की तरह नष्ट नहीं होती। जब भजनकार कहता है कि आत्मा निकल जाती है और वह मिट्टी में मिल जाता है (भजन संहिता 146:4),¹³⁴ तो इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि व्यक्ति देह से बँधा है और जो कुछ “मैं” को बनाता है, वह मिट्टी हो जाता है। मनुष्य का व्यक्ति उसकी आत्मा से बँधा है (1 कुरिन्थियों 5:5), और जब शरीर मरता और नष्ट होता है, तो उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता।

नया नियम हमें दिखाता है कि यार्ड की बेटी की आत्मा उस मरी हुई लड़की में कैसे लौट आई (लूका 8:55; याकूब 2:26), और स्तिफनुस ने अपनी आत्मा प्रभु यीशु के हाथों में कैसे सौंप दी (प्रेरितों के काम 7:59; तुलना करें लूका 23:46; भजन संहिता 31:5)। इसी अर्थ में पतरस भी उन आत्माओं की बात करता है जो अब कैद में हैं (1 पतरस 3:19)। एक ओर वे स्वयं व्यक्ति हैं; दूसरी ओर, क्योंकि वे मर चुके हैं, वे एक आत्मिक, अर्थात् अभौतिक, अवस्था में हैं (इब्रानियों 12:23)।

3.2.3 सारांश

बाइबल की आत्मा की अवधारणा मनुष्य की दूसरी धारणाओं की आत्मा की अवधारणा से मूल रूप से भिन्न है। आत्मा मनुष्य के प्राण को आत्मा-प्राण तक ऊँचा उठाती है और मनुष्य को व्यक्ति बनाती है। वह मनुष्य की पहचान की ज़मानत है। आत्मा परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मनुष्य को पशु से अलग करती है। क्योंकि मनुष्य के पास आत्मा है, इसलिए परमेश्वर उससे बात कर सकता है, और वह परमेश्वर से। उसका अस्तित्व अनन्त है, क्योंकि यह वह आत्मा है जो परमेश्वर से आता है। इस प्रकार मनुष्य अनन्तकाल का प्राणी है, जो एक ऊँचे, अदृश्य संसार की ओर उन्मुख है।

3.3 मनुष्य का प्राण

मनुष्य की आत्मा और देह के बीच पौलुस प्राण का नाम लेता है। पवित्रशास्त्र में आत्मा और प्राण कुछ स्थानों पर एक दूसरे से इतने गहरे जुड़े हैं कि हर शब्द अकेले (1 पतरस 2:11; फिलिप्पियों 1:27) भीतरी मनुष्यत्व (2 कुरिन्थियों 4:16; भजन संहिता 103:1) को, अर्थात् मनुष्य के अभौतिक और अदृश्य पहलू को, दर्शा सकता है। फिर भी इन दोनों शब्दों में एक दूसरे से अन्तर भी किया जाता है (इब्रानियों 4:12; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23)।

प्रायः अनुचित रूप से यह कहा गया है कि प्राण का अर्थ केवल वह जीवन है जो मनुष्य और पशु के भौतिक शरीर को जीवित रखता है (देखें मत्ती 2:20; 16:25-26; लूका 12:22)। प्राण शब्द का यह अर्थ भी है, परन्तु इसके अर्थों की विविधता आत्मा शब्द के समान ही है।

134. भजन संहिता का यह पद इस बात का प्रमाण है कि “आत्मा” शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं, और यहाँ उदाहरण के लिए इसका अर्थ केवल “सौंस” है।

प्राण को प्रायः “जीवन” के केवल अर्थ से अलग किया गया है। क्योंकि प्राण भी, मनुष्य की आत्मा की तरह, उसका एक मुख्य घटक है (अप्यूब 19:2; नीतिवचन 3:21-22; मत्ती 10:28; लूका 12:20; 2 पतरस 2:8)।

उदाहरण के लिए प्राण की कुशलता को देह और उसके जीवन की कुशलता के सामने रखा गया है, और इस प्रकार उससे स्पष्ट रूप से अलग किया गया है (3 यूहन्ना 2)। मनुष्य देह को तो मार सकते हैं, परन्तु प्राण को नहीं (मत्ती 10:28)। यदि इस पद में प्राण का अर्थ जीवन होता, तो वह देह के जीवन के साथ ही मार डाला जाता। प्रभु यीशु इस स्थान पर प्राण को स्पष्ट रूप से मनुष्य के अस्तित्व का ऐसा तत्व बताता है, जो देह की मृत्यु के साथ मरता नहीं। प्रभु यीशु के शब्दों के अनुसार प्राण को मनुष्य के एक तत्व के रूप में उसकी आत्मा और उसकी देह से स्पष्ट रूप से अलग किया गया है (लूका 17:33; तुलना करें 1 पतरस 2:25; प्रेरितों के काम 14:22)।

मनुष्य के एक भाग के रूप में प्राण, आत्मा के साथ-साथ, मनुष्य की सम्पूर्णता की अभिव्यक्ति भी है। इसलिए जब मनुष्यों की गिनती की बात होती है, तो बाइबल “प्राण” शब्द का प्रयोग करती है (तुलना करें उत्पत्ति 46:25, 26, 27; प्रेरितों के काम 2:41)।

मनुष्य में प्राण आत्मा के साथ मिलकर व्यक्तित्व बनाता है (लूका 9:24; इब्रानियों 6:19; 10:39)। वह – आत्मा की तरह – मनुष्य के “मैं” को दर्शाता है (2 कुरिन्थियों 1:23; यशायाह 53:11; विलापगीत 3:24)।

यदि प्राण आत्मा और देह के बीच एक प्रकार की मध्य-स्थिति रखता है, तो एक ओर उसका संबंध आत्मा से है, और इसलिए हम उसे “आत्मा-प्राण” भी कहते हैं। दूसरी ओर उसका देह से, अर्थात् बाहरी मनुष्यत्व से, गहरा संबंध है।

प्राण का देह से संबंध तब स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, जब हम पढ़ते हैं कि शरीर का प्राण लहू में है (लैव्यव्यवस्था 17:11; व्यवस्थाविवरण 12:23)। मनुष्य और पशु का प्राण लहू से जोड़ा गया है (उत्पत्ति 9:4-5)। इसलिए मनुष्य की मृत्यु को प्राण का उण्डेला जाना भी कहा गया है (भजन संहिता 141:8; यशायाह 53:12)। देह से पूरी भिन्नता के बावजूद प्राण उससे बहुत गहराई से जुड़ा है, जो इस रूप में आत्मा पर लागू नहीं होता। इसलिए मनुष्य की सृष्टि के समय कहा गया है कि वह जीवित प्राण बन गया, जैसे पशु को भी जीवित प्राण कहा गया है (उत्पत्ति 1:20, 21, 24; 2:19; 9:10)।

यह बात कि मनुष्य अपनी सम्पूर्णता में जीवित प्राण बन गया, प्राण और देह के गहरे संबंध को ही स्पष्ट करती है, क्योंकि वहाँ बात मिट्टी में, अर्थात् निर्जीव पदार्थ में, जीवन डालने की थी। इसी अर्थ में, और किसी दूसरे अर्थ में नहीं, पशु को भी “जीवित प्राण” कहा गया है। पशु का प्राण उसमें सृष्टिकर्ता के द्वारा फूँका नहीं गया, जबकि मनुष्य के साथ ठीक यही हुआ। पशु और मनुष्य के बीच मुख्य अन्तर इसी में है (लैव्यव्यवस्था 24:17-18)।

पुराने नियम में लाश को भी (इब्रानी में) “प्राण” कहा गया है (गिनती 5:2; 6:6, 11; 19:11, 13)। यहाँ प्राण मनुष्य के शरीर और रूप को दर्शाता है। इस प्रकार शरीर साथ ही प्राण का बाहरी रूप भी है, परन्तु उसका तत्व नहीं, अर्थात् लाश प्राण नहीं है। वह प्राण हो भी नहीं सकती, क्योंकि मनुष्य की मृत्यु के समय प्राण निकल जाता है (उत्पत्ति 35:18)। मृत मानव-शरीर के संबंध में “प्राण” शब्द का अर्थ प्राण का पूरी तरह शारीरिक, भौतिक रूप है, परन्तु प्राण के बिना।

शरीर के साथ प्राण का यह गहरा संबंध संकेत करता है कि मनुष्य की मृत्यु के बाद भी प्राण “अपने” मानव-शरीर के रूप और आकार से बँधा रहता है। इसलिए प्राण “दैहिक रूप में” (लूका 3:22 के अर्थ में) प्रकट होता है। परन्तु मध्यवर्ती अवस्था की यह “देह” अब भौतिक नहीं है। इस प्रकार मृत्यु के बाद प्राण मनुष्य के रूप में भी प्रकट होता है और उसी रूप में पहचाना जा सकता है।

इस प्रकाश में यह समझ में आता है कि यूहन्ना उन लोगों के प्राणों को देखता है जो परमेश्वर के वचन के कारण वध किए गए थे (प्रकाशितवाक्य 6:9; 20:4)। यदि प्राण केवल जीवन होता, तो उसने क्या देखा होता? स्पष्ट है कि उसने मनुष्यों के रूप देखे, जिन्हें उसने उसी रूप में पहचान लिया। इससे अधिक, अर्थात् इस बात से अधिक कि यूहन्ना ने प्राणों को मनुष्यों के रूप में पहचाना, हमारे लिए अदृश्य संसार में उनकी आत्मिक दैहिकता के विषय में और कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। यहाँ यह स्पष्ट करना है कि मृत्यु के बाद पहचाने जा सकने का संबंध मनुष्य के बाहरी रूप-रंग से है, जैसा कि पृथ्वी पर भौतिक शरीर के द्वारा होता है।

मृत्यु के बाद प्राण के अस्तित्व के बने रहने के विषय में ये विचार अमरता के प्रश्न को भी छूते हैं। यह स्पष्ट रूप से दिखाया जा चुका है कि प्राण देह की मृत्यु के बाद भी जीवित रहता है। वह अमर है या नहीं, अर्थात् उसका अस्तित्व अनन्त है या नहीं, इसका उत्तर केवल आत्मा के साथ उसके संबंध में ही दिया जा सकता है। क्योंकि अमर आत्मा प्राण में वास करती है, और मनुष्य की बनावट में उसके साथ अटूट संबंध में है, और ये दोनों शब्द प्रायः एक ही बात व्यक्त करते हैं, इसलिए मनुष्य का प्राण भी आत्मा-प्राण के रूप में अमर होना चाहिए। वह अपने आप में अमर नहीं है, क्योंकि केवल परमेश्वर ही अपने आप में अमर है। वह इसलिए अमर है कि परमेश्वर उसे बनाए रखता है, और क्योंकि वह चाहता है कि वह जीवित रहे और न मरे।

3.3.1 सारांश

यद्यपि “प्राण” शब्द के बहुस्तरीय अर्थों (पुराने नियम में 755 बार) के कारण कोई परिभाषा बनाना संभव नहीं है, फिर भी ठीक इसी समृद्धि से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है: मनुष्य का प्राण उसके अस्तित्व के तत्वों में से एक है। वह आत्मा-प्राण है, और इस रूप में पशु के प्राण से भिन्न है, जो आत्मा-प्राण नहीं है। वह आत्मा और देह के बीच की कड़ी है। वह व्यक्तित्व और व्यक्तिगत “मैं”-जीवन का आसन है। अपने भीतर वास करनेवाली आत्मा के कारण वह अमर है, और देह की मृत्यु के बाद भी मनुष्य को व्यक्ति के रूप में बनाए रखता है। यहाँ भी – मनुष्य की आत्मा की तरह – स्पष्ट होता है कि मनुष्य अनन्तकाल का प्राणी है।

3.4 मनुष्य की देह

देह भी मनुष्य के अस्तित्व का एक तत्व है। मनुष्य का दिखाई देनेवाला भाग उसके अदृश्य भाग की तुलना में हमारी समझ के लिए कहीं अधिक सुलभ है, और इसलिए उसे समझने में कम कठिनाई होती है। परमेश्वर ने जैसा चाहा, वैसी देह दी (1 कुरिन्थियों 15:38)। देह परमेश्वर की बुद्धि की अभिव्यक्ति है – पतन के बाद भी – और उस अद्भुत रीति पर, जिससे हम बनाए गए हैं, हमें बार-बार विस्मित करती है (भजन संहिता 139)। मांस और लहू की देह (इब्रानियों 2:14) दृश्य संसार में हमारे अस्तित्व को संभव बनाती है और उसे निर्धारित करती है। देह के द्वारा हम संसार का अनुभव करते, उसे जानते और महसूस करते हैं।

मृत्यु के द्वारा, जो पाप के कारण इस संसार में घुस आई, देह, अर्थात् शरीर, मृत्यु और नश्वरता के अधीन कर दी जाती है (रोमियों 6:23; यशायाह 40:6-8; 1 पतरस 1:24)। स्वाभाविक मनुष्य के दृष्टिकोण से, जो मृत्यु के पार नहीं देखता, मनुष्य की – जैसा सभोपदेशक कहता है – वही दशा होती है जो पशु की: वह फिर मिट्टी हो जाता है (सभोपदेशक 3:19)। बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है (2 कुरिन्थियों 4:16), जैसे संसार का रूप भी (1 कुरिन्थियों 7:31; यशायाह 51:6), अर्थात् जैसे सारी दिखाई देनेवाली वस्तुएँ (2 कुरिन्थियों 4:18) नष्ट होती हैं।

देह पाप का साधन भी बन गई है (रोमियों 6)। इसलिए पौलुस, जब वह पाप के दास बने मनुष्य की असहायता की बात करता है, कहता है: “मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?” (रोमियों 7:24)।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि देह एक कालकोठरी है, जिससे मनुष्य मृत्यु के द्वारा ही छुटकारा पाता है। यह यूनानी दर्शन का विचार है, जो देह के विषय में बाइबल के दृष्टिकोण के बिलकुल विपरीत है (तुलना करें खंड 4)। परमेश्वर की दृष्टि में देह का कितना मूल्य है, यह संसार के इतिहास के सबसे बड़े भेद में स्पष्ट होता है: परमेश्वर स्वयं मनुष्य बना, परमेश्वर शरीर में प्रकट हुआ (1 तीमुथियुस 3:16)।

यूहन्ना कहता है कि वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया (यूहन्ना 1:14)। प्रभु यीशु ने अपने लिए एक देह तैयार करवाई (इब्रानियों 10:5), ताकि उसे क्रूस पर बलिदान के रूप में मृत्यु के हवाले कर दे (इब्रानियों 10:10)। जब वह मरा, तो उसने अपनी देह को, जिसे उसने बलिदान के रूप में चढ़ाया था, सदा के लिए नहीं त्यागा। पुनरुत्थान में, क्योंकि वह पूर्ण मनुष्य है और अनन्तकाल तक बना रहता है, उसे एक ऐसी देह मिली जो महिमामय है और साथ ही सब विश्वासियों के लिए नमूना है, जब बदल जाने और पुनरुत्थान के समय उन्हें वही महिमा की देह पहिनाई जाएगी (फिलिप्पियों 3:21; रोमियों 8:23)।

छुटकारे के द्वारा विश्वासियों की देह परमेश्वर का निवास-स्थान बन गई है (1 कुरिन्थियों 6:19), क्योंकि परमेश्वर पवित्र आत्मा उसमें वास करता है। इस प्रकार देह, यद्यपि पाप के कारण मरनहार है, वह साधन है जिसके द्वारा अब पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा की जाती है (रोमियों 12:1-2; 1 कुरिन्थियों 6:20)। पूरा मनुष्य परमेश्वर की सेवा में लगा दिया गया है।

विश्वासियों का पुनरुत्थान इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर देह को न तो ठुकराता है और न पीछे छोड़ देता है, इस कारण कि शायद वह अस्तित्व का कोई दूसरा रूप पसन्द करता हो। जो कभी परमेश्वर के हाथ से सिद्ध रूप में निकला था, परन्तु पाप के द्वारा विकृत और भ्रष्ट हो गया, वह एक दिन मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के आधार पर परमेश्वर की महिमा के लिए फिर से पुनर्स्थापित किया जाएगा।

विश्वासियों का लेपालकपन तभी पूरी तरह प्राप्त होता है, जब देह का छुटकारा हो जाता है (रोमियों 8:23)।

आत्मा और प्राण और देह, अर्थात् पूरा मनुष्य, सृष्टि से ही अनन्तकाल के लिए बनाया गया है। देह पुनरुत्थान में ही अमरता में भागी होगी। “अमरता” शब्द, “मरनहार होने” के विपरीत के रूप में, केवल जी उठी देह पर ही लागू होता है (रोमियों 8:11), क्योंकि वह देह पाप के कारण “मरनहार” देह बन गई है। इसलिए पवित्रशास्त्र “प्राण की अमरता” की बात नहीं करता, क्योंकि प्राण न मरनहार था और न मरनहार बना, जैसा कि देह के साथ निश्चय ही हुआ है।

3.5 निष्कर्ष

यह निर्विवाद है: बाइबल मनुष्य को आत्मा, प्राण और देह की एकता में जानती है। चाहे मनुष्य परमेश्वर के साथ सहभागिता में जीने के अपने उद्देश्य से गिर गया है, फिर भी बाइबल में मनुष्य की धारणा, जैसी वह सृष्टि से प्रकट होती है, बनी रहती है (याकूब 3:9)।

इसके साथ मैं इस बात पर ज़ोर देता हूँ कि ये तीनों पहलू एक अटूट एकता बनाते हैं और मनुष्य को उसकी सम्पूर्णता में प्रस्तुत करते हैं, जो मृत्यु तक बनी रहती है। मृत्यु देह और आत्मा-प्राण का एक अस्थायी अलगाव ले आती है। पुनरुत्थान के द्वारा मनुष्य की यह एकता फिर से स्थापित की जाती है।

मनुष्य अनन्तकाल का प्राणी है। इससे मनुष्य का केवल एक भाग अभिप्रेत नहीं है, बल्कि पूरा मनुष्य अपनी एकता में, और साथ ही अपने भिन्न-भिन्न पहलुओं की विविधता में, जैसा परमेश्वर ने आरम्भ से चाहा और बनाया है।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- बाइबल में मनुष्य की धारणा अनुपम क्यों है?
- वे शब्द बताइए जिनका प्रयोग बाइबल मनुष्य की अपनी धारणा के लिए करती है।
- केन्द्रीय शब्द कौन सा है, और क्यों?
- मनुष्य की आत्मा अमर क्यों है?
- मनुष्य की आत्मा के कुछ मुख्य लक्षण बताइए!
- प्राण के कुछ मुख्य लक्षण बताइए!
- मनुष्य की देह के कुछ मुख्य लक्षण बताइए!

4 प्राण की अमरता

क्योंकि मैं “प्राण की अमरता” शब्द का प्रयोग कई बार कर चुका हूँ, इसलिए अब मैं उसे एक अलग अध्याय देना चाहता हूँ, ताकि निराधार गलतफ़हमियाँ और दुःख की बात है कि आरोप भी दूर किए जा सकें।

यह शब्द बहुत से मसीहियों को दो विरोधी पक्षों में बाँट देता है। कलीसिया के इतिहास में आज तक इसने विस्तृत और तीव्र वाद-विवाद को जन्म दिया है। फिर भी मसीही जगत में इसे सामान्य मान्यता मिल गई है, यद्यपि इससे अपने आप में इसकी सच्चाई की पुष्टि नहीं होती। कलीसिया के इतिहास में प्राण की अमरता की समझ का अनुसरण करना एक विस्तृत और रोचक विषय होता। परन्तु यह मेरा उद्देश्य नहीं है, क्योंकि जो भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण पहले ही आरम्भिक समय में स्पष्ट रूप से उभर आए थे, वे मूल रूप से आज तक वही बने हुए हैं।¹³⁵

यह ध्यान देने योग्य बात है कि बाइबल “प्राण की अमरता” शब्द का न तो प्रयोग करती है और न सीधे इस तथ्य की बात करती है। परन्तु इस शब्द का या इसके किसी पर्याय का न होना उस सच्चाई को ठुकराने का कोई कारण नहीं है जो इसमें निहित है। इसी प्रकार लोग परमेश्वर के त्रिएकत्व (ट्रिनिटी), मसीह के प्रतिनिधि बनने या पुराने स्वभाव की बात भी करते हैं, यद्यपि पवित्रशास्त्र इन शब्दों का भी उल्लेख नहीं करता। फिर भी ये सच्चाइयों को ऐसे ढंग से व्यक्त करते हैं जो न केवल सही, बल्कि उपयोगी भी है।

जो लोग प्राण की अमरता को अस्वीकार करते हैं, वे ठीक ही इस बात की ओर संकेत करते हैं कि यहाँ हमारा सामना एक मूर्तिपूजक शब्द से है, इस स्थिति में यूनानियों के शब्द से। यूनानियों के चिन्तन में प्राण की अमरता थी। संयोग से वे मृतकों के स्थान और मृतलोक के देवता के लिए “हेडीस” शब्द का भी प्रयोग करते थे।

परन्तु जो कोई केवल “प्राण की अमरता” शब्द के मूल के आधार पर मृत्यु के बाद और अनन्तकाल में सचेत जीवन को अस्वीकार करता है, वह दूसरी अति पर जा गिरता है। यूनानी चिन्तन के प्रभाव के विरुद्ध संघर्ष कुछ हद तक इतना तीव्र है कि उसके साथ ही परमेश्वर की अपनी अमरता को छोड़कर हर प्रकार की अमरता का इनकार कर दिया जाता है, और मानो नहाने के पानी के साथ बच्चे को भी फेंक दिया जाता है।

मैं यहाँ इस शब्द पर अड़ना, उसकी शब्दावली का बचाव करना, या उसका मसीहीकरण करना नहीं चाहता। बात यह है कि हमें प्राण की अमरता को बाइबल के अर्थ में कैसे समझना चाहिए।¹³⁶ किसी भी

135. उदाहरण के लिए *Texte der Kirchenväter*, München (Kösel Verlag), 1966, खंड 1, 4, 5।

136. वह बाइबल-पाठक, जो न यूनानियों के विचारों को जानता है और न मूल भाषाओं का ज्ञान रखता है, पवित्रशास्त्र के उन पदों को कैसे समझे, जिनकी जाँच हमने खंड 2 में की है? उसके लिए “प्राण की अमरता” का अर्थ कोई ट्रॉय का घोड़ा नहीं, मूर्तिपूजक विचारों की कोई चुपचाप घुसपैठ नहीं, बल्कि वह इस शब्द को उस ढाँचे के भीतर, जो खंड 2 में तैयार किया गया है, निश्चय ही बाइबल के

दशा में हमें मूर्तिपूजक दर्शन के लिए द्वार ज़रा सा भी नहीं खोलना चाहिए।

“प्राण की अमरता” का अर्थ यह है कि प्राण, देह के विपरीत, मरता नहीं (मत्ती 10:28)। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि यूनानियों के पास सच्चाई का कुछ अंश था, जिसका कारण यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य के मन में अनन्तकाल रखा है (सभोपदेशक 3:11)? मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास सभी प्राचीन संस्कृतियों का भाग था। मनुष्य सच्चाई को जानते हैं, परन्तु उसे अधर्म से दबाए रखते हैं, क्योंकि उनका मन अन्धकारमय हो गया है (रोमियों 1:18-32)।¹³⁷

4.1 अनन्त जीवन और प्राण की अमरता

प्राण की अमरता के विरुद्ध एक आपत्ति इस प्रश्न में व्यक्त होती है: यदि मनुष्य के पास स्वाभाविक रूप से प्राण की अमरता है, तो उसे अनन्त जीवन की और क्या आवश्यकता है?

इस प्रश्न से स्पष्ट होता है कि अनन्त जीवन और प्राण की अमरता को एक ही बात समझा जाता है। यह गलत समझ है, क्योंकि ये दोनों बातें एक दूसरे से मूल रूप से भिन्न हैं (तुलना करें खंड 2.9.2)। हर मनुष्य एक अमर प्राण के साथ जन्म लेता है। परन्तु क्योंकि आदम का वंशज होने के कारण वह पापी है, इसलिए उसका सारा अस्तित्व पाप से भरा हुआ है। इसलिए उसे “नए” जीवन की आवश्यकता है। इस प्रश्न पर मेरा उत्तर यह है: मनुष्य को अपने अमर प्राण, अर्थात् अपने अनन्त अस्तित्व, के “अतिरिक्त” अनन्त जीवन की आवश्यकता है। क्योंकि स्वभाव से, एक सृजे हुए प्राणी के रूप में, उसका अस्तित्व पहले से अनन्त है, इसलिए उसे फिर से कभी न समाप्त होनेवाले जीवन की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह तो उसके पास पहले से है। उसे “अनन्त जीवन” की आवश्यकता है, जो केवल अनन्त अस्तित्व से कहीं अधिक है। उसे एक “नए” अस्तित्व की आवश्यकता है, जो उसे अनन्त जीवन के साथ मिलता है। वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है, क्योंकि उसका इसके लिए नया जन्म होता है (यूहन्ना 1:12-13; 3:1-21)।

जिस मनुष्य के पास अनन्त जीवन नहीं है, उसका भी अनन्त अस्तित्व है। परन्तु यह परमेश्वर के बिना अनन्त अस्तित्व है। अपने पार्थिव जीवन में वह परमेश्वर के बिना जीता है, परमेश्वर के बिना मरता है, और जिलाए जाने के बाद परमेश्वर के बिना अनन्तकाल तक जीवित रहेगा। इसलिए प्रश्न यह नहीं है कि मनुष्य अनन्तकाल तक अस्तित्व में रहता है या नहीं, बल्कि यह है कि वह परमेश्वर के साथ किस संबंध में अनन्तकाल तक अस्तित्व में रहता है। हर मनुष्य का अनन्त अस्तित्व है; विश्वासी के पास परमेश्वर की सन्तान के रूप में अनन्त जीवन के द्वारा परमेश्वर के साथ सहभागिता में एक नया और अनन्त अस्तित्व है। अविश्वासी का अस्तित्व परमेश्वर के बिना अनन्त है, क्योंकि पाप उसे परमेश्वर से अलग करता है।

अनुसार समझ सकता है और इसी अर्थ में उसका प्रयोग भी कर सकता है। नए नियम के प्रकाश में इस शब्द का औचित्य है; यह आवश्यक नहीं कि वह मूर्तिपूजक विचार ही अपने साथ लाए।

137. देखें Don Richardson, *Erwigkeit in ihren Herzen*, Lahr (Verlag der Liebenzeller Mission), 1999 भी।

4.2 नए नियम में अमरता

“अमरता” शब्द (यूनानी: *atanasia*) नए नियम में केवल तीन बार आता है। 1 तीमथियुस 6:16 में लिखा है कि “अमरता केवल उसी की है”। परमेश्वर के पास अमरता पूर्ण अर्थ में स्वयं उसमें है। अमरता एक ऐसा गुण है जो इस रूप में केवल परमेश्वर के पास है।¹³⁸ किसी ने उसे यह नहीं दिया, और कोई उससे इसे ले नहीं सकता। यह उसकी स्वाभाविक सम्पत्ति है, क्योंकि वह “जो सदा है” (निर्गमन 3:13-14) और अपरिवर्तनीय परमेश्वर है (रोमियों 16:26)। इसलिए सारी अमरता उसी से निकलती है; केवल वही उसे दे सकता है।

इससे कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि परमेश्वर के अलावा कोई अमर नहीं है। परन्तु प्रभु यीशु स्वर्गदूतों के विषय में कहता है कि वे नहीं मरते (लूका 20:36); दूसरे शब्दों में: वे अमर हैं। तो क्या परमेश्वर के अलावा भी कोई अमरता रख सकता है? क्या यह इस बात के विरुद्ध नहीं कि अमरता “केवल” परमेश्वर की है? नहीं, स्वर्गदूत उस अर्थ में अमर नहीं हैं जिस अर्थ में परमेश्वर है। यह गुण उनमें न अपने आप में है और न परमेश्वर से स्वतंत्र। उन्हें भी परमेश्वर ही जीवित रखता है, जैसा कि हर जीवित वस्तु के साथ होता है। सब वस्तुएँ उसकी सामर्थ्य के वचन से सँभाली जाती हैं (इब्रानियों 1:3)। इस अर्थ में सारा जीवन, और इस प्रकार “अमरता” भी, परमेश्वर से निकला है और उस पर निर्भर है। जो कुछ जीवित है, वह इसलिए जीवित है कि वह ऐसा चाहता है (प्रकाशितवाक्य 4:11; 1 तीमथियुस 6:13; प्रेरितों के काम 17:25)। यह बात मनुष्य के आत्मा-प्राण पर भी लागू होती है। प्रश्न यह नहीं है कि क्या परमेश्वर के अलावा कोई अमर हो सकता है, बल्कि यह कि वह किस प्रकार अमर है।

प्रेरित पौलुस इस शब्द का प्रयोग पुनरुत्थान के विषय में अपने अध्याय में दो बार और करता है (1 कुरिन्थियों 15:53-54)। वहाँ अमरता का संबंध केवल उस नई देह से है, जिसे विश्वासी पुनरुत्थान में या बदल जाने पर पाते हैं। इस नई देह के साथ ही विश्वासी अमरता को उसके बाइबल के अर्थ में पाते हैं।

इस प्रकार पवित्रशास्त्र में अमरता का संबंध सदा पूरे मनुष्य से है। परन्तु वह पुनरुत्थान के साथ ही आरम्भ होती है। तब वह पूरे मनुष्य को घेर लेती है, न कि केवल उसके प्राण को। स्पष्ट कहें तो: पवित्रशास्त्र अमरता शब्द का प्रयोग प्राण के संबंध में नहीं करता। परन्तु दूसरी ओर, किसी भी स्थान पर यह भी नहीं लिखा कि प्राण मर जाता है, जब उसे मनुष्य के अस्तित्व के एक तत्व के रूप में प्रस्तुत किया गया हो। क्योंकि अमरता का संबंध केवल देह से है, इसलिए मरनहार होना भी केवल देह पर लागू होता है। परन्तु क्योंकि प्राण मरनहार नहीं है, इसलिए प्राण की कोई अमरता भी नहीं है। उसे यह बाद में अनन्त जीवन पाने के द्वारा भी नहीं मिली, जैसा कुछ लोग दावा करते हैं।

138. यह ध्यान देने योग्य है कि यह नहीं लिखा कि परमेश्वर अमर है। अमरता की बात करना तभी अर्थपूर्ण है, जब मृत्यु सृष्टि में प्रवेश कर चुकी हो। यह “मरनहार” का विपरीत है। शायद यह कहना उचित नहीं कि परमेश्वर अमर है, क्योंकि मृत्यु से उसका कभी कोई संबंध नहीं रहा। अमरता उसकी “है”, इसलिए नहीं कि यह उसका स्वभाव है, बल्कि इसलिए कि वह इसे मरनहार प्राणियों को देता है।

नए नियम में मरनहार होना केवल देह पर लागू होता है (रोमियों 6:12; 8:11; 1 कुरिन्थियों 15:53-54; 2 कुरिन्थियों 4:11; 5:4)। देह मरनहार है और इसलिए दिखाई देनेवाली और इस प्रकार नाशमान सृष्टि का भाग है (2 कुरिन्थियों 4:18)। प्राण, जिसे हम नहीं देखते, उसके विषय में यह सत्य है कि वह देह के विपरीत अनन्त है।

इसलिए “प्राण की अमरता” शब्द वास्तव में सटीक नहीं है। मेरा उद्देश्य इस शब्द का बचाव करना नहीं, बल्कि उस सच्चाई का बचाव करना है जिसे यह व्यक्त करता है। हमें अच्छा होगा कि “प्राण के अनन्त अस्तित्व” की बात करें। यदि मैं “प्राण की अमरता” शब्द का प्रयोग जारी रखता हूँ, और इसे पुस्तक के शीर्षक के रूप में भी प्रयोग करता हूँ, तो ऐसा अधिक अच्छी समझ के लिए करता हूँ।

मनुष्य के अनन्त अस्तित्व में केवल प्राण का अनन्त अस्तित्व ही नहीं, बल्कि (पुनरुत्थान में) देह का भी अनन्त अस्तित्व सम्मिलित है। मनुष्य अपनी सम्पूर्णता में अनन्तकाल के लिए बनाया गया है। “प्राण की अमरता” शब्द मनुष्य की सम्पूर्णता में से केवल प्राण के एक पहलू की बात इसलिए करता है, क्योंकि इसका संबंध केवल मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच के समय से है। इसलिए बाइबल के ढाँचे में यह शब्द केवल इसी समय-अवधि के लिए मान्य है। इससे आगे का हर अर्थ यूनानी विचार को अपनाना होगा, जिसे पूरी तरह अस्वीकार करना चाहिए।

4.3 मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच

मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच के समय में आत्मा-प्राण देह के बिना होता है। देह नष्ट हो जाती है और पुनरुत्थान में ही फिर से उत्पन्न की जाती है। यहाँ कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि देह के बिना प्राण का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हो सकता, क्योंकि देह और उसकी इन्द्रियों के बिना कोई चेतना नहीं हो सकती। उनका कहना है कि मनुष्य की एकता ऐसी है कि मृत्यु सभी मानवीय क्रियाओं का अन्त कर देती है।

4.3.1 देह के बिना प्राण की चेतना

मृत्यु के बाद मनुष्य की अवस्था पूरी तरह असामान्य है, क्योंकि मृत्यु मनुष्य की एकता को तोड़ देती है। मृत्यु आत्मा-प्राण को देह से अलग कर देती है। अब आत्मा-प्राण को देह के बिना “काम चलाना” पड़ता है। स्पष्ट है कि यह अवस्था सिद्ध नहीं है। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि देह के बिना आत्मा-प्राण की कोई चेतना नहीं होती। दृश्य संसार में चेतना रखने के लिए हमें देह और इन्द्रियों की आवश्यकता होती है। परन्तु हम इस बात को मृत्यु के पार के उस संसार पर लागू नहीं कर सकते, जो हमारे लिए अदृश्य और पूरी तरह भिन्न प्रकार का है।

खंड 2 में जिन पदों पर विचार किया गया, उनसे स्पष्ट हुआ है कि मृत्यु के बाद देह के बिना प्राण और उसकी चेतना पर कोई प्रतिबंध नहीं है। मृत्यु के बाद प्राण की चेतना देह से बँधी नहीं है। बोलना और सुनना जैसी क्रियाएँ, जिन्हें वास्तव में केवल देह से ही जोड़ा जा सकता है, उन लोगों के “प्राणों” पर भी लागू होती

हैं जो वध किए गए थे (प्रकाशितवाक्य 6:9; तुलना करें खंड 2.9)। भले ही हम देह के बिना प्राण की अवस्था की कल्पना न कर सकें, फिर भी इस कारण हमें ऐसी अवस्था के अस्तित्व को नकारना नहीं चाहिए। स्वर्गदूतों के बारे में ही सोचिए: वे आत्माएँ हैं (इब्रानियों 1:7, 14), जिनकी कोई देह नहीं है। फिर भी उनमें व्यक्ति होने की चेतना है।

प्रेरित पौलुस इसे संभव मानता था कि जब वह तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया, तब वह “देह के बाहर” था (2 कुरिन्थियों 12:1-4)।

4.3.2 क्या प्राण को फिर भी देह की आवश्यकता है?

एक और तर्क यह है: “यदि मनुष्य का प्राण मृत्यु के बाद जीवित रहता है और विश्वासी का प्राण परादीस में प्रवेश करता है, तो फिर पुनरुत्थान की क्या आवश्यकता है? यदि हम देह के बिना भी आनन्दमय अस्तित्व पा लेते हैं, तो हमें देह की क्या आवश्यकता है?”

यहाँ भी मैं इस बात पर जोर देता हूँ कि मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच का समय एक पूर्ण अपवाद की स्थिति है। कहा जा सकता है कि मनुष्य इस समय के लिए सृजा नहीं गया था। मनुष्य की भाषा में कहें तो मृत्यु का प्रावधान ही नहीं था। परमेश्वर की यह इच्छा नहीं थी कि मनुष्य मरे। इसलिए मृत्यु के बाद की अवस्था को सिद्ध नहीं कहा जा सकता, भले ही विश्वासी परादीस में हों। उनकी देह मृत्यु के अधीन हो गई है।

यह तर्क हमें फिर से उस सत्य की ओर ले जाता है जिस पर पहले कई बार विचार किया जा चुका है: परमेश्वर द्वारा सृजी गई देह का मूल्य और मनुष्य की एकता। परमेश्वर का यह कार्य मृत्यु के द्वारा नष्ट कर दिया गया है। परन्तु मृत्यु को केवल पुनरुत्थान के द्वारा ही पराजित और समाप्त किया जा सकता है।

जिस प्रकार यीशु मसीह का कार्य उसके पुनरुत्थान के बिना अधूरा होता (रोमियों 4:25), उसी प्रकार छुटकारा भी अधूरा होता (रोमियों 8:23), यदि मरे हुए विश्वासियों की देह कब्र में ही पड़ी रह जाती। यदि पुनरुत्थान न होता, तो मृत्यु जीत जाती। पुनरुत्थान में बात परमेश्वर के आदर और उसकी महिमा की है, जो पुनरुत्थान के बिना घट जाती।

मसीह अपनी मृत्यु के बाद परादीस में गया (तुलना करें खंड 2.3)। परन्तु वह वहाँ नहीं रहा, यद्यपि वह परम आनन्द का स्थान है। वह मृतकों में से जी उठा। उसके पुनरुत्थान पर ही हमारा उद्धार टिका है – उसी के साथ खड़ा रहता या गिर जाता है। उसके पुनरुत्थान के बिना न धर्म ठहराया जाना होता और न परमेश्वर के साथ मेल। इस बात का इससे कोई विरोध नहीं है कि वह परादीस में गया और उसका आत्मा-प्राण नहीं मरा। यहाँ हम देखते हैं कि प्राण की अमरता और पुनरुत्थान एक दूसरे को न तो बाहर करते हैं और न एक दूसरे को रद्द करते हैं। इसलिए बाइबल के अर्थ में प्राण की अमरता पुनरुत्थान को निरर्थक नहीं बनाती। परन्तु यदि कोई यूनानी अर्थ में प्राण की अमरता पर विश्वास करता है, तो उसे वास्तव में किसी पुनरुत्थान

की आवश्यकता नहीं होती। यूनानी दर्शन की अमरता की धारणा का बाइबल की अमरता से कोई मेल नहीं है, जैसा कि आगे की तुलना दिखाती है।

4.4 बाइबल में और यूनानी दर्शन में अमरता

प्राण की अमरता की शिक्षा के विरुद्ध सबसे प्रबल तर्क के रूप में उसके अन्यजातीय मूल को सामने रखा जाता है। यूनानियों की अमरता की धारणा ने प्लेटो के यहाँ अपना सबसे प्रसिद्ध रूप पाया, यद्यपि प्राण की अमरता पर विश्वास यूनानियों से बहुत पहले भी था, उदाहरण के लिए बेबीलोनियों में।

क्या मसीही जगत ने यूनानियों की अमरता की धारणा को अपनाकर बाइबल की शिक्षा के साथ मिला दिया? दुःख की बात है कि हमें मानना पड़ता है कि वास्तव में ऐसा ही हुआ। यहाँ मुझे उन लोगों को सही ठहराना पड़ता है जो प्राण की अमरता को अस्वीकार करते हैं। इसलिए एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींचनी होगी और हर प्रकार के मिश्रण को अस्वीकार करना होगा।

यूनानी विचारधारा और बाइबल की अमरता की धारणा से जुड़ी मसीही पुनरुत्थान की आशा के बीच के विरोधों के आधार पर मैं स्पष्ट करूँगा कि मैं अन्यजातीय विचारधारा के साथ कोई समझौता नहीं करता। चार बिन्दुओं में दिए गए अन्तर (निश्चय ही ये सारे अन्तर नहीं हैं) यह दिखाने के लिए पर्याप्त होंगे कि ये दोनों धारणाएँ कितनी असंगत हैं। उनके आरम्भ-बिन्दु और अन्त-बिन्दु बिलकुल विपरीत हैं।

4.4.1 द्वैतवाद

यूनानी दर्शन मनुष्य को दो तत्वों में बाँटता है: देह और प्राण, या पदार्थ और आत्मा। बाइबल की दृष्टि से यह विभाजन तब भी स्वीकार्य होता,¹³⁹ यदि यह बराबर मूल्य वाला विभाजन होता। परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि यूनानी प्राण और आत्मिक-मानसिक तत्व को देह से ऊँचा मानते थे और देह को प्राण का कारागार समझते थे। इसलिए उनके लिए मृत्यु कारागार से मुक्ति थी, जिसके द्वारा प्राण सच्चे जीवन को पाता था। उनके यहाँ आत्मा और पदार्थ के बीच एक फूट थी।

बाइबल में, मनुष्य की सृष्टि से आरम्भ करके, देह कभी भी दूसरे दर्जे की नहीं है, क्योंकि वह परमेश्वर की सृष्टि है और इसलिए अच्छी है (तुलना करें खंड 3.3)। भले ही पाप ने मृत्यु उत्पन्न की हो, फिर भी यह बात बनी रहती है कि विश्वासी का शरीर वह मन्दिर है जिसमें स्वयं परमेश्वर वास करता है (1 कुरिन्थियों 6:19)। अपनी देह के साथ विश्वासी मसीह की देह का एक अंग है।

4.4.2 पुनरुत्थान

यूनानी देह के पुनरुत्थान को नहीं जानते थे, क्योंकि वह उनकी सोच में नहीं बैठता था (प्रेरितों के काम 17:32-34)। देह का पुनरुत्थान तो प्राण को फिर से देह के कारागार में डाल देता।

139. “भीतरी” और “बाहरी” मनुष्यत्व के रूप में।

देह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिससे प्राण को मुक्त किया जाना हो। यह पुनरुत्थान की वास्तविकता से स्पष्ट होता है। स्वयं परमेश्वर पुनरुत्थान में देह को फिर से बहाल करेगा।

जब मसीही यह विश्वास करते हैं कि आत्मा-प्राण सदा अस्तित्व में रहता है, तो वे इसके द्वारा पुनरुत्थान को नहीं छोड़ते। प्राण की अमरता, अपने बाइबल वाले अर्थ में, पुनरुत्थान का न तो स्थान लेती है और न उसे बाहर करती है। दोनों का एक साथ होना अनिवार्य है, और वह भी इस प्रकार कि एक के बिना दूसरा ही नहीं।

क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य के आत्मा-प्राण को अमर सृजा, इसलिए उसने व्यक्ति की पहचान बनाए रखने वाले, दैहिक पुनरुत्थान को संभव बनाया। इस प्रकार पुनरुत्थान उस शून्य से कोई नई सृष्टि नहीं है जिसमें मनुष्य अपनी मृत्यु पर गिर जाता है, बल्कि आत्मा-प्राण का देह के साथ फिर से मिलाया जाना है। परमेश्वर की इच्छा है कि हर एक मनुष्य की व्यक्तिगत पहचान पुनरुत्थान में बनी रहे और आगे चलती रहे।

इस प्रकार मृतकों का पुनरुत्थान प्राण की अमरता की पूर्व-शर्त है। यदि पुनरुत्थान न होता, तो प्राण की अमरता भी न होती। परमेश्वर की योजना मनुष्य को उसकी सम्पूर्णता में समेटती है। इसलिए देह के बिना प्राण का कोई अनन्त अस्तित्व नहीं हो सकता। परमेश्वर मनुष्य की एकता को फिर से बहाल करेगा।

पहले दिए गए स्रोतों से हम जानते हैं कि फरीसी प्राण की अमरता के क्रायल थे और पुनरुत्थान पर विश्वास करते थे। वे भी यूनानी (हेलेनिस्टिक) प्रभाव के सम्पर्क में थे, परन्तु पुनरुत्थान उनकी पुराने नियम पर आधारित विश्वास-धरोहर था। उनके लिए प्राण की अमरता और पुनरुत्थान के बीच के संबंध को पहचानना न कोई समस्या थी और न कोई विरोधाभास।

प्राण की अमरता और मृतकों का पुनरुत्थान एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं। बाइबल की शिक्षा के अनुसार वे एक साथ हैं (तुलना करें खंड 2.2); वे एक दूसरे पर निर्भर हैं। यह न तो कोई समझौता है और न मसीही शिक्षा और अन्यजातीय विचारों का कोई मिश्रित रूप।

4.4.3 प्राण की अमरता अन्तिम अवस्था नहीं है

यूनानियों के यहाँ प्राण मृत्यु के बाद अपनी अन्तिम नियति तक पहुँच जाता है; वह मनुष्य में “ईश्वरीय अंश” है, जो परमेश्वर के पास लौट जाता है। क्योंकि बाइबल के अनुसार पुनरुत्थान होता है, इसलिए प्राण मृत्यु के बाद अभी अपनी अन्तिम नियति तक नहीं पहुँचा है। बाइबल की दृष्टि से प्राण की अमरता की शिक्षा किसी अनन्त अन्तिम अवस्था का वर्णन नहीं करती। मृत्यु के बाद बात प्राण की एक अस्थायी अवस्था की है, जो केवल पुनरुत्थान तक बनी रहती है। मृत्यु ने एक समय-सीमित “अपवाद की स्थिति” उत्पन्न की है, जो यीशु मसीह के पुनरुत्थान के कारण समाप्त कर दी जाएगी।

4.4.4 व्यक्तित्व

यूनानी प्राण के पूर्व-अस्तित्व पर विश्वास करते थे: जिस प्रकार प्राण ईश्वरीय चिंगारी के रूप में मृत्यु के बाद परमेश्वर के पास लौट जाता है, उसी प्रकार वह मनुष्य के गर्भ में आने से पहले भी परमेश्वर में अस्तित्व रखता है। वे प्राण को एक अलौकिक “विश्व-प्राण” का अंश मानते थे। देह-रूपी कारागार को उतार देने के बाद वह प्राण अपनी व्यक्तिगतता फिर से त्याग देता था।

यहाँ बाइबल की प्राण-संबंधी धारणा से एक निर्णायक अन्तर है। बाइबल में प्राण परमेश्वर की सृष्टि के द्वारा हर मनुष्य के व्यक्तित्व का केन्द्र और अभिव्यक्ति है। प्राण एक व्यक्तिगत आत्मा-प्राण है और सदा ऐसा ही बना रहता है। उसका अस्तित्व व्यक्ति के इतिहास से पहले नहीं, बल्कि उसके साथ आरम्भ होता है, और फिर कभी समाप्त नहीं होता।

क्या इन गम्भीर अन्तरों के होते हुए भी यह आरोप बनाए रखा जा सकता है कि मसीही प्राण की अमरता की बात करते समय वही अर्थ लेते हैं जो यूनानी लेते थे? क्या उन्होंने बस अन्यजातीय विचार अपना लिए हैं? बताए गए अन्तरों से पर्याप्त रूप से स्पष्ट हो जाना चाहिए कि ऐसा नहीं है।

4.5 निष्कर्ष

आगे मैं तीन बिन्दुओं में सारांश देता हूँ कि मैं क्यों विश्वास करता हूँ कि हर मनुष्य का एक अनन्त अस्तित्व है, जिसमें बाइबल की शिक्षा के अनुसार एक अनन्त आत्मा-प्राण भी शामिल है।

- मनुष्य की आत्मा जीवन का वह आत्मा है जिसे स्वयं परमेश्वर ने फूँका (तुलना करें खंड 3.1)। क्योंकि यह आत्मा परमेश्वर से है और साथ ही मनुष्य की आत्मा को बनाता है, इसलिए मनुष्य का आत्मा-प्राण, स्वयं परमेश्वर के आत्मा के समान, अनन्त अस्तित्व रखता होगा। यह अस्तित्व केवल परमेश्वर की इच्छा पर आधारित है, जो सब कुछ जीवित रखता है।
- फिर हमने मृत्यु के बाद की अवस्था के बारे में पवित्रशास्त्र की गवाहियों की गहराई से जाँच की (खंड 2.1-10)। इससे स्पष्ट हुआ कि मनुष्य जब मरता है, तो उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता, बल्कि वह जीवित रहता है। हम इस तथ्य को कैसे समझाएँ? सबसे संगत व्याख्या यह है कि मनुष्य का आत्मा-प्राण देह की मृत्यु के अधीन नहीं है।
- जिन मनुष्यों के पास अनन्त जीवन है, उनके अतिरिक्त ऐसे भी हैं जिनके पास वह नहीं है। ये अविश्वासी हैं, जिनके बारे में प्रभु यीशु कहता है कि वे अनन्त यातना में जाएँगे। यह यातना, विश्वासियों के अनन्त आनन्द के समान, अन्तहीन, अर्थात् अनन्त है (मत्ती 18:8; 25:41, 46; 2 थिस्सलुनीकियों 1:9; इब्रानियों 6:2)। खोए हुए लोगों पर परमेश्वर का क्रोध सदा बना रहता है (यूहन्ना 3:36; तुलना करें खंड 6.2)।

रेने पाश (René Pache)¹⁴⁰ इस विषय का सटीक सारांश देते हैं:

मनुष्य पाता है

- अपने जन्म पर, अपने प्राण के साथ, अन्तहीन अस्तित्व
- अपने नए जन्म पर ... अनन्त जीवन
- अपने पुनरुत्थान पर, अपनी देह के साथ, अमरता

प्राण की अमरता मृत्यु की वास्तविकता से आँख चुराना नहीं है, बल्कि मानवीय अस्तित्व का एक मूलभूत अंग है, जैसा पवित्रशास्त्र उसका वर्णन करता है।

4.6 इस सत्य का महत्व

यह महत्वपूर्ण सत्य सुसमाचार के प्रचार के लिए बहुत महत्व रखता है। ठीक इसी तथ्य में कि हर मनुष्य का एक अमर प्राण है, लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने की प्रेरणा निहित है। पौलुस कहता है: “इसलिए प्रभु का भय जानकर हम लोगों को समझाते हैं” (2 कुरिन्थियों 5:11)। मसीह का न्याय-आसन अविश्वासी और पश्चाताप न करने वाले लोगों के लिए वह क्षण होगा, जब उन पर वह निर्णय सुनाया जाएगा जो उनके अनन्त भाग्य पर मुहर लगा देगा (रोमियों 14:10-12; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। इसलिए हर मसीही को सुसमाचार के प्रचार की आवश्यकता से भर जाना चाहिए: “क्योंकि यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!” (1 कुरिन्थियों 9:16)।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- प्राण की अमरता को अक्सर क्यों अस्वीकार किया जाता है?
- क्या यह अस्वीकार उचित है?
- प्राण की अमरता का बाइबल-आधारित अर्थ क्या है?
- अनन्त जीवन और प्राण की अमरता में क्या अन्तर है?
- किन मनुष्यों का प्राण अमर है?
- किन मनुष्यों के पास अनन्त जीवन है?
- क्या प्राण देह के बिना चेतना रख सकता है, और क्यों?
- क्या प्राण को देह की आवश्यकता है भी, और क्यों?
- प्राण की अमरता की यूनानी और बाइबल-आधारित समझ में क्या अन्तर है?

140. René Pache, *Das Jenseits*, Wuppertal (Verlag Sonne und Schild), 1957।

5 मृतकों का भविष्य

पिछले अध्यायों में स्पष्ट हुआ है कि मनुष्य, चाहे विश्वासी हो या नहीं, अपनी मृत्यु पर अभी अन्तिम अवस्था तक नहीं पहुँचता। मृत्यु के ठीक बाद की अवस्था, जिसे मनुष्य सचेत रूप से अनुभव करता है, सीमित अवधि की है। इसलिए यह एक मध्यवर्ती अवस्था है, अनन्तकाल के मार्ग पर एक बीच का पड़ाव। फिर भी मध्यवर्ती अवस्था के आरम्भ होते ही मृतकों को यह स्पष्ट हो जाता है कि वे अनन्तकाल कहाँ बिताएँगे, क्योंकि यह समय पहले से ही उस बात से चिह्नित है जो अनन्तकाल में उनका भाग होगी: एक ओर यातना और दूसरी ओर आनन्द।

विश्वासियों के साथ, परमेश्वर की सन्तान के साथ, परमेश्वर का एक महान उद्देश्य है। उसका संकल्प है कि उन्हें महिमा दे और अपने पुत्र के स्वरूप के समान बनाए (रोमियों 8:17, 29-30)। यह सब विश्वासियों पर लागू होता है – चाहे वे मसीह के पुनरागमन के समय जीवित हों, या पहले ही मर चुके हों। मृत्यु परमेश्वर के संकल्प को रोक नहीं सकती, क्योंकि मसीह के पुनरुत्थान में मृत्यु को निष्फल कर दिया गया है।

उन लोगों के साथ बात अलग है जो बिना मेल-मिलाप के और परमेश्वर के साथ शान्ति के बिना मरे हैं। उनका भी एक भविष्य है। वे मृत्यु में मिटा नहीं दिए जाते, क्योंकि उनका एक अमर आत्मा-प्राण है। परन्तु उनका भविष्य भयानक होगा। बाइबल के शब्दों में वे “खोए हुए” हैं। उनके लिए भी मध्यवर्ती अवस्था समाप्त होगी, और तब उन्हें सारी पृथ्वी के न्यायी (उत्पत्ति 18:25) के सामने निर्णय सुनाए जाने के लिए लाया जाएगा।

विश्वासियों और अविश्वासियों का भविष्य मूल रूप से भिन्न है। यह बात घटनाओं के समय-क्रम पर भी लागू होती है। इसलिए हम दो रेखाओं का अनुसरण करेंगे, ताकि देखें कि परमेश्वर विश्वासियों और अविश्वासियों के साथ अपने लक्ष्य तक कैसे पहुँचता है।

मध्यवर्ती अवस्था की पहचान यह है कि आत्मा-प्राण देह से अलग है। क्योंकि परमेश्वर सदा पूरे मनुष्य को ध्यान में रखता है, इसलिए यह अन्तिम अवस्था नहीं हो सकती। इसलिए पुनरुत्थान – मनुष्य की एकता की पुनर्स्थापना – वह अगली बड़ी घटना है जिसे मृतक अनुभव करेंगे।

5.1 पुनरुत्थान

पुनरुत्थान मृत्यु की अवस्था को, अर्थात् आत्मा-प्राण से देह के अलगाव को, समाप्त करता है। परमेश्वर का उद्देश्य, जिसकी नींव सृष्टि में है, यह है कि मनुष्य को उसकी सम्पूर्णता में, अर्थात् आत्मा, प्राण और देह से बने मनुष्य के रूप में (1 थिस्सलुनीकियों 5:23), फिर से बहाल करे।

पुनरुत्थान में यह पुनर्स्थापना शून्य से कोई नई सृष्टि नहीं है, मानो मनुष्य अपनी मृत्यु में पूरी तरह नष्ट और मिट गया हो। जब आदम अपनी मृत्यु के बाद फिर से मिट्टी बन गया, तो यह “पूरे” आदम पर नहीं, बल्कि केवल उसकी मरनहार देह पर लागू हुआ, जो पृथ्वी की मिट्टी से बनी थी। उसका आत्मा-प्राण मरनहार देह की तरह नष्ट नहीं हुआ। वह नष्ट हो भी नहीं सकता था, क्योंकि उसमें परमेश्वर का जीवन का श्वास था।

इस प्रकार मनुष्य का आत्मा-प्राण मृत्यु के बाद देह से अलग होकर जीवित रहता है, उस क्षण तक, जब परमेश्वर पुनरुत्थान में उसे फिर से उसकी देह के साथ जोड़ देगा (2 कुरिन्थियों 5:1-4)।

पुनरुत्थान तक आत्मा-प्राण का अस्तित्व बने रहना ही इस बात का कारण और पूर्व-शर्त है कि हर मनुष्य की व्यक्तिगत पहचान पुनरुत्थान में भी बनी रहती है। इसका अर्थ है कि पुनरुत्थान में मनुष्य ठीक वही मनुष्य होगा जो कभी पृथ्वी पर जीवित था। मनुष्य का व्यक्तित्व – जिसमें आत्मा, प्राण और देह शामिल हैं – जैसा परमेश्वर ने हर मनुष्य को दिया है (तुलना करें भजन संहिता 33:15; यशायाह 45:9; रोमियों 9:20-21), खो नहीं जाता। वह न तो बदला जाता है और न नए सिरे से सृजा जाता है, बल्कि बना रहता है। अतः कब्र से कोई दूसरा मनुष्य नहीं निकलेगा, यद्यपि देह नई होगी। क्या यह अद्भुत नहीं कि परमेश्वर के लिए हर मनुष्य एक व्यक्तित्व के रूप में कितना मूल्यवान है!?

इसका प्रमाण प्रभु यीशु मसीह का पुनरुत्थान है। जो प्रभु मृतकों में से जी उठा, वह वही था जो क्रूस पर मरा। मनुष्य के रूप में उसकी मृत्यु भी उसके आत्मा-प्राण का देह से अलग होना थी। वह – अर्थात् उसका आत्मा-प्राण (प्रेरितों के काम 2:27, 31) – अपनी मृत्यु पर परादीस में, स्वर्ग में अपने पिता के पास गया (लूका 23:43, 46)। उसकी देह तीन दिन तक कब्र में रही। इसलिए इसमें कोई सन्देह नहीं था कि वह वास्तव में मर गया था। उसके पुनरुत्थान में यह अलगाव फिर से समाप्त कर दिया गया, ताकि अब वह पुनरुत्थान में मनुष्य के रूप में बहुत से भाइयों में पहिलौठे के रूप में प्रथम स्थान ग्रहण करे (रोमियों 8:29)।

फिर भी देह के संबंध में पुनरुत्थान एक नई सृष्टि के समान है। केवल परमेश्वर, जो जीवन और मृत्यु का प्रभु है, ऐसा कर सकता है। यह सृष्टि के समान है: “क्योंकि उसने कहा, और हो गया; उसने आज्ञा दी, और वह स्थिर हो गया” (भजन संहिता 33:9)। यह परमेश्वर ही है, “जो मरे हुएों को जिलाता है और जो बातें हैं ही नहीं, उन्हें ऐसे बुलाता है मानो वे हों” (रोमियों 4:17)। केवल वही नष्ट हुई देह को फिर से उन विशेषताओं के साथ उत्पन्न कर सकता है जो हर एक मनुष्य की अपनी थीं। इसमें परमेश्वर की सामर्थ्य की महानता और उसकी शक्ति का प्रभाव प्रकट होता है (इफिसियों 1:19-20)।

5.1.1 पुराने नियम में पुनरुत्थान

मृतकों का पुनरुत्थान पुराने नियम के समय में भी लोगों की आशा था। इसी प्रकार इब्राहीम को परमेश्वर की आज्ञा मानने और अपने एकलौते पुत्र को बलिदान करने का साहस मिला, क्योंकि “उसने विचार किया कि

परमेश्वर मरे हुएों में से भी जिला सकता है” (इब्रानियों 11:19; तुलना करें उत्पत्ति 22; रोमियों 4:17)। यशायाह कहता है: “तेरे मरे हुए जी उठेंगे, मेरी लोथें फिर उठ खड़ी होंगी। हे मिट्टी में पड़े रहनेवालो, जागो और जयजयकार करो” (यशायाह 26:19)। दानियेल कहता है: “और जो भूमि की मिट्टी में सोए रहेंगे, उनमें से बहुत से जाग उठेंगे: कितने तो अनन्त जीवन के लिए, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए” (दानियेल 12:2)। यहजकेल कहता है: “प्रभु यहोवा यों कहता है: देखो, मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और हे मेरी प्रजा, तुम को तुम्हारी कब्रों से निकालूँगा, और इस्राएल के देश में पहुँचा दूँगा” (यहेजकेल 37:12; पद 5 और 6 भी देखें)।

पुनरुत्थान (चाहे वह लोगों का राष्ट्रीय पुनरुत्थान हो या देह का) विश्वासी इस्राएली की विश्वास-धरोहर था (इब्रानियों 6:2; प्रेरितों के काम 26:6-8; अय्यूब 19:25-27)। इस पुनरुत्थान की आशा के लिए – सदूकियों के विपरीत – विशेष रूप से फरीसी जाने जाते थे, जो विश्वास करते थे कि मसीहा के आगमन पर, जब वह अपना राज्य स्थापित करेगा, मृतकों का पुनरुत्थान होगा (प्रेरितों के काम 23:6)।

परन्तु पुनरुत्थान की वास्तविकता यीशु मसीह के पुनरुत्थान के साथ ही ठोस रूप लेती है, क्योंकि उसका पुनरुत्थान ही मृतकों के पुनरुत्थान का आधार है: “क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुएों का पुनरुत्थान भी आया” (1 कुरिन्थियों 15:21)। क्योंकि वह मनुष्य के रूप में मरा और मनुष्य के रूप में जी उठा, इसलिए मनुष्य का पुनरुत्थान सुनिश्चित है। यह विशेष रूप से विश्वासियों पर लागू होता है, क्योंकि वे जी उठे हुए मसीह के साथ जीवन में भी और मृत्यु में भी जुड़े हुए हैं (रोमियों 14:8-9)।

परन्तु पुनरुत्थान स्पष्ट रूप से केवल छुड़ाए हुए लोगों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह हर मनुष्य का भाग है, उसका भी जिसने विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 5:29; प्रेरितों के काम 24:15)।¹⁴¹ परन्तु धर्मियों का पुनरुत्थान और अधर्मियों का पुनरुत्थान समय के संबंध में भी और स्वरूप के संबंध में भी मूल रूप से एक दूसरे से भिन्न हैं। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से सिखाता है कि एक पहला पुनरुत्थान है, जीवन का पुनरुत्थान, जो केवल छुड़ाए हुए लोगों से संबंधित है, और “शेष” लोगों के लिए एक अन्तिम पुनरुत्थान, न्याय का पुनरुत्थान (प्रकाशितवाक्य 20:5)। इसलिए “अन्तिम दिन” (यूहन्ना 11:24) कोई “सामान्य” पुनरुत्थान नहीं होगा, जिसमें सब मनुष्य बिना किसी अपवाद के एक साथ जी उठेंगे।

5.1.2 जीवन का पुनरुत्थान

जीवन का पुनरुत्थान विश्वासियों के पुनरुत्थान को दर्शाता है, क्योंकि वह परमेश्वर के पुत्र के पुनरुत्थान-जीवन के द्वारा होता है और उसी से चिह्नित है (रोमियों 6:9-10)। उसने मरे हुए लाजर की कब्र पर कहा: “पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ” (यूहन्ना 11:25)। वह स्वयं व्यक्ति के रूप में पुनरुत्थान और जीवन है। उसके बिना न पुनरुत्थान होता और न मृत्यु के पार जीवन! विश्वासी जी उठेंगे, क्योंकि प्रभु यीशु का जीवन उनका अपना जीवन है।

141. परन्तु केवल विश्वासियों के बारे में ही कहा गया है कि वे जिलाए (जीवित किए) जाते हैं।

मरे हुए विश्वासियों के जी उठने का एक और कारण यह है कि पवित्र आत्मा उनमें वास करता है: “और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुआ में से जिलाया तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह को मरे हुआ में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने उस आत्मा के कारण जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा” (रोमियों 8:11)।

वही आत्मा, जो यीशु में था (कुलुस्सियों 2:9; इब्रानियों 9:14) और जिसने उसके जी उठने पर अपनी सामर्थ्य प्रकट की (रोमियों 1:4; 1 पतरस 3:18), हम में भी वास करता है (1 कुरिन्थियों 6:19; 1 थिस्सलुनीकियों 4:8; 1 यूहन्ना 4:13)। इसलिए जीवन का आत्मा (रोमियों 8:2) दिवंगत विश्वासियों के जिलाए जाने में भी कार्य करेगा। पवित्र आत्मा बयाना है और इस प्रकार इस बात की गारंटी है कि विश्वासी जिलाए जाएँगे (2 कुरिन्थियों 5:5) और जब प्रभु आएगा तो पीछे नहीं रह जाएँगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17)।

पुनरुत्थान और बदल जाने में विश्वासियों पर छुटकारे का कार्य पूरा होगा (रोमियों 8:23; फिलिप्पियों 1:6; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23)। जब प्रभु यीशु विश्वासियों के लिए उद्धारकर्ता के रूप में फिर आएगा (1 थिस्सलुनीकियों 1:10; 4:15-16; यूहन्ना 14:3), ताकि हमारी दीनता की देह का रूप बदल दे, तब हम छुड़ाए हुए पापियों के रूप में स्वर्गीय का स्वरूप भी धारण करेंगे (फिलिप्पियों 3:20-21; तीतुस 2:13; 1 कुरिन्थियों 15:49)। वह अभी से हमारा उद्धारकर्ता (बचानेवाला; यूहन्ना 4:42) है, क्योंकि हमारे पाप क्षमा हो चुके हैं, और वह हमें परमेश्वर के पास ले आया है (1 पतरस 1:19; 2:24; 3:18)। परन्तु प्रभु के आगमन से पहले हमारी देह को अभी इस उद्धार में भाग नहीं मिला है और वह पाप के कारण अभी मरी हुई है (रोमियों 8:10; तुलना करें 6:12)। विश्वासी की देह अभी भी मरनहारता के अधीन है। इसलिए हम, जो जीवित हैं, अपनी देह के लिए उसे उद्धारकर्ता के रूप में प्रतीक्षा करते हैं।

यह बात मसीह में सो गए लोगों पर भी लागू होती है, जिन पर उद्धारकर्ता की वही प्रभावशाली सामर्थ्य उनके जिलाए जाने में अजेय रूप से प्रकट होगी। तब वह भी वास्तविकता बन जाएगा जो परमेश्वर की युक्ति में बहुत पहले से पूरा हुआ देखा जाता है। हम महिमा पाए हुए होंगे, और मसीह भाइयों के बीच पहिलौठे का स्थान ग्रहण करेगा (रोमियों 8:29-30)। वह एक नई सृष्टि का सिर है (कुलुस्सियों 1:18), जो उसके पुनरुत्थान का फल है।

जीवन के पुनरुत्थान को प्रेरित यूहन्ना प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में “पहला” पुनरुत्थान कहता है: “यह पहला पुनरुत्थान है। धन्य और पवित्र वह है, जो पहले पुनरुत्थान में भागी है! ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे” (प्रकाशितवाक्य 20:5-6)।

जो पहले पुनरुत्थान में भागी है, उसे धन्य कहा गया है, क्योंकि नरक में दूसरी, अनन्त मृत्यु का उस पर कोई अधिकार नहीं है। इसलिए पहले पुनरुत्थान में अधर्मी भाग नहीं लेंगे, क्योंकि उन्हें धन्य और पवित्र नहीं कहा जा सकता। यह धर्मियों का पुनरुत्थान है, जिसमें उन्हें उनके धर्मों का प्रतिफल दिया जाएगा

(लूका 14:14; 20:35-36; प्रेरितों के काम 24:15)। प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 15 में मृतकों के पुनरुत्थान पर और विशेष रूप से विश्वासियों के पुनरुत्थान पर विस्तार से विचार करता है। इस विवेचन का कारण यह था कि कुरिन्थुस में कुछ लोग कहते थे कि मृतकों का पुनरुत्थान है ही नहीं (पद 12)। उन्होंने यह अनदेखा कर दिया था कि इसका अर्थ यह होता कि मसीह भी मृतकों में से नहीं जी उठ सकता था – और तब उनका विश्वास व्यर्थ होता। जब पौलुस ने मसीह के पुनरुत्थान का मसीही विश्वास की नींव के रूप में बचाव कर लिया और झूठे शिक्षकों का खंडन कर दिया, तब उसने आगे पुनरुत्थान के स्वरूप को समझाया।

“परन्तु सचमुच मसीह मरे हुआं में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें पहला फल हुआ” (1 कुरिन्थियों 15:20)। मसीह को अपने लोगों के पुनरुत्थान के कर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनके साथ वह सदा के लिए जुड़ा हुआ है। वह एक नए परिवार का सिर है (रोमियों 5:12-21)। वह उनका अग्रगामी और मार्ग तैयार करनेवाला है, क्योंकि उसने उनके लिए मृत्यु से जीवन में जाने का द्वार खोल दिया है। अब वह मृत्यु के उस पार है, और मृत्यु उस पर फिर प्रभुता नहीं करती (रोमियों 6:9)।

“पहला फल” शब्द एक प्रमुख स्थान को व्यक्त करता है। समय की दृष्टि से वह पुनरुत्थान के एक विशेष प्रकार का पहला है। क्योंकि उसके पुनरुत्थान से पहले भी ऐसे मनुष्य थे जो जिलाए गए थे। परन्तु उन्हें पुनरुत्थान की देह नहीं मिली, बल्कि वे बाद में फिर से मर गए। उसके पुनरुत्थान में मृत्यु अन्तिम रूप से पराजित हो गई है। जब वह विश्वासियों को जिलाएगा, तो वे फिर कभी नहीं मरेंगे।

प्रभु यीशु के प्रमुख स्थान का वर्णन पौलुस एक और स्थान पर भी करता है: “और वही ... मरे हुआं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा है, कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे” (कुलुस्सियों 1:18)। उसका जिलाया जाना मृतकों “में से” हुआ (मरकुस 9:9; 1 पतरस 1:3, 21)। विश्वासी भी मृतकों “में से” बाहर निकालकर जिलाए जाएँगे, अर्थात् दूसरे – अविश्वासी – अभी कुछ समय के लिए पीछे रह जाएँगे। ये पहले पुनरुत्थान में भाग नहीं लेते, बल्कि “अन्तिम” पुनरुत्थान में ही अपनी कब्रों से बुलाए जाएँगे। इसलिए पवित्रशास्त्र “मृतकों के पुनरुत्थान” को “मृतकों [में] से [बाहर निकालकर] पुनरुत्थान” से स्पष्ट रूप से अलग करता है (लूका 20:35; प्रेरितों के काम 4:2; फिलिप्पियों 3:11)।

एक मनुष्य, आदम, के द्वारा मृत्यु संसार में आई और हर मनुष्य में फैल गई, जिससे सब मरते हैं (रोमियों 5:12, 21)। परन्तु मसीह में मृत्यु निष्फल कर दी जाती है, क्योंकि उसने मनुष्य के रूप में उस मृत्यु पर, जिसका स्वाद उसे पहले स्वयं चखना पड़ा (इब्रानियों 2:9), अपने पुनरुत्थान के द्वारा विजय पाई। मृतकों में से मसीह का पुनरुत्थान मृत्यु को पराजित करने का एकमात्र मार्ग था।

1 कुरिन्थियों 15 केवल विश्वासियों के पुनरुत्थान के बारे में है। बात उनकी है जो मसीह के हैं (पद 23), अर्थात् जो उसके हैं, जो उसमें हैं (पद 22) और जो दूसरे मनुष्य की जीवन देनेवाली सामर्थ्य का अनुभव करेंगे (पद 45-47)। परन्तु अविश्वासी भी जिलाए जाएँगे। उनका मसीह से कोई संबंध नहीं है। वह उन पर जी उठे हुए के रूप में अपनी सामर्थ्य का प्रयोग करेगा, जब वह उन्हें न्याय के लिए कब्रों से बुलाएगा (यूहन्ना

5:29)। मनुष्य के पुत्र की सामर्थ्य का यह प्रकटीकरण पहली सृष्टि के साथ परमेश्वर के मार्गों की समाप्ति का भाग है (प्रकाशितवाक्य 21:4)। अन्त में वह अन्तिम शत्रु, मृत्यु, को भी सदा के लिए दूर कर देगा।

इस घटना में अधर्मियों का पुनरुत्थान भी शामिल है, क्योंकि मृत्यु के दूर किए जाने में उनकी (दैहिक) मृत्यु भी समाप्त हो जाती है। इस प्रकार 1 कुरिन्थियों 15 में अविश्वासियों का पुनरुत्थान, यद्यपि सीधे उसका उल्लेख नहीं है, फिर भी उसमें सम्मिलित है। यह पुनरुत्थान एक आवश्यक घटना के रूप में पृष्ठभूमि में रहता है। अविश्वासियों का मृत्यु पर प्रभु यीशु की उस विजय में कोई भाग नहीं है, जिसका इस अध्याय में इतना उत्कृष्ट वर्णन किया गया है।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- वे कारण बताइए जिनके कारण विश्वासी “जीवन के पुनरुत्थान” में भागी होते हैं!
- इसे अविश्वासियों के पुनरुत्थान से अलग करके समझाइए!

5.1.3 पुनरुत्थान में देह

पुनरुत्थान की देह के स्वरूप का वर्णन करना इसलिए कठिन है, क्योंकि कोई ऐसी तुलनीय वस्तु नहीं है जिसके सहारे हम इस नई देह की कल्पना कर सकें। हम केवल उस देह को जानते हैं जो अभी हमारे पास है। वह “मांस और लहू” है, वह एक स्वाभाविक देह है, जो पृथ्वी की मिट्टी से बनी है। पाप के कारण वह मरनहारता और सड़ने के अधीन है।

पौलुस कहता है कि “मांस और लहू” परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते (1 कुरिन्थियों 15:50)। इसलिए पृथ्वी की देह का बदल जाना आवश्यक है। परमेश्वर विश्वासियों को – सो गए लोगों को जिलाए जाने में, जीवितों को बदल जाने में – एक स्वर्गीय देह देता है (1 कुरिन्थियों 15:40, 48-50)। यह देह स्वर्गीय जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप होगी।

अतः निस्सन्देह वह वर्तमान देह से भिन्न देह होगी। फिर भी वह वर्तमान देह से समानता रखेगी। एक निरन्तरता होगी, जिसमें मनुष्य का रूप बना रहेगा। जी उठे हुए प्रभु के बारे में सोचिए। चेलों ने उसे पहचान लिया। यह वही था जिसके पीछे वे चले थे। उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के घाव भी अभी दिखाई दे रहे थे।

142

यह समानता पौलुस के यहाँ भी व्यक्त होती है। वह कहता है कि हमारी मरनहार देहें जिलाई जाएँगी। जो मरनहार देह अभी हमारे पास है, वह फिर से जीवित की जाएगी और पुनरुत्थान में अमरता पाएगी।

उसी प्रकार पवित्रशास्त्र जोर देता है कि वह एक भिन्न देह होगी। पुनरुत्थान की बीज बोने से तुलना से स्पष्ट होता है कि पृथ्वी में से कुछ और उगता है, वह नहीं जो बीज के रूप में पृथ्वी में डाला गया था। यह

142. यह निश्चय ही एक अपवाद होगा, क्योंकि ये उसके छुटकारे के कार्य के घाव हैं (तुलना करें वह मेम्ना जो मानो वध किया हुआ है, या मृत्यु के घाव के साथ; प्रकाशितवाक्य 5)। मेरी समझ में विश्वासियों की पुनरुत्थान की देह पर घावों के चिह्न नहीं होंगे।

चित्र भी फिर से स्पष्ट करता है कि एक समानता और निरन्तरता है: बीज और उससे निकलनेवाला फल “मूल रूप में” एक ही हैं, क्योंकि वे एक ही पौधा हैं।

हमें इन दोनों पहलुओं (समानता और भिन्नता) को ध्यान में रखना चाहिए। वह व्यक्ति, जो उस देह से बँधा है जो अभी हमारे पास है, बना रहेगा और उसी रूप में पहचाना जा सकेगा। परन्तु देह का प्रकार पूरी तरह नया होगा। इसकी तुलना पुरानी और नई सृष्टि से की जा सकती है। नई सृष्टि भी पुरानी सृष्टि के समान होगी, यद्यपि साथ ही वह पूरी तरह नई होगी (प्रकाशितवाक्य 21:1)।

इस नई देह के संबंध में सबसे बड़ी बात यह तथ्य है कि हम उसके, परमेश्वर के पुत्र के, समान होंगे (1 यूहन्ना 3:2)। पौलुस कहता है: “वह महिमा के साथ जी उठता है” (1 कुरिन्थियों 15:43)। सब कुछ मसीह की महिमा की छाप धारण करेगा। यह वह महिमा है जो उसने तब पाई, जब वह स्वर्ग पर चढ़ा और महिमाम्वित हुआ। प्रभु के समान होना उसकी बाहरी महिमा से संबंधित है। इस प्रकार जब हम उसके साथ प्रकट होंगे, तब हम **स्वर्गीय** का स्वरूप धारण करेंगे (1 कुरिन्थियों 15:49; फिलिप्पियों 3:20-21)। इसलिए जिन्होंने विश्वास किया है, उनमें वह अचम्बे का कारण होगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)।

क्योंकि मृत्यु पराजित हो चुकी है, इसलिए नई देह फिर मरनहार नहीं होगी (1 कुरिन्थियों 15:54-55)। मरी हुई देह के बारे में कहा गया है कि वह **अविनाश** को पहिन लेगी। मरी हुई देह नष्ट हो चुकी है। नई देह के साथ ऐसा फिर कभी नहीं होगा। जीवितों की उस देह के बारे में, जो अभी नहीं मरी, कहा गया है कि वह अमरता को पहिन लेगी। मृत्यु फिर न रहेगी (प्रकाशितवाक्य 21:4)!

नई देह की ये विशेषताएँ, अविनाश और अमरता, भी जी उठे हुए परमेश्वर के पुत्र की विशेषताएँ हैं: “क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह मरे हुएों में से जी उठकर फिर मरने का नहीं” (रोमियों 6:9)। प्रभु यीशु कहता है कि धर्मी पुनरुत्थान में फिर नहीं मरेगे। वे स्वर्गदूतों के समान हैं, जो अमर हैं (लूका 20:36)।

इसी संदर्भ में प्रभु यह भी कहता है कि पुनरुत्थान में कोई वैवाहिक संबंध और इसलिए कोई सन्तानोत्पत्ति भी नहीं होगी। इसका अर्थ यह नहीं कि लिंगों का भेद भी मिट जाएगा। यह भेद इस रूप में बना रहता है कि परमेश्वर मनुष्य के व्यक्तित्व को बनाए रखता है, जिसका एक भाग पुरुष और स्त्री होना भी है।

स्वाभाविक देह पृथ्वी के लिए सृजी गई है। इसलिए वह पृथ्वी से अपने संबंध के द्वारा ढली और निर्धारित है। वह पृथ्वी के नियमों और जीवन की परिस्थितियों के अधीन थी। परन्तु पुनरुत्थान में हमें एक “आत्मिक देह” (1 कुरिन्थियों 15:44) मिलेगी। वह पृथ्वी की परिस्थितियों के अधीन नहीं होगी। यह पुनरुत्थान में प्रभु यीशु की देह से स्पष्ट होता है। वह स्थान और समय से बँधी नहीं थी। प्रभु बन्द द्वारों में से होकर आया। चेलों के अनुमान के अनुसार यह केवल कोई आत्मा हो सकता था। परन्तु प्रभु कहता है कि आत्मा में मांस और हड्डियोंवाली देह के लक्षण नहीं होते। चले उसे छू सकते थे, और उसने भुनी हुई मछली भी खाई (लूका 24:36-43)।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- पुनरुत्थान की देह की कुछ विशेषताएँ गिनाइए!

5.1.4 पुनरुत्थान का समय

अतः दिनों के अन्त में सब मृतकों का कोई सामान्य, एक साथ होनेवाला पुनरुत्थान नहीं होगा। पवित्रशास्त्र धर्मियों के पुनरुत्थान के समय को अधर्मियों के पुनरुत्थान के समय से स्पष्ट रूप से अलग करता है। इसके पक्ष में यह तथ्य ही बोलता है कि विश्वासियों का मृतकों “में से” पुनरुत्थान होता है, जिसमें शेष मृतक अभी नहीं जिलाए जाते। “पहला” पुनरुत्थान (प्रकाशितवाक्य 20:5) नाम भी स्पष्ट करता है कि बाद में एक “दूसरा” या “अन्तिम” पुनरुत्थान भी होगा।

यह धारणा कि दिनों के अन्त में केवल एक सामान्य पुनरुत्थान होगा और उसके बाद न्याय, प्रभु यीशु के इन शब्दों से निकाली जाती है: “इससे अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, वे उसका शब्द सुनकर निकलेंगे: जिन्होंने भलाई की है, वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए, और जिन्होंने बुराई की है, वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए” (यूहन्ना 5:28-29)।

“घड़ी” (समय) शब्द से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि केवल एक सामान्य पुनरुत्थान हो सकता है। ऐसा करते हुए घड़ी को एक समय-बिन्दु समझा जाता है। परन्तु यहाँ हमें एक ऐसी समय-अवधि के बारे में सोचना होगा जो लम्बे समय तक फैली हुई है। इसी अर्थ में यूहन्ना अक्सर एक “घड़ी” की बात करता है (यूहन्ना 4:21, 23; 5:25; 16:2, 25; 1 यूहन्ना 2:18; प्रकाशितवाक्य 3:10; 14:7; 17:12)। इन पदों से स्पष्ट होता है कि घड़ी किसी समय-बिन्दु या 60 मिनट की किसी समय-इकाई को नहीं, बल्कि एक युग को दर्शाती है, जो एक ओर एक घंटे से कहीं अधिक लम्बा चलता है और दूसरी ओर कुछ विशेष लक्षणों और घटनाओं से चिह्नित होता है।

यूहन्ना 5:25 में प्रभु एक ऐसी घड़ी की बात करता है जिसे 60 मिनट की अवधि तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि जिसमें अनुग्रह का वह समय शामिल है जो अब 2000 वर्षों से चल रहा है, जिसमें परमेश्वर के पुत्र का शब्द लोगों को उनकी आत्मिक मृत्यु में से बाहर बुलाता है। पुनरुत्थान के संबंध में “घड़ी” कम से कम 1000 वर्षों की अवधि तक फैली हुई है। घड़ी का यह लाक्षणिक अर्थ “अन्तिम दिन” (यूहन्ना 6:39 से आगे; 11:24) पर भी लागू होता है। यह दिन संसार के अन्त को चिह्नित करनेवाला कोई समय-बिन्दु नहीं है, बल्कि घड़ी के समान एक अवधि, एक युग है, जिसमें विभिन्न पुनरुत्थान होंगे।

जीवन का पुनरुत्थान, अर्थात् विश्वासियों का पुनरुत्थान, तब होता है जब मसीह फिर आता है। यह परमेश्वर द्वारा ठहराए गए क्रम का भाग है: “परन्तु हर एक अपनी-अपनी बारी से: पहला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग” (1 कुरिन्थियों 15:23)। यहाँ धर्मियों के पुनरुत्थान के समय को मसीह के आगमन के समय के बराबर रखा गया है। इससे समय ठीक-ठीक निर्धारित हो जाता है। मसीह का आगमन (यूनानी: *parousia*) फिर दो अलग-अलग समयों पर होता है। इसलिए “पहले” पुनरुत्थान के भी दो या

तीन चरण हैं: 1. मसीह, 2. उठा लिए जाने (रैप्चर) के समय विश्वासी, 3. शान्ति के राज्य के आरम्भ में शहीद।

पहले प्रभु यीशु फिर आएगा, ताकि सब जीवित विश्वासियों को अपने पास स्वर्ग में ले जाए (यूहन्ना 17:24; फिलिप्पियों 3:20-21), पिता के घर में (यूहन्ना 14:2-3)। यह विश्वासियों के उठा लिए जाने के लिए उसका आना है, जिसमें मसीह में मरे हुए जिलाए जाएँगे और जीवित विश्वासी बदल दिए जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:51-52; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17)। पहला आगमन केवल विश्वासियों के लिए है। तब वह सब मनुष्यों को दिखाई देते हुए नहीं आता, जैसा कि बाद के किसी समय पर होगा।

मसीह का पहला आगमन विश्वासियों की आशा है। वे स्वर्ग से परमेश्वर के पुत्र की प्रतीक्षा करते हैं, जो उन्हें आनेवाले क्रोध से बचाएगा, जो पृथ्वी पर तब आएगा जब वे स्वर्ग में होंगे (1 थिस्सलुनीकियों 1:10)। इस पुनरुत्थान में पुराने नियम के समय के विश्वासी भी शामिल होंगे (इब्रानियों 11:35, 39-40)। पुनरुत्थान के बाद वे कलीसिया के विश्वासियों के साथ उन 24 प्राचीनों में देखे जाते हैं, जो स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन और मेन्ने को घेरे होंगे (प्रकाशितवाक्य 4:4 से आगे)। जब परमेश्वर का क्रोध और न्याय पृथ्वी पर आएगा, तब जी उठे हुए लोग स्वर्ग में होंगे (प्रकाशितवाक्य 6-19)।

तब प्रभु यीशु मसीह सब मनुष्यों को दिखाई देते हुए दूसरी बार सामर्थ्य और महिमा के साथ प्रकट होगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-8; इब्रानियों 1:6; प्रकाशितवाक्य 1:7; 19:11-16)। तब भी विश्वासी जी उठेंगे। ये वे हैं जो उठा लिए जाने के बाद मरे। यूहन्ना उनके बारे में कहता है कि उनके सिर परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण काटे गए और उन्होंने उस पशु की पूजा नहीं की; वे जिलाए जाएँगे (प्रकाशितवाक्य 20:4)।

इसलिए पहला पुनरुत्थान दो चरणों में होता है:

- पहले कलीसिया और पुराने नियम के विश्वासी
- फिर वे विश्वासी, जो उठा लिए जाने के बाद से शान्ति के राज्य तक मरे

पहले पुनरुत्थान के विश्वासी महिमामय देहों के साथ स्वर्ग में पहुँचाए जाएँगे। वहाँ वे सदा वास करेंगे। उन्हें एक स्वर्गीय देह मिलती है, जिसके साथ उनका अनन्त घर पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में है।

जिलाए गए विश्वासियों के लिए फिर कोई न्याय नहीं होगा। उनके लिए न्याय का प्रश्न गुलगुता के क्रूस पर सुलझा दिया गया। यह भी समझ में आनेवाली बात है कि जिन्हें पहले ही सिद्ध बना दिया गया है और जो महिमा की देह धारण किए हुए हैं, उनका न्याय फिर से इस सम्भावना के साथ नहीं किया जाएगा कि वे फिर भी खो जाएँ।

फिर भी विश्वासी मसीह के न्याय-आसन के सामने खड़े होंगे (2 कुरिन्थियों 5:10)। परन्तु तब बात उद्धार के प्रश्न की नहीं होगी। वहाँ बात उनके कामों के मूल्यांकन और प्रतिफल की होगी (1 कुरिन्थियों 3:12-15)। वहाँ वे अपने जीवन को परमेश्वर की दृष्टि से देखेंगे और परखेंगे, ताकि वे वैसे ही पहचानें जैसे

वे पहचाने गए हैं (1 कुरिन्थियों 13:12)। वे उस अनुग्रह को पहचानेंगे और उसकी महिमा करेंगे, जो उन्हें सुरक्षित रूप से लक्ष्य तक ले आया।

5.1.5 न्याय के लिए पुनरुत्थान

अधर्मियों के पुनरुत्थान के बारे में (प्रेरितों के काम 24:15) पवित्रशास्त्र थोड़ा ही कहता है। जीवन के पुनरुत्थान से तुलना करते हुए कुछ बातें पहले ही सामने आ चुकी हैं। पवित्रशास्त्र इस पुनरुत्थान के बारे में एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में बात करता है, जो होगी, और जिसके द्वारा परमेश्वर पहली सृष्टि के इतिहास को समाप्ति तक पहुँचाएगा।

यह पुनरुत्थान एक ही क्षण में होगा और उन सब मृतकों को समेटेगा जो पहले पुनरुत्थान में भागी नहीं थे, अर्थात् जो शेष रह गए (प्रकाशितवाक्य 20:5)। केवल इसी अर्थ में अन्तिम दिन के एक सामान्य पुनरुत्थान की बात की जा सकती है।

प्रभु यीशु अधर्मियों को उनकी कब्रों से बुलाएगा (यूहन्ना 5:28-29)। इस पुनरुत्थान को वह “न्याय का पुनरुत्थान” कहता है, क्योंकि यह न्याय से चिह्नित है। अधर्मी अपने जीवन-काल में ही दोषी ठहर चुके हैं, क्योंकि उन्होंने विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 3:18)। अपने पुनरुत्थान के बाद वे अनन्त न्याय में जाते हैं, जो बड़े श्वेत सिंहासन के न्याय-सत्र से आरम्भ होता है (प्रकाशितवाक्य 20:11)।

प्रेरित यूहन्ना प्रकाशितवाक्य 20:11-15 में इस घटना के बारे में बात करता है। वह शेष मृतकों की बात करता है (प्रकाशितवाक्य 20:5), जो तब तक जीवित नहीं होते जब तक मसीह के राज्य के 1000 वर्ष पूरे न हो जाएँ। इससे अन्तिम पुनरुत्थान का समय भी ठीक-ठीक निर्धारित हो जाता है। इस राज्य-काल के अन्त में (1 कुरिन्थियों 15:24) मृतक बुलाए जाएँगे। वे जी उठेंगे, ताकि जीवितों और मृतकों के न्यायी के सामने लाए जाएँ (इब्रानियों 12:23; रोमियों 2:16; 2 तीमुथियुस 4:1)।

यूहन्ना इस भावी घटना का प्रभावशाली वर्णन करता है: वह पहले एक बड़ा श्वेत सिंहासन देखता है। यह तुरन्त सर्वोच्च अधिकार और पूर्ण धार्मिकता और पवित्रता का आभास देता है (1 यूहन्ना 1:5)। फिर वह उसे देखता है जो सिंहासन पर बैठा है। इस व्यक्ति के सामने से आकाश और पृथ्वी भाग जाते हैं। यह पहली सृष्टि का अन्त है (1 कुरिन्थियों 15:24)। पृथ्वी और आकाश भाग जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 20:11) और जलकर नष्ट कर दिए जाते हैं (2 पतरस 3:7, 11)। अब पुरानी सृष्टि को नई सृष्टि के लिए स्थान छोड़ना होगा। वह कैसा व्यक्ति होगा जो ऐसी घटना को जन्म देता है! और जो मनुष्य इस व्यक्ति के सामने खड़े होंगे, वे क्या अनुभव करेंगे!?

सिंहासन पर बैठा हुआ कौन है? वह प्रभु यीशु मसीह है, मनुष्य का पुत्र, जिसे परमेश्वर पिता ने सारा न्याय सौंप दिया है (यूहन्ना 5:22, 27; प्रेरितों के काम 10:42; 17:31; 2 कुरिन्थियों 5:10)। न्यायी एक मनुष्य है, जो स्वयं पृथ्वी पर रहा और मनुष्य होने को पूरी तरह जानता है। इसलिए कोई उस पर यह आरोप नहीं लगा सकेगा कि वह किसी मानवीय परिस्थिति को अनुभव के आधार पर नहीं परख सकता।

फिर यूहन्ना की दृष्टि आगे बढ़ती है, और वह सिंहासन के सामने मनुष्यों की एक बड़ी भीड़ खड़ी देखता है। ये वे सब अविश्वासी मृतक हैं जो कभी पृथ्वी पर रहे। एक को भी भुलाया नहीं गया। छोटे से छोटे से लेकर बड़े से बड़े तक, सब वहाँ उपस्थित होंगे। सच्चाई की इस घड़ी में कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा।

यह ध्यान देने योग्य है कि इन मनुष्यों को उनके जिलाए जाने के बाद भी “मृतक” कहा गया है। यह कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि बड़े श्वेत सिंहासन के सामने केवल अधर्मी खड़े होंगे। पहला पुनरुत्थान, अर्थात् धर्मियों का पुनरुत्थान, कम से कम 1000 वर्ष पहले हो चुका है। यदि सिंहासन के सामने खड़े मनुष्यों को जिलाए जाने के बावजूद “मृतक” कहा गया है, तो इससे उनकी खोई हुई अवस्था का वर्णन होता है: वे अपने पापों में आत्मिक रूप से मरे हुए हैं (इफिसियों 2:1), वे पाप की मज़दूरी के रूप में दैहिक मृत्यु मरे, और निर्णय सुनाए जाने के बाद अपने दोष और पापमयता की पूरी चेतना के साथ अनन्त मृत्यु में जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 20:6, 14)।

निर्णय के लिए प्रमाण-सामग्री जीवन की पुस्तक¹⁴³ और वे पुस्तकें हैं, जिनमें सब काम लिखे हुए हैं (दानियेल 7:10)। जीवन की पुस्तक में वे सब लिखे हैं जो जीवन के पुनरुत्थान में भागी थे। इसलिए वे इस सिंहासन के सामने खड़े ही नहीं होंगे, क्योंकि उनका पुनरुत्थान 1000 वर्ष पहले हो चुका है। लिखा है कि जो कोई इस न्याय में जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया। अतः यहाँ केवल वे ही खड़े हैं जो आग की झील में डाले जाएँगे!

परन्तु यूहन्ना के वर्णन से कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि सिंहासन के सामने ऐसे लोग भी खड़े हैं जो आग की झील में नहीं जाते, क्योंकि वहाँ हमें जीवन की पुस्तक मिलती है। उसे क्यों लाया जाता है? कारण यह है कि यह न्याय अत्यन्त सटीकता से होता है। वहाँ किसी मनुष्य के मन में उसकी अवस्था के बारे में जो भी सन्देह उठ सकता है, वह दूर कर दिया जाता है। पुस्तक की जाँच हर भूल-चूक को असम्भव बना देगी। कोई भी, जिसके पास जीवन है और जो इस पुस्तक में लिखा है, अन्यायपूर्वक आग की झील में नहीं डाला जाएगा।

वहाँ मनुष्य पूरी तरह दोषी सिद्ध किया जाएगा और अपने बारे में सच्चाई से परिचित कराया जाएगा। इसके लिए वे अन्य पुस्तकें भी काम आती हैं, जिनमें सब कर्म लिखे हुए हैं। यहाँ विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि अविश्वासियों का न्याय उनके कामों के अनुसार किया जाता है। सब काम – तथाकथित अच्छे और बुरे – देखे, जाँचे और परखे जाएँगे। इस न्यायी के सामने मनुष्य को स्वीकार करना पड़ेगा कि उसका अपना जीवन कितना बिगड़ा हुआ था। यह पहचान भयानक है, क्योंकि वहाँ कोई क्षतिपूर्ति नहीं है, और कोई सहायक (वकील) भी नहीं है जो उसके पक्ष में बोले।

कोई सतही या सामूहिक निर्णय नहीं सुनाया जाएगा। न्याय पूर्ण रूप से धर्मी और निष्पक्ष होगा, हर एक बात तक, क्योंकि धर्मी और सर्वज्ञ न्यायी न्याय करता है (2 तीमथियुस 4:8; भजन संहिता 7:11; 9:4)।

143. लूका 10:20; फिलिप्पियों 4:3; इब्रानियों 12:23; प्रकाशितवाक्य 3:5; 13:8; 17:8; 20:12, 15; 21:27; 22:19।

एक बार फिर यूहन्ना मानो सोचता है कि इतने सारे मृतक कहाँ से आते हैं। उसने देखा कि समुद्र, मृत्यु और हेडीस ने अपने मृतकों को दे दिया। इस प्रकार कोई ऐसा स्थान और कोई ऐसी अवस्था नहीं बचती जहाँ अभी भी मृतक हो सकते हों। मृत्यु और हेडीस आग की झील में डाले जाते हैं, जिससे अन्तिम शत्रु, मृत्यु, का अन्त हो जाता है (1 कुरिन्थियों 15:26)।

तब पहली, अर्थात् दैहिक मृत्यु फिर नहीं रहेगी, क्योंकि अन्तिम पुनरुत्थान के बाद आत्मा-प्राण और देह के अलगाव के अर्थ में कोई मृतक नहीं रहेंगे। इसलिए मृतकों के स्थान के रूप में हेडीस की फिर आवश्यकता नहीं होगी। इस तथ्य से निकलनेवाला भयानक निष्कर्ष यह है कि अधर्मी, अर्थात् खोए हुए लोग, अपनी देह के साथ दूसरी मृत्यु, आग की झील, भोगेंगे। प्रभु यीशु कहता है कि उससे डरना चाहिए “जो प्राण और देह दोनों को नरक में नाश कर सकता है” (मत्ती 10:28)। इन शब्दों से निर्विवाद रूप से स्पष्ट होता है कि मनुष्य प्राण और देह के साथ नरक में, अर्थात् आग की झील में, जाएगा।

इस प्रकार यह दूसरा पुनरुत्थान केवल इस उद्देश्य से होता है कि अधर्मी अपनी देह के साथ नरक में निर्वासित किए जाएँ। उनका विनाश केवल उनके प्राण पर ही नहीं, बल्कि उनकी देह पर भी पड़ेगा। इस प्रकार मृतक अपने पुनरुत्थान और न्याय के बाद अन्तिम और अनन्त अवस्था में प्रवेश करते हैं।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- विश्वासियों और अविश्वासियों के पुनरुत्थान के विभिन्न चरणों (या समयों) को अलग-अलग करके समझाइए!

6 अनन्तकाल में मनुष्य

अनन्त अवस्था का आरम्भ, एक बिलकुल नई सृष्टि का आरम्भ (प्रकाशितवाक्य 21:1), संसार के साथ परमेश्वर के मार्गों की पूर्णता है। लम्बे समय के बाद उद्धार का इतिहास पूरा हो जाता है। अन्त में परमेश्वर अपने लक्ष्य तक पहुँच गया है और अपनी अनन्त युक्ति को पूर्णता तक पहुँचा दिया है। इसमें वह अपनी महिमा प्रकट करेगा। उसने सब कुछ किया और सब कुछ दिया, ताकि मनुष्य, उसकी सृष्टि और उसका स्वरूप, परम आनन्द और अनन्त आनन्द का अनुभव कर सके।

यदि मृत्यु के बाद के जीवन के संबंध में हम पूरी तरह परमेश्वर के वचन के प्रकाशन पर निर्भर हैं, तो यही बात तब भी लागू होती है जब अनन्तकाल में मनुष्य की बात हो। इस प्रश्न में भी हमें परमेश्वर के प्रकाशन की आवश्यकता है। यह परमेश्वर के महान अनुग्रह का फल है कि वह हम पर यह भी इतनी मात्रा में प्रकट करता है कि हम उससे अपने जीवन के लिए महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाल सकें। परमेश्वर का लक्ष्य सदा यह होता है कि भविष्य की बातों में हमारी रुचि केवल हमारी जिज्ञासा को शान्त न करे, बल्कि हमारे दैनिक जीवन पर भी प्रभाव डाले।

अनन्तकाल में, ठीक आज की तरह, मनुष्यों के दो समूह होंगे: वे जिनके पास परमेश्वर से जीवन है, और वे जिनके पास परमेश्वर से जीवन नहीं है। हमारे विषय से, अर्थात् मनुष्य के अनन्त अस्तित्व से, या दूसरे शब्दों में, प्राण की अमरता से, संबंध यहीं है। यदि यह माना जाए कि मनुष्य मृत्यु के बाद – चाहे थोड़े समय के लिए ही सही – अपना अस्तित्व खो देता है, तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वह किसी न किसी समय अपना अस्तित्व अन्तिम रूप से खो देता है। इसलिए जो लोग विश्वास करते हैं कि प्राण मरनहार है, उनके यहाँ यह धारणा मिलती है कि अविश्वासी एक दिन मिटा दिए जाएँगे। प्राण के मरनहार होने की शिक्षा और मनुष्य के मिटा दिए जाने की शिक्षा अधिकतर एक साथ पाई जाती हैं, क्योंकि प्राण का मरनहार होना निस्सन्देह मनुष्य के मिटा दिए जाने की पूर्व-शर्त है। परन्तु अब हमने पवित्रशास्त्र के आधार पर यह स्थापित कर दिया है कि मनुष्य का एक अनन्त अस्तित्व है और इसलिए अविश्वासी कभी मिटाए नहीं जाएँगे।

कम से कम आगे के अध्ययन में यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राण की अमरता का, या मनुष्य के अनन्त अस्तित्व का, सत्य कोई गौण या दूसरे दर्जे की बात नहीं है। मसीहियों के बीच एकता के लिए इसे दबाया नहीं जा सकता। यदि यह सत्य छोड़ दिया जाए, तो बाइबल की शिक्षा का चित्र बिगड़ जाता है (रोमियों 6:17) और सुसमाचार का संदेश घट जाता है।

6.1 अनन्तकाल में विश्वासी

बहुत कम विश्वासी इस बात पर सन्देह करते हैं कि उनका एक अनन्त भविष्य है। भले ही “कहाँ” और “कैसे” के बारे में अलग-अलग धारणाएँ हों, फिर भी सब आनन्दपूर्ण प्रतीक्षा के साथ अनन्तकाल की ओर

बढ़ते हैं। हम परमेश्वर के दिन के आगमन की और एक नए आकाश और एक नई पृथ्वी की प्रतीक्षा करते हैं (2 पतरस 3:11-13)।

परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया है (1 पतरस 5:10)। हम उसकी अपनी महिमा और उसके अपने राज्य के लिए बुलाए गए हैं (1 थिस्सलुनीकियों 2:12)। हमारे लिए एक अवर्णनीय महिमा तैयार की गई है, जो हमारी कल्पना से कहीं बढ़कर होगी (उदाहरण के लिए रोमियों 8:18, 21, 29-30; 2 तीमुथियुस 2:10)।

“स्वर्ग में वह सब कुछ, जो यहाँ पृथ्वी पर हमारा जीवन कठिन बनाता है, सदा के लिए जीत लिया गया होगा। इस स्थान के निवासियों को फिर कभी पीड़ा, दुःख, उदासी, बीमारी, मृत्यु, पाप, स्वार्थ, थकान या कष्ट नहीं सहना पड़ेगा, क्योंकि ‘पुरानी बातें बीत गई हैं’ (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 21:4; 22:3)। स्वर्ग अवर्णनीय प्रेम, सुन्दरता, शान्ति, आनन्द, साहसिक अनुभव और परमेश्वर के साथ संगति का स्थान होगा (प्रकाशितवाक्य 21:4)। हम कठिनाई से ही कल्पना कर सकते हैं कि एक असीम प्रेम करनेवाला, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ परमेश्वर अनन्तकाल में उनके लिए क्या करेगा, जिनके लिए उसने स्वेच्छा से अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया (तुलना करें रोमियों 8:32; 1 कुरिन्थियों 2:9; 3:21-23)। वहाँ का जीवन हमारी कल्पनाओं से कहीं बढ़कर होगा। यदि स्वर्ग में सारी नकारात्मक बातें नहीं होंगी, तो यह स्थान उन सब बातों से भरा होगा जो नई और अच्छी हैं: ‘और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा: देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ! और फिर कहा: लिख ले, क्योंकि ये वचन सच्चे और विश्वासयोग्य हैं!’ (प्रकाशितवाक्य 21:5)।”¹⁴⁴

मसीही की इन महिमाओं और स्वर्गीय आशीषों पर और आगे विचार करना सार्थक है, और मैं अभी इन पर और विचार करना चाहूँगा। परन्तु यहाँ बात विश्वासियों के अनन्त अस्तित्व के प्रश्न की नहीं है। इस पर कोई सन्देह नहीं करता। अविश्वासियों और उनके भविष्य के साथ बात अलग है। यहाँ धारणाएँ मूल रूप से एक दूसरे से भिन्न हैं।

6.2 अनन्तकाल में अविश्वासी

अविश्वासी, जिन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया और जिनके पापों की क्षमा नहीं हुई, अपने पाप में मरेंगे (यूहन्ना 8:21)। उसके बाद उनके लिए न्याय है (इब्रानियों 9:27)। वे जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ते हैं (इब्रानियों 10:31), जो पूर्ण रूप से पवित्र है और इसलिए पाप से घृणा करता और उससे घिन करता है। इसलिए अविश्वासियों का पुनरुत्थान केवल न्याय के लिए होता है (यूहन्ना 5:29)। यह एक ऐसा तथ्य है जिसे नकारा नहीं जा सकता, और जो परमेश्वर के वचन के कथनों पर आधारित है: पवित्र परमेश्वर का क्रोध अविश्वासियों पर सदा बना रहेगा (यूहन्ना 3:36)।

144. John Ankerberg और John Weldon, *Fakten über Sterbeerlebnisse*, Pfäffikon (Verlag Mitternachtsruf), 2001, पृ. 67।

हम प्रेरित पतरस के साथ पूछते हैं: “जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते, उनका क्या अन्त होगा?” (1 पतरस 4:17-18)। परमेश्वर का वचन हमें इस विषय में अन्धेरे में नहीं रखता। परन्तु इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले मैं एक बार फिर याद दिलाना चाहता हूँ कि उद्धारकर्ता परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र के बलिदान में खोए हुए पापियों को बचाने के लिए सब कुछ किया है। परमेश्वर की यह इच्छा नहीं कि पापी खो जाए (1 तीमुथियुस 2:4; 2 पतरस 3:9), बल्कि यह कि वह जीवित रहे और अनन्त मृत्यु से बचाया जाए। परमेश्वर हर मनुष्य के लिए प्रयत्न करता है और अपने ईश्वरीय प्रेम में उस तक पहुँचने का प्रयास करता है। कोई भी मनुष्य कभी अपने अनन्त भाग्य के लिए परमेश्वर को दोष नहीं दे सकेगा। अनन्त दंड की आज्ञा उन सब मनुष्यों पर पड़ेगी जिन्होंने सृष्टिकर्ता परमेश्वर का आदर नहीं किया और उसके पुत्र को अस्वीकार किया।

प्रेरित पौलुस अनुग्रह और न्याय, दोनों में परमेश्वर के धर्मी व्यवहार की बात करता है: “या क्या तू उसकी भलाई, सहनशीलता और धीरज के धन को तुच्छ जानता है, और नहीं जानता कि परमेश्वर की भलाई तुझे पश्चाताप की ओर ले चलती है? परन्तु अपने हठ और अपने पश्चाताप-रहित मन के अनुसार तू क्रोध के दिन के लिए, जब परमेश्वर का धर्मी न्याय प्रकट होगा, अपने ही लिए क्रोध इकट्ठा कर रहा है। वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा: जो भले काम में धीरज से लगे रहकर महिमा, आदर और अविनाश की खोज में हैं, उन्हें अनन्त जीवन; पर जो झगड़ालू हैं और सत्य को नहीं मानते, बल्कि अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और प्रकोप। हर एक मनुष्य के प्राण पर, जो बुराई करता है, क्लेश और संकट आएगा” (रोमियों 2:4-9) (जर्मन एल्बरफ्रेडर अनुवाद से अनूदित)।

क्रोध, प्रकोप, क्लेश और संकट यहाँ पश्चाताप न करनेवाले पापी पर परमेश्वर के धर्मी न्याय की अभिव्यक्तियाँ हैं। पवित्रशास्त्र भावी और अनन्त न्याय के बारे में बिना किसी सन्देह के बोलता है। वह पाप पर परमेश्वर के क्रोध की वास्तविकता को छिपाता नहीं, जैसा कि दुःख की बात है, आज अक्सर किया जाता है। परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता, जो पापी को नरक के हवाले कर देती है, अधिकतर लोगों की सोच में नहीं बैठती, और दुःख की बात है, बहुत से मसीहियों की सोच में भी नहीं। बहुत बार लोग विश्वास करते या आशा करते हैं कि परमेश्वर समझौते के लिए तैयार है और अनुग्रह में पाप को अनदेखा कर देगा। परन्तु इस अनुमान से किसी की सहायता नहीं होती, क्योंकि यह मनुष्य को परमेश्वर के स्वभाव और पाप के स्वभाव के बारे में, और इस प्रकार उसके अपने अनन्त भाग्य के बारे में भी, भटका देता है।¹⁴⁵

145. अनन्त यातना को हल्का करना और उसे अस्वीकार करना विभिन्न रूपों में प्रकट होता है: 1. सार्वभौमिकतावाद और सर्व-मेलमिलाप: अन्त में सब मनुष्य बचा लिए जाएँगे 2. सशर्त अमरता का सिद्धांत (कंडीशनलिज़्म) या सशर्त अमरता: जिनका छुटकारा नहीं हुआ, वे मिटा दिए जाएँगे – जिसे “विलोपनवाद” (एनिहिलेशनलिज़्म) भी कहा जाता है 3. मृत्यु के बाद मन फिराने और उद्धार पाने की सम्भावना (काल्पनिक कंडीशनलिज़्म)। इनमें से हर शिक्षा को बाइबल-विरोधी और विश्वास को खोखला करनेवाली मानकर अस्वीकार करना चाहिए।

पवित्रशास्त्र अनन्त न्याय का वर्णन जितना हो सके उतना प्रभावशाली ढंग से करने के लिए विभिन्न नामों और कठोर चित्रों या तुलनाओं का प्रयोग करता है। वे मनुष्य को दिखाने के लिए हैं कि परमेश्वर पाप को कितनी गम्भीरता से लेता है और न्याय में उससे कितना डरना चाहिए। बाइबल स्वर्ग और नरक की बात वास्तव में अस्तित्व रखनेवाले स्थानों के रूप में करती है और उनका वर्णन करने के लिए चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करती है। हम स्वर्ग की वास्तविकता पर इसलिए सन्देह नहीं करते कि उसका चित्रात्मक वर्णन किया गया है (देखें यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य), और इसलिए हम नरक की वास्तविकता पर भी सन्देह नहीं कर सकते।

आइए, उन तीन मुख्य शब्दों और चित्रों की जाँच करें जो इस न्याय के बारे में बोलते हैं। ये हैं: नरक, आग की झील और दूसरी मृत्यु।

6.2.1 नरक (गेहेन्ना)

स्वयं प्रभु यीशु मसीह सुसमाचारों में ग्यारह बार नरक की बात करता है (मत्ती 5:22, 29-30; 10:28; 18:9; 23:15, 33; मरकुस 9:43, 45, 47; लूका 12:5; नए नियम में इसके अतिरिक्त केवल याकूब 3:6)। नरक वह स्थान है जहाँ अधर्मी सदा के लिए अपने दोष की पूरी चेतना में अकेले छोड़ दिए जाते हैं और परमेश्वर द्वारा उनका न्याय किया जाता है।

यह उल्लेखनीय है कि स्वयं प्रभु यीशु मसीह ही नरक के बारे में, भयानक न्याय के स्थान के बारे में, सबसे अधिक बोलता है, यद्यपि वह स्वयं परमेश्वर के प्रेम का प्रकाशन है। परमेश्वर के प्रेम को कोई भी उसकी तरह नहीं जानता था, और वह उसे प्रकट करने के लिए आया था। परन्तु यह कैसे हो सकता है कि परमेश्वर का प्रेम ऐसे भयानक न्याय के साथ मेल खाए? क्योंकि परमेश्वर की पवित्रता को भी कोई उसकी तरह नहीं जानता था। प्रेरित यूहन्ना कहता है: “और यही वह समाचार है जो हमने उससे सुना और तुम्हें सुनाते हैं: कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं” (1 यूहन्ना 1:5)। ज्योति शब्द यहाँ परमेश्वर की पवित्रता को दर्शाता है, अन्धकार के विपरीत, जो पाप की ओर उससे जुड़ी हर बात की अभिव्यक्ति है।

यीशु के समय के यहूदियों को कुछ अनुमान था कि “नरक” (यूनानी: *gehenna*) से क्या समझना चाहिए। यह धारणा एक जाने-माने स्थान और उसके इतिहास से निकली थी। यूनानी शब्द इब्रानी शब्द “गे-हिन्नोम” के अनुरूप है। यह हिन्नोम की घाटी को दर्शाता है, जो यरूशलेम नगर के दक्षिण में नीचे की ओर ढलती है (यहोशू 15:8; 18:16)। इस्राएल के इतिहास में, राजा आहाज (2 राजाओं 16:3) और मनश्शे (2 राजाओं 21:6) के अधीन, यह सबसे घृणित मूर्तिपूजा का स्थान था। वहाँ मोलेक नामक मूर्ति के लिए बच्चों की बलि दी जाती थी (2 इतिहास 28:3; 33:6)। उन्हें ढोल की थाप के बीच जलाया जाता था, ताकि उनकी चीखें दब जाएँ। परमेश्वर ने इन घृणित कामों के लिए एक भयानक न्याय की घोषणा की (यिर्मयाह 7:32; 19:5-9; 32:35)।

राजा योशियाह के समय की जागृति में यह स्थान नष्ट कर दिया गया और खण्डहरों के ढेर में बदल दिया गया (2 राजाओं 23:10)। बाद में यह स्थान मलबे और कूड़े को फेंकने का स्थान बन गया। वहाँ यरूशलेम नगर का कचरा और गन्दगी लाई जाती थी। मृत्युदंड पाए अपराधियों की लोथें भी जलाने के लिए वहीं लाई जाती थीं। यह एक कूड़ाघर था, जिस पर कचरा नष्ट करने के लिए लगातार आग जलती रहती थी। कीड़ों को कचरे में पर्याप्त भोजन मिल जाता था, जिससे वे वहाँ जीवित रह सकते थे। इसलिए नरक के संबंध में अक्सर उस कीड़े की बात होती है जो नहीं मरता, और उस आग की जो नहीं बुझती (मरकुस 9:43-48; यशायाह 30:33; 66:24)।

यहूदियों के लेखों में इस स्थान की घटनाओं की तुलना अन्त के समय के और अधर्मियों के अनन्त दंड-न्याय से की गई है।¹⁴⁶ प्रभु यीशु मसीह यहाँ उन दिनों की यहूदी धारणा से बात आरम्भ करता है। परन्तु यहूदियों की धारणा के विपरीत उसके शब्द ईश्वरीय सत्य का प्रकाशन हैं। दो बातों पर वह विशेष ज़ोर देता है:

- पूरा मनुष्य नरक के न्याय के हवाले किया जाता है: “पर उसी से डरो, जो प्राण और देह दोनों को नरक में नाश कर सकता है” (मत्ती 10:28; तुलना करें लूका 12:5)। नरक का न्याय (मत्ती 5:29-30) प्राण पर भी उसी प्रकार पड़ेगा जिस प्रकार देह पर (लूका 12:47)।
- नरक अटूट रूप से आग से जुड़ा है: “और जो कोई कहे: ‘अरे मूर्ख!’ वह नरक की आग के दंड के योग्य होगा” (मत्ती 5:22)। “टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक में, उस आग में जाए जो कभी बुझने की नहीं, जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती” (मरकुस 9:43-44; तुलना करें मत्ती 5:29)।

मनुष्य आग से डरता है। नरक में न्याय देह, प्राण और आत्मा पर पड़ता है। आग का चित्र यातना और भय की बात करता है। हम इसकी कल्पना नहीं कर सकते। चित्र पर्याप्त रूप से प्रभावशाली है। यह एक ऐसी चेतावनी है जो इससे अधिक गम्भीर नहीं हो सकती। आग का प्रयोग अक्सर परमेश्वर के न्याय की अभिव्यक्ति के रूप में होता है, जो न्याय के दिन हर उस बात के विरुद्ध होता है जो परमेश्वर के अनुरूप नहीं है (उत्पत्ति 19:24; लैव्यव्यवस्था 10:2; गिनती 16:35; 1 कुरिन्थियों 3:13; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8; इब्रानियों 10:27; 2 पतरस 3:7; प्रकाशितवाक्य 20:9; 21:8)।

अन्य पद, जिनमें “नरक” शब्द का उल्लेख तो नहीं, परन्तु जो उसी न्याय का वर्णन करते हैं, ये हैं:

“टुण्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो हाथ या दो पाँव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए” (मत्ती 18:8)।

146. Strack / Billerbeck, *Exkurs: Scheol, Gehinnom u. Garten Eden*, München (Verlag C.H. Beck) पृ. 1029-1037। G.W. Bromiley, *Theological Dictionary of the NT*, Grand Rapids (Eerdmans) 1985, पृ. 113।

“... और वे उन्हें [दुष्ट की सन्तानों को] आग के कुण्ड में डालेंगे: वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा” (मत्ती 13:42; तुलना करें 8:12)।

यहूदा कहता है: “अनन्त आग के दंड में पड़कर” (यहूदा 7)।

6.2.2 आग की झील

ऊपर के पदों के अनुरूप आग की झील नरक का ही दूसरा नाम है (प्रकाशितवाक्य 19:20; 20:10, 14-15)। इस स्थान के बारे में केवल थोड़े ही विवरण दिए गए हैं। यह वह स्थान है जहाँ पापी अनन्तकाल तक चैन नहीं पाएगा। झील, समुद्र के समान, एक कभी न समाप्त होनेवाली बेचैनी का संकेत देती है (प्रकाशितवाक्य 14:11)।

पहले वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता (अन्त के समय के दो मनुष्य, देखें प्रकाशितवाक्य 13) आग की झील में डाले जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 19:20)। वे जीवित देह के साथ उस स्थान में जाते हैं, जो आग और गन्धक से जलता है। 1000 वर्ष बाद शैतान आग की झील में डाला जाएगा, ताकि रात-दिन युगानुयुग यातना में रहे (20:10)।

आग की झील, अनन्त आग, शैतान और उसके दूतों के लिए – मनुष्य के लिए नहीं! – तैयार की गई है (मत्ती 25:41)। परन्तु क्योंकि मनुष्य ने शैतान का अनुसरण किया, आज्ञा न मानने का वही मार्ग अपनाया और परमेश्वर के अधीन नहीं होना चाहा, इसलिए वह भी वहीं अपना अनन्त भाग्य पाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:10, 14-15; 14:10)।

आग किसी चीज़ को जलाने और नष्ट करने के लिए होती है, जैसा हिन्नोम की घाटी में कचरे के साथ भी होता था। परन्तु नरक के न्याय में बात मिटा दिए जाने के अर्थ में जलाने की नहीं है।

मनुष्य के पूरी तरह मिटा दिए जाने की शिक्षा के अतिरिक्त, नरक में समय-सीमित ठहराव की धारणा भी है। यह किसी सीमित दंड को चुकाने के लिए, या यहाँ तक कि शोधन-अग्नि (पर्गेटरी) के अर्थ में शुद्ध किए जाने के लिए होता। यदि आग के चित्र की व्याख्या इस अर्थ में की जाए, तो सब भक्तिहीन इस आग के सामने आते ही तुरन्त, उसी क्षण जल जाते। उनके पास न तो नया जीवन है और न कोई अच्छी बात, जो शुद्ध किए जाने में शेष रह सके। नरक से कोई बच निकलना नहीं है; उसका केवल एक प्रवेश-द्वार है, परन्तु कोई निकास नहीं।

आग, जैसी हिन्नोम की घाटी में जलती थी, नरक की वास्तविकता का एक चित्र है, क्योंकि वह पापी की यातनाओं का वर्णन करती है।

6.2.3 दूसरी मृत्यु

हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं कि मृत्यु मनुष्य के अस्तित्व का अन्त नहीं है, बल्कि मूल रूप से अस्तित्व के रूप का परिवर्तन है। इसके अतिरिक्त मृत्यु सदा एक अलगाव उत्पन्न करती है। दूसरी और इसलिए

अन्तिम मृत्यु (प्रकाशितवाक्य 20:6, 14) पापी का परमेश्वर से अन्तिम अलगाव है। इसी में पापी का अनन्त न्याय है। इसलिए पौलुस इस न्याय को “अनन्त विनाश, प्रभु के सामने से दूर” कहता है (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। क्योंकि परमेश्वर पाप को देख नहीं सकता, इसलिए उसे पापी को सदा के लिए अपनी उपस्थिति से निकाल देना होगा (मत्ती 7:23; 25:12), क्योंकि ज्योति और अन्धकार की आपस में कोई संगति नहीं हो सकती (2 कुरिन्थियों 6:14)। पापी बाहर के अन्धकार में निकाल दिया जाता है। तब वह जान लेता है कि परमेश्वर उसे उसके पाप के साथ ग्रहण नहीं कर सकता (मत्ती 22:13; लूका 13:22-28; 2 पतरस 2:17; यहूदा 13)। बहुत से लोग परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं रखना चाहते – तब वे सदा के लिए परमेश्वर के बिना भी रहेंगे। जो बात सदा के लिए और बिना अन्त के पापियों का भाग होगी, उसे देखते हुए यह तथ्य हमें कैपा देता है।

परमेश्वर का अन्तिम रूप से मुँह फेर लेना और उसकी अनुपस्थिति का अर्थ है मृत्यु के घोर अन्धकार में होना – एक कभी न समाप्त होनेवाला खोया हुआ होना।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- नया नियम अविश्वासियों के अनन्त भाग्य का वर्णन किन चित्रों में करता है?

6.3 दंड कितने समय तक रहता है?

यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, जिस पर कलीसिया के इतिहास की शताब्दियों से लेकर आज तक बहुत चर्चा हुई है। यहाँ बहुत से मसीहियों की धारणाएँ अलग-अलग हैं। कुछ लोग दावा करते हैं कि दंड समय-सीमित है। जब मनुष्य अपना दंड भोग चुका होगा, तो वह सदा के लिए मिटा दिया जाएगा या स्वर्ग में प्रवेश करेगा। दूसरे लोग, और लेखक भी उन्हीं में हैं, परमेश्वर के वचन के आधार पर दृढ़ विश्वास रखते हैं कि दंड कभी समाप्त नहीं होगा।

इस प्रश्न का निष्पक्ष उत्तर नहीं दिया जा सकता, यदि मनुष्य की (मनचाही) कल्पनाओं और भावनाओं को भी बोलने का अधिकार दिया जाए। पवित्रशास्त्र ही एकमात्र अधिकार होना चाहिए। बाइबल के कथन बिना किसी सन्देह के स्पष्ट करते हैं कि भक्तिहीनों का दंड और उनकी यातना अनन्त, अर्थात् समय की सीमा से रहित, होगी। यह निम्नलिखित पदों से स्पष्ट होता है:

“टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक में, उस कभी न बुझनेवाली आग में जाए” (मरकुस 9:43; तुलना करें मत्ती 3:12; यशायाह 66:24; यर्मियाह 17:4)।

“टुण्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो हाथ या दो पाँव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए” (मत्ती 18:8)।

“अनन्त आग के दंड में पड़कर” (यहूदा 7)।

“वह भी परमेश्वर के प्रकोप की उस मदिरा को पीएगा, जो उसके क्रोध के कटोरों में बिना मिलावट के तैयार की गई है; और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। और उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहता है; और उन्हें रात-दिन चैन नहीं मिलता ...” (प्रकाशितवाक्य 14:10-11; तुलना करें 20:10)।

आग अनन्तकाल तक जलती है, अर्थात् वह कभी नहीं बुझती। अनन्तकाल की वह अवधि, जिसकी कल्पना मनुष्य नहीं कर सकते (“युगानुयुग”), यहाँ – हमें बेहतर ढंग से समझाने के लिए – दिन और रात के अन्तहीन, निरन्तर चलते रहने से तुलना की गई है।

“और ये अनन्त दंड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे” (मत्ती 25:46)। “... अनन्त न्याय की शिक्षा” (इब्रानियों 6:2)। “प्रभु के सामने से दूर अनन्त विनाश” (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। “जिनके लिए घोर अन्धकार सदा के लिए रखा गया है” (यहूदा 13; तुलना करें 2 पतरस 2:17)। “परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है” (यूहन्ना 3:36)।

“परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा न पाएगा, परन्तु अनन्त पाप का अपराधी ठहरता है” (मरकुस 3:29; मत्ती 6:15; 12:32)। जहाँ अनन्तकाल तक पाप की क्षमा नहीं होगी, वहाँ पाप पर परमेश्वर का न्याय भी अनन्त होगा। इस प्रश्न को छोड़ भी दें कि यहाँ कौन से मनुष्य हैं जो पवित्र आत्मा की निन्दा करते हैं, तब भी यह पद स्पष्ट करता है कि अनन्तकाल में ऐसे मनुष्य होंगे जिनके पापों की क्षमा नहीं हुई और जिन पर परमेश्वर का क्रोध सदा बना रहेगा।

परन्तु यह आपत्ति की जाती है कि “अनन्त” और “अनन्तकाल” शब्द सदा किसी अन्तहीन अवधि का नहीं, बल्कि किसी सीमित अवधि का भी वर्णन कर सकते हैं। इसलिए हमें जाँचना होगा कि न्याय के संबंध में नए नियम में इन शब्दों का अर्थ क्या है।

6.3.1 नए नियम में “अनन्तकाल” और “अनन्त”

“अनन्तकाल” शब्द यूनानी “aion” के अनुरूप है। इस शब्द का अर्थ एक निश्चित समय-काल या एक सीमित युग भी हो सकता है: देखें मत्ती 12:32; 24:3; 28:20; लूका 16:8; 20:34; रोमियों 12:2; 1 कुरिन्थियों 1:20; 2 कुरिन्थियों 4:4; गलातियों 1:4; 1 तीमुथियुस 6:17; 2 तीमुथियुस 4:10; तीतुस 2:12; इब्रानियों 9:26।

ये पद स्पष्ट करते हैं कि बात केवल समय की ही नहीं, बल्कि उन नैतिक लक्षणों की है जिनसे उस युग या समय-धारा की पहचान होती है।

“अनन्तकाल” – अधिकतर स्थानों पर – एक अन्तहीन अवधि भी है:

- “सदा तक” (यूनानी: **eis ton aiona**)। यह अभिव्यक्ति निम्नलिखित पदों में आती है: मत्ती 21:19; मरकुस 3:29; 11:14; लूका 1:55; यूहन्ना 4:14; 6:51, 58; 8:35, 51-52; 10:28;

11:26; 12:34; 13:8; 14:16; 1 कुरिन्थियों 8:13; 2 कुरिन्थियों 9:9; इब्रानियों 5:6; 6:20; 7:17, 21, 24, 28; 1 पतरस 1:25; 1 यूहन्ना 2:17; 2 यूहन्ना 2।

- “युगों तक” (**eis tous aionas**)। इसके लिए ये पद देखें: लूका 1:33; रोमियों 1:25; 9:5; 11:36; 16:27; 2 कुरिन्थियों 11:31; इब्रानियों 13:8।
- “सब युगों तक” (**eis pantas tous aionas**): यूहूदा 25
- “युगों के युग तक” (**eis ton aiona tou aionos**): इब्रानियों 1:8।
- “युगानुयुग” (शाब्दिक: “युगों के युगों तक”; **eis tous aionas ton aionon**)। यह अभिव्यक्ति अक्सर आती है: रोमियों 16:27; गलातियों 1:5; फिलिप्पियों 4:20; 1 तीमुथियुस 1:17; 2 तीमुथियुस 4:18; इब्रानियों 13:21; 1 पतरस 4:11; 5:11; प्रकाशितवाक्य 1:6, 18; 4:9-10; 5:13; 7:12; 10:6; 11:15; 14:11; 15:7; 19:3; 20:10; 22:5।

प्रकाशितवाक्य 14:11 और 20:10 में हमें दंड की अनन्तता के लिए एक ऐसी अभिव्यक्ति मिलती है, जिससे बढ़कर कुछ नहीं कहा जा सकता; यह दंड शैतान, पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता पर, परन्तु उन मनुष्यों पर भी पड़ेगा जो पशु के पीछे चले। वे “युगानुयुग” यातना में रहेंगे। यूनानी में “युग” (अनन्तकाल) बहुवचन में है। अतः शाब्दिक रूप से यह है: “युगों के युगों तक”।

विशेषण “अनन्त” भी समय की असीमता की ओर संकेत करता है। इसे विश्वासियों की “अनन्त” आशीषों में स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। विश्वासियों के पास है:

- “अनन्त उद्धार” (इब्रानियों 5:9)
- “अनन्त छुटकारा” (इब्रानियों 9:12)
- “अनन्त मीरास” (इब्रानियों 9:15)
- “अनन्त महिमा” (2 तीमुथियुस 2:10; 1 पतरस 5:10)
- “अनन्त घर” (2 कुरिन्थियों 5:1)
- “अनन्त राज्य” (2 पतरस 1:11)।

परमेश्वर की कोई भी सन्तान यह नहीं सोचती कि ये बातें समय-सीमित हैं। वे तो ठीक उन बातों के विपरीत हैं जो अस्थायी और नाशमान हैं (2 कुरिन्थियों 4:17-18)।

विश्वासियों की आशीषों के विपरीत अविश्वासियों का भाग है:

- “अनन्त दंड” (मत्ती 25:46)
- “अनन्त आग” (मत्ती 18:8; 25:41; यूहूदा 7)
- “अनन्त न्याय” (इब्रानियों 6:2)
- “अनन्त विनाश” (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

विश्वासियों की आशीषें भी और भक्तिहीनों का दंड भी समान रूप से अनन्त, अर्थात् अन्तहीन हैं, जैसा मत्ती संक्षेप में और स्पष्ट रूप से कहता है: “और ये अनन्त दंड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे” (मत्ती 25:46)।

अनन्त यातना के विरुद्ध एक और तर्क यह है कि “अनन्त” विशेषण को पापी के अस्तित्व और उसके न्याय की अवधि पर नहीं, बल्कि केवल न्याय के प्रभाव या उसके बाद के प्रभाव तक सीमित किया जाना चाहिए। तब दूसरी, अनन्त मृत्यु भक्तिहीनों का मिटा दिया जाना होगी। परन्तु क्या मनुष्य के मिटा दिए जाने की बात की भी जा सकती है? क्या “विनाश” का अर्थ मानवीय अस्तित्व का अन्त है?

6.3.2 “विनाश”

यदि “विनाश” शब्द को मिटा दिया जाना, अर्थात् मानवीय अस्तित्व का अन्त, समझा जाए, तो नरक का दंड अनन्त नहीं, बल्कि सीमित होता। परन्तु यह धारणा पहले उद्धृत किए गए पदों के विरोध में है। यदि मनुष्य वास्तव में मिटा दिया जाता है, तो उसकी पीड़ा और यातना का धुआँ युगानुयुग कैसे उठ सकता है (प्रकाशितवाक्य 14:11; 20:10)? अनन्त आग का दंड किसलिए है, यदि कोई रहा ही नहीं जिसके लिए यह आग “जलती” है (यहूदा 7)? न्याय की आग कभी न बुझनेवाली क्यों है (मरकुस 9:43)?

पवित्रशास्त्र के ये वचन स्पष्ट करते हैं कि विनाश का अर्थ मिटा दिया जाना नहीं हो सकता। यह बात नए नियम के अन्य स्थान भी स्पष्ट करते हैं। यूनानी नए नियम में विनाश के लिए कई शब्द हैं, जिनमें से मैं यहाँ सबसे महत्वपूर्ण शब्द प्रस्तुत करता हूँ, जो अनन्तकाल में भक्तिहीनों के न्याय के लिए भी प्रयोग किए जाते हैं।

संज्ञा “विनाश” (apoleia)

यह शब्द 19 बार आता है और इसका अनुवाद अलग-अलग ढंग से किया जाता है:

- “बरबादी” या “फिज़ूलखर्ची” (मत्ती 26:8; मरकुस 14:4)
- “सौंप देना” (प्रेरितों के काम 25:16)
- “विनाश का पुत्र” (यूहन्ना 17:12; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3)
- “विनाश” (मत्ती 7:13; रोमियों 9:22; फिलिप्पियों 1:28; 3:19; 1 तीमुथियुस 6:9; इब्रानियों 10:39; 2 पतरस 2:1; 3:7; 3:16; प्रकाशितवाक्य 17:8, 11)

क्रिया “नाश करना/होना” (apollymai)

यही बात क्रिया “नाश करना/होना” पर भी लागू होती है (नए नियम में 86 बार):

- जल-प्रलय में पृथ्वी का “नाश” (2 पतरस 3:6; तुलना करें इब्रानियों 1:11)
- “मिट जाना” (1 पतरस 1:8 इत्यादि)
- “मार डालना” (मत्ती 2:13; 12:24; 21:41; 27:26 इत्यादि)

- “नाश होना” (मत्ती 5:29-30; 8:26; 26:52; यहूदा 11 इत्यादि)
- मनुष्यों, पशुओं और वस्तुओं के संबंध में “खोया हुआ” (मत्ती 10:6; 15:24; 16:25; 18:11, 14; 2 कुरिन्थियों 2:15; 2 थिस्सलुनीकियों 2:10; 2 यूहन्ना 8 इत्यादि)
- नरक में देह और प्राण का “नाश” (मत्ती 10:28)
- दाखरस की मशकों का “नष्ट होना” (मत्ती 9:17)
- “नाश कर देना” (यहूदा 5)

संज्ञा “विनाश” (olethros)

यह शब्द नए नियम में चार बार आता है: 1 कुरिन्थियों 5:5; 1 थिस्सलुनीकियों 5:3; 2 थिस्सलुनीकियों 1:9; 1 तीमथियुस 6:9।

2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9 में हमें प्रभु के प्रकट होने के समय उसके न्याय का, परन्तु साथ ही अनन्त न्याय का भी, एक प्रभावशाली वर्णन मिलता है: “और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन देना, जब प्रभु यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ धधकती आग में स्वर्ग से प्रकट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं जानते और हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते, उनसे **पलटा** लेगा; वे प्रभु के सामने से [या: प्रभु के सामने से दूर] और उसकी शक्ति की महिमा से दूर होकर **अनन्त विनाश** का दंड पाएँगे।”

6.3.3 सारांश

अनन्त जीवन के समान इन शब्दों के भी अलग-अलग अर्थ हैं। कुछ थोड़े से स्थानों पर इनका अर्थ किसी वस्तु का नष्ट हो जाना या मनुष्यों का पृथ्वी पर से हटा दिया जाना हो सकता है। परन्तु **विनाश** का अर्थ कभी भी मनुष्य का मिटा दिया जाना या उसका लोप होना नहीं है। इसका अर्थ पार्थिव जीवन का खो जाना हो सकता है। परन्तु यह अस्तित्व का अन्त नहीं, बल्कि केवल अस्तित्व के एक दूसरे रूप में प्रवेश है।

विनाश नैतिक पतन और बरबादी है, जो मिटा दिया जाना नहीं, बल्कि किसी अवस्था का मूल रूप से बिगड़ जाना है। विनाश कभी भी अस्तित्व का खो जाना नहीं, बल्कि उस सब का खो जाना है जो अस्तित्व को मूल्य देता है। यदि इन पदों में “विनाश” के स्थान पर “मिटा देना” या “मिटा दिया जाना” शब्द रखा जाए, तो न केवल अर्थ बिगड़ जाता है – तब ये पद पूरी तरह समझ से बाहर भी हो जाते हैं।

भक्तिहीनों का अनन्त विनाश यह है कि वे सदा के लिए परमेश्वर से कटे रहेंगे और न्याय के अधीन रहेंगे। वे खोए हुए हैं और बाहर के घोर अन्धकार में हैं (मत्ती 8:12; 22:13; 25:30; यहूदा 13)।

गहन अध्ययन के लिए प्रश्न

- इन गलत धारणाओं का उत्तर कैसे दिया जा सकता है कि ...
- अविश्वासी या उनके प्राण मिटा दिए जाते हैं?

- उनका दंड समय-सीमित है?

6.3.4 परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता

मनुष्य की समझ और भावना के लिए यह कल्पना करना कठिन है कि एक अनन्त न्याय और पापी का कभी न रुकनेवाला दंड है। परन्तु अक्सर केवल अन्त को देखा जाता है, बिना इस पर ध्यान दिए कि बात यहाँ तक कैसे पहुँची। हमारी अपनी कल्पना हमारी अगुवाई नहीं कर सकती। ठीक इस अन्तिम प्रश्न में मनुष्य अपने विचारों को परमेश्वर के वचन से ऊपर रखने के लिए प्रवृत्त होता है। परन्तु परमेश्वर का वचन ही एकमात्र मापदंड है, जिसके अधीन हम सब प्रश्नों में केवल नम्रता से ही हो सकते हैं।

आइए, एक बार फिर स्मरण करें कि परमेश्वर पापी को दोषी ठहराने में प्रसन्न नहीं होता: “क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता है और न दुःख देता है” (विलापगीत 3:33)। परन्तु तब अनन्त न्याय क्यों है? उत्तर है: क्योंकि परमेश्वर केवल प्रेम ही नहीं, बल्कि ज्योति भी है: वह पूर्ण धार्मिकता और पवित्रता का परमेश्वर है। परमेश्वर की धार्मिकता पाप के ऋण के चुकाए जाने, पापी के दंड की माँग करती है। परमेश्वर की पवित्रता पाप को सह नहीं सकती और उसे हर उस बात को दूर करना और भस्म करना होगा जो पाप से जुड़ी है (यहोशू 24:19)।

यशायाह भविष्यद्वक्ता कहता है: “परन्तु सेनाओं का यहोवा न्याय में महान ठहरेगा, और पवित्र परमेश्वर धार्मिकता में अपने को पवित्र प्रकट करेगा” (यशायाह 5:16)।

जो अनन्त न्याय का इनकार करता है, वह इसके द्वारा स्वयं परमेश्वर के स्वभाव पर प्रश्न उठाता है। परमेश्वर अपने स्वभाव में अपरिवर्तनीय है और अपनी धार्मिकता और पवित्रता को कभी नहीं छोड़ता। परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता के अतिरिक्त लोग पाप के स्वभाव और उसकी गम्भीरता को भी कम आँकते हैं। पाप ही अनन्त न्याय का कारण है। और परमेश्वर की दृष्टि में पाप क्या है? पाप न तो कमज़ोरी है और न कोई छोटी-मोटी भूल; “पाप तो व्यवस्था का विरोध है” (1 यूहन्ना 3:4)। व्यवस्था का विरोध केवल किसी एक आज्ञा का उल्लंघन नहीं, बल्कि हर ईश्वरीय व्यवस्था का अस्वीकार है, अर्थात् अपनी मनमानी और परमेश्वर के अधिकार का इनकार। अन्ततः यह अराजकता है, अपनी सृष्टि पर सृष्टिकर्ता के अधिकार की अवहेलना। पाप परमेश्वर के विरुद्ध शत्रुता और विद्रोह है।

पाप आवश्यक रूप से परमेश्वर के प्रति खुली शत्रुता में ही प्रकट नहीं होता, बल्कि अनेक रूपों में सामने आता है। पाप के द्वारा परमेश्वर के प्रताप और आदर का अपमान होता है। इसलिए परमेश्वर पाप को बिना दंड के नहीं छोड़ेगा। वह अपने आदर को फिर से स्थापित करेगा और अपनी पवित्रता की माँगों को पूरा करेगा। परमेश्वर की सन्तान का भी उसी परमेश्वर से संबंध है, परन्तु उनके प्रति परमेश्वर की माँगों को परमेश्वर के पुत्र ने क्रूस पर पूरा कर दिया है।

परमेश्वर की सन्तान के रूप में हमारी भावना भी, दुःख की बात है, पाप से प्रभावित और धुँधली है। हम स्वयं स्वभाव से पापी थे। इसलिए हम अपने निर्णय में निष्पक्ष नहीं हैं¹⁴⁷ और पाप पर परमेश्वर के क्रोध को अपने मापदंड के अनुसार नहीं ढाल सकते। पाप के विषय में परमेश्वर की भावना की हमारी क्या धारणा है? क्या हम उसे यह आदेश देना चाहते हैं कि वह पापी को उसके पाप के लिए अनन्तकाल तक दंड न दे? परमेश्वर पापी के साथ कैसा व्यवहार करता है, यह केवल और केवल परमेश्वर का विषय है। उसे अपने कामों के लिए कभी किसी सफ़ाई की आवश्यकता नहीं, फिर भी वह अपने वचन में हमें ये बातें समझाता है।

अनन्त न्याय परमेश्वर के प्रेम पर प्रश्न नहीं उठाता। उसने सब कुछ किया है और प्रमाणित किया है कि स्वर्ग और अनन्त महिमा हर मनुष्य के लिए खुले हैं। इसलिए पवित्र और धर्मी परमेश्वर¹⁴⁸ अन्यायी नहीं है, जब वह पापी को अनन्तकाल के लिए दोषी ठहराता है। परमेश्वर इसमें भी अपनी महिमा प्रकट करेगा। परमेश्वर पवित्रता में महिमायु है (निर्गमन 15:11)!

प्रेरित पौलुस कहता है: “परमेश्वर सच्चा ठहरे, और हर एक मनुष्य झूठा, जैसा लिखा है: ‘जिससे तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय तू जय पाए!’ परन्तु यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता को प्रमाणित करता है, तो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर अन्यायी है जो क्रोध करता है?” (रोमियों 3:4-5)।

6.3.5 गुलगुता का क्रूस

अब जबकि हम इस पुस्तक के अन्त तक पहुँच गए हैं, हम उस भयानक न्याय के प्रभाव में, जो पापी की प्रतीक्षा कर रहा है, मानव इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण घंटों पर एक दृष्टि डालना चाहते हैं।

हमने यह स्थापित किया है कि परमेश्वर अपने प्रेम और अनुग्रह के पक्ष में अपनी धार्मिकता और पवित्रता को कभी नहीं छोड़ता। गुलगुता का क्रूस हमें इसका सबसे प्रभावशाली प्रमाण देता है। क्रूस हमें परमेश्वर की उस पवित्रता और धार्मिकता की याद दिलाता है, जिसने परमेश्वर के पुत्र के लिए भी कोई अपवाद नहीं किया, जब उसने हमारे पापों के लिए अपने आप को दे दिया: एक ईश्वरीय रूप से सिद्ध कार्य, जिसे एक ईश्वरीय व्यक्ति ने पूरा किया, ताकि हमें एक अनन्त न्याय से छुड़ाए।

परमेश्वर के पुत्र ने, जो पाप-रहित है, हमारे स्थान पर न्याय अपने ऊपर ले लिया। वह हमारे पाप के साथ उस पवित्र परमेश्वर के सामने आया, जिसने उसके लिए उसे क्रूस पर दंड दिया। उसने हमारे पापों को अपनी देह पर क्रूस (काठ) पर उठा लिया (1 पतरस 2:24), वह हमारे स्थान पर पाप ठहराया गया (2 कुरिन्थियों 5:21), वह हमारे लिए काठ पर शापित बना (गलातियों 3:13)।

147. पवित्र आत्मा का निरन्तर प्रयास यह है कि हम समझें कि पाप क्या है, ताकि हम उससे घृणा करें और उसके बारे में वैसा ही अनुभव करें जैसा परमेश्वर करता है (तुलना करें 1 यूहन्ना 1:5-2:2)।

148. प्रकाशितवाक्य 16:5; भजन संहिता 47:8; 119:137; यशायाह 6:3।

मार्क टेपरनू (Marc Tapernoux) इसे सटीक रूप से व्यक्त करते हैं: “यह इसलिए हुआ ताकि पाप का प्रायश्चित हो और परमेश्वर की धार्मिकता, पवित्रता और महिमा की माँगें पूरी हों, और दूसरी ओर परमेश्वर पापियों पर अनुग्रह कर सके। इस बलिदान की महानता [इब्रानियों 10:1-18], उसका असीम मूल्य [मत्ती 3:17; 17:5] जिसने दोष का प्रायश्चित किया [1 यूहन्ना 2:2; 4:10], उस पर पड़े न्याय की गम्भीरता [मत्ती 27:46; भजन संहिता 22; 42; 69] – ये हमें उस पाप की गम्भीरता को, जिसका प्रायश्चित होना था, और उस विनाश की गहराई को समझाते हैं जिसमें उसने मनुष्य को गिरा दिया है: यह एक अनन्त विनाश है।”¹⁴⁹

जो कहता है कि दंड समय-सीमित है, वह इसके द्वारा यह दावा करता है कि परमेश्वर की दृष्टि में पाप इतना गम्भीर नहीं कि उसके परिणामस्वरूप अनन्त दंड होना चाहिए। परन्तु यदि पाप इतना हानिरहित है, तो परमेश्वर ने अपने ही पुत्र का क्रूस पर ऐसी भयानक रीति से न्याय क्यों किया? उसने वहाँ अन्धकार के तीन घंटों में उसे क्यों छोड़ दिया? उसने उसे इतनी भयानक रीति से क्यों मारा (यशायाह 53; जकर्याह 13:7)?

यदि हमें केवल समय-सीमित कष्टों की एक निश्चित मात्रा से ही छुड़ाया जाना था, तो क्या यह भयावह कार्य आवश्यक था? निश्चय ही नहीं। उसने हमें समय-सीमित कष्टों की किसी मात्रा से नहीं, बल्कि परमेश्वर के उस पवित्र क्रोध से छुड़ाया है, जो इतना भयानक था कि परमेश्वर का अपना पुत्र भी उससे बचाया नहीं गया (रोमियों 5:8-10; 8:32)।

यदि यह दावा किया जाए कि खोए हुए पापी को अनन्त दंड नहीं मिलेगा, बल्कि वह एक दिन मिटा दिया जाएगा, तो परमेश्वर के पुत्र के दुःखों की अवहेलना होती है! यह वह बुरा परिणाम है जो इस दृष्टिकोण से अनिवार्य रूप से निकलता है। यदि बात केवल हमें किसी अस्थायी यातना से छुड़ाने की होती, तो यह आवश्यक न होता कि परमेश्वर का पुत्र हमारे पास आए और हमारे लिए अपने आप को बलिदान करे। परन्तु क्योंकि परमेश्वर का क्रोध और न्याय अनन्त हैं, इसलिए केवल एक ईश्वरीय व्यक्ति ही उन्हें हमारे स्थान पर उठा सकता था और हमें उनसे छुड़ा सकता था।

यदि अनन्त यातना का इनकार किया जाए, तो इसके परिणाम इतने दूरगामी हैं कि इसके द्वारा यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य पर भी आँच आती है और उसे घटाया जाता है। परमेश्वर हमें इससे बचाए कि हम उस ईश्वरीय रूप से महान बलिदान के असीम मूल्य को किसी भी रूप में कम करें! आइए, इस बात को धामे रहें कि परमेश्वर के पुत्र ने वहाँ उस दंड को, जो हम पर अनन्तकाल तक पड़ता, उसकी पूरी गहराई में अपने ऊपर ले लिया।

यह परमेश्वर के असीम प्रेम का और साथ ही परमेश्वर की अपरिवर्तनीय पवित्रता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

149. Marc Tapernoux, *Das ewige Gericht*, Zürich (Beröa-Verlag), 1962, पृ. 5।

यह है अनन्त दया निराली,
जो हर सोच से है पार;
उसकी, जो बाँहें प्रेम-वाली
खोल के झुकता पापी पर हर बार;
जो शाप-मृत्यु से हमें छुड़ाता,
यीशु की महिमा तक ले जाता।

हम खो जाएँ, यह न उसकी इच्छा,
परमेश्वर चाहे हमारा उद्धार;
इसलिए पुत्र धरती पर आया,
फिर स्वर्ग में लौटा महिमा के द्वार;
अब अनुग्रह के सिंहासन से
भरपूर अनुग्रह आता पुत्र से।

हे अनुग्रह, जो सारे पाप मिटाता
मसीह के लहू से आज;
जो हर स्थान पर यह सुनवाता:
क्षमा और शान्ति सबके काज;
अनन्त उद्धार अब है तैयार,
अद्भुत अनुग्रह का समय अपार!

7 परिशिष्ट

7.1 पवित्रशास्त्र शिओल और हेडीस के बारे में क्या सिखाता है?

Bible Treasury में प्रश्नों के उत्तर, खंड N 9, पृ. 79

प्रश्न

क्या यह अभिव्यक्ति “वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रहेगा” (मत्ती 12:40) कब्र से अधिक कुछ दर्शाती है, और क्या यह अभिव्यक्ति “वह पृथ्वी के निचले भागों में उतरा” (इफिसियों 4:9) मृत्यु और कब्र से अधिक कुछ दर्शाती है?

क्या यह पवित्रशास्त्र के अनुरूप है, यदि हम कहें कि शिओल या हेडीस (यूनानी: *hadēs*; हिन्दी बाइबल में ‘अधोलोक’) (इब्राहीम की गोद और परादीस सहित) पृथ्वी के नीचे हैं, और प्रभु यीशु वहाँ नीचे उतरा और कुछ लोगों को अपने साथ ऊपर ले गया? या परादीस, या इब्राहीम की गोद, सदा से स्वर्ग में थी और कभी पृथ्वी के नीचे नहीं थी, पुराने नियम के समय में भी नहीं?

“शिओल में उतरना” अभिव्यक्ति का क्या अर्थ है?

क्या “अथाह कुण्ड” “हेडीस” से कुछ भिन्न है?

क्या शिओल या हेडीस शब्द स्वर्ग पर लागू किए जा सकते हैं, जो आखिर अदृश्य का ही एक भाग है?

J.C.B.

उत्तर

पुराने नियम का शब्द “शिओल” 65 बार आता है और “Authorised Version” में उसका अनुवाद 31 बार “कब्र”, 3 बार “अथाह गड्ढा” और 31 बार “नरक” किया गया है। इससे पता चलता है कि इस शब्द के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। यही शब्द सेप्टुआजेंट (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) में 31 बार “हेडीस”, दो बार “मृत्यु” (*thanatos*) (2 शमूएल 22:6; नीतिवचन 23:14) अनूदित किया गया है, और दो स्थानों पर (अय्यूब 24:19; यहजकेल 32:21) उसका अनुवाद किया ही नहीं गया, क्योंकि यूनानी भाषा में ऐसा कोई शब्द नहीं है जो इन स्थानों के अर्थ को व्यक्त कर सके।

निम्नलिखित स्थानों पर – केवल कुछ के नाम लें – उत्पत्ति 37:35; 42:38; 44:29, 31; गिनती 16:30-31; 1 राजाओं 2:6, 9; भजन संहिता 49:15; 141:7 “शिओल” का अर्थ केवल “कब्र” है और अंग्रेज़ी संस्करण में भी इसका अनुवाद ऐसे ही किया गया है, गिनती 16 को छोड़कर, जहाँ “अथाह गड्ढा” लिखा है; जबकि बाकी सब स्थानों पर “शिओल” शब्द दिवंगत आत्माओं के स्थान को दर्शाता है।

कब्र निर्जीव शरीर को ग्रहण करती है। सारांश में हम कह सकते हैं कि पुराने नियम का शब्द “शिओल” कब्र के लिए भी और दिवंगत आत्माओं के निवास-स्थान के लिए भी प्रयोग होता है।

जब हम अब नए नियम की ओर मुड़ते हैं, तो यह दोहरा अर्थ लुप्त हो जाता है, क्योंकि जीवन और अमरता (अविनाश) सुसमाचार के द्वारा प्रकाश में लाए गए हैं। “हेडीस” शब्द, जो वास्तव में इब्रानी शब्द “शिओल” का यूनानी अनुवाद है, नए नियम में केवल दिवंगत आत्माओं के संसार के लिए प्रयोग होता है, ठीक वैसे ही जैसे “मृत्यु” और “कब्र” शब्द (प्रकाशितवाक्य 20) केवल देह से संबंधित हैं, प्राण और आत्मा से नहीं। देह ही मरती है, जबकि आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाता है जिसने उसे दिया था। आत्मा और प्राण का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता। हेडीस केवल अविश्वासी मृतकों को ग्रहण करता है। जब विश्वासी को घर बुला लिया जाता है, तो वह हेडीस में नहीं, बल्कि परादीस में जाता है।

कुछ लोगों का मत है कि हेडीस मृत्यु पर विश्वासियों और अविश्वासियों, दोनों को एक ही प्रकार से ग्रहण करता है, और फिर भी ये दोनों वर्ग एक बड़ी खाई के द्वारा अलग हैं। पवित्रशास्त्र कहीं भी यह नहीं कहता कि विश्वासी हेडीस में जाते हैं, बल्कि यह कि वे उससे बहुत दूर हैं (लूका 16:23)। यदि भजन संहिता 16 का पद 10, एक ऐसा पद जो प्रेरितों के काम 2 में दो बार उद्धृत किया गया है, इस शिक्षा का आधार होता कि प्रभु अपनी मृत्यु के बाद शिओल या हेडीस में उतरा और उसका प्राण वहाँ नहीं छोड़ा गया – परन्तु हम जानते हैं कि वह परादीस में गया, जो आनन्द का बगीचा है, अन्धकार का नहीं, और जहाँ क्रूस पर लटका डाकू भी था –, तो वहाँ विश्वासियों और अविश्वासियों के लिए दो भाग होने चाहिए थे। परन्तु यह भूल अंग्रेज़ी संस्करण में इस पद के एक गलत अनुवाद के कारण उत्पन्न हुई। यह पद यह व्यक्त करता है: “तू मेरे प्राण को शिओल ‘की ओर’ [नहीं: शिओल ‘में’] न छोड़ेगा (उसके हवाले न करेगा या वहाँ न भेजेगा)।” यह सही अनुवाद प्रेरितों के काम 2:27, 31 के “संशोधित पाठ” से पुष्ट होता है, जिसे लाखमान (Lachmann), टिशेनडॉर्फ (Tischendorf), ट्रेगेलस (Tregelles), वेस्टकॉट (Westcott), हॉर्ट (Hort) और अन्य अनुवादकों ने स्वीकार किया है।

“हेडीस” शब्द नए नियम में कभी भी सकारात्मक अर्थ में प्रयोग नहीं होता। यदि हेडीस में विश्वासियों के लिए भी और अविश्वासियों के लिए भी एक-एक क्षेत्र होता, तो हम बिना किसी अपवाद के हेडीस के बारे में अविश्वासियों के संबंध में ही क्यों पढ़ते हैं, और एक भी ऐसा संकेत क्यों नहीं पाते कि वहाँ कोई विश्वासी रहता है?

“हृदय में” या “पृथ्वी के निचले भाग” अभिव्यक्तियों से कब्र अभिप्रेत है। हमारा प्रभु केवल मरा ही नहीं, बल्कि गाड़ा भी गया और तीसरे दिन जिलाया गया। योना इसका एक पूर्व-चित्र है। भजन संहिता 139:15 हमें इन शब्दों की अत्यधिक शाब्दिक व्याख्या से बचा सकता है। निस्सन्देह यहाँ पृथ्वी के निचले स्थानों से कोई अदृश्य या छिपी हुई बात अभिप्रेत है। कब्र पर पत्थर से मुहर लगाने के बाद पहरा बैठाकर उसे सुरक्षित किया गया (मत्ती 27:66)। कोई भी मनुष्य की आँख उस पवित्र स्थान के भीतर नहीं देख सकती थी, जिसमें यीशु की देह रखी थी।

मसीह के आने से पहले भक्त यहूदी के लिए “इब्राहीम की गोद में” अभिव्यक्ति परम आनन्द का सार थी, क्योंकि वह जानता था कि इब्राहीम “परमेश्वर का मित्र” कहलाया। मसीह के पास होना एक मसीही की आनन्दमय आशा है। यह ऊपर, परमेश्वर के परादीस में है। परादीस हेडीस का पर्यायवाची नहीं है। इब्राहीम हेडीस में नहीं था, बल्कि वह यातना-ग्रस्त प्राण, जो हेडीस में था, उसे “दूर से” देखता था। यह मनुष्य की गढ़ी हुई बात है कि प्रभु हेडीस में था और उसने वहाँ से किसी को छुड़ाया। प्रभु हेडीस में नहीं, बल्कि परादीस में गया। पवित्रशास्त्र हेडीस से किसी छुटकारे का एक भी संकेत नहीं देता। न्यायियों 5:12; भजन संहिता 68:18; इफिसियों 4:8 के स्थान बन्दियों को छुड़ाने की नहीं, बल्कि दुष्ट शक्तियों को बन्दी बनाने की बात करते हैं, जिन्हें यहाँ “बन्धुआई” कहा गया है। मसीह ने प्रधानताओं और अधिकारों को निरस्त किया और उन पर जय-जयकार करते हुए उनका खुला तमाशा बनाया (कुलुस्सियों 2:15)। वह बन्धुआई को बाँध ले गया। इसका संबंध नरक से बन्दियों की रिहाई से नहीं है, जैसा कुछ लोग इसकी व्याख्या करते हैं।

“शिओल में उतरना” कब्र या गड्ढे से संबंधित है। दोनों पृथ्वी के नीचे हैं।

अथाह कुण्ड (प्रकाशितवाक्य 20) एक ऐसा स्थान है जहाँ कोई मनुष्य नहीं जाता, बल्कि जहाँ शैतान हजार वर्ष के लिए बाँधा जाएगा, इससे पहले कि वह अन्तिम रूप से सारे अनन्तकाल के लिए आग की झील में डाला जाए। इसके विपरीत हेडीस उन लोगों के प्राण और आत्मा को ग्रहण करता है जो परमेश्वर से मेल किए बिना मरे, अर्थात् विश्वासी मृतकों को, जिनकी आत्मा कभी मरनहार देह में वास करता था। प्राण और आत्मा हेडीस में जाते हैं, जबकि देह, जो मिट्टी से बनी है, कब्र में (समुद्र में या भूमि में) स्थान पाती है और न्याय के लिए पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करती है। जब मनुष्य जिलाया जाता है – तब आकाश और पृथ्वी नहीं रहेंगे –, तो वह हेडीस में नहीं डाला जाता (जिसका तब अस्तित्व नहीं रहता), बल्कि आग की झील में, जो मनुष्यों के लिए नहीं, बल्कि शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है (मत्ती 25:41)। जो विश्वासी सो गया है, वह न्याय के लिए नहीं, बल्कि महिमा के लिए जिलाया जाता है (फिलिप्पियों 3:20-21)।

“शिओल” या “हेडीस” शब्द स्वर्ग पर लागू नहीं किए जा सकते, क्योंकि वे उसके विपरीत हैं।

अनुवादक की टिप्पणी

नए नियम में हेडीस शब्द निम्नलिखित स्थानों पर आता है:

मत्ती 11:23 (लूका 10:15): इन दोनों स्थानों पर हेडीस स्वर्ग के स्पष्ट विपरीत है। प्रभु कहता है कि कफरनहूम हेडीस तक नीचे गिराया जाएगा। नकारात्मक अर्थ स्पष्ट है।

मत्ती 16:18: यहाँ प्रभु कहता है कि जो नए जन्म और विश्वास के द्वारा परमेश्वर के घर में एक जीवित पत्थर बन गया है, उस पर हेडीस के फाटक प्रबल नहीं हो सकते, अर्थात् वह कभी हेडीस में नहीं जाता। यह स्थान भी स्पष्ट रूप से नकारात्मक है, क्योंकि प्रभु कहता है कि क्या नहीं हो सकता।

लूका 16:23: धनी मनुष्य हेडीस में अपनी आँखें खोलता है और वहाँ यातना में है। यह नहीं कहा गया कि लाजर भी हेडीस में था। इसके विपरीत धनी मनुष्य लाजर को इब्राहीम की गोद में देखता है। इब्राहीम की गोद या परादीस हेडीस का भाग नहीं है, बल्कि दोनों स्पष्ट रूप से अलग स्थान हैं, और एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना असम्भव है। “और इन सब बातों को छोड़, हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है।”

प्रेरितों के काम 2:27, 31: मेरी समझ में प्रेरितों के काम 2:27, 31 में भजन संहिता 16:10 के उद्धरण का अनुवाद सही नहीं है। सेप्टुआजेंट में शाब्दिक रूप से **enkataleiphes eis haden** (“हेडीस की ओर/हेडीस में छोड़ना”) लिखा है। क्रिया का मूल रूप **enkataleipo** है, और अन्य स्थानों पर उसका अनुवाद “सौंप देना” (या: “त्याग देना”) बेहतर ढंग से किया गया है। यह शब्द **enkataleipo** नए नियम में प्रेरितों के काम 2:27, 31 के अतिरिक्त 8 बार और आता है और 6 बार उसका अनुवाद “त्याग देना/छोड़ देना” किया गया है (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34; 2 कुरिन्थियों 4:9; 2 तीमुथियुस 4:10, 16; इब्रानियों 13:5), एक बार “बचा रखना” (रोमियों 9:29) और एक बार “छोड़ देना” या “त्याग देना” (इब्रानियों 10:25)। निर्णायक बात यह है कि यहाँ **en haden** (अधिकरण-रूप/डेटिव, जैसे लूका 16:23 में) नहीं, बल्कि **eis haden** (“हेडीस की ओर/हेडीस के भीतर”, कर्म-रूप/एक्यूजेटिव) लिखा है। पूर्वसर्ग **eis** (“में/की ओर”) केवल कर्म-रूप (एक्यूजेटिव) के साथ आता है। यूनानी में, जैसे जर्मन में भी, कर्म-रूप (एक्यूजेटिव) गति या दिशा की ओर संकेत करता है। यदि मूल पाठ में **en haden** होता, तो **enkataleiphes** का अनुवाद “पीछे छोड़ देना” किया जा सकता था। **eis haden** अभिव्यक्ति इस सम्भावना को बाहर कर देती है। यहाँ प्रश्न अलग-अलग पाठान्तरों का नहीं, बल्कि स्पष्ट रूप से अनुवाद का है¹⁵⁰ (तुलना करें डब्ल्यू. केली (W. Kelly) की अपनी पुस्तकों **An Exposition of the Acts of the Apostles** और **The Preaching to the Spirits in Prison** में विस्तृत टिप्पणियाँ)।¹⁵¹

150. परन्तु यह धारणा J.N. Darby के दृष्टिकोण से भिन्न है, जिन्होंने इन स्थानों का अनुवाद भिन्न रूप से किया है (तुलना करें हेडीस और नरक के विषय में Elberfelder अनुवाद की भूमिका, जो J.N. Darby की लिखी हुई है, **Coll. Writings**, खंड 13)।

151. W. Kelly, **The Preaching to the Spirits in Prison**, 1 Peter III. 18-20, Sunbury (Belivers Bookshelf), पृ. 133, 134: “भजन संहिता 16:10 में इब्रानी शब्द का अर्थ शिओल ‘में’ नहीं, बल्कि शिओल ‘की ओर’ है; इसमें नीचे उतरने का भाव नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे एलफोर्ड (Alford), लाखमान (Lachmann), टिशेंडोर्फ (Tischendorf), ट्रेगेलस (Tregelles), वर्ड्सवर्थ (Wordsworth), वेस्टकॉट (Westcott) और हॉर्ट (Hort) के आलोचनात्मक पाठ में प्रेरितों के काम 2:27 (**eis haden**) में भी नहीं। इसलिए Revised Version इब्रानी का सही अनुवाद करता है: ‘तू मेरे प्राण को शिओल की ओर न छोड़ना [शिओल के हवाले न करेगा]’ इत्यादि, यद्यपि वह यूनानी का अनुवाद गलती से ‘की ओर’ के स्थान पर ‘में’ करता है। जब हमारे प्रभु मरे, तो उन्होंने अपना आत्मा अपने पिता के हाथों में सौंप दिया, जो निश्चय ही स्वर्ग में है; और मन फिराया हुआ डाकू, चाहे कितनी ही देर से क्यों न हुआ हो, उसी दिन उनके साथ परादीस में था (लूका 23)। अब हम देख चुके हैं कि हेडीस में होने के बजाय परादीस स्वर्ग में है, और जैसा कहा गया, उसका सबसे महिमामय भाग है। एक प्रेरित उसे ‘तीसरे स्वर्ग’ से जोड़ता है (2 कुरिन्थियों 12:3-4); और हमारे प्रभु एक दूसरे के द्वारा कहते हैं कि जो जय पाए, उसे वे (महिमा पाने पर) जीवन के वृक्ष में से खाने देंगे, निश्चय ही हेडीस में नहीं (प्रकाशितवाक्य 2:7)। पुराने नियम में हेडीस, और साथ ही मृत्यु, जीवन और अविनाश, अनिश्चित बने रहे; परन्तु ये बातें और इनसे कहीं अधिक सुसमाचार के द्वारा प्रकाश में लाई गई हैं। इसलिए हमारे प्रभु लूका 16 के अन्तिम दृष्टान्त में उस धनी मनुष्य का, जिसमें न विश्वास था न प्रेम, वर्णन करते हैं कि मृत्यु के बाद वह हेडीस में अपनी आँखें खोलता है – जबकि विश्वासी

पूर्वसर्ग eis अन्य स्थानों के साथ मती 18:20 में आता है: “मेरे नाम में (शाब्दिक: मेरे नाम की ओर) इकट्ठे”; फिर बपतिस्मे के संबंध में, उदाहरण के लिए रोमियों 6:3-4; 1 कुरिन्थियों 10:2 इत्यादि (तुलना करें बपतिस्मे के विषय में Elberfelder (जर्मन बाइबल अनुवाद) की भूमिका)।

पतरस ठीक इसी कारण प्रेरितों के काम 2 में भजन संहिता 16:10 से उद्धृत करता है, ताकि यह सिद्ध करे कि परमेश्वर ने उसे जिलाया जिसे अधर्मियों के हाथों क्रूस पर कीलों से ठोका और मार डाला गया था। यह सम्भव नहीं था कि प्रभु मृत्यु में बना रहे और मृत्यु उसे पकड़े रहे। पतरस पद 25-27 में इस उद्धरण के द्वारा यह कहना चाहता है कि प्रभु कभी हेडीस में नहीं था। परमेश्वर यह होने नहीं दे सकता था कि जिस समय प्रभु की देह कब्र में पड़ी थी, उस समय उसका प्राण हेडीस में हो। जैसे उसकी देह ने सड़न नहीं देखी, वैसे ही उसका प्राण हेडीस में नहीं भेजा गया। यदि अधर्मियों के वश में होता, तो वे ऐसा कर देते। परन्तु परमेश्वर ने इसके विषय में भिन्न सोचा, क्योंकि प्रभु यीशु पर परमेश्वर की पूरी प्रसन्नता थी। परमेश्वर ने इसे प्रभु को जिलाकर सबसे स्पष्ट रूप से प्रमाणित भी कर दिया। क्या कोई ऐसा स्थान है जो हेडीस के नकारात्मक स्वरूप को इससे अधिक स्पष्ट करता हो?

प्रकाशितवाक्य 1:18: यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु के पास मृत्यु और हेडीस की कुंजियाँ हैं। इस पद में प्रभु को हमारे सामने न्यायी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जैसा हम उसे प्रकाशितवाक्य 20:11-15 में भी देखते हैं, जहाँ वह सब मृतकों का न्याय करता है। वहाँ मृत्यु और हेडीस को सब मृतकों को लौटाना पड़ता है, ताकि उनका न्याय हो। शैतान मृतकों को स्वेच्छा से नहीं लौटाता। परन्तु मृत्यु और हेडीस पर भी अन्तिम अधिकार प्रभु का है।

प्रकाशितवाक्य 6:8: हेडीस उस पीले घोड़े के पीछे चलता है, जिस पर मृत्यु बैठी है। यह स्थान उन न्यायों से जुड़ा है जो उठा लिए जाने (रैप्चर) के बाद पृथ्वी पर पड़ेंगे। जिन्हें मृत्यु मार डालती है, उन्हें हेडीस तुरन्त ग्रहण कर लेता है, निश्चय ही केवल मृतकों के प्राण और आत्मा को। इसके विपरीत, जो विश्वासयोग्य यहूदी इस समय में मारे जाते हैं, वे वेदी के नीचे हैं (अध्याय 6:9)।

प्रकाशितवाक्य 20:13-14: यहाँ मृत्यु और हेडीस आग की झील में डाले जाते हैं। मृत्यु और हेडीस वह अन्तिम बात हैं जो परमेश्वर के विपरीत है और इसलिए आग की झील में डाली जाती है। क्या परमेश्वर किसी विश्वासी के आत्मा और प्राण को, जो पहले से उद्धार पा चुके हैं, किसी ऐसे स्थान में भेजेगा जो उसके विपरीत है? यह असम्भव है! मृत्यु भी परमेश्वर के विपरीत तो है, परन्तु विश्वासी के लिए वह अदृश्य में प्रवेश का द्वार है। यदि प्रभु उससे पहले नहीं आता, तो हमें भी अभी मृत्यु से होकर जाना है, क्योंकि पाप की देह अभी उद्धार नहीं पाई है। परन्तु हमारी आशा यह है कि प्रभु आता है, और जल्दी आता है, और “वह अपनी उस प्रभावशाली सामर्थ्य के अनुसार, जिससे वह सब वस्तुओं को अपने अधीन कर सकता है, हमारी दीनता की देह का रूप बदलकर अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा” (फिलिप्पियों 3:21)।

लाजर विश्वासयोग्य इब्राहीम के पास धन्य है। ऐसी बड़ी खाई ठहराई गई थी कि दोनों ओर से पार जाना असम्भव हो। हेडीस सचमुच ‘दूर’ था; और वहाँ रहना ‘यातना में’ होना है। इसका एक शब्द भी नहीं कहा गया कि लाजर वहाँ था; वह इब्राहीम की गोद में था।

वर्नर म्यूखर (Werner Mücher)

7.2 विभिन्न शब्दों की तालिका

नाम	बाइबल-खंड	अर्थ
शिओल (इब्रानी)	पुराने नियम में 65 बार; उदाहरण के लिए उत्पत्ति 37:35; 42:38; 44:29, 31; गिनती 16:30-33; 1 राजाओं 2:6, 9; भजन संहिता 49:15; 141:7 इत्यादि	सबसे पहले कब्र, पृथ्वी में बनी समाधि। फिर मृतलोक भी, जिसमें विश्वासी या अविश्वासी मनुष्यों के निवास-स्थान का भेद नहीं किया गया
हेडीस (यूनानी)	मत्ती 11:23; 16:18; लूका 10:15; 16:23; प्रेरितों के काम 2:27, 31; प्रकाशितवाक्य 1:18; 6:8; 20:13-14	अविश्वासी मृतकों का निवास-स्थान। यातनाओं का स्थान। नए नियम में हेडीस का अर्थ सदा नकारात्मक है
परादीस	लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 12:4; प्रकाशितवाक्य 2:7	सो गए विश्वासियों का स्थान, सचेत आनन्द में
इब्राहीम की गोद	लूका 16:22-23	परादीस का दूसरा नाम
आग की झील – वह झील जो आग और गन्धक से जलती है	प्रकाशितवाक्य 19:20; 20:14-15; 21:8 (तुलना करें मत्ती 25:46 में “अनन्त दंड”)	उन मनुष्यों, शैतान और उसके दुष्टात्माओं का निवास-स्थान, जो निरन्तर सारे अनन्तकाल तक न्याय की यातनाएँ भोगेंगे। आज तक कोई आग की झील में नहीं है। सबसे पहले वहाँ पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भेजे जाएँगे, शैतान 1000 वर्ष बाद; और फिर उसके साथ सब अविश्वासी।
नरक (यूनानी: gehenna)	मत्ती 5:22, 29-30; 10:28; 18:9; 23:15, 33; मरकुस 9:43, 45, 47; लूका 12:5; याकूब 3:6	आग की झील का दूसरा नाम
अथाह कुण्ड (इब्रानी: abbadon)	अय्यूब 26:6; 28:22; 31:12; भजन संहिता 88:11; नीतिवचन 15:11; 27:20; लूका 8:31; रोमियों 10:7; 2 पतरस 2:4;	

प्रकाशितवाक्य 9:1, 11; अथाह कुण्ड अन्य बातों के साथ उन पतित स्वर्गदूतों का बन्दीगृह है, 11:7; 17:8; 20:1, 3 जिन्हें परमेश्वर ने अन्तिम न्याय तक बाँध रखा है।

स्वर्ग	बाइबल में 700 से अधिक बार	बाइबल पहले स्वर्ग (= वायुमण्डल का आकाश), दूसरे स्वर्ग (ब्रह्माण्ड, तारों के बीच का अन्तरिक्ष) और तीसरे स्वर्ग में भेद करती है, जहाँ परमेश्वर का सिंहासन और परादीस हैं (2 कुरिन्थियों 12)
पिता का घर	यूहन्ना 14:2	असृजित स्वर्ग, जिसमें परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्ति अनादि काल से वास करते आए हैं और जिसमें परमेश्वर की सभा (कलीसिया) के सब विश्वासी प्रवेश करेंगे

8 ग्रंथसूची

Ankerberg, J., *Fakten über das Leben nach dem Tod*, Pfäffikon (Verlag Mitternachtsruf) 2001

Ankerberg, J., *Fakten über Sterbeerlebnisse*, Pfäffikon (Verlag Mitternachtsruf) 2001

Bergmann, G., *Leben nach dem Tod?*, Gladbeck 1960

Brand, Reinhard, Godzik, Peter *Die gemeinsame christliche Hoffnung über den Tod hinaus und ihre unterschiedliche Auslegung*, 1992

Brinke, G. R., *Jenseitiges und Zukünftiges*, Frutigen

Brockhaus, R., *Botschafter des Heils in Christo*, “Unsterblichkeit der Seele, Seelenschlaf und Verdammnis”, 1919

Bouter, H., *Onnaspeurlijke Rijkdom*, Bijbelstudies over het Paradijs van God, Gouda, 2003

Cremer, H., *Jenseits des Grabes*, 1886, Gießen (TVG) 1987

Darby, J. N., *Die ewige Pein*, Neustadt (E.-P. Verlag)

Fijnvandraat, J. G., *Wiedergeboren – in Ewigkeit?*, Schwelm 1980

Grant, F. W., *Facts and Theories as to a future state*, North Carolina 1889

Hallesby, O., *Himmel, Tod und Hölle*, Wuppertal (Rudolf Brockhaus Verlag)

Hauke, Dr., Rainer, *Wo sind unsere Toten? Ein vernachlässigter Aspekt der individuellen Eschatologie* (हैबिलिटेशन-व्याख्यान)

Heidler, F., *Die biblische Lehre von der Unsterblichkeit der Seele* (Beiträge zur systematischen Theologie), Vandenhoeck & Ruprecht

Hole, F. B., *Das Feuer, das nicht erlischt*, Hückeswagen (CSV) 1987

Ironside, H. A., *Death and afterwards*, Neptune (Loizeaux Brothers) 1924

Jennings, F. C., *The Human Body, Its Source, History and Destiny*, Essex 1927

Lockyer, H., *Was geschieht nach dem Tod*, Wetzlar (Verlag Hermann Schulte) 1976

Lutzer, E. W., *Fünf Minuten nach dem Tod*, Dillenburg (CVD) 1999

Ouweneel, W. J., *Das ewige Leben*, Neustadt (E.-P. Verlag) 1980

Ouweneel, W. J., *Herz und Seele*, Dillenburg (CVD) 1991

Ouweneel, W. J., *De leer van de mens*, Buiten & Schipperheijn, 1986

Ouweneel, W. J., *Ende gut – alle(s) gut?*, Bielefeld (CLV) 1993

Pache, R., *Das Jenseits*, Wuppertal (Verlag Sonne und Schild) 1957

Pfannmüller, G., *Tod, Jenseits und Unsterblichkeit*

Pollock, A. J., *Eternal Life*, London

Rawlings, M., *Zur Hölle und zurück*, Hamburg (C. M. Fließ) 1996

Rienecker, F., *Das Schönste kommt noch I, II*, Wuppertal (Verlag Sonne und Schild) 1964

Rincke, H. W., *Vom Zustand nach dem Tode*, Basel, 1885

Schwengeler, B., *सं. Sterbeerlebnisse, Ufo, Anthroposophie*, Berneck, 1981

Steinmeister, A., *Auferstehung – Realität oder Illusion*, Wuppertal (Telos) 1989

Swihart, P. J., *Der Tod – wirklich anders?*, Bad Liebenzell, 1979

Tapernoux, Marc, *Das ewige Gericht*, Zürich (Beröa Verlag) 1962

Zodhiates, S., *Leben nach dem Tod*, Dillenburg (CVD) 1978

निम्नलिखित पुस्तकें पूरी तरह या आंशिक रूप से विपरीत मत प्रस्तुत करती हैं
Cullmann, O., *Unsterblichkeit der Seele oder Auferstehung der Toten*,
Stuttgart (Quell Verlag) 1986

Custance, A. C., *Journey out of time*, A study of the interval between
death and resurection of the body, Ontario (Doorway Publication)

Le Seur, P., *Die Zukunft der Toten*, Wuppertal (Aussaat Verlag) 1974

Jukes, A., *Der zweite Tod und die Wiederbringung aller Dinge*, 1912
(1987)

Magner, J., *Zukunft ohne Tod*, Hamburg (Saatkorn Verlag)

Petry, P., *Allaussöhnung, Tod und letzte Dinge*, Pforzheim
(Konkordanter Verlag) 1986

Raiber, H., *Wir werden was wir sind* (Chiron Verlag) 1986

Tobler, G., *Wann beginnt das ewige Leben*, Zürich (Advent-Verlag)

Tod und Leben, Studien zur christlichen Anthropologie, Genf (Edition
Oikumene) 1840

Tomasi, M., *Tod und Auferstehung, Himmel und Hölle*, Zürich
(Advent Verlag)

77 Fragen an die Gemeinschaft der Siebenten-Tags-Adventisten, 1988

संदर्भ-ग्रंथ

Handreichungen aus dem Worte Gottes, मासिक पत्रिका 1913-1938, Bielefeld
(CLV)

Kommentar zum Neuen Testament aus Talmud und Midrasch, C. H.
Beck, München (Strack & Billerbeck),

Texte der Kirchenväter, München (Kösel Verlag) 1963

The Bible Treasury, edited by William Kelly 1856-1920, Winschoten
(H. L. Heijkop Verlag)

The Collected Writings of John Nelson Darby, Winschoten, (H.L. Heijkoop Verlag) Reprint 1972

पत्रिकाएँ

An Outline of Sound Words, W. C. Reid, Edingburgh

Bibel und Gemeinde, Bibelbund की पत्रिका

De Bode van het heil in Christus, Vassen (Uitgeverij H. P. Medema)

बाइबल-टीकाएँ

Best, E., Second Corinthians, A Bible Commentary for Teaching and Preaching, Atlanta (John Knox Press)

de Boor, W., Der zweite Brief des Paulus an die Korinther, Wuppertal (R. Brockhaus Verlag) 1972

Godet, F., Kommentar zu dem Evangelium des Lukas, TVG

Godet, F., Kommentar zum 1. Brief an die Korinther, TVG

Grosheide, F.W., Paulus eerste Brief aan de Kerk te Korinthe, Korte Verklaring der Heilige Schrift, Kampen

Kelly, W., Notes on the second Epistle of Paul the Apostle to the Corinthians with a new Translation, London

McDonald, W., 2 Corinthians (Emmaus Bible School), 1961,

Ouweneel, W. J., Wij zien Jezus, Bijbelstudies over de Brief aan de Hebreërs

Ouweneel, W. J., De Openbaring van Jezus Christus, deel 1 en 2

Rienecker, F. Lukas, Wuppertaler Studienbibel, Wuppertal (Brockhaus Verlag)

Zahn, T., Das Evangelium des Lukas, TVG

अध्ययन-सहायक ग्रंथ

Begriffslexikon zum Neuen Testament, TVG

Bibleworkshop, Computer-Bibel, media C

Bromiley, G. W., *Theological Dictionary of the New Testament*,
Eerdmans

Metzger, B. M., *A Textual Commentary on the Greek New Testament*,
London, New York (United Bible Societies), 1971

Rienecker, *Sprachlicher Schlüssel zum griechischen Neuen Testament*

Vine, W. E., *Expository Dictionary of New Testament Words*, Fleming
H. Revell

Wigram, G., *Publishing Englishmans Greek Concordance*

सामान्य साहित्य

Bruce, F. F., *Zeitgeschichte des Neuen Testaments*, Wuppertal (TVG)
1986

Gitt, W., *Und die anderen Religionen?*, Bielefeld (CLV)

Gitt, W., *Schuf Gott durch Evolution?*, Bielefeld (CLV)

Hunt, D., *Whatever happened to heaven*, Harvest House Publishers,
Eugene, 1988

Josephus, F., *Geschichte des Jüdischen Krieges*, Wiesbaden (Fourier
Verlag)

Josephus, F., *Jüdische Altertümer*, Wiesbaden (Fourier Verlag)

Scott, W., *Doctrinal Summaries*, Glasgow (G. T. Publications) 1982

Walvoord, J., *The Prophecy Knowledge Handbook*, Wheaton (Victor
Books) 1990

पादटिप्पणियाँ

पेपरबैक

W. & M. Deppe

Auswege oder Wege ins Aus?

320 पृष्ठ

ISBN 3-89397-290-0

गुरु-समुदाय, पंथ, रहस्य-पूजा के सम्प्रदाय और मनोवैज्ञानिक समूह पश्चिमी जगत में बढ़ती लोकप्रियता और बढ़ती सदस्य-संख्या का आनन्द ले रहे हैं।

इसके अतिरिक्त अस्सी के दशक से हम पर गूढ़-रहस्यवाद (एसोटेरिक) की एक ऐसी लहर छाई हुई है जिसका कोई अन्त नहीं दिखता।

लगभग उसी समय वह हो रहा है जो सदियों तक अकल्पनीय था – संसार भर में बड़े विश्व-धर्मों के बीच संवाद आरम्भ हो रहे हैं!

इसका परिणाम यह है कि मसीहियों का सामना बार-बार ऐसे लोगों से होता है जिन्होंने मसीही विचारों को दूसरे धर्मों के तत्वों के साथ मिला दिया है, और मसीहियों को पहले से कहीं अधिक हमारे समय की विभिन्न धाराओं से जूझने के लिए बुलाया जा रहा है।

यह पुस्तक धार्मिक विविधता की भूल-भुलैया में दिशा पाने के लिए एक अच्छी सहायक है!

क्या मृतक जीवित हैं – या मृत्यु ही सारे अस्तित्व का अन्त है? क्या मनुष्य प्राण-निद्रा में चला जाता है – या मृत्यु के पार भी उसकी चेतना बनी रहती है? ये ऐसे प्रश्न हैं जो हर मनुष्य को सोचने पर विवश करते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर देना, और साथ ही आशा देना, इस पुस्तक का उद्देश्य है; इसमें प्राण की अमरता का प्रश्न केन्द्रीय विषय है। मृतक, जो जीवित हैं – बाइबल इस विरोधाभास को सुलझाती है: मृत्यु अन्त नहीं, बल्कि एक ऐसे जीवन का आरम्भ है जो फिर कभी समाप्त नहीं होता। इस कथन की सच्चाई की गारंटी एक ...